

جملەھقوق كتابت بحق نانٹرمحفوظ ہيں تصريحات

نام کتاب تحریک سیداحمد شهبیدٌ جلد سوم مولف مولانا غلام رسول مهرصاحب شخیح مولانا غلام رسول مهرصاحب تقصیح مولانا محمد عمران قاسمی بگیانوی تعداد صفحات ۱۲۱۸ با بهتمام شمشیراحمد قاسمی (دیوبند) با بهتمام عمران کمپیوٹرس مظفر نگر (۲۹۶ ۲۹۵ و ۲۹۹) کتابت جنوری 2008

ملنے کے پتے

دارالکتاب دیوبند
 کتب خانه نیمید دیوبند
 کتب خانه اغزازید دیوبند
 مسعود پبلشنگ ها وس دیوبند
 کتب خانه حسینید دیوبند
 دکن تریدرسمنل پوره حیدرآباد
 توحید بک دیو پھول پوراعظم گڑھ
 مولانا عبدالسلام خال قاسی
 179 کتاب مارکیٹ بھنڈی بازارمبئ

برصغیر ہند میں تحریک احیائے دین اور سرفروشانہ جدوجہد کی کمل سرگذشت

جماعت مجامدين

مجامد کبیر حضرت سیداحمد بریلوی کی جماعت کے نظیمی حالات اوران اکا برر فقاء کے سوانح حیات جوسید صاحب کی زندگی میں یاان کے ساتھ شہید ہوئے ، یا جنھوں نے بعداز آں جہاد میں کوئی حصہ نہ لیا

> --مولا ناغلام رسول مهر



فهرست عنوانات

| صفحہ | عنوان | صفحه | عنوان |
|-------------|--|------------|--|
| TA PA | 🔹 تنظیم کی حیثیت | 19 | • سطوراولين |
| rq | ئ غورطلب امور | ** | • عرض ناشر |
| ۴۰) | 💠 دعوت وتبلغ كالنظام | | پش لفظ |
| | تيسراباب | ۴ľÝ | حصّه اول حصّه اول |
| ۳۱ | 🙃 عسکری تنظیمات (۱) | | /* |
| m | 🗢 مجامدین کی جماعتیں | | جماعت اوراس كي تنظيم |
| m | 🏚 باقی جماعتیں | | يهلا باب |
| MP | • بہلے یادیتے | re | پي.و. ب مسکھ باآگريز؟ |
| ra ra | • رمالدار | F 9 | مزید شهادتو ل کی ضرورت |
| רא ו | 💠 رسد کاانتظام سرتیق | 19 | 🗘 جہاد کی بنیاد |
| _ ا | 👁 رسدگی تقسیم | r. | 💠 سلطانِ ہرات کے نام کمتوب |
| M | ♦ لباس ما شاهة | 171 | 💠 ہندوراؤ کو تلقین |
| | 🏚 ایک روژن حقیقت | rr | 💠 بدیمی شهادت - به |
| | چوتھاباب | P4 | 👁 موشن کی شہادت |
| 4س | 🗢 محسکری تنظیمات (۲) | | دوسراباب |
| 17 4 | 🗢 زخمیوں کا علاج پر | 20 | 🗖 شقطیم کی بنیاد |
| ۵۰ | 🗢 سامان جگل | rs | • امیرخال کی معیت مهتر |
| ۱۵ | • بارود، گولے نال اور گنڈا ہے میں میں میں میں | P4 | منتقل جماعت کی بنیاد منتقل جماعت کی بنیاد |
| ۵۲ | نون جنگ کی مثق | r2 | 🕏 فنون جنگ کی مشق |

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|------------|--|------|---|
| 74 | 🗢 كاغذات كاصندوق | ۵۳ | 🗢 اکھاڑے |
| ۷٠ | 💠 نثانِ تاكيد | ۵۳ | 🍁 لشکر کے نشان |
| ۷٠ | 💠 مختلف مهرین | ۵۵ | 💠 متفرق امور |
| 41 | 💠 منشیول کاا خلاص اور سادگی | rα | 👁 شجاعت اورحسن تدبير |
| <u>۲</u> ۲ | 🏚 غورطلب حقیقت | ۵۷ | 🗢 مجامدین پرشفقت |
| | ساتوال باب | | پانچوال باب |
| سم کے | 💠 خطوكتابت | ۵۸ | • اداره دانظام كانقشه |
| ٧٣ | 🏚 مجموعه مكاتيب | ۵۸ | 🗢 ضروری گزارش |
| ۷٣ | • مرموز خط و کتابت | ۵۸ | 🗢 عهده دارون كاتقرر |
| ۷۵ | • ایک مثال | 4+ | مخصیل عشر کا انتظام |
| 40 | 🏚 شاہ آئی اور شاہ یعقوب کے نام خطوط | 41 | 🗢 تاكيدى احكام |
| 44 | 🔹 كاتب اور مكتوب اليبها كے اساء | 44 | 🏚 مجنس شوری |
| 22 | 🗘 قاصدول کی کیفیت | 44 | 🗘 امان نامے اور عطیات |
| ۷۸ | 🕭 رقبوں کی رسید | ۳۳ | 🗖 اتباع شريعت |
| ۷۸ | • مرموزالفاظ | 70" | 🗢 اعلانِ عام |
| ۷٩ | رقوم کے متعلق ہدایات | 44 | • جرائم کے لئے سزائیں |
| 4 9 | مجاہر بن کاممل | | چھٹاباب |
| | آ کھوال باب | 74 | دفتری ترتیبات |
| At | م دعوت وبلغ و دعوت وبلغ | 42 | ه محکه تحری |
| AI | 🏚 تحريک کې ښياد | ۸۲ | • اطلاعات كاابتمام |
| ۸r | 🏚 ضروری انتظامات | AF | • طریق مکاتبت |
| ۸۲ | 💠 خاص دا عيون كا تقرر | 49 | 🗢 روزنامچ |

| مفحه | عنوان | مغحه | عنوان |
|-------------|--|------|---|
| 44 | • راورشا | ٨٣ | مولوی سید محمد علی رام بوری |
| 94 | 💠 اخلاص فی العمل | ۸۳ | • مولوى ولايت على عظيم آبادى |
| 94 | ایکاهم اصل | ۸۳ | مولوى عنايت على عظيم آبادى |
| 99 | 🏚 تشليم وتوكل | ۸۵ | 💠 باقی اصحاب |
| 1++ | • سيدصاحب كانمونه | ۸۵ | £ C • |
| 1+1 | • اطاعتوربالعالمين كى لذت | | نوال باب |
| | طیمار ہوا <i>ن</i> باب | ٨٧ | الى انظامات |
| | 🖨 جماعت کی اسلامی | ٨٧ | 🗘 ابتدائی دور |
| 1000 | اوراخلا قی شان (۲) | ۸۸ | • متفرق تحائف |
| 1+1" | جماعت اوراس کاسروسامان | ۸۸ | • مرحد کے حالات |
| 101 | 🏚 فتومات 🕳 سارع نشار | Λ9 | • دور کشائش |
| 1+14 | کمال مجمروانکسار طریق زندگی | A 9 | 🔹 خطوط کی شہادت |
| 1+0 | م خری ریری ف نیکی میں سبقت | 9+ | 💠 ميال دين محمد كابيان |
| 1-1 | ت شارین جن ا ۹ شهادت مامنزل مراد | 9• | 💠 حيات النساء بيكم كاواقعه |
| 1+9 | م موت ہے پروائی موت ہے بے پروائی | 41 | پائج ہزار کی تقتیم |
| | بارہواں باب | 92 | 💠 ضروری گزارش |
| | م جماعت کی اسلامی 🗗 🔹 | j | دسوال باب |
| 11+ | اوراخلاقی شان (۳) | | 🔹 جماعت کی اسلامی |
| • | ور مساوات • اخوت ومساوات | 41" | اوراخلا تی شان(۱) |
| ar | • ملمانوں ہے جنگ | 91" | • اسلامیت کالب لباب |
| 1100 | • بريت | 917 | • للْهِيت كى شان |
| 110 | 💠 مخل شدائد | 94 | 🕳 سيدالرملين صلى الله عليه وسلم كالتباع |

| عنوان صفی استان ا | <u> </u> | | | |
|--|----------|------------------------|-------------|--------------------------|
| است و توگوری میں بیبا کی الله الله الله الله الله الله الله الل | صفحہ | عنوان | صفحه | عنوان |
| الا عفت و پاکبازی الا الا عفر الله علی الله الله الله الله الله الله الله ال | 11"1 | 🗢 دغاباز فقیرگی تلاش | 117 | |
| الاست الله الله الله الله الله الله الله الل | 11-1 | 🏚 آخری منازل | ll <u>k</u> | 🗢 حق گوئی میں بیما کی |
| الا الله الله الله الله الله الله الله | ırr | 💠 غورطلب تکتے | IIA | 1 |
| است سیادت است است است است است است است است است اس | • | چودهوان باپ | 119 | 1 |
| است المتحدد ا | ırr | | 119 | - I |
| الم | ırr | k . | 170 | I - I |
| الا الا المور سرد ما المور سرد المور سرد ما المور سرد المور سرد المور سرد المور سرد المور سرد المور سرد الم | 1944 | 1 | , | تیر ہواں باب |
| الا المنافر | 15-74 | 🗢 دوسری نظم | 177 | 🗘 پیرمحمد قاصد کاایک سفر |
| الا مظفر گرسد و بلی مظفر گرسد و بلی تطعید الا الا الا الا الا الا الا الا الا ال | ira | 💠 مومن کےفاری تصیدے | ırr | • سيرصاحب كةاصد |
| الله الله الله الله الله الله الله الله | 152 | | L | |
| الله المرابعة المرا | 152 | 1 - | | |
| الله والبي كي تياري الم الله والبي كي تياري الم الله والبي كي تياري الم الله والله | IFA | 1 | irm | |
| الا سنرمرابعت اورگرفاری الا الا محاجد دوم الا الا الا الا الا الا الا الا الا ال | 164 | 🏚 فاری کی ووقطمیں | 150 | |
| الا معامر ابعت اور رواری اور قاء معامر ابعت اور رواری اور قاء الا الا الا الا الا الا الا الا الا ا | 1 | حقيه دوم | Iro | |
| الات الميرى الذي الميرى الذي الميرى الذي الميرى الذي الميرى الدي الميرى الدي الميرى الدي الميرى الدي الميرى الدي الميرى الدي الميرى ال | | | IFA | 1 1 |
| الا موان ك بعد الله الله الله الله الله الله الله الل | | متحبامبرين ورفقاء | IFT | - - |
| الام الم الم الم الم الم الم الم الم الم | | يہلاباب | 1174 | 1 |
| ۱۳۹ هازی است | Ira | ۵ مولاناعبدالحي | 112 | |
| ایک سید کی شفقت ۱۳۰ ه رفانت ۱۳۰ ه ایک سید کی شفقت ۱۳۰ ه رفانت ۱۳۸ ه ایک سید کی شفقت ۱۳۸ ه ایک سید کی دعابازی ۱۳۸ هم ترب کرد می در در ۱۳۸ هم ترب کرد می در در ۱۳۸ هم ترب کرد می در در در ایک می در | 160 | 🗖 لمازمت | IFA | <u> </u> |
| ایک سیدی شفقت ۱۳۰ و رفاقت ۱۳۰ ایک نقیر کی دغابازی ۱۳۸ هجرت ۱۳۸ ۱۳۸ | 16.4 | ييت 🐧 | Ir4 | |
| المراكب المراك | 164 | | ' ` | |
| ۱۳۸ میری می مهربای ۱۳۰ تا خاراسته | IMA | € جرت | | - 1 |
| | 100 | 💆 سفرکاراسته 👤 | 17" | میری قامبریان |

| صنحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|------|-----------------------------------|------|--|
| AYI | 🕹 زېډوتقوى | 164 | 👁 وفات |
| 149 | دونظرناک موقع | 10+ | 🗢 تربیت کاعمده نمونه |
| 14. | 🗢 افراط وتفريط اورتوسط | اھا | 🗢 انل وعيال |
| اکا | 🗢 شهادت | اھا | بعض مبالغة آميز باتيس |
| | تيسراباب | iar | صراط متقیم کاعربی ترجمه |
| 147 | 👁 سیدصاحب کے ہمانج | 101 | 🗢 علم وفضل |
| 12r | 👁 سيدمحرعلي | | ووسراباب |
| 127 | 👁 سفر حج | 100 | 🗢 شاه آسکعیل |
| 124 | 💠 ٽونڪ کي زندگي | 100 | • بلندشتين |
| 144 | 💠 از واح واولاه | 100 | 💠 ولادت رو |
| ı∠۳ | 🇢 سيداحم على | 161 | 🖨 ابتدائی تعلیم |
| 144 | 🗢 جہاد | 104 | 💠 غير معمولي دل و د ماغ ت . |
| 120 | 🗢 عزم پھولڑہ | IDA | 🏚 دموت ومليخ د لاهند نده |
| 140 | اشكر كى تقسيم | 109 | بعض غیرمشندروا بیتی |
| 124 | 🐧 آغاز بنگ | 14+ | کارنامہ ہائے جہاد |
| IZY | 🗘 شهادت | MI | اطاعت امام خانی ربانی بزرگ |
| 166 | 🗢 خبرشهادت | 146 | <u>-</u> |
| 144 | • اولاد | 144 | نواب مدیق حسن خال کابیان فراست مومن |
| IΔA | 🗢 سیدمویٰ | יארו | • مرامت واق • برمثال شخصیت |
| IZA | • مجروحيت | 144 | ع جان میں • تمانیہ |
| 129 | • سيدصاحب كارشادات | 144 | • امت ثمريه كاعكيم |
| 129 | • شانِ صبرو تليب | AYI | 217 🗢 |

| صفحه | عنوان | صنحه | عنوان |
|------------|--|------|---|
| 191" | . 🗢 اخلاق وعادات اور کمالات | IA• | • وفات |
| 195 | 🗢 جذبه ُ خدمت | IAF | • سيد حيد الدين |
| 197 | 👁 سيدابوالحن | IA | • سيدعبدالرحن |
| | چھٹاباب | IAP | • سنده میں اقامت |
| 190 | 🗖 قاضى محمد حبان | I۸۳ | • بقیه زندگ |
| 190 | 💠 قاضى القصناة | I۸۳ | • سيدمحمر ليعقوب |
| 197 | 🏚 ایک لطیفه | IAM | 💠 بقیهزندگ |
| 194 | 🏚 ابل رسوم كامعالمه | | چوتھا باب |
| 192 | 🗖 انظام عشر | IAG | مولانامحمر يوسف تيعلق |
| 19/ | 🏚 مردان پر پورش | PAL | • شانِ القاء |
| 199 | و که شهادت مد ا | YAL | علالت علالت |
| 199 | 💠 مد ^ق ن | IAZ | 👁 علاج |
| | ساتوان باب | IAZ | ♦ وقات |
| r | 👁 مولوی خیرالدین شیر کوئی - | IAA | 💠 ولي الله |
| r++ | 💠 مختلف خدمات | IAA | • نشکراسلام کے تظب |
| f+1 | • سفارت مراجعه کرداری | 1/4 | 🗖 كال ديانت |
| r•r | 🔹 چھتر بائی اور لوندخوڑ پہ نہ " | | يانجوال باب |
| ror rom | وانش وتدبر جرت البيسا المقلاف | 19+ | پ پیان کی است. میدا بونکمه اور سیدا بوانحسن |
| rom | • ببرت تانيه الملاك • تخواه دارسياه كي تجويز | 19+ | م جرت مجرت |
| F+ F* | • بعورگر منگ اور بالا کوٹ • بعورگر منگ اور بالا کوٹ | 191 | و بیعت درضا د میان میان در شا |
| r+ (* | م سکووں پر ہیت معمول پر ہیت | 91 | • برم بنگ |
| r-0 | 🗴 مظفرآ باد | 198 | م آباد صدر آ |
| <u></u> | _ | | |

| | | | |
|--------------|--------------------------------|--------------|---------------------------------------|
| إصفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
| 719 | 🗢 شهادت | r•۵ | • عزم بالاكوث |
| | دسوال باب | F+4 | 🏚 تھنگول میں قیام |
| rr• | 🗘 شخ محمد الملق گور کھپوری | ۲• ∠ | 🔹 مظفرآ بادے والیسی کاراستہ |
| 144 | • بيت | | آ گھواں باب |
| PPI | 💠 جمرت | ** A | 🌢 شيخ بلند بخت اورشيخ على محمه |
| rri | 💠 جنگسومایار | r+A | 🗢 صبر والمتنقامت |
| rrr | 💠 و بوانه شاه | r+ 9 | 🏚 قلعددارامب |
| 44% | 💠 بالاكوث | r• 9 | 🗢 شان عزیمیت |
| rem | 🗢 شهادت | * 1+ | 🏚 نصب العين |
| | گیار ہواں باب | Fil | 👁 شہادت ۔۔۔ شخا م |
| 44.4 | - • ارباب بهرام خال | FIF | 💠 شیخ علی محمر میران د زیار |
| PFY | 🗖 الرَّور | rir | 😂 عام خدمات 🗬 شبادت |
| rr_ | 🗢 کارٹائے | rir | ع مبارك • للبيت |
| PPA | 🙃 پشاوراور ججرتِ ٹانیہ | 111 | نوان باب |
| PPA | 🗖 يالانوت | rio I | ر اس باب مولوی مظهر علی عظیم آبادی |
| 779 | 🗢 شهادت | ria | 🗢 وول هرک ۱۳ بورن 🗴 دعوت وارشاد |
| 444 | 💠 انقال ميت | PIN | 🏕 تعليم عزييت |
| 7174 | € اولاه | PIN | تافله مجاهرين |
| rr* | 🌢 شانِ اخلاص - سر - جه به ا | 1 1/4 | و بنگب مروان جنگب مروان |
| r r i | 👁 ایک سبق آموز دانند | ۲۱∠ | 🕻 پیثاور میں منصب قضا |
| | بارہوان باب | FIA | 🗢 وزانیون کی بدعبدی |
| rrr | • رسالدارعبدالجبيدخان | MA | 👁 شان احتياط |

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|-------|--|-----------------------|---------------------------------|
| 41°2 | • سيدصاحب كے حالات | rmr | 👁 عبده رسالداری |
| 40°2 | 💠 غدمت وحق | *** | 🗢 دعاء |
| tea ! | 💠 وصايا | ٢٣٢ | 🗘 جنگ امب |
| 464 | 💠 پيرانتاع | rra | انظام عشر |
| ļ | سولہواں باب | ۲۳۵ | 🏓 جنگ مايار |
| 10. | • سید قطب علی اور سید جعفرعلی | 424 | 💠 شانِ انتظام |
| 10. | • سيدصاحب كي شهادت كاغم | ۲ ۳4 | 🗢 الل وعيال |
| rai | 🗢 وفات | | تير ہواں باب |
| 101 | 👁 جعفرعلی | r# <u>/</u> | 👁 سيد محمطي رام پوري |
| ror | • تطعی فیصله | rr <u>z</u> | 💠 وقائع كابيان |
| ram | 🗢 رواغی | rpa | 👁 حيدرآ باد |
| ram | 🗢 راوحن میں پہلاقدم | 44.4 | ی مراس مدان |
| ror | 🗢 دعوت وایتار | 1179 | 💠 تبلغ كينائج |
| | ستر ہواں باب | F (P * | 🕹 مدراس کا دوسراسفر |
| raa | سید جعفرعلی اور سفر کی صعوبتیں | ١٣٢ | 🏚 خان عالم خال کی استقامت ظا |
| roo | 🗢 غازی پوراور جون پور | tri | 👁 سيد پرطلم و جور |
| rot | 👲 شِخْ غلام على الله آبادى | | چودهوال باب |
| ron | 👁 منتنی ،کان پوراور قنوج | rrr | 💠 ميال جي محي الدين چشتی |
| ron | • آزمایش درآزمایش | | پندر ہواں باب |
| r04 | 💠 قيام دېلى | rro | 🇢 نواب وزیرالدوله |
| raq | • انباله | ۲۳۵ | 🗢 روزاندزندگی |
| | | F /** | • شانِ عقيدت |

| | | | (1/2:/2:/2/2/2) |
|-------------|--------------------------------------|--------------|------------------------------------|
| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
| | بييوال باب | | الخمار ہواں باب |
| 124 | الله داوخال پئتی | १ पा | پیالہ سے سرحد |
| 12Y | • مفیدوں کی فنگست | 141 | پٹیالہاورممدوٹ |
| 122 | 🗘 شهادت | 141 | 🗢 بہاول پور |
| r ∠∠ | • پرول اور محمر سید | 747 | • تونیه |
| r2A | 💠 اللدواوخان | PYF | 🕻 خواجه سليمان ہے گفتگو |
| r_A | 🗢 تنظیم مجاہدین | PYP | 🗖 رہبراورسامان سفر |
| r ∠9 | 🏚 محر يوسف خال | ተዛሮ | 🗖 كمال جمت دعز بيت |
| F2 9 | 🏚 محمد المعيل خال | 744 | 👁 سفرکی صعوبتیں |
| PA+ | 💠 حالات غدر | 777 | 💠 منزل مقصود |
| rA• | 🍁 ايميليا كك | 747 | 🏚 ذکروموعظت |
| 7/1 | 🗢 مجراجمل خان | ₽ ₩∠ | 🕏 کاروپارچهاو |
| FAF | 🏕 تصانیف | | انيسوال باب |
| | ا کیسواں باب | 444 | 🗘 سفرمراجعت |
| mr | 🏚 محد مقیم ،عبدالو ماب ،نو راحمه | 749 | 🐞 قصدِمراجعت |
| mr | 🏚 مِیاں محمد مقیم رام پوری | †∠ • | و مغر |
| ME | 🗱 پکھلی میں جباد | FZ • | 🕭 ایک مجیب دانند |
| rair . | 🕏 ارسلان خان کی معیت | F Z1 | 🏓 لدهميانه |
| MAT | 😍 جنگ ڈمیگلہ | F2 F | ا⇔ وبلی س |
| raa | 🖨 میاں مقیم کی ولاور ی | r2r | ♦ لکھنوَاوروطن سام |
| MA | 🏚 مراجعت اوروفات | t∠fY | ' |
| MAN | • طريقة محمرية | ۳ ∠۴ | ♦ وقات در در در در کرد |
| ra_ | مولوی عبدالو ہاب | ۲ <u>۷</u> ۵ | 🏚 ''منظوره'' کی ترتیب |

| | | | , |
|------------|--------------------------------|-------------|--|
| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
| reA | 💠 وفات | MZ | حفظ قرآن اور حسن تقسیم |
| rgA | · 🏚 lell e | M2 | 🙍 عفووحكم |
| raa | 👛 قمرالدین حسین | MA | 👁 رضائے باری تعالیٰ |
| 799 | 💠 بيعت ورفاقت | 1119 | 👁 شاه یقین الله |
| ۳۰۰ | 🕭 شهادت | 44+ | 💠 مولوی نوراجر نگرامی |
| | تيئيسوان باب | *9 + | شہادت |
| | 🗢 احمرالله، | | بائيسوال باب |
| 141 | خيرآ بادى گھرانا ،عبدالمجيدخال | 79 7 | محری، با قرعلی جمد سین بقرالدین |
| P+1 | 🗢 احمراللدناگ پورې | r.ar | 💠 خنى محمرى انصارى |
| F+1 | 🏚 کمالات | 797 | 💠 الل وعيال |
| r.r | 🏶 مختلف خدمات | 797 | 🗘 نجرت |
| F+F | پالاكوث | 492 | 💠 انتظام دفتر |
| ۳۰۳ | 🖚 نیز ۱۰ بازی | 795 | 🗢 خاص نشانات |
| m+ m | 👁 خبرآ بادی مجاہد | ۲۹۳ | 🗢 شهادت |
| F-14 | 🏶 گوہرخال | 1917 | اخلاق وعادات |
| PM+ PA | 💠 امام قال | ram | باقر على عظيم آبادى |
| r.a | 💠 محمدخال | 190 | 💠 شان ارادت تة |
| P+4 | • ابراہیم خال | F96 | ن نائب تقسیم رسد ده ده در ده |
| 1744 | 💠 احمد خال اورارادت خال | 790 794 | • راوحن کا پہلاشہید • در مرصد عظہ ہیں ر |
| r•∠ | 💠 عبدالمجيد خال آ فريدي | 797 | شاہ محمد مسین عظیم آبادی |
| r.∠ | 🔹 نیکی میں سبقت | 17, 194 | رعوت وتبليغ توسيع مسجد اور حج |
| T*A | 💠 شهادت | 19Z | ی نو چهداورن ۵ سواري دسيه گري |
| | | | 0.4.0 |

| صنحه | عنوان | صنحه | عنوان |
|--------------|---|-------------|--------------------------------------|
| riq | ماياراور بالاكوث | | چوبیسوال باب |
| 1719 | کالے فال شمس آبادی | P+9 | م شنراده گدڑی ،انورشاه ،اکبرخال م |
| pr. | شہادت | P+9 | پ شنراده گدڑی |
| PT1 | سیدصا دب کی شان تربیت | ۳1۰ | پ شهادت |
| | چھبیسواں باب | mi- | • منظوره کابیان |
| rrr | 🗢 حس على ،احمد بيك، نورداد خال | MII | • سيدانورشاه |
| rrr | 💠 شیخ حسن علی کاخاندان | 1771 | 🗗 يلاوا |
| rrr | 🏚 مج اور بجرت | 1111 | 🖸 بجرت |
| 777 | 👁 سازش کی نجریں | 1414 | 🗢 جنگ بازار |
| men | 💠 نونک میں سکونت | 1414 | 🗢 مراجعت |
| mke | 🗖 اخلاق وعادات | rır | • اکبرخال |
| 773 | 🗢 شان اینار | ساس | 🗗 اکوژه اور بازار |
| rra | 🗢 میرزااحمد بیک | | پچیسوال باب |
| ۲۲۲ | 🌢 وعوت وارشاد | 1710 | 💠 الله بخش،اميرالله، كاليفال |
| ۳۲۶ | 🕻 احمد بیک کی سبقت | rio | 👁 الله بخش مورائين |
| r12 | 🗢 میرزاکی شهادت | ria | • سیرصاحب کی بیعت |
| 77 /2 | 🏚 توردادخان | ma | 💠 سالنة الحيش كے امير |
| 777 | • والغدبييت | MIA | 🔹 ہیلے جنگی جیش کے سالار اعظم |
| 774 | 🗢 شہادت ر | P14 | شهادت |
| | ستائيسوال باب | 112 | ع پیرخال معرفین |
| rr. | 🏚 فيفر على المجدعلى المصطفى الثاه سيد | P12 | 🏚 ﷺ میرالله |
| rr. | ♦ يرفيض على | TIA | 🗢 بينے کو قط |

| 10.717 | | | |
|------------|---|------------|---|
| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
| 444 | 🏚 سيرصاحب سے عقيدت | rr• | 👁 پھولڑہ پر بورش |
| rrr | 🗢 خدمت | ۳۳۱ | 🗢 شهادت |
| rrr | 🗢 شهادت | rrr | 🗢 امجدعلی |
| | انتيبوال باب | rrr | 🗘 بجروحيت |
| 700 | 🗘 مختلف اصحاب (۱) | rrr | 🌢 زنده شهید |
| 444 | 🏚 نواب احم ^{عل} ی خان | ٣٣٣ | 🗢 شهادت |
| ree | 🗘 بيعت جهاد | 777 | 🗢 حافظ مصطفیٰ |
| rra | 🏚 قاضی احدالله میرخی | ٣٣٣ | 👁 شان استقامت |
| ריויין | سیداستعیل رائے بریلوی | lm lm/m | 👁 دانش و تد بر |
| rr2 | 💠 صوفی نورجمہ بنگالی | rra | 👁 شهادت |
| rr/4 | 💠 ﷺ متورعلی قدوا کی | rra | 👁 ملاشاه سيد |
| rra | • اخوندفیض محمد | 774 | 🗘 شهادت |
| F79 | 👁 امجدخال | | اٹھائیسوال باب |
| mmq | • امام الدين بمبئي وانے | 772 | امام الدين ،اولا دحسن ،غلام على |
| ۳۵۰ | 🗢 حاجى زين العابدين | ۲۳۷ | 👁 مولوى امام الدين بنگالي |
| ra. | • سيدعبدالرؤف | TTA | 🗖 مرابعت |
| rai | محمة عرب اور فرج الله | ۳۳۸ | 🗗 سيداولارحسن قنوجي |
| 101 | 🗢 داراباورغریبالله | ۳۳۹ | 🗢 جبها دا ورد موت وارشاد |
| | تيسوال باب | 14.64 | 🗗 وفات |
| ror | 🗘 مختلف اصحاب (۲) | וייייו ו | 👁 والد كرتر ككامعامله |
| ror | حاجی بها در شاه خان | | • ایک غلط روایت |
| ror | • سدم ڪڻهداء | P744 | 🔹 شُخْ غلام على الله آبادى |
| | | | |

14

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|--------------|--|------------|---|
| mah | 💠 ناصرخال بھٹ گرامی | rar | • شيوه ڪشهداء |
| מרים | • اخوندسيدمبر | rar | تران نذی اور ترکنی کے شہداء |
| דאא | 🕻 خواجهگر | rar | 🏚 مینئی کے شہداء |
| m44 | 🏚 مولوی عبدالحق نیوتنوی | raa | 👁 سيد چراغ على شاه |
| my2 | 🗢 حافظ عبداللطيف | raa | 🗘 يا قرعلى عظيم آبادى |
| m42 | چھتر ہائی کا واقعہ | ray | مولوی طالب علی |
| FYA | • مراجعت | ran | 🗘 کریم بخش گھاٹم بوری |
| TYA | 🏚 خفرخال تندهاري | roz | 🔷 ما فظ ما لى وها فظ ما في |
| m44 | • عبدالرحيم | 702 | 🗢 قاضى علاءالدين بگھروى |
| rz. | 🗢 حافظ البي بخش | ۳۵∠ | ایارے شداء |
| 121 | سید عبدالله سیرام پوری | ran | 🏚 تعیر زی تے شہداء |
| 1 ″∠1 | • يشخ عبداللطيف تاجر • ه | ran | 🔹 چھتر ہائی کے شہداء |
| 72 r | 🏚 منشی امین الدین احمه ۴۰۰ | rag | سید مردان علی شاه |
| rzr | 💠 شیخ علی جان | | ا کتیسوال باب |
| ۳۷۳ | 👁 صدرالدين قصاب | m4* | علاف امحاب (۳) |
| 720 | بابابهرام خال تولی | P"Y+ | م مولوی محمد ن م مولوی محمد ن |
| r2r | 💠 محمودخال تکھنوی | MAIL | ع شهاوت • شهاوت |
| rza | 👁 مهربان خال | الاتا | میرزاعبدالقدوس کشمیری |
| r20 | 👁 حسن خال بناری | mar | میراحاعلی بهاری |
| FZ0 | 👁 باتی اصحاب سے: | ۲۲۳ | مبران دمگله ههیدان دمگله |
| 127 | 💠 شاول خال تنج پوری | ۳۲۲ | 🗢 قاضىمەنى |
| r24 | فقیرمحدخان آفریدی | mym | 👁 ملااساعيل اخوندزاده |
| 122 | 🗢 استاد پوسف آئن گر | man | • ارباب فيض الله خال مجمعه |

| صفحہ | عنوان | صفحہ | عنوان |
|----------------|--|----------------|---|
| m92 | • اجتمام طباعت | | بتيسوال باب |
| 291 | 💠 كيفيت وطن وأجداد | r∠A | |
| F9A | 🏕 فائده 🚓 شکر ایر | | 🏚 مختلف اصحاب (۱۲۲۰) |
| 1799 | 🇢 شکروسیاس | 1 2A | 👁 مولا ناحیدرعلی رام پوری |
| | ضمیمه(۳) | 17 <u>7</u> .4 | 💠 مولا ناغلام جيلاني رام پوري |
| 14.1 | , | P29 | 🗢 مولوی کرامت علی جون پوری |
| | سید جعفرعلی نقوی | r%• | 👁 مولا ناعبدالقيوم برهانوي |
| | صمیمه(۴) | FAI | 👁 مولوی څرم علی بنهوري |
| L.+ L. | 🗘 شاه محمرا سحاق اور شاه محمد لیعقوب | MAI | 💠 مولوی یخاوت علی جون بوری |
| L. ◆ L. | 🔹 شاه محمدا سحاق | MAT | 🗢 مولوی حبیب الله قندهاری |
| M.V | 🔹 شاه محمد يعقوب | rar | مولا ناعبدالله علوی |
| ~• ∧ | 🗢 شاەدلى اللەكى پېش گوئى | የ ላዮ | 🗢 تحيم مومن خال مومن |
| 6.4 | • ارواحِ ثلاثه کی روایات | " " | 💠 ميال دين محر |
| | ضميمه(۵) | ም ለም | 🗖 ميان جي نظام الدين چشتي |
| 1714 | په سرن واقعات 🗘 متفرق واقعات | የ 'ለቦ' | 💠 شيخ محرتق |
| 141- | پ مولاناعبدائی پ مولاناعبدائی | ۳۸۵ | 🗢 متفرق اصحاب |
| 61. | شان لقين | 1716 | 💠 غاتمہ 🗼 |
| P11 | پ سفرانجرت | | ضميمه(۱) |
| MI | • مولا نامحمد يوسف | 17 1/2 | 💠 جهاديه (فاري). |
| | ضمیمه(۲) | | ضميه(۲) |
| 1 | مارسىدە در نضائل 🍎 | mgr | • سیدعبدالله سیزام پوری |
| rir | م میره اور میل مولانامیرا ساعیل حبر نبیل مولانامیرا ساعیل | may | • رہے کی نقل |
| | | ray | |
| | 000000000 | | عزم لحباعت |

سطور إولين

بسسم الله وحده والصلومة والسلام على من لا نبي بعدة وعلى آله واصحابه واتباعه الى يوم القيامة.

مجام کبیر حضرت مولانا ومقدانا سیداحد شهید رحمه الله مندوستان کی اسلامی تاریخ کا وه آق پیر حضرت مولانا و مقدانا سیداحد شهید رحمه الله مند کست روز اور مینارهٔ نور بین جن کی مثال گذشته کی صدیوں میں نہیں ملتی - اسلامی مند کی عظمت و فقت کی بازیابی اور پر چم اسلام کی بلندی کے لئے آپ کی خدمات روز روثن کی طرح عیاں اور مشعل راه ہیں -

مجھے آپ کی زندگی کے قیمتی لمحات اور مجاہدات پر روشی ڈالٹا مقصد نہیں، کہ یہ کام هخیم مجلدات کا متقاضی ہے اور الحمد للداب تک ہزاروں صفحات اس حکایت لذیذ اور روح پرور داستان میں مرقوم ہوکر تاریخ کاروش باب بن چکے ہیں۔ حضرت مولانا سیدا بوالحس علی ندوی رحمداللہ کی مرتب کردہ دو ضخیم جلدیں 'سیرت سیدا حمد شہید' گذشتہ تقریباً نصف صدی سے اہل علم وفدا کارانِ اسلامیت سے خراج شخسین حاصل کر رہی ہیں۔

زرنظر کتاب''سیداحد شہید'' حضرت مولانا غلام رسول مہر کے اعجاز رقم قلم کا شاہکار ہے۔ یہ دراصل مولانا مہر کے اس'' زریں سلسلہ'' کی پہلی کڑی ہے جوانھوں نے حضرت سیداحمد شہید' ان کی تحریک اوران کے دفقاء کے حالات ومجاہدانہ کا رناموں کے بیان میں مرتب کی ہے۔

حضرت مولا ناغلام رسول مہری تحریر فرمودہ کتابوں (سیداحمد شہیداول - دوم، جماعت عجابدین اور سرگزشت مجاہدین) تقریباً ایک صدی کی تاریخ ہے جومجابد کمیر، ان کی تحریک اور ان کے جانباز رفقاء کے حالات ومجاہدات اور خدمات کومنظر عام پرلانے میں نمایاں اور منفر دمقام رکھتی ہیں ۔ بیالیں تاریخ ہے جس میں تاریخ نولیں خود اس تاریخ کا ایک حصد اور مشاہر محسوں ہوتا ہے۔ اس کی ایک وجہ بیہ ہے کہ مولا نا مہر نے ان کتابوں کو صرف واستان برائے واستان اور حکایات وروایات اور کتابوں کی مدد سے مرتب نہیں کیا بلکہ بذات خودان تمام مواضعات، متعلقہ منازل، مقامات بنگ و جہاد، مشاہد اور رہ گذروں کا مشاہدہ کیا، برسوں ان علاقوں کی دشت نور دی اور پیا سرائی کی جہاں ان مبارک نفوں کے قدم پڑے، جہاں انھوں نے اس بلند مقصد کے لئے لیل ونہارگز ارے، جہاں انھوں نے جہاد آزادی اور سر بلندی اسلام کے بلند مقصد کے لئے لیل ونہارگز ارے، جہاں انھوں نے جہاد آزادی اور صر بلندی اسلام کے لئے اپنی ذہنی ، روحانی اور جسمانی تمام صلاحیتیں صرف کیس اور حدید ہے کہ بیشتر نے اپنے مقصد میں کامیابی حاصل کی ، یعنی جام شہاوت نوش کرے اس حیات جاودانی سے سرفراز مقصد میں کامیابی حاصل کی ، یعنی جام شہاوت نوش کرے اس حیات جاودانی سے سرفراز ہوے جو عِند کہ رَبِّهِم پُرْدَ قُون کے پروانہ خاص کا حقد اربناتی ہے۔

مولا نام ہر کا اسلوب وہیان او بیت ودکشی اور جاذبیت و کویت ہے ایہا پر ہے جس ہے مطالعه كننده نهصرف ابيخ آب كوان مقامات ميس موجود محسوس كرتاب بلكه ابيخ اندراعلاي کلمة الله اورسر بلندی اسلام كيلي ايك جذبه جوش مارتا موا ياتا بدانھوں نے اس تاريخ کو برسہابرس کی محنت سے تکھا ہے اور حقیقت ہد ہے کہ سید احمد شہید کے اس مشن اور تحریک میں خود ڈوب کراوراس میں خود کو محو کر کے لکھا ہے۔ کتاب پڑھتے ہوئے آپ دیکھیں گے کہ جاکہ جاکہ وه ان فدایان اسلام کی خدمات عالیه اور جذبه مقدس کوسلام عقیدت چیش کرتے نظر آتے ہیں۔ یہ کتابیں (سیداحمد شہید، جماعت مجاہدین، سرگزشت مجاہدین) بچھلے کافی عرصہ ہے مندوستان میں نایاب ہو چکی تھیں ،میری ایک عرصہ سے خواہش تھی بیسیر بیز شائع ہو کراہل علم اور شألفتين حضرات كے لئے دستياب ہوني جائے۔ كيونكہ بقول مولا ناغلام رسول مهر،اگراس عظيم تح کیک کوتاریخ ہند سے نکال دیا جائے تو بھراسلامی جدوجہد کے حوالہ سے باتی ہی کیارہ جاتا ہے؟ ہمیں این اسلاف کرام کے ان مجاہدانہ کارناموں کی سرگزشت کو ہمیشدا یے سینوں سے لگا کرر کھنے اور مواقع وحالات کے مطابق ان کی تحریک کوآ کے بڑھانے کی ضرورت ہے۔ مجھے خوتی ہے کہ عزیز محترم مولا ناشمشیر احمد قائی نے میری خواہش واصرار براس کام کا

بیر اا ٹھایا۔ پرانے ایڈیشنوں میں افلا طبھی تھیں ،ساتھ ہی کتابت میں بکسانیت اور جاذبیت بھی نتھی ،اس لئے بہتر یہ معلوم ہوا کہاز سرنو کتابت کرا کراس سیریز کوئٹی آب و تاب کے ساتھ مدیدً قارئین کیا جائے۔

یہاں اس بات کا اظہار بھی ضروری ہے کہ اب اس میریز کو ایک نیانام دیا گیا ہے لیمن "تحریک سید احمد شہیر " "جو چار جلدوں پر شتمال ہوگی ، ٹائٹل اور اندر صفحات کے بالائی حصہ پر اس نے نام کے ساتھ ساتھ پرانے ناموں کو بھی باقی رکھا گیا ہے۔

میں جناب مولا ناشمشیراحمد قائمی کومبارک باددیتا ہوں اور ساتھ میں مولا نامحم عمران قائمی بگیانوی کی تھیج کی خدمت کوسرا ہتے ہوئے دعا گو ہوں کہ رہب کریم ہمیں بھی ان پاک نفوں کے جذبہ اسلامیت اور عشقِ الٰہی کا کوئی حبداور حصہ نصیب عطا کر کے اپنی راور ضاپر چلئے توفیق ارزانی کرے اور اس فرشتہ صفت جماعت کی معیت نصیب فرمائے ، آمین

> الراقم مثسالحق قائ مکتبهالحق(ممیک)

عرض ناشر

الحمد للهرب العالمين والصاوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله الطيبين الطاهرين وصحبه اجمعين.

مقام مرت ہے کہ حضرت سید احمد شہید رحمۃ الله علیہ کے حالات وخد مات،ان کی تحریک اور ان کے رفقاء کی سرگزشت برمشمل سیظیم سیریز کتب (سیداحدشهید بردوجلد، جماعت بحامدین ، سرگزشت بجامدین) جدیدعنوان 'تح یک سیداحد شهید' کے ساتھ شائع کرنے کی مجھے ایسے موقع پرسعادت عاصل ہور ہی ہے جب کہ ملک میں جدو جہد آزادی ہندی ڈیڑھ سوسالدسالگرہ حکومتی سطح پر بڑے جوش وخروش سے منائی جارہی ہے۔لیکن اس میں ہمارے اسلاف کرام کی قربانیوں کوجس طرح نظرانداز کیا جار ہاہے وہ نہصرف افسوسناک اور قابل خدمت ب بلكدمات كے رہماؤل كوخواب غفلت سے بيدار كرنے لئے ايك تازياند بھى ہے۔ جوز ماند کے جدید نقاضوں کی تفہیم ،ان سے حصول مقصد کے امکانات اور مقابل وخالف طاقتوں کےخلاف صف آرااور متحد ہونے کی دعوت دے رہاہے۔ بیاتھیں بتار ہاہے ۔

اٹھ کداب بزم جہاں کااور بی انداز ہے

حقیقت توبیہ ہے ہمیں پیش قدی کرتے ہوئے خوداینے اسلاف کرام کی خدمات اور قربانیوں کومنظرعام لانے کیلئے ملکی اور بین الاقوامی سطح براجتاعات منعقد کرنے حیامیس اورایئے الشیج ہے ان لوگوں کو اپنے بزرگوں کی مدح سرائی کے لئے مجبور کرنا جا ہے تھا، جن کے تغافل کا ہم آج رونارور ہے ہیں۔

آزادی ملک وطت اورسر بلندی اسلام کے لئے سروفروشاندجدو جبداورابالیان اسلام کی عظمت ِ رفتہ کی بازیابی کی کوشش میں حضرت سید احمد شہید اور ان کے جانباز رفقاء کا جوحصہ ہے،ان کی جوروش خدمات ہیں، یہی اس سیریز کاموضوع ہے۔

اس سیریز کی حار مخیم جلدیں جو تقریبا ڈھائی ہزار صفحات پرمشتل ہیں،ان کی کمپیوٹر

ستابت میں ایک اہم مسئل**تھی کا تھا، چونکہ کمپیوٹر کتابت میں اغلاط رہ جاتی ہیں اور بعض مرتبہ وہ** عجیب وغریب شکل اور الفاظ کا جامعہ **کان لیتی ہیں۔**

اس مشکل کاحل رب کریم نے اس طرح نکالا کہ جناب مولا نامجہ عمر ان قائی بگیانوی نے
اس اہم اور تاریخی سلسلہ کی کتابت وضیح کی ذمہ داری لے کرا کیے طرح سے ہمارے لئے اس
اہم مرحلہ کوآ سان بنادیا۔ مولا نا موصوف تصنیف تالیف اورضیح ورّجمہ میں اپنی ایک شناخت قائم
کر چکے ہیں، فرید بک ڈیود بلی سے ان کی ضیح کردہ ورّ تیب دادہ متعدد کتابیں شائع ہو چکی ہیں۔
گذشتہ سال تھیم الاسلام عالمی سیمینار کے موقع پر تھیم الاسلام حضرت مولا نا قاری محمر طیب
صاحب کی تالیفات ومضامین کاحسین مرقع سات جلدوں میں ان کا مرتب کردہ شائع ہوکر
اہل علم وقد رداں حضرات سے خراج تحسین حاصل کر چکا ہے، ان کتابوں کا اجراء مقتدر علائے
کرام کے ہاتھوں نہ کورہ سیمینار میں ہوا تھا۔

ایک قابل لحاظ کام یہ کیا گیا ہے کہ سابق ایڈیشنوں میں فیرست نامکمل تھی ،صرف ابواب کے صفحات کی نشاند ہی کی گئی تھی ،موجودہ ایڈیشن میں تفصیلی فہرست مرتب کی گئی ہے، یہ یقینا بری محنت کا کام ہے۔جس سے ایک ہی نظر میں کتاب کے تمام مندر جات پوری طرح سامنے آجاتے ہیں۔

. بہر حال مولا نا محمہ عمران قائمی بگیانوی نے اس سلسلہ کتب کی کتابت دھیج کی خدمت انجام دے کر ہمارے لئے اس سلسلہ کی اشاعت کو کافی حد تک آسان بنادیا۔

اس کتاب کومولا ناخلام رسول مہرنے جس جانفشانی سے مرتب کیاتصنیف و تالیف کی دنیا میں وہ کسی عجوبہ سے کم نہیں۔اللہ رب العزت کاشکرواحسان ہے کہ اس نے ہمیں ایسی اہم کتابوں کی سیریز کی اشاعت کی توفیق سے نوازا۔ و ماتوفیقی الا باللہ

> شمشیراحمرقاسی سنابل کتابگھر دیو ہند

بعراكه الرجراليجي

بيش لفظ

آنال که غم تو برگزیدند جمه ی در کوئے شهادت آرمیدند جمه درمعرکه دوکون فتح از عشق است ی باآنکه سپاه او شهیدند جمه

میں نے سیدصاحب اور ان کی جماعت کے متعلق تین کتابیں لکھنے کا فیصلہ کیا تھا: اول سید صاحب کے سوانح حیات، دوم جماعت کی تنظیم کے مقاصد واصول، سوم سید صاحب کی شہادت کے بعد جماعت مجاہدین کی صد سالہ سرگزشت۔ ان میں سے پہلی کتاب گزشتہ سال دوجلدوں میں شائع ہو چکی ہے۔

خدا کاشکر ہے کہ چندہی مہینوں میں دوسری کتاب بھی مدراج ترتیب طے کر کے اشاعت کی منزل میں پہنچ رہی ہے۔ انشاء اللہ اب تیسری کتاب کی پخیل میں بھی زیادہ وقت صرف نہ ہوگا۔ امید ہے اس سال وہ بھی مطبع میں پہنچ جائے گی۔ اس طرح وہ گراں قدر فرض پورا ہوجائے گاجو سالہاسال ہے میں نے اپنے ذمے لے رکھا تھا۔ تو فیق ایر دی کی یادری شامل حال نہ ہوتو انسان کا قصد دارادہ بیج ہے:

جو کچھ کہ ہوا، ہواکرم سے تیرے ، جو کچھ ہوگا، ترے کرم سے ہوگا پیش نظر کتاب دوحصوں میں منظم ہے: پہلے جسے میں جماعت کی نظیم وتر تیب کے متعلق وہ تفصیلات مرتب صورت میں پیش کی گئی ہیں، جو آج تک کہیں جمع نہ ہو تکیں۔ ہزاروں سفحات میں میں معلومات جا بجا بکھری پڑی تھیں۔ میں نے بار بار کے مطالع اور غور و تحقیق سے انہیں جمع کیا۔خدا ہی بہتر جانتا ہے کہان جو اہر ریزوں کے چننے میں کتی مت تک رات دن آنکھوں کا تیل ٹیکا یا۔الحمد ملٹد کہ ایک ایسا خا کہ تیار ہو گیا جے پیش نظر رکھ لینے سے فکر د کا وش کی نئی وادیاں قطع کرنانسبتا سہل ہوجائے گا۔

دوسرے حصے میں سیدصاحب کے ان مجاہدوں اور رفیقوں کے سوائے درج ہیں جو ان کی زندگی میں یاا نکے ساتھ جاں بحق ہوئے ، یا جنہوں نے بعداز ان مجاہدانہ سرگرمیوں میں کوئی حصہ ندلیا، یا جنہیں خودسیدصاحب نے دعوت وتبلیغ پر متعین کردیا تھا اوروہ انہیں مشاغل میں زندگی گزار کرما لکے حقیقی سے جالے۔

ان سوائ کی ترتیب ونگارش کا مقصد به تھا کہ سیدصا حب کی تربیت اور مردم گری کے پیچھ کی نمو نے سامنے آ جا کیں تا کہ اندازہ ہو سکے کہ اس پاک نفس بزرگ نے تھوڑی سی مدت میں کیسی جماعت تیار کر لی تھی۔ واضح رہے کہ سیدصا حب کا ظہورا س تاریک دور میں ہوا جب اس ملک کے مسلمانوں کا سیاس، دینی اور اخلاقی زوال آخری منزل پر پہنچا ہوا تھا۔ شوکت وسطوت کے اس متحکم حصار کی بنیادیں منہدم ہور ہی تھیں، جس کی دیواروں کوسیسہ پلانے میں اسلامی ہند کے مائے تاز تا جدار، سالا راور مد برسات صدیوں تک خون پینے ایک کرتے رہے تھے۔ سیدصا حب نے مادی ہر وسامان سے یکسرمحروی کے باوجود محض عشق می کر ارت سے اس ظلمت زار میں سیکروں ایسے چراغ روش کردیے جو اسلامیت کے درخشاں ترین دوروں کی یادتازہ کردیتے ہیں۔ نیز خیال تھا کہ جن جا نبازان راوحق نے احیائے اسلامیت کیلئے اپنا خون بے دریغی بہایا، انکی قربانیاں آنے والی نسلوں راوحق نے احیائے اسلامیت کیلئے اپنا خون بے دریغی بہایا، انکی قربانیاں آنے والی نسلوں کیلئے ایک گراں بہاقومی ود بنی میراث کی صورت میں محفوظ ہوجانی چاہئیں۔

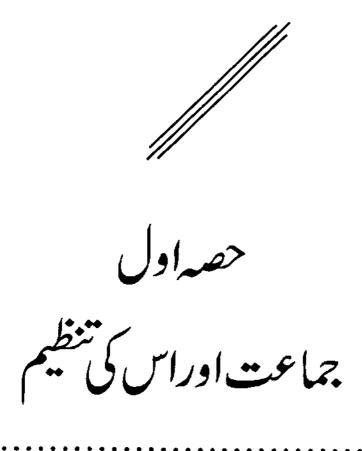
ظاہر ہے کہ اس تذکر ہے میں وہ تمام اصحاب نہ آسکتے تھے جنہوں نے سیدصاحب کے دریائے فیف سے شوق کی پیاس بجھائی اور جنگی تعداد عام روایت کے مطابق لا کھوں تک پہنچتی ہے۔میرے علم میں بے شار نام تھے،کیکن ان کے حالات نہ ل سکے اور محض نام درج کر دینے سے اصل مقصد کوکوئی فائدہ نہ پہنچ سکتا تھا،لہٰذامیں نے اپنادائر ہُ تذکیر و تحریر صرف ان اصحاب تک محدودر کھا جن کی زندگیاں کسی نہسی پہلو سے سید صاحب کی خاص تربیت کانمونہ پیش کر سکتی تھیں۔

ان اساء گرای میں بعض اکابر شامل نہیں کیے گئے، مثلاً مولانا ولایت علی عظیم آبادی، مولانا عنایت علی عظیم آبادی، مولوی نصیرالدین منگوری، مولوی نصیرالدین منگوری، مولوی نصیرالدین دالموی، حاجی علی عظیم آبادی، مولوی نصیرالدین منگوری، مولوی نصیرالدین دالموی، حاجی عبدالرحیم ولایتی، شیخ ولی محری میادسید صاحب کے بابر کت باتھوں سے پڑی بخی ان کے مفصل حالات اس سلسلہ کتب کے آخری حصے کا سرمایہ ہیں، جو آج کل زیر ترب ہے۔ ای حصے میں ادادت مندان سید کے وہ کارنا ہے تفصیلا بیان ہوں گے جو انہوں نے ہندوستان کے اندریا باہراسلامیت کے احیاء، کلمہ حق کی سربلندی اور ملک کی آزادی کیلئے انجام ویے۔ اللہ تعالی کے فضل سے بید حصہ مرتب ہوگیا تو اندازہ ہو سکے گا کہ دیر مادنہ تھا، بلکہ یہ بدستور قائم کے سیدصاحب کی تحریک آخری باب بالاکوٹ کا شہادت زارنہ تھا، بلکہ یہ بدستور قائم واستوارد،ی اور اس کے نتائج بڑے۔ ہی دوررس تھے۔

"سید احمد شہید" کو جو پیرائے قبول عطابوا،اس کیلئے میں بارگاہ باری تعالیٰ میں سراپاشکر گزار ہوں۔ مقصود حقیق بیتھا کہ سید صاحب کی ذات گرامی کا اصل موقف غلط فہیموں اور غلط بیانیوں کے گردو غبار سے پاک ہوکر سامنے آجائے۔ امید ہے کہ موجودہ کتاب اس سلسلے میں مزید توضیح اور انشراح خاطر کا وظیفہ انجام دیے گی۔ دعاء ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے فضل وکرم ہے اسے بھی ورجہ قبول ارزانی کرے اور جوحصہ باقی ہے اسے پورا کرنے کی توفیق مرحمت فرمائے۔

مهر مسلم ٹاؤن لاہور (۱۲ر تنبر۱۹۵۵ء)

برصغير مندمين تحريك احيائ دين اورسرفر وشانه جدوجهد كي مكمل سر گذشت



پېلاباب:

سکھ پاانگریز؟

مزید شهادتوں کی ضرورت

سیرصا حب نے جومقصد ونصب العین پیش نظر رکھ کر جہاد کیلئے تنظیمات فرمائی تضیں،اس کی تشریح میں نے ''میں کردی تھی۔(۱) یہ بھی بتادیا تھا کہ اس میں کب اور کیوں کرتم بھات کا سلسلہ شروع ہوا، یہاں تک کہ نصب العین کا حلیہ بی مسنح ہوکررہ گیا۔ میں نے ہرگزارش کے شمن میں سیدصا حب کی تحریرات سے شہادتیں پیش کیں۔ ان سے وبی نتیج نکل سکتا تھا جو میں نے نکالا ،لیکن معلوم ہوتا ہے کہ ان توضیحات کی وہ روح باوجود بعض قلوب میں غالبًا اب تک شبہات باقی ہیں یا کم از کم یقین وقطعیت کی وہ روح ہیدائیں ہوئی جواس بارے میں لاز فا بیدا ہوئی چاہیے تھی۔ایک بہت بڑے صاحب علم نیج پر بیدائیں ہوئی جواس بارے میں لاز فا بیدا ہوئی چاہیے تھی۔ایک بہت بڑے صاحب علم از بار بار زورد سے کی مصلحت بچھ میں نہ آئی۔ان حالات میں ضرورت محسوں ہوئی کہ اس مسئلے کے متعلق مزید شہادتیں فراہم کی جا کیں۔ جن کے بعد کی شخص کیلئے وسوے کی کوئی مسئلے کے متعلق مزید شہادتیں فراہم کی جا کیں۔ جن کے بعد کی شخص کیلئے وسوے کی کوئی مسئلے کے متعلق مزید شہادتیں فراہم کی جا کیں۔ جن کے بعد کی شخص کیلئے وسوے کی کوئی مسئلے کے متعلق مزید شہادتیں فراہم کی جا کیں۔ جن کے بعد کی شخص کیلئے وسوے کی کوئی مسئلے کے متعلق مزید شہادتیں فراہم کی جا کیں۔ جن کے بعد کی شخص کیلئے وسوے کی کوئی مسئلے کے متعلق مزید شہادتیں فراہم کی جا کیں۔ جن کے بعد کی شخص کیلئے وسوے کی کوئی

جہاد کی بنیاد

میرے نزد کیا تو محض جہاد کی بنیاد واساس ہی پیش نظر رکھ لینے کے بعد شبر کا امکان

⁽١) ملاحظهوا سيداحرشهيد علداول ص١٦٦٢ ١١١٥

باقی نہیں رہتا۔ سیدصاحب فرماتے ہیں کہ جب اسلامی بلاد غیر مسلموں کے قبضے میں آجا کیں نوعام اہل اسلام پرعموماً اور مشاہیر حکام پرخصوصاً جہادواجب ومؤکد ہوجاتا ہے۔ (۱) پیمضمون سیدصاحب کے مختلف مکاتیب میں دہرایا گیا ہے۔

اب غور کیا جائے کہ آیا ہندوستان کی وسیع سرزمین میں سے صرف وہی حصہ مسلمانوں کے قبضے سے نکلاتھاجس پر سکھ قابض سخے اور جس کی جنوبی حددریا ہے سلم مسلمانوں کے قبضے سے نکلاتھاجس پر سکھ قابض سخے اور جس کی جنوبی حددریا ہے سلم مسلمانوں ہی کے قبضے میں سخے اور انہیں کا ٹھیا واڑ گجرات تک اور جنوباراس کماری تک مسلمانوں ہی کے قبضے میں سخے اور انہیں سے اغیار نے چھیئے سخے ،خواہ وہ مر ہے ہوں یا پرتکیز ،فرانسیسی ہوں یا انگریزیا کوئی اور ۔ کون کہ سکتا ہے کہ سیدصا حب کو شالی وغربی ہند کے صرف اس خطے کاغم تھاجس پر رنجیت سنگھ نے تسلط جمالیا تھا اور باقی حصول سے وہ بالکل بے پروا تھے؟ حالا نکہ تاریخی، جغرافیائی اور سیاسی نقط نگاہ سے باقی خطے بدر جہازیادہ اہم میں صرف قیاس واستنباط پراکتھا فرمالیئے سے حقیقت مال بخوبی آشکارا ہو سکتی ہے ، تاہم میں صرف قیاس واستنباط پراکتھا نہر وہ کے ایک شاہد کے میں موجود ہیں جن میں تصریح اہندوستان کی تطبیر کاذکر ہے ۔ نہر وں گا۔ ایسی شہاد تیں ہم میں صود جیں جن میں تصریح اہندوستان کی تطبیر کاذکر ہے ۔

سلطان ہرات کے نام مکتوب

سیرصاحب کے زمانے میں شاہ محود دُرانی (بن تیمورشاہ بن احمدشاہ ابدالی) ہرات میں عکمراں تھا۔ کابل وقد ھار بارک زئیوں کے قبضے میں جاچکے تھے، سیدصاحب نے دوسرے مسلمان حکمرانوں کے علاوہ شاہ محود کو بھی جہاد کی دعوت دی تھی۔ اس میں فرماتے ہیں:

''اقامت جہاد وازالہ 'بغی وفساد در ہرزمان وہرمکان ازاہم احکام حضرت رب العباد است ، خصوصاً دریں جز وزماں کہ وقت شورش اہل کفر وطغیان برحد ہے۔ رسیدہ کہ تخریب شعائر دین وافساد حکومت سلاطین از دست

⁽١) مكاتيب شاه المعيل شهيدتلي نسخص ٥٥، مكاتيب سيدصاحب ص ٢٣٧-

کفرهٔ متمردین و بعنات بدوتوع آمده ، واین فتنهٔ عظیم تمام بلاد مهندو سندوخراسان را فراگرفته به پس درین صورت تعافل در مقدمهٔ استیصال کفرهٔ متمردین وتسابل در باب سرزنش باغیان مفسدین از اکبر معاصی واقع آثام است به بنانه علیداین بنده در گاه حضرت الله از وظن مالوفه خود برخاسته در دیار مهندو سندو خراسان دور وسیر نموده وموشین آن اقطار و سلمین آن دیار را به این معنی ترغیب کرد به (۱)

ترجمہ: جہاد قائم کرنا اور بغات وفساد کومٹانا ہرز مانے اور ہرمقام میں خدا کا نہایت اہم حکم رہاہے۔خصوصاً اس زمانے میں جب کافروں اور سرکشوں کی شورش الیں صورت اختیار کرچکی ہے کہ سرکشوں اور باغیوں کے ہاتھوں دین شعائر بگاڑے جارہے ہیں اور شاہانِ اسلام کی حکومتوں میں ابتری پیدا کی جارہی ہے اور میرز بردست فتنہ ہند ،سندھ اور خراسان کے خطوں پر چھاگیا ہے۔اس صورت میں سرکش کافروں کی نیخ کئی سے خفلت اور مفسد باغیوں کی گوشائی ہے سہل انگاری بہت بڑا اور بہت فیج گناہ ہے۔اس بناء پر خدا کی درگاہ کے اس بندے نے اپنے وطن سے فکل کر ہندوسندھ اور خراسان کادور وکیا اور وہاں کے مومنوں اور مسلمانوں کو جہاد کی ترغیب دی۔

ظاہر ہے کہ اس پوری تحریر میں پنجاب کا ذکر تک نہیں آیا، اس لئے کہ اہل خراسان کے نزدیک وہ یا تو ہندوستان میں شامل تھایا سندھ وخراسان میں ۔ پھر جب سیدصاحب ہند، سندھ اور خراسان میں غیر مسلموں اور باغیوں کی فتندائگیزیوں کا ذکر فرما چکے تھے تو بیا بند، مندھ نہیں آسکتی کہ وہ صرف اس خطے کو فتنوں سے پاک کرنے کیلئے اٹھے تھے جس برزنجیت سنگھ قابض ہوگیا تھا۔

هندوراؤ كوتلقين

ہندوراؤ گھو مجکے دولت راؤ سندھیا والی گوالیار کا برا درنستی تھا اور سندھیا کی بیاری آل) مکاتیب شاہ المعیل شہر تھی نے من ۲۸،۳۷۔ کے زمانے میں ریاست کا انتظام اس کے حوالے ہو گیا تھا۔ یا دہوگا کہ سیدصا حب ججرت کے سلسلے میں گوالیار پنچے تھے تو ہندوراؤنے آپ کا پر جوش استقبال کیا تھا۔ ایک کمتوب میں اسے لکھتے ہیں:

"بیگانگان بعیدالوطی ملوک زمین وزمن گردیده اندوتا جران متاع فروش به پاییسلطنت رسیده امارت امرائ کهار وریاست روسائ عالی مقدار برباد کرده اند وعزت واعتبارشان بالکل ربوده و چول ابل ریاست وسیاست ورزادی خمول نشسته اند لا چار چند به از ابل نقر و مسکنت کم جمت بسته این جماعت ضعفا محفل بنابر خدمت دین رب الخلمین برخاسته اند و برگز برگز از دنیا واران جاه طلب نیستند و وقتیکه میدان بندوستان از بیگانگال و دشمنال خالی گردیده و تیرسی ایشال بر بدف مرادرسیده آئنده مناصب ریاست وسیاست به طانبین آن مسلم باد (۱)

ترجی ہے: وہ غیر جن کا وطن بہت دور ہے بادشاہ بن گئے۔ جوتا جر
سامان نی رہے تھے انہوں نے سلطنت قائم کرلی۔ بڑے بڑے امیرول کی
امارتیں اور رئیسوں کی ریاستیں فاک بیس مل گئیں۔ ان کی عزیت اوران کا اعتبار
چین گیا۔ جولوگ ریاست وسیاست کے مالک تھے، وہ گمتا می کے گوشے بیں
بیٹھ گئے۔ آ نرفقیروں اور مسکینوں بیں سے تھوڑے ہے آ دمیوں نے کم ہمت
باندھی۔ضعیفوں کا بیگروہ محض خدا کے دین کی خدمت کیلئے اٹھا ہے۔ وہ لوگ نہ
و نیادار ہیں، نہ جاہ طلب۔ جب ہندوستان کا میدان غیروں اور دشمنوں سے
عالی ہوجائے گا اورضعیفوں کی کوشش کا تیر مراد کے نشانے پر جا بیٹھے گا تو آئندہ
نے لئے ریاست وسیاست کے عہدے طالبوں کو ہی مبارک رہیں۔
غور فرما ہے کہ دور سے آئے ہوئے غیرکون تھے جو تجارت کرتے کرتے سلطنت
کے مالک بن گئے تھے۔ ظاہر ہے کہ وہ صرف انگر بزشے اور انہیں کے خلاف جنگ کے

⁽۱) مكاتيب شاه المعيل شهيد قلمي نسخه ١٤٠٠

کئے سید صاحب خود اٹھے تھے۔اسی غرض سے رؤساء وعوامِ ہند کو اٹھانا چاہتے تھے۔
بالکل اسی مضمون کا خط غلام حیدرخال کے نام لکھا جوسیدصاحب کاعزیز دوست اور قدیم
رفیق کارتھا اور اس وقت گوالیار میں ممتاز فوجی عہدے پر فائز تھا۔سیدصاحب نے اسے
تاکید کی تھی کہ یہمطالب راجا ہندراؤ کے ذہن شین کردیے جائیں۔

بديبي شهادت

آخری قطعی شہادت اس مکتوب میں موجود ہے جوشاہ محمود وُرانی والیُ ہرات کے فرزند شنرادہ کامران کے نام بھیجا گیا تھا۔اس کے آغاز میں وہی مطالب بیان فرمائے ہیں جوشاہ محمود اور دوسرے اکا برکولکھ کیکے تھے۔ مثلاً جہاد ضروری ہے۔ جب ہندوستان اہل کفروطغیان کے اثرات سےلبریز ہوگیا تو میں نے وطن چھوڑ کرخراسان کارخ کیا۔سب کو جہادی وعوت دیتار ہا۔ یوسف زئی کےعلاقے میں بیٹھاتو آفریدی، خٹک مہمند خلیل، اہل ننگر ہار،اہل سوات و بنیر ،اہل پکھلی ،راجہ ہائے کشمیروغیرہ میرے ساتھ ہو گئے۔میرامقصد حکومت نہیں، صرف کلمہ حق کی سربلندی اورسنت نبوی کا احیاء ہے۔ نیز میں اسلامی علاقوں کوسرکش کا فروں کے ہاتھ ہے آزاد کرانا جا ہتا ہوں۔ جب بیعلاقے مشرکوں اور منافقوں کے تسلط سے یاک ہوجائیں گے توانبیں مستحقوں کے حوالے کردوں گا،بشر طیکہ: · • شكر اين انعام البي بجا آرند وعلى الدوام جها درابه هرحال قائم دارند وگاہے معطل نه گزارند ودرابواب عدالت وفصل خصومات ازقوانین شرع شريف سرموتجاوز وتفاوت بهميان نيارندوا زظلم ونسق بكلي اجتناب درزند_(١) قرجهه: خداكاس انعام كاشكر بجالا كي بيشه برحالت مي جهاد قائم رکھیں مجھی اسے معطل نہ چھوڑیں ۔عدالت اور فیصلہ مقد مات میں شرع کے قانون سے بال برابر بھی تجاوز نہ کریں ظلم وفت سے بالکل بیچر ہیں۔ آخر میں فرمائے ہیں:

⁽۱) مكاتب شاه آملعيل شهيد قلمي نسخص: ٣٩٠، ٣٩ ـ

بازخودای جانب مع مجامدین صادقین به ست بلاد بهندوستان بنابرازاله گ الل کفردطغیان متوجه خوامد گشت که مقصد اصلی خود اقامت جهاد بر بهندوستان است ، نه توطن در دیارخراسان _(۱)

قسوج میں ایک کو کے کہ ہندوستان کی طرف متوجہ ہوجاؤں گاتا کہ وہاں ہے اہل کفر وطغیان کوختم کیا جاسکے اور میر ااصل مقصود ہندوستان پر جہاد ہے، ینہیں کہ خراسان میں توطن اختیار کرلوں۔سیدصاحب کے جس نصب العین کی توضیح میں نے کی ، اس کے متعلق اس سے واضح اور روثن ترشہادت کیا ہو کتی ہے؟

مومن کی شہادت

ہمارے ہاں کے مشہور شاعر مومن بھی سید صاحب کے مرید تھے۔ ان کے فاری کام کام کے ایک نعتیہ قصید ہے میں دعائیہ اشعاراس حقیقت کا مزید ثبوت پیش کررہے ہیں کہ سید صاحب اور ان کے تمام نیاز مندوں کے نزویک تطہیر ہند کے سلسلے میں مرکزی حیثیت انگریزوں ہی کو حاصل تھی۔ مومن فرماتے ہیں:

جان من و جان آفرینش! این عیسویان به لب رساندند مگزار کہ بائمال گردیم آفرينش زال سیم سران <u> آفرینش</u> فارغ ز فغان تاچند بہ خواب ناز باثی مومن شده ہم زبان عرتی ۶ فرینش از بیر امان كفر برخاست "پرخيز که " آفرینش'' فتنه نشانِ

⁽١) مكاتيب شاه المعيل شهيد قلى ص: ۴، ۴، ۴مكاتيب سيد صاحب ص: ٢٣ ـ

دو*سرا*باب:

تنظيم کی بنیاد

اميرخال كي معيت

میراخیال ہے کہ سید صاحب ای زمانے میں جماعت کی تنظیم وتاسیس کے متعلق غور وکر میں مشغول ہوگئے تھے، جب وہلی میں علم وسلوک کی تصیل سے فارغ ہوکر وطن پنچے تھے اورا پی زندگی خداکی راہ میں جہاد کیلئے وقف کر دی تھی۔ ابتدا میں بیروال ان کے سامنے آیا ہوگا کہ مستقل جماعت کی بنیا در تھیں یا پہلے ہے کسی قائم شدہ جماعت کو تعلیم وتر بیت دے کران مقاصد عظیمہ کیلئے تیار کر دیں ، جنہیں وہ ایک سے مسلمان کی زندگی کے لوازم سجھتے تھے مستقل جماعت کی تاسیس وقت طلب تھی اور ہندوستان کی فضا اس تیزی سے اسلامی مقاصد کیلئے ناسازگار ہور ہی تھی کہ اصل کام میں تھوڑ اساتو تف بھی گوار آئیں کیا جا سکتا تھا۔ قائم شدہ جماعت کو احیاء اسلامیت اور آزاد کی وطن کی راہ پر لگاد ہے کیلئے نسبتاً کم جدو جہد درکارتھی ، لہذا انہوں نے نواب امیر خال کے پاس پہنچنے کا فیصلے کیا ، وہ اس وقت کے ہندوستان میں سب سے بوی آزاد جنگی قوت کا مالک تھا۔ شجاعت وجوانم ردی میں اس کی دھاک دور دور تک میٹھی ہوئی تھی۔ دین داری اور اسلامی حمیت میں بھی اسے خاص شہرت مصال تھی اور اس سے سیدصاحب ہے خاندانی تعلقات بھی تھے۔

سید صاحب ای ارادے سے نواب کے پاس راجیوتانہ پنچ اور کم وہیش سات سال اس کے لٹکر میں رہے۔ انہوں نے جاتے ہی اہل لشکر کی اصلاح کا سلسلہ جاری کردیا۔ راویوں کا بیان ہے کہ آپ کی وجہ سے لشکر کی عام حالت میں زبردست تغیر پیدا ہوگیا۔ فسق وفجور مٹ گیا، کتاب وسنت کی پیروی عام ہوگئ،نواب نے انہیں مشیران غاص میں شامل کرلیا تھا۔ یقین ہے کہ اصل مقاصد کی طرف بھی وہ نواب کی توجہ منعطف کراتے رہتے ہوں گے۔

مستفل جماعت کی بنیاد

جب تک نواب انگریزوں کے اثر سے آزاد رہا،سیدصاحبؓ نے اس کا ساتھ نہ چھوڑا۔ جب انگریزوں سے ملح کی بات چیت شروع ہوگئ تو نواب کے رفیقوں اور مشیرول میں سے سید صاحب اسکے مخالف تھے۔وہ برابر یہ رائے دیتے رہے کہ انگریزوں سے ازیں اور خداکی مدد پر بھروسہ رکھیں۔افسوس کہ نواب اس رائے پرعمل نہ کرسکااورمعاہدے بردستخط ہونے سے پیشتر سیدصاحبؓ نے اس کا ساتھ جھوڑ دیا۔ پھر د ہلی پہنچ کرمستقل جماعت کی تاسیس کا فیصلہ کیا، جس کیلئے ان کی خداداد صلاحیتیں سات سال میں خاصی نشو ونما یا چکی تھیں۔

اس کام کا آغاز احیائے دین اور تزکیه قلوب سے ہوا۔ وقت کے بعض مشہور علماء نے سیدصاحبؓ سے بیعت کی رمثلا مولا نامحمہ بوسف پھلتی بمولانا عبدالحی بر حانوی اور شاہ اسلعیل۔اس کی عام صورت وہی تھی جوتصوف کے مختلف خانوادوں میں پہلے سے رائج چلی آتی تھی اوراب تک رائج ہے،لیکن اس میں ایسی غیر معمولی جاذبیت تھی،جس کی کوئی نظیراس دور میں نہیں ملتی ۔بس اس کے ساتھ ہی ارشاد وہدایت کا ایک وسیع سلسلہ جاری ہوگیا۔ پھرسید صاحب نے گنگا وجمنا کے دو آبے کا دورہ کیااور ہزاروں مخلص مسلمان ان کے حلقہ کرادت میں داخل ہو گئے۔وہ عام پیروں کی طرح ارادت مندوں کو ''توجه'' بھی دیتے تھے،جس کی کیفیت بیان کرتے ہوئے بعض اصحاب نے لو ہاروں کی دھونکنی سے تشبیہ دی۔بعض نے فرمایا کہ توجہ کے دفت صاف معلوم ہوتا تھا کہ دل سید صاحب کے قلب صافی سے معرفت کے مضامین من رہا ہے۔ (۱)

دورے کے سلسلے میں وہ پھلت پنچ تو ورزش شروع کردی۔ باز دؤں اور شانوں پر مالش کراتے تھے۔ حالاں کہ عام پر الش کراتے تھے۔ حالاں کہ عام پیروں کواس قتم کے مشاغل سے کوئی تعلق نہ تھا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ مسلمانوں میں قبول عام کا اندازہ کرتے ہوئے انہوں نے مقاصد جہاد کی تبلیغ شروع کردی تھی۔ یہ جماعت کی تنظیم کا سنگ بنیاد تھا۔

فنونِ جنگ کی مثق

دوآ بے کے دورے سے فارغ ہوکر وطن پنچ اور سفر جے سے پیشتر تقریباً دوسال (۲)
انہوں نے رائے بریلی ہی میں گزارے۔اگر چاس اثناء میں مختلف مقامات کے دورے
بھی کرتے رہے، اس زمانے میں بیعت بھی لیتے تھے، وعظ بھی فرماتے تھے جوعموما
پابندگ کتاب وسنت اور ردِ بدعات پر مشتل ہوتے تھے۔مسلمانوں میں صلح بھی کراتے
تھے، ان میں اسلامی حرارت بھی پیدا کرتے تھے۔ ان کے ارادت مندعموماً ذکر وفکر اور
مراقبوں میں مشغول رہتے تھے۔ ایک سے مم دے دیا کہ اب تمام رفیق زیادہ وقت جنگی
فنون کی مشق میں صرف کیا کریں اور فرمایا:

ان دنوں دوسرا کام اس ہے افضل در پیش ہے، اب اس کی طرف ہمارا دل مشغول ہے، یعنی جہاد فی سبیل اللہ اس کے سامنے حال کی مجھ حقیقت نہیں، اس واسطے کہ وہ کام یعنی سلوک اس (جہاد) کے تابع ہے۔ اگر کوئی شخص تمیں ، اس واسطے کہ وہ کام رات زمدور یاضت میں بسر کر ہے، یہاں تک کہ نوافل پڑھتے پڑھتے پیروں پرورم آجائے اور دوسر اشخص جہاد کی نیت ہے ایک ساعت دن یا رات کورنجک اڑائے تا کہ وہ مقابلۂ کفار میں بندوق لگاتے وقت ساعت دن یا رات کورنجک اڑائے تا کہ وہ مقابلۂ کفار میں بندوق لگاتے وقت

(۱) "منظوره" ص ۲۲۱ [(۱) تم رمضان ۱۲۳۴ ه - سلح شوال ۱۲۳۱ ه

آ کھے نہ جھیکے تو وہ عابداس مجاہدے مرہے کو ہر گزنہ پہنچ گا۔

ای وقت سے سیدصاحب کے ارادت مندوں کا زیادہ وقت فنونِ جنگ میں صرف ہونے لگا۔ مثلاً تیر، بندوق ، تلوار چلانا، پھری گد کا کھیلنا، ڈیٹر پیلنا وغیرہ ۔ خودسید صاحب کے بیان سے معلوم ہوتا ہے کہ اس سے پیشتر ارادت مندیا تو گردن ڈالے عالم سکوت میں رہتے تھے یا کمبل اوڑ ھ کر مجد کے کونے میں بیٹھ جاتے یا چاور لپیٹ کر ججرے میں میں رہتے تھے یا مراقعے کیلئے جنگل میں چلے جاتے۔

تنظيم كى حيثيت

اس سے ظاہر ہے کہ سیدصاحب نے اسلامیت کو جماعتی تنظیم کی اصل واساس بنایا اور تمام تر تعبات اسلامی اصول کے مطابق رکھیں۔ وہ چاہتے ہتھے کہ مسلمان اسلامیت کے پیکر بین جا کیں اور خدا کی راہ میں جہاد کو اپنا نصب العین بنالیں۔ ان کا مقصد رضائے باری تعالیٰ کے سوا کچھ نہ ہو ۔ حکومت وسلطنت، جاہ وجلال اور مال ومتاع کی آلائش سے ان کے قلب وروح کا دامن آلودہ نہ ہونے یائے۔

پھرانہوں نے ابتدائی سے افراد جماعت کومخت ومشقت اور ہرفتم کے شدا کد کی ہرداشت کا عادی بنایا۔ اس کے بغیر وہ لوگ راہ جہاد میں قدم رکھنے کے اہل نہ بن کئے تھے۔ ان کے ارادت مندوں میں وقت کے ممتاز ترین عالم اور بلند پایدار باب شروت بھی شامل تھے، لین تھوڑی ہی مدت میں انہوں نے غذا، لباس اور بودو ماند میں ایسا طریقہ افتیار کرلیا کہ وہ جماعت کے فرباء سے کسی رنگ میں بھی ممتاز نہ رہے۔ سیدصا خب سفر حج کے سلسلے میں ہگلی بہنچ تو ایسٹ انڈیا کمپنی کے وکیل مشی امین الدین احمد کمکت سے استقبال کیلئے آئے ہوئے تھے۔ سیدصا حب سے مل تھائے کے بعد انہوں نے شاہ اسلیل سے ملاقات کی۔ شاہ صاحب کالباس اس درجہ تھیرتھا کہ مشی صاحب کو یقین نہ آیا کہ یہ

شاہ عبدالعزیز محدث کے بیتیج ہیں۔جب انہیں بتایا گیا کہ بھی شاہ اسلعیل ہیں تو ان کی سادگی اور بے تکلفی و کم کھونٹی صاحب ہے اختیار آبدیدہ ہو گئے۔میر فیض علی گور کھیوری، میر ذوالفقار علی خال رکیس اعظم کے فرزند تھے۔سیدصاحب کی معیت میں میر فیض علی کی وضع اس درجہ بدل چکی تھی کہ سید جعفر علی نقوی بغرض جہادامب پہنچ تو میر فیض علی سے محمر ے دوستانہ تعلقات کے باوجود انہیں بہیان نہ سکے۔

غورطلب امور

سیدصاحب نے بیطریقے ای وجہ سے اختیار کیے تھے کہ ان کی تحریک خالص دین مقی۔ وہ مسلمانوں کو سلطنتیں ولانے کیلئے نہیں ،صرف سپچ مسلمان بنانے کیلئے اٹھے تھے۔سلطنتیں اسلامیت کا ایک خمی ٹمرہ تھیں۔خوب خور کیا جائے تو عام مسلحتوں کے لحاظ سے بھی کسی وائ جہاد کیلئے ان طریقوں کے سواچارہ کا رنہ تھا۔سید صاحب کے پاس نہ مال ودولت کے خزانے تھے، نہ ان کے پاس کوئی چھوٹی یا بڑی سلطنت تھی کہ تخواہ دار مجاہدین کا خرجی برداشت کر لیتے۔

ان سے پیشتر ہندوستان میں متعدد طالع آزما پیدا ہو بھے تھے، جنہوں نے جھوٹے جھوٹے جھوٹے جیش جمع کر کے لڑا کیاں شروع کیں اور آ ہستہ آ ہستہ بڑی قوت کے مالک بن مجھوٹے بیش جمع کر کے لڑا کیاں شروع کیں ان کا طریقہ اختیار کرتے تو نہ کوئی دی بھے مثلاً نواب امیر خال سید صاحب بھی ان کا طریقہ اختیار کرتے تو نہ کوئی دی خدمت انجام دے سکتے ، نہ بجاہدین کی ایسی جماعت تیار ہو سکتی جو پیش نظر مقاصد کی خاطر اپناسب بچے قربان کردینے کیلئے آمادہ ہوتی ۔

بہتر سے بہتر حالات میں ایس جماعت کے ذریعے ہے کوئی ریاست حاصل کرنے کا بندوبست ہوجا تا الیکن کلمہ کت کی سربلندی ،سنت ِرسول اکرم صلی الله علیہ وسلم کا احیاء اورتطبیر بند کے مقاصد کیوں کر پورے ہو سکتے تھے؟ سوال ینہیں کہ یہ مقاصد سیدصاحب ک زندگی میں پورے ہوئے یانہ ہوئے ، سوال یہ ہے کہ ان مقاصد کیلئے نتیجہ خیز کام کے انظام اوراس کے استحکام کی تدبیر کیاتھی؟ وہی تھی، جس کا بند و بست سیدصا حب نے کیا۔
انہیں کے زمانے میں تفقاز کے عظیم القدر مجاہد سلطان شامل نے وین ہی پراپئی تحر کیے جہاد کی بنیا در تھی اور سیدصا حب کی شہاوت ہے تقریباً چالیس سال بعد شخ محمد احمد نے جود مہدی سودان 'کے لقب سے مشہور ہیں، دین ہی کی بنا پروہ تحریک جاری کی جس نے جود سال میں سودان کو مصریوں اور انگریزوں کے قضے سے آزادی دلادی۔

دعوت وتبليغ كاانتظام

اسلط میں سیدصاحب نے دعوت و تبلیغ کا انتظام اس پیانے پرکردیا کہ ان کے سرحد تشریف لیجانے کے بعد بھی ہندوستان کے مختلف حصوں میں تبلیغ برابر جاری رہی۔ انہوں نے بہاں بھی جا بجادا کی مقرر کردیے تھے، سرحد بہنج کر بھی مختلف دا کی ہندوستان کے مختلف علاقوں میں تبعیج ۔ مثلاً مولا تا سید محمد علی رام پوری کو حیدر آباد وکن بھیجا۔ پھر حیدر آباد میں مولا تا ولا بیت علی عظیم آبادی کو مقرر کردیا اور مولا ناسید محمد علی کو مدراس جانے کا تھم دے دیا ۔ مولا ناحزا میں دا کی مقرر کردیا ۔ مولا ناسید اولا و سید تو جی میاں محمد مقیم رام پوری ہسید زین العابدین ، مولا ناکر است علی جون پوری اور بیسوں دوسرے اشخاص مختلف علاقوں اور شہروں میں سیکام انجام دیتے رہے ، بلکہ سید صاحب کے اراوت مندوں میں سے ہم شخص یا تو جہاد میں شریک ہوگیا یا اپنے علقے میں احیاے دین ، دعوت جہادا ورفر ابھی زرکا کام انجام دیتے رہے ، بلکہ سید میں احیاے دین ، دعوت جہادا ورفر ابھی زرکا کام انجام دیتے گا۔

اس حقیقت میں کوئی شبہ نہیں کہ ہندوستان میں ایسی کسی دین تحریک کا سراغ نہیں ملتا، جس نے دورِ زوال میں مسلمانوں کے عقائد واعمال کی اصلاح اور ان میں حمیت اسلام کے احیاء کے ایسے عظیم الشان کارناہے انجام دیے ہوں، جیسے سید صاحب کی تحریک نے انجام دیے۔

تيسراباب:

عسكرى تنظيمات (١)

مجامدين كي جماعتيں

سیدصا حب نے بچاہدین کی سرسری جماعت بندی تو غالبًا جہاد کیلئے روائگ سے پیشتر ہی کر کی تھی ۔ فتلف روا تیوں سے معلوم ہوتا ہے کہ پہلی با قاعدہ جماعت بندی رائے بر پلی سے گوالیار بہنچ کری ۔ تمام مجاہدین کو جن کی تعداد تقریباً ساڑھے پانسوتھی ، با قاعدہ پانچ جماعتوں میں تقسیم کیا اور انکے الگ الگ سرعسکر مقرر فرمادیے ، نیز تھم دیدیا کہ قیام وسفر میں ہر جماعت ای تقسیم کے مطابق عمل پیرار ہے۔ اس تقسیم کی کیفیت ذیل میں درج ہے ۔ میں ہر جماعت ای تقسیم کی کیفیت ذیل میں درج ہے ۔ میں ہر جماعت ای تقسیم کے مطابق تھی ۔ اس تقسیم کی کیفیت ذیل میں درج ہے ۔ کہ سامت محاسب خاص : یہ جماعت قیام وسفر میں قلب اشکر مجھی جاتی تھی ۔ اس کے سرعسکر مولا نامحمہ یوسف کی وفات سے حفود کی دوات کے بعد مولوی محمر مقرر ہوئے ۔ ان کی شہادت پر بیع ہدہ میاں ضیاء الدین پھلتی کو وے دیا گیا۔

(۲) مقدمه الحبیش: بیجاعت سفرمیں سب سے آگے دہی تھی۔اس کے معکر شاہ آسکی مقرر ہوئے ۔ال کے سرحسر شاہ آسکے ساتھ دہتے تھاور ان کی جگہ سیدر سم علی کارگز ارمقرر ہوگئے تھے۔ ان کی جگہ سیدر سم علی کارگز ارمقرر ہوگئے تھے۔

سے فاہرہوتا کے میں جاعت کے مرحسکرامجد خال رکیس کتنی تھے۔ نام سے فاہرہوتا ہے کہ بہصورت جنگ یہ جماعت میمند پراڑنے کیلئے مامورتھی۔امجد خال پچھ مدت بعد

بسلسله کارخاص واپس آ گئے تھے معلوم نہ ہوسکا کہان کے بعد کون سر عسکر ہے۔

(۷) مبسوہ: اس جماعت کے مرعسر سیدصاحب کے بیتیجسید محمد یعقوب میں اس کے بیتیجسید محمد یعقوب سے انہیں بعض ضروری کاموں کے سلسلے میں ٹونک چھوڑ نا پڑا تو شخ بڑھن ان کی جگہ نیا بناسر عسکر بن گئے ۔ شخ موصوف اکوڑہ کی جنگ میں شہید ہوگئے ۔ سید محمد یعقوب دوران جہاد میں سیدصاحب کے پاس نہ بینج سکے، البذا اس جماعت کی قیادت پر میاں صلاح اللہ بن بھتی مامور ہوئے ۔ پھر بیمنصب مولا نا احجد اللہ نا گردی کوئل گیا۔ جنگ بالا کوئ تک وہی مرعسکر تھے۔

(۵) سافة المجیش: بیجاعت چکر وں اور گاڑیوں کے ہمراہ چلتی تھی۔
سب سے پہلے روانہ ہوتی اور عموماً سب کے بعد منزل پر پہنچی۔ اس کے سرعسکر اللہ بخش
خال مورانوی تھے، جنہیں سیدصاحب نے جنگ اکوڑہ میں مجاہدین کا سالار بنایا تھا اور وہ
اسی جنگ میں شہید ہوئے۔ ان کے بعد پیرخال، شیخ حسن علی مجمد خال خیر آبادی، ابراہیم
خال خیر آبادی کے بعد دیگرے اس جماعت کے سرعسکر رہے۔

باقى جماعتيں

ابتدائی تقسیم یہی تھی۔ پھر جماعتوں یا جیثوں کی تعداد میں اضافہ ہوگیا۔ ایک روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ ان جیثوں کی تعداد نوتک پہنچ گئی تھی،ان میں سے تین جماعتیں قندھاریوں کی تھیں اور ایک مرزااحمد بیگ پنجائی کی۔قندھاری جماعت کے مرطکر عام ملافعل محمد شھے۔ مرطکر عام ملافعل محمد شھے۔ مرطکر عام ملافعل محمد شھے۔ ووسری کے معافر خاں قندھاری ۔

مرزااحمد بیگ کی جماعت کا قصہ یوں ہے کہ قیام خمر کے زمانے میں سیدصاحب نے بعض رفیقوں کے مشورے سے تنخواہ دارفوج بھی بھرتی کرنے کا فیصلہ کیا تھا۔اخوند ظہوراللہ نے دوسوآ دی پانچ روپٹے فی کس کے حساب سے بھرتی کر لیے۔ دومہینے بعد قرار پایا کہ ابھی شخواہ دارفوج رکھنے کا وقت نہیں آیا۔ چنانچ سیدصاحب نے اس فوج کے تمام آ دمیوں کو مقرر ہنخواہ و رے دی، پھران کے سامنے فضائل جہاد پر وعظ فر مایا۔ ان میں سے جالیس آ دمیوں نے ہندوستانی مجاہدوں کی طرح فی سمیل اللہ جہاد کا فیصلہ کرلیا اور ان کی الگ جماعت بنادی گئی۔ اس کے عسکر مرز ااحمد بیگ ہنجا بی تھے۔ بی مختلف مجاہدات کی الگ جماعت بنادی گئی۔ اس کے عسکر مرز ااحمد بیگ ہنجا بی تھے۔ بی مختلف مجاہدات میں شریک رہے اور بالاکوٹ میں شہادت پائی۔

جیسا کہ بتایا جا چکا ہے، ابتدائی سر عسکر شہید یا فوت ہوتے رہے تو انکی جگہ دوسر عسر مقرر ہوگئے ۔ بعض خاص مہمات کیلئے سید صاحب خود سر عسکر مقرر فرما دیتے تھے۔
مثلا انک پر حملے کیلئے مجاہدین کو بھیجا گیا تو ارباب بہرام خال تہکا لی کوسالا راعظم بنایا
عمل اکثر معرکوں میں مولانا شاہ آسمتیل امیراعلی مقرر ہوئے۔ امب اور چھتر بائی کے
قلعوں کی حفاظت کیلئے علی المرتب بی جنٹ اور مولانا مصطفیٰ کا ندھلوی کو امیر مقرر کیا
گیا تسخیر امب کے بعد ضلع ہزارہ میں چیش قدی کا فیصلہ ہوا تو سیدا حمیلی کو مجاہدین کا قائد
عام بنادیا گیا۔ وہ جنگ بھولڑہ میں شہید ہوئے۔ اس قسم کی اور بھی مثالیں ملتی ہیں۔ مولانا
محمد یوسف کی وفات پر تو شد خانہ کا انظام شخ ولی محمد کے حوالے کیا گیا جومولانا مرحوم کی
زندگی میں ان کے معاون و چیش کا رہے۔

بہیلے یادستے

ہر جماعت متعدد بہیلوں یادستوں میں منقسم تھی۔ ایک بہیلے میں کم ہے کم ہیں، زیادہ سے زیادہ پچپس آ دمی ہوتے تھے۔مقررہ دستور کے مطابق پورے بہیلے کا کھانا ایک جگہ پکتا تھا۔جتنی نفری ہوتی رسد خانے ہے ہر بہیلے کورسدمل جاتی تھی۔ لکڑیاں اور پانی بہیلے کے مختلف آ دمی باری باری لایا کرتے تھے۔جنس سب کو مسادی مقدار میں ملتی تھی۔ چھوٹے یا بڑے، سرعسکر یاسپاہی میں کوئی فرق نہ تھا۔ حتی کہ خود سید صاحب بھی اس مساوات سے متنی نہ تھے۔ جنگل سے لکڑیاں کا کے کرلانے کیلئے دن مقرر ہوجا تا تھا۔ سید صاحب بھی اپنی جماعت کے ساتھ جاتے اور لکڑیاں کا نیچے۔ کھانے میں انہیں بھی کوئی امتیاز حاصل نہ تھا اور نہ انہوں نے بھی اسے پند فر مایا ، البتہ مہمان آجاتے تو ان کیلئے نبتا الجماعات بھی کر کھاتے۔ اچھا کھانا پکتا اور سید صاحب آواب میزبانی کی پابندی میں انکے ساتھ بیٹھ کر کھاتے۔ بعض اوقات عین کھانے کے وقت مہمان آجاتے تو ہر بہلے سے تھوڑ اتھوڑ اکھانا منگواکر کھی اوقات عین کھانے کے وقت مہمان آجاتے تو ہر بہلے سے تھوڑ اتھوڑ اکھانا منگواکر کھی اوقات عین کھانے کے وقت مہمان آجاتے تو ہر بہلے سے تھوڑ اتھوڑ اکھانا وں کو کھی اوقات کے بعد کی بھیلے میں بیٹھ کر تھوڑ اسا کھالیتے۔

دسالداد

سیدصاحب کی فوج میں چھوٹا سا رسالہ بھی تھا۔ اس کیلئے ابتدا میں کوئی رسالدار مقرر کردینا مقرر نہ کیا گیا۔ جنگ زیدہ کے بعد سیدصاحب نے فرمایا کہ کسی کورسالدار مقرر کردینا چاہیے۔ سیدا جمع کی بریلوی نے جمزہ علی خال او ہاری والے کا نام پیش کیا۔ شاہ اسلمیل نے عبدالحمید خال کو اس عہدے کیلئے موزوں قرار دیا۔ ارباب بہرام خال نے شاہ صاحب کی تائید کرتے ہوئے کہا کہ عبدالحمید خال واقعی فن سید گری میں بڑے ہوشیار، تجرب کا راور بہا در ہیں۔ سیدصاحب نے انہیں کے حق میں فیصلہ کیا۔ پھر اپنا عمامہ دست مبارک سے مبدالحمید خال کے سریر با ندھا، نیز انہیں ایک رومال، سنہری قبضے کی ایک سروہی، ایک عبدالحمید خال کے سریر با ندھا، نیز انہیں ایک رومال، سنہری قبضے کی ایک سروہی، ایک توار اور ایک گھوڑا عنایت فر مایا۔ بر ہند سر ہوگر ان کیلئے دعاء کی ۔ اس کے بعد عبدالحمید خال تھکر میں رسالدار کے لقب سے مشہور ہوگئے۔ جنگ مایار میں بڑی جوانم دی سے خال تھکر میں رسالدار بنایا گیا۔

رسدكاا نتظام

سرحد و تنجینے کے بعد ابتدائی دور میں مجاہدین کواکٹر و بیشتر رسد کی تکلیف رہی۔ بیشن اوقات سفر میں کھانا پکانے کا موقع نہ ماتا تھا۔ بعض اوقات ضرورت کے مطابق جنس عی ہاتھ نہ آتی تھی۔ مثلاً جنگ شید و سے پیشتر مجاہدین کوسا مانِ معیشت حاصل کرنے میں ہوئی وقتیں پیش آئیس۔ سید صاحب جوروپیرساتھ لے گئے تھے، وہ ختم ہو چکا تھا اور انتظام کے مطابق جن رقبوں کا انتظارتھا، وہ پیچی نتھیں۔ یا یہ بچھ لیجئے کہ جورتمیں ہنڈیوں کی شکل میں آئی تھیں ان کا روپیرسا ہوکا روں سے نہ ملاتھا اور کسی پر ہوجھ ڈالنا یا سوال کر تاسید صاحب کی عادت شریف اور شانِ تربیت کے خلاف تھا۔

اس زمانے میں اکثر فاقے کرنے پڑتے یا مجاہدین ساگ پات کھاکر گزارہ کر لیتے۔ جنگ شیدو کے بعد چنگائی میں بھی حالت عسرت قائم رہی۔ بھی بھی روزانہ شی مجر جوار طفظتی۔ تندرست غازی ہیں کرروٹی پکالیتے ، بیاروں کیلئے پانی میں ابال کرآش سی بناد ہے۔ جب جوار بھی نہاتی تو باہر نکل جاتے اور جنگل میں جڑی بوٹیاں تلاش کرتے یاان درختوں کے بیتے تو ٹر لاتے جو کھانے میں بدمزہ نہ ہوتے اور پانی میں جوش دینے یاان درختوں کے بیتے تو ٹر لاتے جو کھانے میں بدمزہ نہ ہوتے اور پانی میں جوش دینے سے گل جاتے۔ انہیں میں نمک ڈال کر کھالیتے۔

جب روپیرآن لگا تو جہاں سے رسدال عتی ،مقررہ آدی سرکاری اونٹ لے جاکر خریدلاتے اور مجاہدین میں برحصہ مساوی تقسیم ہوجاتی سرحد میں عشر کی با قاعدہ تقسیل کا انظام ہوگیا تو ضرورت کے مطابق غلہ فراہم ہونے لگا۔موضع مینکی میں پانچ پن چکیاں سیدصا حب نے اپنے انظام میں لے لیں اور سید حامد علی تھنجھا نوی کو چیس تمیں مجاہدین کا سردار بناکرمینکی میں بٹھا دیا گیا۔وہاں کے خان نے تین متصل مکان خالی کرادیے،ایک میں غلہ جع رہتا، دوسرے میں آٹا اور تیسرے میں مجاہدین تھے۔ پنجتار سے غلہ اوشوں

اور خچروں پرلا دکرمینی بھیجا جاتا، وہاں ہے آٹا پس کر آجاتا۔ گندم اور مکی کی مقررہ پیوائی پن چکیوں کے مالکوں کو اداکی جاتی۔ گندم فی من ایک سیروس چھٹا تک، مکی فی من اڑھائی سیر۔

اس کے بعد بھی مختلف اوقات میں مجاہدین کو تکلیفیں پیش آتی رہیں۔ جب تک عشر کا انتظام نہ ہوا تھا، مجاہدین یا تو اپنے ہاتھ سے غلہ پینے یا اجرت دے کر پسوا لینے۔ آئے کے ساتھ مجاہدین کوئی سم مٹھی بھر دال دی جاتی تھی۔ بھی بھی گوشت بھی تقسیم ہوتا تھا۔ ایک روایت سے معلوم ہوتا ہے کہ سید صاحب کے پاس اعانتی رقمیں مسلسل پینچنے لگیس تو کسی قدر گھی بھی مجاہدین کیلئے خرید لیا جاتا تھا۔

رسدكى تقتيم

تقسیم رسد کا پیاندایک تام لوث تھا جس میں تین پاؤ غلہ یا آٹاسا تا۔ بیرائے بریلی سے سید صاحب نے اپ ساتھ لے لیا تھا، یعنی پوری رسد ابتدا میں تین پاؤ بومیتی ۔ اگر جنس کم ہوتی تو ای تناسب سے فی کس مقدار بھی کم کردی جاتی ۔ جب عشر کا غلہ با قاعدہ وصول ہونے لگا تو رسد تین پاؤ کے بجائے ایک سیر فی کس کردی گئی۔ جتنے مہمان آجاتے ،سید صاحب کے آدمی ان کیلے بھی فی کس رسداس حساب سے لے لیتے۔

رسدلائے اور تقییم کرنے کا انظام مختلف اصحاب کے ہاتھ میں رہا۔ ابتدا میں مولانا محمد یوسف پھلتی اس خدمت پر مامور تھے۔ نواب وزیرالدولہ نے لکھا ہے کہ ہرجنس ہرخض کو بالکل مساوی مقدار میں دیتے اور سید صاحب کو بھی رتی بھر زیادہ نہ دیتے۔ بعض اوقات سید صاحب مزاعاً فرماتے کہ جمھے زیادہ کیوں نہ دی، تو عرض کرتے کہ ہر چیز خدمت والا میں پیش کرنے کیلئے حاضر ہوں، لیکن مجھے تقسیم کا تھم دے رکھا ہے اور اس سلسلے میں مساوات کی یابندی پر مجبور ہوں۔ (1)

⁽۱) وصایا حصدوه م ۱۹۲۰

میرا آمانت علی (ساڈھورہ میرال، پٹیالہ) کے ذیے بھی پیکام رہا۔وہ اسنے مختاط تھے کہ جب کوئی مجاہد آکر کہتا میر ہے بہلے میں آج ایک یا دومہمان ہیں تو سیدصا حب سے اجازت لینے چلے جاتے۔ بلا اجازت زایدرسد نہ دیتے۔اس طرح تقسیم میں دیرلگتی اور شکایتیں ہوجا تیں۔

پھر شیخ عبدالوہاب لکھنوی تقسیم رسد پر مامور ہوئے۔وہ کمزور نحیف آ دی تھے۔ مختلف عوارض میں مبتلا ہونے کے باوجود قرآن مجید حفظ کرلیا تھا۔تقسیم رسد کے ساتھ ساتھ قرآن بھی پڑھتے جاتے۔ ہر فخص کو ترتیب آمد کے لحاظ ہے جنس دیتے۔ چھوٹے یا بڑے کا کوئی امتیاز نہ تھا۔ حکیم قمرالدین پھلتی اور مولوی نور احمد نگرامی مورّخ اسلام مولوی عبدالوہاب کے معاون تھے۔ کام بڑھ جاتا تو منشی محمد قاسم پانی پڑی کے والد ما جدمیاں غلام محمد کو بھی امداد کیلئے بلالیا جاتا۔

لياس

ہر مجاہد کوسال بھر کیلئے کھادی کے تین جوڑ ہے کپڑ ہے اور دو جوڑ ہے جوتے ضرور دیے جاتے تھے۔ کسی کے کپڑ ہے جلد بھٹ جاتے یا گم ہوجاتے تواسے نئے کپڑ ہے دے دیے جاتے ہے۔ مردیوں کیلئے ہرایک کوایک ایک دگلہ یا میرزئی اور ایک ایک دو ہر ملتی تھی۔ ہر جمعرات کو کپڑ ہے دھونے کیلئے سراسم صابون کی دودو ٹکیاں دی جاتیں۔ بیاروں کیلئے مراسم صابون کی دودو ٹکیاں دی جاتیں۔ بیاروں کیلئے دوا کا انتظام بھی بیت المال ہے ہوتا تھا۔

سیدصاحب نے مجاہرین میں ایسی دینی روح پیدا کردی تھی کہ وہ زندگی کے ہرکام کو عبادت سمجھ کرانجام دیتے تھے۔ان میں محبت واخوت کے شکام رشتے موجود تھے، جوایک خاندان کے مختلف افراد میں بھی شاذ ہی ملیں گے۔اس لئے عموماً ایسا ہوتا کہ جومجاہدا پنے کپڑے دھونے کیلئے پہلے اٹھتا، وہ اپنے دوتین ساتھیوں کے کپڑے بھی لے جاتا۔خود

سیدصاحب ترغیب کی غرض سے اپنی زندگی کے مختلف واقعات بیان فر ماتے رہتے۔مثلاً کہتے کہ ہم نواب امیر خال کے لئکر میں تھے تو کپڑے دھونے کے وقت اپنے پانچ سات ساتھیوں کے میلے کپڑوں کا بھی گٹھا باندھ کر لیجاتے۔ساتھی ہر چنڈنییں نہیں کرتے ،ہم ایک ند شفتے۔

ایک روثن حقیقت

چوتھا ہا ب

عسکری تنظیمات (۲)

زخميول كأعلاج

لشکر اسلام میں جراحی کا صیغہ بھی ابتدائی سے قائم تھا اور اس میں وقت کے ماہر جراح کام کرتے تھے۔مثل کر یم بخش، رحیم بخش اور ان کے بھائی نور بخش شاملی والے اور عبد الرحیم جن کا وطن معلوم نہیں۔ ان کے نام بعض واقعات کے سلسلے میں آگئے ہیں۔ میرا خیال ہے کہ اس محکمے میں کارکنوں کی تعداد خاصی بڑی ہوگ ۔ بدلوگ با قاعدہ زخم دھوتے نے، گولیاں نکالتے تھے۔ جہاں زخموں کو سینے ضرورت ہوتی تھی، سیتے تھے اور ان پرم ہم لگا کر بٹیاں باندھ دیتے تھے۔ عام مجاہدین کی طرح یہ لوگ بھی خدمت وین کی غرض سے سیدصاحب کے ساتھ ہوئے تھے۔

ایسی مثالیں بھی ملتی ہیں کہ ان میں ہے بعض جراح عام مجاہدوں کے دوش بدوش اور نور تے میدانِ جنگ ہیں شہید ہوئے۔مثلاً رحیم بخش جراح جنگ پھولڑہ میں اور نور بخش جراح جنگ پھولڑہ میں اور نور بخش جراح جنگ بالاکوٹ میں۔کریم بخش جراح نے اہل سمہ کی قاتلانہ سازش کے دوران میں بدمقام سدم شہادت پائی۔حاجی جانی امیٹھوی بھی لشکر اسلام کے بڑے ماہر جراح تھے۔جان محمد جراح رام پوری اور عبدالرحیم جراح جاسٹھی کے نام بھی خدکور ہیں، جنہوں نے جنگ بالاکوٹ کے بعدا تگرائی میں زخمیوں کی مرہم پٹی کی تھی۔

مجامدین کو پہلی جنگ اکوڑہ میں پیش آئی تھی۔اس کے حالات میں واضح طور پر مرقوم ہے کہ زخمیوں کوشکر گاہ میں پہنچا دیا گیا،جن کی مرہم پٹی کا فوری انتظام ضروری تھا۔زخمیوں کے رفیقوں میں سے بعض لوگ ان کی تمار داری کیلئے مقرر ہوجاتے تھے۔ جنگ مایار کے زخیوں کی است مرف زخیوں کی تعام دو اپکانے اور لگانے میں پوری راہ مرف ہوگئی۔ بعض خطوط سے معلوم ہوتا ہے کہ جراحوں کی ضرورت کی چیزیں بھی ہندوستان سے جھیجی جاتی تھیں۔

سامان جنگ

سیدصاحب نے ہرتم کا جنگی سامان بھی خریدااور بہت سے لوگوں نے ہدیہ بھی ان کی خدمت میں نہایت قیمتی اسلیے پیش کیے۔ مثلاً چھریاں، تلواری، جنجر، پستول، بندوقیں وغیرہ - جو مجاہدین وقتا فو قتا قافلوں کی شکل میں ہندوستان سے سرحد چہنچتے رہے، وہ بھی نقذر و پیداور مختلف ہتھیار ساتھ لے جاتے تھے۔میاں محمد مقیم رام پوری کے قافلے کی نسبت واضح طور پر بتایا گیا ہے کہ تمام ساتھی ضروری سامانِ جنگ ہے لیس تھے۔

سیدصاحب کے توشدخانے میں ہتھیار جمع رہتے تھے۔ جب ضرورت پڑتی دیدیے جاتے ۔ بعض ہتھیارعہدہ داروں کو بطوراعز از دیے جاتے ،مثلاً عبدالحمید خال کورسالداری کاعہدہ دیا گیا تو آئیس گھوڑے کے علاوہ ایک سروہی اورا کیک تلوارعنایت ہوئی تھی ۔

نشکر مجاہدین میں عموماً توڑے دار بندوقیں استعال ہوتی تھیں، جو ہندوستان میں عام تھیں۔ بعض کے پاس چھماتی بندوقیں تھیں۔ان کیلئے چھمات کے پھر سید صاحب منگواتے رہتے تھے۔ازواج کے نام ایک خط میں لکھتے ہیں کہ سکہائے چھماتی جتنے بھی منگواتے رہتے تھے۔ازواج کے نام ایک خط میں لکھتے ہیں کہ سکہائے چھماتی جتنے بھی مل سکیس خریدلیں اور کم ایک ہزار تو ضرور خرید کر مجموادیں۔

قرابینیں بھی استعال ہوتی تھیں اور مختلف جنگوں کے سلسلے میں ان کا بھی ذکر آیا ہے۔ آخر میں کچھ زنبور کیں بھی ہاتھ آگئ تھیں، جنہیں چھوٹی تو پیں سمجھنا چاہیے۔سید عبدالجبار شاہ صاحب تھانوی نے مجھے بتایا کہ مجاہدین چڑے کی دوانگل چوڑی پٹیوں سے نہایت عمدہ تو پ تیار کر لیتے تھے۔ یہ ہلی ہوتی تھی، جسے ایک جگہ سے اٹھا کر بہ ہولت دوسری جگہ لے جاتے تھے۔ اس کی تفصیل ہوں بنائی کہ کچا چڑا مسالے اور سریش میں ترکر لیاجا تا۔ پھر اس چڑے کی پٹیاں بنائی جا تیں اور سیدھی لکڑی پر یہ پٹیاں گوند ھنے کے انداز میں ہے بہ بے لپیٹ دی جا تیں۔ وَل چارا رَخِيَّ موٹا ہوجا تا تو لکڑی نکال کراندر بابر خاص مسالا لگا دیاجا تا۔ مجھے ایس کوئی تو پ دیکھنے کا موقع نہ مل سکا۔ شاہین نام کے آلے کا ذکر جا بجا ماتا ہے۔ یہ ایسا آلہ تھا جو بندوق سے بڑا اور تو ب سے چھونا ہوتا تھا۔ عالم بن نے مختلف جنگوں میں اس سے بھی کا م لیا۔

سیدصاحب کو بڑی تو پیں زیدہ اور مایار کی جنگوں میں ملیں۔ زیدہ کی تو پیں اسب کی طرف جاتے وفت محفوظ مقام پر فن کرادی تھیں۔ گڑھی چھتر بائی کے محاصرے میں ان کی ضرورت پڑی تو امب میں منگوالیں۔ پھر پنجتار میں رہیں اور بھرت ٹانیہ کے وقت انہیں وو بارہ فن کرادیا۔

بارود، گولے نل اور گنڈاسے

بارودسازی کا کارخانہ بنجتار میں بنایا گیا تھا۔اغلب ہے بعض دوسرے مقامات پر بھی عارضی انتظام کرلیا جاتا ہو،لیکن مستقل کارخانہ پنجتار ہی میں رہا۔مولوی سید جعفر علی نقوی رمضان ۱۲۳۵ھ(فروری ۱۸۳۰ء) میں ہندوستان سے پنجتار پہنچے تھے۔اس وقت سیدصا حب المب میں تھے۔مولوی صاحب لکھتے ہیں :سرکاری بارودساز اپنے کام یعنی بارودسازی میں مشغول تھے۔(۱) انہیں دنوں بارودکوآگ لگ گئے۔دوآ دمی شہید ہوئے اور بارودکامیگزین بھی جل گیا۔

سیدصاحب کے پاس تو پیس آگئیں تو قاسم خیل میں جو پنجتار کے شال میں واقع

⁽۱) * منظورهٔ من ۱۲۳۰۰

ہے، مولا تا احمد اللہ نا گیوری اور مولوی خیر الدین شیر کوئی نے گولے ڈھالنے کا کارخانہ قائم کرلیا، جس میں ڈیڑھ سیر، تین سیر اور یا نچ سیر کے گولے ڈھلتے تھے۔

مجاہدین کی جو جماعتیں پہلی مرتبہ ہزارہ بھیجی گئی تھیں، انہیں دوسرے سامانِ جنگ کے علاوہ بانس کے پانچ سات سونل بھی دیدیے گئے تھے۔ بیدڈ پڑھ ڈیڑھ بالشت لمبے تھے اور ان میں بارود بھری ہوئی تھی۔ حملے کے وقت انہیں آگ دے کر دشمن پر پھینکا جاتا۔ چنانچہ ڈمگلہ کی جنگ میں بینل استعال ہوئے۔ سینگوں اور بھینیوں کی آنتوں میں بھی بارود بھر کراستعال کرتے تھے۔

اسلامی شکر کاایک خاص بتھیار دنداند دارگنڈ اساتھا، جے عام کو ہار جلد سے جلد کثیر تعداد میں تیار کر لیتے تھے۔ گنڈ اے کولمبا دستہ لگایا جاتا۔ بدان مجاہدین کو دیا جاتا جن کے پاس اور کوئی ہتھیار نہ ہوتا یا جو بندوق اور تکوار سے کام نہ لے سکتے۔ مثلاً شخ محمد آخق گور کھیوری کا بایاں ہاتھ جنگ مایار میں بے طرح زخی ہو چکا تھااور وہ بندوق نہ چلا سکتے تھے، لہٰذا بالاکوٹ میں انہیں گنڈ اسادے دیا گیا۔

فنونِ جنگ کی مثق

مجاہدین سے قواعدادر جاند ماری بھی کرائی جاتی تھی۔ مثلاً قیام خبر کے سلسلے میں بتایا گیا ہے کہ میر عبدالرحمٰن جھالوی، حافظ امام الدین رام پوری اور بعض دوسرے حضرات مجاہدین سے نشانے کی مشق کرایا کرتے تھے، جنکے باس توڑے دار بندوقیں تھیں۔ حاجی عبداللہ رام پوری، مولوی امام علی عظیم آبادی، شخ خواہش علی عازی پوری، شخ بلند بخت دیو بندی، شخ نصر اللہ خورجوی اور اکبر خال نے چھماتی بندوقوں اور قرابین والوں کی تر تیب کا کام سنجال لیا۔ اڑھائی مہینے کے بعد سید صاحب نے مجاہدین کی پریڈ دیکھی تو بہت خوش ہوئے اور تحسین فر مائی۔ ساتھ ہی کہا: مشاتی پرنازاں نہ ہونا، فتح صرف خدا کے بہت خوش ہوئے اور تحسین فر مائی۔ ساتھ ہی کہا: مشاتی پرنازاں نہ ہونا، فتح صرف خدا کے

فضل پرموتوف ہے قواعد کرانے والے اصحاب روزاندرات کے وقت سید صاحب کی خدمت میں عرض کیا کرتے تھے کہ آج اس طور سے تواعد کرائی سید صاحب بعض اوقات نہایت عمدہ کتے بیان فر مایا کرتے تھے۔

مثلاً اس زمانے میں ایک دستوریے تھا کہ سپاہی چھڑے تھیلی سے نکال کرمنہ میں جھر لیتے اور ضرورت کے مطابق تھوڑے بندوق میں ڈالتے جاتے۔ سید صاحب نے فرمایا: اس میں بردی معنرتیں ہیں۔ مثلاً بندوق گرم ہوجائے تو بارود بھرتے وقت آگ کی کرسکتی ہے۔ ایسی صورت میں چھڑے منہ سے نالی میں ڈالنا خالی از خطرہ نہیں۔ ایک معنرت یہے کہ چھڑے منہ میں ہوں تو میدانِ جنگ میں تکبیر نہیں کہی جاسکتی۔

پنجتار کے سامنے میدان میں مجاہدین برابر مختلف فنونِ جنگ کی مشق کرتے رہتے سے اور یہاں گھڑ دوڑ بھی ہوتی تھی۔نواب وزیرالدولہ نے فنونِ حرب کی مشق کے سلسلے میں مندرجہ ذیل امور کا ذکر کیا: گھڑ دوڑ اور خبر چلانا، نیز ہبازی، توپ اور بندوق چلانا، جنگ کے واعد سیکھنا، قلع فتح کرنا، دشمن کو مارنا، اس غرض سے ہرشم کے ہتھیار جمع کرر کھے تھے۔(1)

نواب صاحب فرماتے ہیں کہ مجاہدین:

ہمہ کماں کش ورزم آنها ودیمن سوز چورعد با تک زن دہمجو برق تنے افروز (۲)

همه مبارز وجوش شگاف و پیکال دوز چو بادهمله برد جمچو کوه حمله پذیر

لعنی سب بڑے بہادر تھے۔ مخالفوں کی زر ہیں چیر کرر کھ دیتے تھے اور پیکان تو ڑ ڈالتے تھے۔سب کمان چلانے میں مشاق تھے۔ جنگ کے دھنی اور دشمنوں کو نتم کردینے والے۔وہ حملہ کرنے میں ہواکی مانند تیزتھے۔ جب ان پر حملہ ہوتا تھا تو پہاڑکی طرح جم

⁽۱) "وصايا" حصد دم ص: ۵۹ .

جاتے تھے۔وہ رعد کی مثل نعرے لگاتے تھے اور ان کی تلواری بکلی بن کرچمکتی تھیں۔

ا کھاڑ ہے

ایک موقع پر پنجتار میں مختلف فنون کیلئے الگ الگ اکھاڑے قائم کیے گئے مثلاً: ا۔ نیز وہازی کا اکھاڑ اسیدصاحب کے زیراہتمام۔

۲۔سواری، نیز ہ بازی، بندوق اور تکوار کا اکھاڑا عبدالحمید خاں رسالدار کے زیراہتمام۔

سا۔ پھری گدکا اور رہتم خانی کا اکھاڑا شیخ عبدالوباب اور خد ابخش منجھانوی کے زیراہتمام۔

۳۔امردهیج کاا کھاڑامیرزامحمدی بیکشاہ جہان آبادی کے زیراہتمام۔ ۵۔ غفور خانی کا اکھاڑاسیدلطف علی اور امام الدین رام پوری کے زیرِ نمام۔

. ٧- بنی کا اکھاڑ ااستادر جب خاں کے زیراہتمام۔

بیا کھاڑے روزانہ عصرے مغرب تک گرم رہتے تھے۔ سیدصاحب خوداس موقع پر موجودر ہتے اور ہرا کھاڑے کی مثق کا معالمینہ فریاتے۔

كشكر كينشان

الشكر كے بوے نشان يا پر جم تين تھے:

ا۔ صبغۃ اللہ: یہ جماعت ضاص کا نشان تھا اور ابوالحس نصیر آبادی کے پاس رہتا تھا جو جماعت کے خاص علمہ دار تھے۔ اس پر پہلے پارے کا آخری رکوع سرخ ریشم ہے کا ڈھا گیا تھا۔ یہ نشان صرف اس اڑائی میں جاتا تھا جس میں سیدصا حب خود شریک ہوتے۔
۲۔ مطبع اللہ: اس پر سور ہ بقرہ کا آخری رکوع سرخ ریشم ہے کا ڈھا گیا تھا۔ یہ ابراہیم خال خیر آبادی کے پاس رہتا تھا۔

ان کے علاوہ بھی مختلف جماعتوں کے جھوٹے نشان ہوں گے۔ خاص نشان یہی تین ہتے۔

متفرق امور

مجاہدین کوقلعوں پر بھی حلے کرنے کی نوبت آئی اور ان لشکروں پر بھی جنون مارنے پر ہے، جنہوں نے حفاظت کی غرض سے اردگر دمضبوط خار بندی کا انظام کرلیا تھا۔ لہذا ایسے موقعوں کیلئے سیر حمیاں بھی بنوائی گئی تھیں اور خار بندی سے گذر نے کیلئے چار پائیاں بھی استعال کر لیتے تھے مثلاً ڈمگلہ کے جنون میں آخری تدبیر بی سے کام لیا گیا تھا۔ جب خادے خال پر حملے کا فیصلہ ہوا تو معلوم تھا کہ ہنڈ کا قلعہ بہت مضبوط ہے، لہذا چرز کی جب خادے خال پر حملے کا فیصلہ ہوا تو معلوم تھا کہ ہنڈ کا قلعہ بہت مضبوط ہے، لہذا چرز کی کلای کے قلا بے اور سیر حمیاں بنوائی گئیں۔ چھتر بائی کے محاصر سے کے دفت بھی مجاہدین کو پانی بلانے پر کے پاس سیر حمیاں موجود تھیں۔ میدانِ جنگ میں مختلف اصحاب مجاہدین کو پانی بلانے پر مامور ہوجاتے تھے، انہیں ''سقا''کالقب دے دیا جا تا۔ چنانچہ مایار کی جنگ میں سب سے مشکور ہوجاتے بالاکوٹ میں روثن سقاساکن کوئی کا بھی ذکر آیا ہے۔

لڑائی یاشبخون کیلئے لمباسفر در پیش ہوتا تو مجاہدین کوروغی روٹیاں تیار کر لینے کا تھم دے دیاجا تا۔ چنانچہ اتمان زئی پر پیش قد می کے سلسلے میں ہر مجاہد کوایک ایک سیر آٹا، ایک ایک پاؤٹھی اوراکیک ایک پاؤگڑ دے دیا گیا۔ جس راستے میں پانی کمیاب ہوتا وہاں جاہجا پہلے سے پانی کا انتظام کر لیاجا تا۔ جلالہ سے اتمان زئی جانے گھے تو مجاہدین کیلئے پانی کی بطكوں كا بندوبست كرديا گيا۔ايك دستورية تقاكه فوجى اقد امات كوعام لوگوں كى نظروں سے بوشيده ركھنے كا انتہائى اہتمام كياجا تا۔مثلاً شاہ آملعيل بهند پر حملے كيلئے موضع بازار (سدم) سے روانہ ہوئے تتھے۔وہ پہلے گڑھى مان زئى ہوتے ہوئے تركى پنچے۔وہاں سے نظرتو پہلے پنجتاركارخ كيا تا كه كى كوخيال نہ ہو، پنجتار كسواكميں جانا منظور ہے۔ دوكوس برنمازعشاءاداكى وہاں سے بهند كارخ كيا۔

شجاعت اورحسن تدبير

شاہ اسلعیل نے ایک موقع پر فر مایا کہ دشمن ہے رزم و پرکار کیلئے انسانوں کی قسمیں ہوتی ہیں۔ بعض صاحب تدبیر ہوتے ہیں بعض شجاع ودلا وربعض وونوں خصوصیتوں کے جامع ہوتے ہیں بعض جامع ہوتے ہیں۔ کھن باتد ہیرلوگ ہمیں اس مقام پر کام نہیں دے سکتے ،اس لئے کہ یہ مقام شجاعت کا ہے نہ کہ تدبیر کا۔

شاہ صاحب کا مقصد بہتھا کہ ساز وسامان اور رفیقوں کی قلت کے باعث مجاہدین کو شہاعت وہ روائل کی سب سے بڑھ کر ضرورت تھی محض مردائل ہی کی برکت سے وہ مسلمانوں کو اپنی طرف متوجہ کر سکتے تھے اور انھیں بہتعداد کثیر میدان بخنگ میں لا سکتے تھے۔لیکن سیدصاحب کے مجاہدین میں دونوں تتم کے آدمی شامل تھے۔شجاعت میں بھی کوئی ان سے برتری کا دعویٰ نہ کرسکتا تھا اور حسن تدبیر کی مثالیں بھی سامنے رکھی جا کیں تو واضح ہوجا تا ہے کہ کوئی ما ہر فین حرب ان سے بازی نہ لے جا سکتا تھا۔

دونوں وصفوں کے جامع بہت سے لوگ موجود تھے۔ مثلاً شاہ اسلمیل، امام خال خیر آبادی، مولانا محمد بوسف صاحب بھلتی، شخ ولی محمد بھلتی، شخ بلند بخت دیو بندی، مولوی خیر الدین شیر کوئی، مولوی مصطفیٰ کا ندھلوی، عبد الحمید خال رسالدار، ارباب بہرام خال، قاضی سید محمد حبان وغیرہ۔ ان میں سب سے کونسا فردتھا، جس کی قیادت ہرفوج کیلئے

انتها كَي اعزاز واكرام كاسر مايينه موتى _

مجابدين برشفقت

سيد جعفر على نقوى نے لکھاہے:

'' **وفورشفقت برغازیاں چناں بود که ہرکس جناب ممدوح رازا کداز پدر** و ماد رخود می دانست''(1)

قرجمه: سیدصاحب مجامدین پراتن زیاده مبربانی اور شفقت فرماتے سے کہ ہرخص آپ کو باپ اور مال سے زیادہ مبربان وشفیق سمحتا تھا۔

یالفاظ بھینا ایک روشن حقیقت کا آئینہ ہیں۔ سیدصاحب بالطبع بھی بدرجہ عایت شفق تھے۔ جن مجاہدین کووہ وطن اور اہل وعیال سے نکال کرراہ ضدا میں قربانی کیلئے لائے تھے، ان پر شفقت کا صحح اندازہ کون کرسکتا ہے؟ خصوصاً اس بگانہ بزرگ کی شفقت جودنیا کے تمام رشح تو ٹر کرصرف ایک رشتے کے استحکام کوزندگی کا نصب العین قراروے چکا تھا اور وہ خداکی محبت ورضا کا رشتہ تھا۔ ای رشتے نے وقت کے ممتاز ترین عالموں، بڑے بورے رئیسوں کے جگر بندوں اور عام مسلمانوں میں وہ روح ایمان پیدا کردی تھی کہ وہ خداکی راہ میں زیادہ سے زیادہ تھے کہ وہ مراد کو پہنچ گیا۔

^{(1) &#}x27;'متظورة''ص:۹۳_

بإنجوال باب:

اداره وانتظام كانقشه

ضروری گزارش

سیرصاحب ۱۸۲۱ء کے اواخر میں سرحد پنچے تھے اور ۲۰ رد مبر ۱۸۲۹ء کو مہلی جنگ جی آئی تھی۔ اس کے بعد کم وہیش تین سال تک کی بڑے یا چھوٹے علاقے میں جکر انی کا عملی نقشہ ڈیٹ کرنے کی کوئی صورت بیدا نہ ہوئی۔ فروری ۱۸۲۹ء میں بیعت بٹر بیعت ہوئی اور مختلف مقامی رئیسول نے بہطیب فاطر شرعی نظام کا اجرا قبول کیا۔ اس سلسلے میں سید صاحب کو عشر اواکر نے کا فیصلہ ہوا، کیکن اس میں با قاعد گی قاضی سید محمد حبان نے سرحد کے پورے میدانی علاقے کا دورہ کرکے پیدا کی۔ اس وقت سے وہ نظام حکومت انی ابتدائی شکل میں نافذ ہوا جو سید صاحب ہر جگہ نافذ کرنا چاہتے تھے اور اس پرعمل کی مدت بہت تھوڑی ہے۔ اس لئے کہ چند ماہ بعد سر دار ان پشاور اور بعض دوسرے خوا نین مدت بہت تھوڑی ہے۔ اس لئے کہ چند ماہ بعد سر دار ان پشاور اور بعض دوسرے خوا نین کی میدانی علاقہ چھوڑ کرکسی دوسرے مرکز کی تلاش میں نکل پڑے۔ یوں اس نظام پر آٹھ کی کامیدانی علاقہ چھوڑ کرکسی دوسرے مرکز کی تلاش میں نگل پڑے۔ یوں اس نظام پر آٹھ دس میں میں بالکل ابتدائی شکل میں۔ اس کے متعلق جتنی تفصیلات کی عیس وہ یہاں جاچوں کی جاتی ہیں۔

عبده دارون كاتقرر

سيدصاحب كے نظام حكومت بيس عبده دارزياده ندينے،اس لئے كد حكومت براو

راست ان کے ہاتھ میں نتھی۔ سرحدی علاقے کے رئیسوں نے عشر دینا منظور کرایا ،اس کی بناپر سیدصا حب نے جا بجا قاضی مقرر کردیے کہ لوگوں کے مناز عات کا فیصلہ شرعیت کے مطابق کریں اور بعض علاء کو مختلف علاقوں میں منصب افراء پر مامور کردیا۔ قاضی سید محمد حبان پہلے سے لشکر اسلام کے قاضی القصاۃ تھے، انہیں پورے علاقے کیلئے قاضی القصاۃ بنادیا گیا۔ وہ جنگ مردان میں شہید ہو گئے تو یہ عہدہ مولوی محمد رمضان کو وے دیا۔ مختلف بنادیا گیا۔ وہ جنگ مردان میں شہید ہو گئے تو یہ عہدہ مولوی محمد رمضان کو وے دیا۔ مثلاً علاقوں کے قاضی کی پوری تفصیل معلوم نہیں۔ قیاس یہ ہے کہ وہ مقامی علاء تھے۔ مثلاً صاحب زادہ نواب عبدالقیوم مرحوم کے ناتا، ملاسید میر (ملاصا حب کو ٹھا) کو کو ٹھا کا قاضی بنایا گیا تھا اور ملاصفی اللہ شیوہ کے قاضی جنے صرف پٹا ور میں مولوی مظبر علی عظیم آبادی کو عہد کا تضادیا پڑا، اس لئے کہ مردار سلطان محمد خال بارک زئی کی خواہش بہی تھی۔

ملاقطب الدین نگر ہاری پورے علاقے کیلیے محتسب مامور ہوئے اور تیس تنف گیجی ان کے ساتھ مقرر کردیے گئے۔وہ قریہ بہ قریبہ اور دہ بددہ دورے کرتے رہتے تھے۔ جہاں کوئی امر خلاف شرع پاتے اس کا انسداد کردیتے۔ایک محتوب مظہر ہے۔

"ملاقطب الدين ساكن ضلع نتكر باركداز مدت مديد بنا وبرا قامت جباد ورفاقت آ نجناب سالها بسركرده ودرديانت وتقوى بنظير برآ مد خدمت احساب برقار كين صلو قسير ده شدوقرياً عن مردم ته في في بي از قندهاريال مراه او تعين كرده شد أ()

قرجه: ملاقطب الدين نگر بارى جوطويل مدت ا قامت جهاد كسلط مين سيد صاحب كرفيق بين اور ديانت وتقوى مين بنظير، انبين تاركين صلوة براحساب كيلي مقرد كرديا ب اور قندهار يون مين سے تقريباً تمين بندوقي ان كے ساتھ كرديے بين ..

⁽۱) رائے ہریلی والے خطوط کامجھور میں نا ۴۔

راویوں کا بیان ہے کہ تھوڑی مدت میں پورے علاقے کی کا یا بلیث گئی۔ تمام لوگ شریعت کے مطابق مربعت کے بیند داریاں ٹوٹ گئیں۔ مقد مات کے فیصلے شریعت کے مطابق ہونے گئے۔ ملا قطب الدین کے ساتھیوں میں سے کوئی ایک کسی دوسرے کام کے سلسلے میں بھی کہیں جاتاتو گاؤں کے لوگ دوڑے آتے اور بتاتے کہ یہاں کوئی نے نمازنہیں:

'' برصغیر و کیراز دیبات نہ کور کرا دائے صلو قاستقیم گردید چنا نچہ بالفعل کے شنفس ہم دردیبات نہ کور کرتارکے صلو قابات ہداؤن اللہ یافت نے شودہ'(۱)

نیوجمہ: دیبات کے تمام چھوٹے بڑے ادائے نماز پرقائم ہوگے اور اب خدا کے فضل سے ایک مختف بھی نہیں مل سکتا جوتارکے نماز ہو۔

مختصیل عشر کا انتظام محتفی کے مقد مثل اور اب علاقہ مقرر کردیے گئے تھے۔ مثل ا

علاقہ مامورین حاجی بہادرشاہ خال اورمحود خال حاجی بہادرشاہ خال اورمحود خال شیوہ سید امیر علی اور حافظ عبد العلی نوپی مولوی نصیر الدین منگلوری حکھ بلل پیرخال پیرخال ترانڈی لکھ میر خال لکھ میر خال لوند خوڑ مولوی خیر الدین شیرکوئی خدوخیل فخ خال پنجتاری خدوخیل بیرسرف چند نام ہیں ، یقین ہے کہ باتی حصول میں بھی مختلف اسمحاب مامور ہوئے سیسرف چند نام ہیں ، یقین ہے کہ باتی حصول میں بھی مختلف اسمحاب مامور ہوئے

(۱) رائے بریلی والے خطوط کامجور میں: ۳۱۔

مول مے ان میں ہے مولوی نصیر الدین منگلوری کا علاقہ بہت برا تھا۔ یعنی ٹویی مینی،

گندف، باجا، بام خیل، پابنگ، کھلا بث، مرغز، دونوں منارے، کدا، زیدہ، پنج پیر، شاہ مصور، کنڈوہ، ہنڈ۔ بدلوگ عشر کا حساب کماب رکھتے تھے۔ان کی امداد کیلئے ضرورت کے مطابق دودوچارچاردی وس مجاہدین مقررتھے۔عشر کاغلہ یاجنس کی فروخت سے حاصل کیا ہوارویہدو تنافو قنا پنجتار بھیج دیاجا تاتھا۔

پہلے بتایا جاچکا ہے کہ غلہ پسوانے کیلئے مینئی کی پانچ پن چکیاں سید صاحب نے اپنے انظام میں لے لی تھیں۔ میر حامطی تھنجھانوی کو پچیس تمیں مجاہدین کے ساتھ انظام کی غرض سے وہاں بٹھادیا تھا۔ پنجتار سے غلہ بھیجاجا تا اور مینئی سے آٹا پس کر آجا تا۔ ان مجاہدین کے علاوہ شخ بلند بخت دیو بندی امب میں قلعہ دار تھے اور حافظ مصطفیٰ کا ندھلوی مجاہدین کے علاوہ شخ بلند بخت دیو بندی امب میں قلعہ دار تھے اور حافظ مصطفیٰ کا ندھلوی چھتر بائی میں۔ رسالدار سواروں اور شاہیوں کے ساتھ مستقل طور پر شیوہ میں مقیم تھا اور وقافو قاتھ وڑے سے سواروں کے ساتھ علاقے کا دورہ کرتار ہتا تھا۔

سیدصاحب نے اسے مشورہ دینے کیلئے ایک مجلس شور کا بھی بنادی تھی، جومندرجہ ذیل اصحاب پر مشتمل تھی : شیخ عبدالحکیم پھلتی ، شیخ ناصرالدین پھلتی ، حافظ عبدالرحمٰن پھلتی ، شیخ عبدالرحمٰن رائے بریلوی ،نورداد خال لوہائی پورہ ،عبدالحکیم خال لوہاری ، ملاعزت قندھاری ، ملائوں قندھاری ، عبدالغفار قندھاری ، عبدالغفار قندھاری ۔ فقدھاری ۔ ف

تاكيدى احكام

سيدصاحب في تاكيدي علم در كما قفاكه:

''اگرسواریا پیادہ برائے تخصیل برخوانین دیہات رود،خوانین راباید که برادرخود تصوریدہ دعوش کنند واد فرمائش چیزے شماید۔اگر فرمائشے برخوانین نمود، دربارگاہ مامعاتب خواہر باشد''(1)

⁽I) "منظورة"ص:Agr_

ترجمہ: اگر کوئی سوار یا بیادہ تحصیل عشر کیلئے خوا نین کے پاس جائے تو انہیں چاہیے کہ اسے اپنا بھائی سی جھتے ہوئے کھانا کھلادیں ،خود اسے کسی چیز کی فرمائش ندکرنی چاہیے۔ اگر اس نے فرمائش کی تو یہ امر ہماری ناراضی کا باعث ہوگا۔

ال ہدایت پر بڑے اہتمام ہے مل ہوا۔ رسالدار عبد الحمیہ فال کا دستور میں کا کہ دورے پر نکلتے تو ہرآبادی سے نصف میل پر تھہر جاتے اور بعض اکا برکو باہر ہی بلاکر حالات پوچھ لیتے سواروں کو بستی میں جانے یا کوئی چیز مانگئے کی شخت ممانعت تھی۔ ایک مرتبہ شنخ لسکھ سمیسر نے موضع ڈاگئی میں کسی سے چھا چھا نگ کی عبد الحمید خال شخت ماراض ہوئے۔ گاؤں والوں نے کہا کہ یہ معمولی ہی بات ہے، لیکن رسالدار نے شنخ سے صاف صاف کہد دیا کہ ہمارے ساتھ رہنا منظور ہے تو ضابطوں کی پابندی سیجئے ورنہ امیر المونین کے یاس چلے جائے۔

ایک مرتبه دوسواروں نے کسی ہے شکر مانگی،اس نے جواب دیا کہ شکر تو نہیں گڑ موجود ہے۔سوار غصے میں آگئے۔رسالدارکواس واقعے کاعلم ہوا تو دونوں سواروں کے میں ہیں تازیانے لگوائے۔

مجلسشورى

سیدصاحب کا دستورابتدائے بیر ہاہے کہ ہرمعا ملے کے متعلق اپنے خاص رفیقوں سے مشورہ کر لیتے تھے۔ ذاتی معاملات کے متعلق صرف اقربایا بعض خاص رفیقوں سے مشورہ کرتے تھے۔ دبنی مسائل علاء سے پوچھتے تھے۔ جہاد اور لظم ونتق کے متعلق جو اصحاب مختلف ادقات میں مجلس شوری کے رکن رہے ان کے نام ذیل میں ورج ہیں:

مولانا عبدائحی مولانا شاہ استعیل، سید احمد علی، سید حمید الدین، سید عبدالرحمٰن (تینوں سید صاحب کے بھانج تھے) سیدمحمد یعقوب (سید صاحب کے بھتیج) مولوی وحیدالدین، مولانا محد یوسف مچلتی، خواجه محد (حسن پوری)، ارباب بهرام خال، مولوی محمد حسن، شخ بلند بخت، مولوی خیرالدین شیر کوئی، امام خال خیر آبادی، سید محمد علی رام پوری، مولوی ولایت علی عظیم آبادی، قاضی سید محمد حبان، سیدا کبرشاه ستصانوی، فتح خال پنجتاری، مالعل محمد قد هاری، ملاقطب الدین ننگر باری ۔

ہراہم معاملے کے متعلق ان میں سے موجود اصحاب کو بلایا جاتا اوراسے پوچھنے کے بعد قطعی فیصلہ کیا جاتا۔ تو شدخانے اور سلاح خانے کا انتظام پہلے مولا نامجد یوسف پھلی کے حوالے تھا۔ اس انتظام کے سلسلے میں مولا ناموصوف ہی سے مشورہ کرتے تھے۔ جب وہ فوت ہوگئے اور شیخ ولی محمد ان کی جگہ مامور ہوئے تو مال واسباب اور ہتھیاروں کے متعلق ان کی رائے لیتے تھے۔

امان ناھےاورعطیات

مجموعہ مکا تیب میں بعض ایس تحریری بھی موجود ہیں جنہیں امان ناموں سے موسوم کیا گیا ہے، یا بعض لوگوں نے ملکتوں کی بازیافت کے متعلق درخواسیں پیش کیس تو فر مایا کہ جب وہ علاقے ہمارے قبضے میں آئیں گے اور ملکتوں کا ثبوت ال جائے گا تو یہ واپس کردی جائیں گی۔اس فتم کی تمام تحریرات میں مختلف شرطیں مذکور ہیں، مثلاً:

ا۔ بشرطاتباع احکام شریعت۔

۲۔ بشرطادائے عشر۔

٣- بشرط اتباع شرع در فاقت مجاهرين_

٣- بشرطِ اتباع شريعت وخدمت دين ـ

بعض علماء کو قضاء وافتاء کے منصب پر مامور کرتے ہوئے امر بالمعر وف اور نہی عن المحنک کے متعلق تحریرات المحنکر کی خدمت سونپی گئی۔ بعض رؤسا وخوانین کو جا گیرول کی بحالی کے متعلق تحریرات

دی گئیں۔ان تحریروں میں بھی اتباع شریعت کی شرط موجود ہے۔(۱)

اتباع شريعت

سیدصاحب کواس بات کا خاص خیال تھا کہتمام مسلمان ہرمعالمے میں شرق احکام کے پابند ہوجا کیں۔ بیعت بشریعت کے دفت خوانین نے خود اقرار نامے پیش کردیے تھے کہ وہ شرقی احکام سے سرموانح اف نہ کریں گے۔ان میں فتح خاں پنجتاری بھی شامل تھا،جس کاوطن سیدصاحب کامر کز جہادتھا۔اسے باربار فرماتے:

''رسوم ریاست وسیاست وسائررسوم غیرمشروعه که بربنائے تحصیل مال وجاه به بسته آید،آن ہمہ رایک قلم ترک نمائید''(۲)

قرجمه: تم فرياست،سياست اوردوس اموريس جوغيرشرى طريق مال اور اقتدارى غرض سے جارى كرد كھے ہيں، ان سب كو يك قلم چھوڑ دو۔

عام لوگوں کی طرح ہماری رفاقت اختیار کرو اور شرعی احکام کے مقابلے میں دوستوں اور عزیزوں کی پاسداری سے کاملاً دست بردار ہوجاؤ۔

اعلانعام

ایک اعلان تمام مخلص مسلمانوں اور تشکر مجاہدین کے نام ہے، جس کے اہم مطالب کا خلاصہ ذیل میں درج ہے:

ا۔ لوگوں میں جھگڑا پیدا ہوتو اس کا فیصلہ خود نہ کریں بلکہ قاضی ہے کرا کیں۔ کسی بھائی کواس معالمے میں دخل دینا مناسب نہیں۔

۲۔ برخص کیلئے لازم ہے کہ جو بچھ کہنا ہو، قاضی کے سامنے کیے۔اگر وہ ایبا نہ

⁽١) تغييلات كے لئے ملاحظ بو "مجموعه مكاتيب شاه المليل " تلى فيرس ١٠٠ ٢ ١٢٥٢ ٢-

⁽۴) "منظوره"

کرے گاتو تعدی کا اندیشدر ہے گا اور تعدی خدا اور رسول صلی الله علیہ وسلم کے نزویک صد درجہ ناپسندیدہ ہے:

"اگر کے الشکریان ایں جانب کاروبار بدول معرفت قاضی پیش خواہد آر آوردودرآ ل چیز سے جوروتعدی خواہد شد، قاضیال اور اسزائے خواہند داد۔اگر قاضیاں چیز سے قصور خواہند کرد۔ اینجا تنبیدوا قع خواہد شدو ہر کے داکد اجرائے محم منظور باشد، بمعرفت قاضی نماید" (۱)

ترجمہ: اگر ہمارا کوئی گئکر قاضی کے بغیر کوئی تھم جاری کرے گااور اس میں ظلم وتعدی کا پہلو ہوگا تو قاضی اسے سراویں مے، اگر قاضوں سے کوئی قصور سرز د ہوگا تو ہماری طرف ہے۔ تبیہ کی جائے گی۔ جس مخص کوکوئی تھم جاری کرانا منظور ہو، وہ قاضی کی معرفت کرائے۔

''سیداحرشہید' میں ہم ہانچے ہیں کہ سیدصاحب نے جنگ مایار کے بعد پٹاور پر پیش قدی کی تھی تو راستے میں ہر مقام پر عام لوگ درانیوں کی شکایتیں لے کرآتے اور کہتے کہ وہ ہم سے پیداوار کانصف حصہ لیتے ہیں اور تخصیل وانظام کا پوراخرج ہم پر ڈالتے ہیں۔اس طرح پیداوار میں سے مشکل ایک تہائی حصہ عام کسانوں، کاشتکاروں اور زمینداروں کو ملتا تھا۔سیدصاحب نے فرمایا کہ ہمیں پیداوار کا صرف ایک تہائی حصہ دیتے جانا،ای ہیں ہم اپنا فرج چلا کیں گے۔ بہر حال سیدصاحب صرف یہ چاہتے ہیں۔کہمدات، فیصلہ مقد مات اور انظامات میں شرعی اصول ومقاصد کے مطابق عمل ہواور ظلم وسق کا طأمت جائے۔

اس سرسری انظامی نقشے کو پیش نظرر کھتے ہوئے اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ سیدصاحب کا مجوزہ نظام حکومت عوام کیلئے کس درجہ باعث رحمت تھا اور جیسا کہ پہلے عرض کیا جاچکا ہے، یہ بالکل ابتدائی نقشہ ہے۔اگر انہیں کسی علاقے میں مستقل حکومت قائم کرنے کا

⁽۱) "مجموعه مكاتب شاه المعيل قلمي نسخه "ص:۲۶۳ تا ۲۶۳_

موقع مل جاتا تووہ جارے لئے نہایت عمرہ نمونہ بن جاتا۔

جرائم کے لئے سرائیں

جوتفصيلات جارے سامنے آئی ہیں،ان سے معلوم ہوتا ہے کہ زیادہ تر زور نماز کی یا بندی پر دیاجا تا تھا،اس لئے کہ لوگ اس اہم ترین فرض کی بجا آ وری میں تسامل کرتے تھے۔ جومر دنماز ادانہ کرتے تھے، امان خال کنج پوری قاضی کے احکام کے مطابق انہیں تازیانے لگاتے تھے عورتوں کوخود سید صاحب زنانے میں لے جا کر سزادیتے تھے۔ قیام امب کے زمانے میں صرف دوعورتوں کوسزا ملی: ایک تارک ِ صلوٰ ق تھی ، دوسری نے ا شوہر کے ہوتے ہوئے اینے آپ کو بیوہ ظاہر کیا۔دریایر نظر نہانے والوں کو پہلے جر مانے کی سزادی جاتی تھی ، پھران کیلئے تازیانے کی سزا ہوگئی۔ جانوروں کی جِرائی میں فصلول کے نقصان کی شکایتیں موصول ہو کیں تو شروع میں ہر جانور کیلئے جر ماند مقرر ہوا۔ بعد میں حکم دے دیا گیا کہ ہر فصل کے نقصان کا انداز ہ کرکے مالک کو بورا تاوان دلایا جائے۔اصلاحِ معاشرت کے ملیلے میں مختلف برائیوں کا انسداد کیا گیا۔مثلاً لڑ کیوں کی شادی کیلئے بھاری رقیس لینا، دیر تک لڑ کوں کو بٹھائے رکھنا اور شادیاں نہ کرنا یا پیسے وصول کرنے کی غرض ہے رخصتی کوالتو امیں ڈالنا،گروہ بندیوں کا انسداد،انتقام گیری کے سلسلے میں خوزیزی کولا مناتی بنادیے کاسد باب۔

ایک روایت ہے معلوم ہوتا ہے کہ ابتدا میں ترک نماز پرخان وہ سے دو روپے جرماندلیا جاتا تھامملک سے ایک روپیہ، عام لوگوں سے آٹھ آنے۔غیرشری رسموں کے سلسلے میں موتی پرنو حدوسید کو بی کوجھی روکا گیا۔

چھٹاباب:

دفترى ترتيبات

محكمه تحرير

سیدصاحب کا نظامی معاملات اگر چابتدائی مراحل ہے آگے نہ بڑھے پائے ، تا ہم انہوں نے شروع ہی ہے ایک محکمہ تحریر قائم کرلیا تھا، جے اصطلاح میں ''منثی خانہ' کہتے ہے فیم محمدی انصاری اور بردوانی اس محکمے کے رئیس یا سرخش تھے۔ سیدصاحب انہیں انصاری بھائی کہہ کر پچارتے تھے۔ انہیں نگارش میں ایسا کمال حاصل تھا کہ کسی موقع پر انسادی بھائی کہہ کر پچارتے تھے۔ انہیں نگارش میں ایسا کمال حاصل تھا کہ کسی موقع پر اندھرے میں بھی کچھ کھنا پڑتا تو بے تکلف تکھتے۔ نہ کوئی حرف خطا ہوتا، نہ الفاظ آپس ایسلے اور نہ سطریں میڑھی ہوتیں۔

متعدد اصحاب منتی خانہ سے وابستہ تھے، جن میں سے بعض کوقلمدان ملے ہوئے تھے، یعنی دہ با قاعدہ منتی سمجھے جاتے تھے۔ بعض کے پاس قلمدان نہ تھے، اگر چہدہ عام طور پر منشیوں ہی میں شار ہوتے تھے۔ اس محکمے کے کارکنوں میں منتی محمدی انصاری کے علاوہ مندرجہ ذیل اصحاب کا ذکر آیا ہے:

حافظ صابر، حافظ عبدالله نشی خواجه محمر ، مولوی محمد قاسم پانی پی ، مثی فصل الرحمٰن بردوانی ، (بینشی محمدی انصاری کے مامول تھے) میر فیض علی گور کھپوری ، سید جعفر علی نقوی صاحب منظورة السعداء ، حافظ عبدالعلی پھلتی ، مولوی ریاست علی موہانی ۔

سید جعفر علی نقوی نے لکھا ہے کہ آخری دوصاحبوں کے پاس قلمدان نہ تھے اور ان کیلئے منشی خانہ میں بیٹھنا بھی لازم نہ تھا۔

اطلاعات كاابتمام

جب الشكر كاكوئى حصه كاروبار جهادكيليّ باہر بحيجاجا تا تھا تو اس كے ساتھ بھى ايك يا دوفقى ضرور جاتے ہے تاكہ تمام حالات كے متعلق روزانه اطلاعات مركز ميں بہنجى رہيں، اور سالار لشكر كوفتاف خوا نين يا سرداروں كے نام خط بھيجنے پڑيں تو كوئى دفت پيش ندائے مثال كے طور پرسيد احم على رائے بريلوى كو پھولا ، بھيجا گيا تو وہ سيد جعفر على نقوى كوساتھ مثال كے طور پرسيد احم على رائے بيقى كه مير فيف على گور كھيورى مدت سے دمنتى خانه ، ميں مامور ہيں اور لشكر اسلام كے رسوم خطاب نيز طريق مكا تبت سے بخو بى واقف ہيں۔ ان كامركز ميں رہنا بہتر ہوگا۔سيد صاحب نے مير فيض على سے فرمايا كہيا ہوئى، البذا آپ ہى چلى على نقوى) بدى لمي منزل طے كركے آيا ہے اور ابھى ماندگى دور نہيں ہوئى، البذا آپ ہى چلى جا كيں۔ انہوں نے عرض كيابسرو چھم ۔ چنا نچہ دہ گئے اور جنگ پھولا ہيں شہادت پائى۔ بعض اوقات مكا تب يا اعلامات كى متعدد نقليں كرانا ضرورى ہوجاتا تھا، ايسے مواقع پر مزيد آ دميوں كوامدادكى غرض سے خشى خانہ ميں بلواليا جا تا تھا، مثلاً حكيم قمر الدين بھلى ، فوراحم نگرا مى ،عبدالو ہاب قاسم غلہ، غلام محمد پانى تي (والد منشى محمد قاسم)۔

طريق مكاتبت

جب شاہ استعیل مرکز میں ہوتے تو تمام مکا تیب وہی لکھواتے۔سید صاحب مضمون بتادیتے۔ وہ مضمون بولتے مضمون بولتے جاتے اور مشیوں میں سے کوئی ایک لکھتا جاتا۔سید جعفر علی نقوی نے لکھا ہے کہ خودشاہ صاحب کو کتابت برولی قدرت حاصل نہ تھی جیسی کہ ہونی چاہیے تھی۔(۱)

(۱) منظورہ من د ۵۰ ساس کتاب کی تمام اطلاعات زیادہ تر 'منظورہ' بی سے ماخوذ ہیں۔ کتابت کے متعلق منظورہ کے الفاظ میر ہیں : قدرت بر کتابت کی مثل نہ کی اور وہ مثاق آدموں کی طرح نہ لکھ کتے تھے۔ مثاق آدموں کی طرح نہ لکھ کتے تھے۔

برتحریر پرمیر منٹی صاحب ایک خاص نشان بنادیتے جو آئیس کو معلوم تھا۔ اس کے بغیر کی تحریر پرمیر منٹی جا کتی تھی منٹی جمدی انصاری جرتح ریکو بہ خور پڑھ لیتے مہر ہوجانے کے بعد اسے جہاں بھیجنا ہوتا بھیج دیاجا تا تو ضیحات کے اتمام کا بیحال تھا کہ جو مکتوب براہ راست سید صاحب کے فرمان سے لکھاجا تا، اس کے ایک کوشے میں '' حضور'' لکھ دیاجا تا ۔ جوشاہ اسلمیل کی وسلطت سے موصول ہوتا اس کے کسی کوشے میں ''مولانا'' تحریر کر دیاجا تا ۔ لینی اس کا مضمون براہ راست نہیں بلکہ بوساطت مولانا ناشاہ اسلمیل موصول ہوا۔

روز نامچه

منٹی انساری نے ہرمینے کے تمام حالات روزانہ بالالتزام تھوانے کا انظام بھی کرد کھا تھا۔ مہینہ ختم ہوتا تو روز نامچہ محفوظ کاغذات کے صندوق میں رکھ دیاجا تا اور سے مہینے کیلئے نئے روز نامچے کی جدولیں تیار کرالی جا تیں۔تاریخ وار حالات میں سب کچھ شامل ہوتا مثلاً لا ایموں کی کیفیت، غدا کرات کا مرقع ،کہاں کہاں آدمی جیسے گئے،کون کون لوگ ملئے کسلئے آئے ،ان سے کس موضوع پر باتیں ہوئیں، کتنی رقم باہر سے آئی اور کتنی خرج ہوئی وغیرہ۔اس طرح وہ ماہانہ حالات کا بورانقشہ تیار کر کے رکھتے جاتے تھے۔روز نامچے میں سے بھی لکھاجا تا تھا کہ کس کس کوخط بھیجے گئے اور کس کس کی طرف سے خطآ ہے۔

كاغذات كاصندوق

منثی صاحب نے ایک بڑا صندوق لے لیا تھا، جس میں تمام ضروری کا غذات کے الگ الگ بستے بند ھے ہوئے رکھے جاتے تھے۔اس میں پچھ تما بیں بھی تھیں، مثلاً شاہ ولی اللہ کی کتاب' تھیجا ہے اللہ یہ' ،حدیث کی مشہور کتاب مشکوۃ ،ان کے علاوہ جمعہ اور عیدین کے بہت سے خطبوں کی تقلیں تھیں۔ یہ خطبے شاہ آملیں وقا فو قنا دیتے رہتے میں جعفر علی نفذی نے نکھا ہے کہ ان کی تعدادایک سوئے قریب تھی۔

یہ نہایت فیتی اورگراں بہا صندوق بالاکوٹ کی جنگ میں بھی ساتھ تھا۔سید صاحب،شاہ اسلعیل ہنشی محمد کی انصار کی اور دوسرے اکابر کی شہادت کے بعد ریبھی یا تو جل گیایالوٹ میں اس کے کاغذات ضائع ہو مکئے۔

دفتر کا نام' دمنشی خانہ' تھا۔غازی خال،شہامت خال وغیرہ اس کی محافظت پر مامور تھے۔منشی محمدی انصاری کوجس بستے کی ضرورت ہوتی ،محافظوں سے کہہ کرصندوق میں سے نکلوالیتے۔(۱)

نشانِ تا كيد

سیدصاحب نے مجاہدین کیلئے تاکید کی غرض سے ایک نشان مقرد کردکھا تھا۔ جب
کسی کوکوئی تحریری تھم دیتے تو دست و مبارک سے اس پر'' کلمۃ اللہ کائی'' کلھ دیتے لشکر
اسلام میں اسے انتہائی تاکیدی تھم سمجھا جاتا۔ مثلاً سیدصاحب کی سیرت میں سیدوا قعد درج
ہوچکا ہے کہ شاہ اسلیمل مرتبہ بالاکوٹ گئے تھے تو انہوں نے سکھوں کے لشکر پر شبخون
مارنے کا پختہ فیصلے کرلیا تھا۔ عین آخری وقت پرسیدصاحب کی طرف سے طبی کافر مان پہنے
مارنے کا پختہ فیصلے کرلیا تھا۔ عین آخری وقت پرسیدصاحب نے شبخون ملتوی کردیا اور سفر کی
سیا اور اس پر'' کلمۃ اللہ کافی'' درج تھا۔ شاہ صاحب نے شبخون ملتوی کردیا اور سفر کی
شبخون ملتوی نہ سیجئے۔ شاہ صاحب نے جواب دیا کہ فرمان تاکیدی ہے اور میرے لئے
عذری مخبائن نہیں رہی۔

مختلف مهري

اس سلسلے میں مختلف اصحاب کی مہروں کا بھی ذکر کردینا مناسب معلوم ہوتا ہے۔ان کی طرف سے جوخطوط لکھے جاتے تھے، وہ عموماً منشی صاحبان ہی لکھتے اور وہی مہریں عبت

⁽۱) بیتمام تفصیلات "منظوره" سے ماخوذ ہیں۔

شخصيت

ل ترتين

اسمه احمد (بیمبرشاه آملیل کے پاس وہی) سيرصاحب واذكر في الكتاب اسمعيل شاه اسلعيل اوير: هوالحي لا الله الاالله مولا ناعبدالحي ينيج: إن الْحكم الالِلَّه هو الولى الحميد بفضل خدا كشت بختم بلند احمد الله واستعين مولا نااحمراللدنا كيوري

يخيخ وليامحمه يثنخ بلند بخت

بعض اصحاب نے مہروں پرمحض نام کندہ کرار <u>کھے تھے۔ار</u> باب بہرام خال کی مہرگم ہوگئ تھی اورانہوں نے تی مہر نہ ہوائی۔ وہ کہا کرتے تھے' مہر ماشہید شد''۔

منشيوں كااخلاص اورسادگى

درديشي،سادگي اورية تكلفي ميسنشي عام مجابدين بي كانموند تصاوران ميس امتياز كي کوئی چیزموجود نیتھی _میدانِ جنگ میں وہ عام سیاہیوں کی طرح کام کرتے تھے۔قلمدان حچری کی طرح کمرمیں لٹکا لیتے ۔ جب تکھنے کی ضرورت ہوتی بے تو قف ک<u>کھنے لگتے</u>۔

سردار یا بندہ خال تنولی کامنتی محمد غوث سردار کو چھوڑ کرسید صاحب کے پاس آگیا تھا، وہنشی خانہ کے سامان کی سادگی دیکھ کر جیران رہ گیا۔سید جعفرعلی نقوی کے پاس برانا قلمدان اورایک بری تینچی تھی منشی محمرغوث نے کہا کہ میں آپ کو نیا جا قو اور نیا قلمدان لا دوں گا۔سیدجعفرعلی نقوی نے فر مایا:

"مراحاجت به قلم تراش شانیست، خدمت دین نمائید-به جمیس امر

ازشاراضی خواجم شد۔ مرامش عمدہ ہائے سرکار ہائے دنیا نہ باید شناخت۔ ایں جا جاروب کش وننثی کیسال است۔ اخلاص کامل می باید۔ چوں کار بدیں قلمدان ومقراض کہنہ ہم ممکن است و بہشراکت ازقلم تراش دیگراں درسی قلم ہم می شود، حاجت جج چیز نے نمی افتہ'۔ (1)

ترجمه: بجھے آپ کے جاقو کی ضرورت نہیں۔ وین کی خدمت بھالا کیں۔ یہی امر میرے لئے خوشنودی کا باعث ہوگا۔ مجھے دنیا دار حکومتوں کے کارکنوں کی طرح نہ سجھئے۔ ہمارے ہاں جھاڑو دینے والے خص اور منٹی کی شخصیت ایک ہے۔ یہاں اخلاص کامل درکار ہے۔ جب اس پرانے قلمدان اور پرانی قینجی ہے کام چل سکتا ہے اور دوسروں کا جاقو لے کرقلم بھی بنایا جاسکتا ہے تو مجھے کسی چیز کی کیا ضرورت ہے؟

غورطلب حقيقت

سید جعفرعلی نفوی کا جواب محض ایک تاریخی واقعے کے طور پرنہ پڑھے۔اس سے
اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ سید صاحب نے اپنے مخلصین میں کس قسم کی روح قکر عمل پیدا
کردی تھی۔وہ لوگ اپنی زندگیاں راو خدا میں وقف کر چکے تھے۔اگر نئے قلمدانوں یا نئی
قینچیوں اور چاقو وُں کی خواہش کرتے تو بیالی خواہش نہ تھی کہ سید صاحب کیلئے محدود
وسائل کے باوجودا ہے پورا کردینا غیرممکن ہوتا ہیکن وہ لوگ صرف ایک ہی غرض لے کر
وسائل کے باوجودا ہے کورا کردینا غیرممکن ہوتا ہیکن وہ لوگ صرف ایک ہی غرض اور
مردم گری کا کمال میہ ہے کہ بجاہدین نے میسادگی یا سامان کی فروما کیگی یا مجوری کی صالت
مردم گری کا کمال میہ ہے کہ بجاہدین نے میسادگی یا سامان کی فروما کیگی یا مجوری کی صالت
میں قبول نہ کی تھی، بلکہ وہ اس پر ہر لحاظ ہے قانع اور خوش تھے اور اے عنداللہ ٹو اب میں
زیادتی کا ماعث سیجھتے تھے۔

⁽۱) ''منظورة''ص: ٢٢٠ ٢٠

یہ اخلاص ہندوستان میں سیدصاحب کی جماعت کے سوااور کس جماعت کونھیب ہوا؟ یہ سلمانوں کی فراوانی اور شان ہوا؟ یہ سلمانوں کیلئے ایک نمونہ تھا کہ جہاد فی سبیل اللہ محض سامانوں کی فراوانی اور شان وشوکت پر موقوف ہے۔ صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم اجمعین کو جب لڑائیاں پیش آئیس تھیں تو دشمنوں کے مقابلے میں ان کے پاس کونسا سامان تھا؟ لیکن تاریخ اس حقیقت کی گواہ ہے کہ جن دشمنوں کا شکوہ ود بدبد دکھے کرنگا ہیں خیرہ ہوجا تیں تھیں ، وہ ایمان واستقامت کے مقابلے میں غرار اور بن کراڑ گئے۔

سیدصاحب ہندوستان میں اخلاص کا وہی منظر پیدا کرنا چاہتے تھے۔انہوں نے نمونہ پیش کردیا جس کی درخشانی زمانے کی گردش سے ماندنہیں پڑسکتی۔ باتی رہا بیامر کہ حسب مراد فوری نتیج کیوں پیدا نہ ہوئے تو قدرت کی مصلحتوں کا جمید کسی پرآشکارانہیں ہوسکتا۔ادائے فرائف کاراستہ سوداگری اور تجارت نہیں کہ سرمایہ لگایا اور نفع کے امید وار بن گئے ،فرمانبردار بندوں کو بہر حال احکام اللی کا پابندر ہنا چاہیے۔رضا جوئی کا تقاضا بھی ہن گئے ،فرمانبردار بندوں کو بہر حال احکام اللی کا پابندر ہنا چاہیے۔ رضا جوئی کا تقاضا بھی ہوتا ہے۔ نتیج سے انہیں بالکل بے پر وائی اختیار کرلینی چاہیے۔ان کے ساز وجود کا ترانہ بھی ہوتا ہے۔

به وُردوصاف تراحکم نیست دم درکش کی که آنچیماتی ماریخت عین الطاف است راوح ت کے علمداروں کی زندگیوں کا جائزہ لیاجائے توان میں رنج ومشقت، قیدو بند، دارور من اور قل وشہادت کے سواکیا مل سکتا ہے؟ گویا ہر لمحدان کیلئے ثبات واستفامت کی ایک نئی امتحان گاہ ہوتا ہے۔ شاید خواجہ حافظ نے ای حقیقت کے پیش نظر کہا تھا: درطر بی عشق بازی امن و آسایش خطاست ریش باد آں دل کہ بادر دتو جو یدمر ہے

ساتوال باب:

خطوكتابت

مجموعهُ مكا تنيب

اس نے اندازہ ہوسکتا ہے کہ انہوں نے تحریری دعوت کا فرض بھی کس اعلیٰ پیانے پر انجام دیا۔لطف بیر کہ ان کے اکثر مکا تیب آیات واحادیث سے مزین ہیں اور جو پچھان کی طرف سے لکھا گیاوہ دینی تعلیمات کا خلاصہ اورنچوڑ ہے۔

مرموز خط وكتابت

آج كل وليومينك مقاصد كيلية تمام حكومتوں نے خاص كود (مرموز الفاظ) بنار كھے

ہیں۔سیدصاحب نے آج ہے سواسوسال پیشتر سری خط و کتابت کیلئے کوؤ بھی تیار کرالیا تھا،اور اس خط و کتابت کو خاص آ دمیوں کے سوا کوئی نہ سمجھ سکتا تھا۔ بیاس حقیقت کی شہادت ہے کہ ان کی تحریک س طرح ہر پہلو سے کمل اور منظم تھی اور فکر وعمل کا کوئی گوشہ ایسانہ تھا جوان کی وقیقدرس نگاہوں سے اوجھل رہا۔

ايك مثال

مرموز خط و کتابت کی ایک مثال یہاں پیش کی جاتی ہے: ہنڈ کارئیس خادے خال قبل ہو چکا تھا۔ اس کے اہل وعیال کوشاہ اسلمیں رہا کردینا خلاف مصلحت سجھتے تھے۔ زیدہ کارئیس مقرب خال جو خادے خال کا قربی رشتہ دارتھا، نیز خادے خال کے بھائی سیدصا حب سے درخواسیں کررہے تھے کہ مقتول کے اہل وعیال کوچھوڑ دیا جائے۔ سید صاحب ہنڈ سے دور بیٹھے تھے اور جو حالات شاہ صاحب کے سامنے تھے وہ سیدصا حب کے سامنے نہ تھے، اہذا انہیں خادے خال کے اہل وعیال کوچھوڑ دیے بیں کوئی خرائی نظرنہ کے سامنے نہ تھے، اہذا انہیں خادے خال کے اہل وعیال کوچھوڑ دیے بیں کوئی خرائی نظرنہ آتی تھی اور انہوں نے شاہ صاحب کولکھ بھیجا کہ انہیں چھوڑ دیا جائے۔ آخر شاہ صاحب نے ایک مرموز خط سیدصا حب کولکھ بھیجا کہ انہیں مصلحت کو این کردیں۔ اس نے ایک مرموز خط سیدصا حب کولکھ بھیجا کہ انہیں مصلحت ہے اور بیخط میں نہ بین عرض کردیا کہ ان حالات میں اہل وعیال کی رہائی خلاف مقرب خال کے دوالے کردیا۔ اس نے اپنے خشی سے پڑھوایا تو بچھ بچھ میں نہ بین کا فید مقرب خال کے حوالے کردیا۔ اس نے اپنے خشی سے پڑھوایا تو بچھ بچھ میں نہ آیا اور سجھ لیا کہ یہ خوداس کی شکا تیوں پر مشتمل ہے، چنا نچہ اس نے نہ بین خواسید صاحب کے باس پہنچایا نہ سرداری پر قائم رہا بلکہ اس ڈر کے مارے پہاڑ وں میں چلاگیا۔

شاہ اسطن اور شاہ یعقوب کے نام خطوط

سیدصاحب نے فراہی ُزر کے جوم کر جا بجابنائے تھے،ان میں سب سے بردامر کز دیلی میں تھاجس کے انتظام کے ذمہ دارشاہ محمد ایخل اور شاہ لیعقوب بتھے۔ بیموماً ہنڈیوں کے ذریعے سے روپے سیدصاحب کے پاس بھیجتے تھے، بعض اوقات خاص قاصد سرحد سے دہلی آکرروپیہ لے جاتے تھے۔ان سے زیادہ تر خط وکتابت روپ کے متعلق ہوتی تھی ۔طبعًا اندیشہ تھا کیمکن ہے یہ خطوط اجنبیوں کے ہاتھ لگ جائیں، اسلئے سیدصاحب نے ان کے متعلق خاص احتیاطی تدہیریں اختیار کیں۔مثلاً:

ا۔ یہ خطوط عموماً عربی میں لکھے جاتے تھے۔میرے علم میں جتنے خطاآ ئے ،ان میں سے صرف دوفاری میں تھے۔

۲۔ ایک یادوخطوں کے سواکسی میں نہ سیدصاحب نے اپنا نام صراحنا لکھااور نہ مکتوب الیمماکے ناموں کی صراحت کی ۔

سے روپے کی رسیدعمو ما ایسے انداز میں بھیجی جاتی تھی کہ کمتوب الیہما کے سوا کو کی اسے بمجھ ندسکتا تھا۔

س۔ ایک خط کے آخر میں ایسے مرموز الفاظ درج میں جن کا مطلب کوشش کے باوجود سمجھ میں نہ آیا۔

اب ان کی مثالیں ملاحظہ فر مالیجئے:

كانتباورمكتوباليهما كےاساء

سیرصاحب اینے متعلق مختلف خطوں کے آغاز میں لکھتے ہیں:

ا_ من عبد الله المنتهض لاعلاء كلمة الله.

٢_ من عبدالله المنتهض لاعلاء كلمة الله الناصح لكافة المسلمين.

٣ من عبدالله المنتهض لاعلاء كلمة الله لنصوة الدين الملقب

باميرالمومنين. كان يك

مكتوب اليهما كاذكرملا حظه فرمائ:

ا_ نـاصـران بكلمة الله،ناصحان لدين الله،اما اكبرهما فلاشك انه نـقى الاعراق،صفى الاخلاق،وصى الآفاق واما اصغرهما فلاريب فى انه ذوالخلق المرغوب، مطهرادناس العيوب.

1- شيخين جليلين، للدراية عينين وللرواية اذنين وللسماحة بدين وللشهادة عضدين وللعبادة قدمين وللهداية علمين. اما اكبرهما فلاريب في انبه شبجرة غائرة الاصول والاعراق، ناضرة الغصون والاوراق واما اصغرهما فلاشك في انه ثمرة طعمها مرغوب وريحها محبوب.

سر اللي كريسم الاحلاق، طيب الاعراق، فاتع الاغلاق والى اخيه المحبوب ذي الخلق المرغوب.

ظاہر ہے کہ دونوں بھائیوں کیلئے جوالفاظ ہیں وہ آگن اور یعقوب کے ہم قافیہ ہیں۔اس کی اور بھی مثالیں ملتی ہیں۔

قاصدول کی کیفیت

کہیں قاصدوں کے نام صراحثاً درج کردیے ہیں اکثر ان کے متعلق بھی رمزو کنامیہ کاطریقة اختیار کیاہے۔مثلاً دوقاصدوں کے متعلق لکھتے ہیں:

ار احسلهما صغيراسيما وكبيرجسما وثانيهما في القامة قصير المسمى به حرزالله القدير.

۲۔ ایک خط میں لکھتے ہیں کہ جو قاصد بھیج جارہے ہیں وہ تمام مجاہدوں کے نزدیک معتبر ہیں۔

احلهما يسمى بما هو ضدالادباروالمثانى شيخ منسوب الى سيد الابراد. ان كسوافتلف مكا تبيب يشمندرجدذ بل قاصدول كاذكراً يائے: احمالي، اخلاص نشان، جا ندخان، حاجی بهادرشاه خاص، ابراتیم جوغزنی سے بجرت کر کے نشکر اسلام میں پہنچاتھا، جہان خاں، چھنا، پیرمحمد۔

رقمول کی رسید

رقوں کی رسید کے متعلق بھی عموماً مرموز پیرا بیا ختیار کرتے ہیں۔مثلاً: ۱۔ چودہ سو کی رسید دین تھی تو لکھا کہ رقم پہنچی جواصحاب بیعت الرضوان کی تعداد کےمطابق تھی۔

۲۔ سات سورویے کی رسید کے متعلق لکھتے ہیں: مرتبہ ثالثہ میں اقلیموں کی تعداد کےمطابق۔

س- چارسوکی رسید کے متعلق فرماتے ہیں: مرتبہ ثالثہ میں خلفائے راشدین کی تعداد کےمطابق۔

٣ - چيسو كم معلق ارشاد موتا ب : مرتبه فالشمين تعداد جهات كے مطابق -

۵_آ ٹھ سو کے متعلق لکھتے ہیں: مرتبہ ٹالشہیں ابواب جنان کی تعداد کے مطابق ۔

٧- دو براريانسوكى رسيديول ويتي بيل: اثنين من الموتبة الرابعة و حمس من

كهين سات سوكيليَّ كواكب سياره كي تعبير اختيار كي من اوركهين ايام مفته كي ـ

مرموزالفاظ

ایک خط کے آخر میں مندرجہ ذیل عبارت ورج ب:

والسلام عليكم وعلى من لد كيم _ اجتث ، خجند ، ذرزس ، هصضط بضعفو بقطكم ، نو بي _ کچھ معلوم نہ ہوسکا کہان الفاظ کا مطلب کیا ہے اور کسی ایسے بزرگ سے ملا قات کا

شرف بھی حاصل نہ ہوا، جوان مرموزات کی کلید سے آگاہ ہوتے۔

رقوم کے متعلق ہدایات

عام طور پر ہنڈیاں قریہ منارہ کے دوہندوساہوکاروں موتی اورسنتو کے نام آتی تھیں۔ جوایک ویس سے بارہ روپ متی کا شتے تھے یعنی ایک سو کے اٹھای روپ دیتے تھے ۔ سید صاحب نے متعدد خطوں میں تاکید فرمائی کی ہنڈیاں چھوٹی رقبوں کی بھیجی جا ئیں ۔ غالبًاس لئے کہ بری رقبوں کی ہمٹڈیوں کاروبیہ ماصل کرنے میں دریگئی تھی۔ مختلف خطوط میں تاکید کی گئی ہے کہ پچھر قم الگ کرلی جائے اوروہ ان مجاہدین کے پسماندہ کو دیدی جائے جنگے گزارے کا کوئی ذریعہ نہ تھا۔ بعض اوقات اپنے دولت مند دوستوں کولکھ بھیجتے تھے کہ اتنی قم فلاں فلاں عالی مجاہدین کے متعلقین کو پہنچادی جائے ۔ عومایہ رقبیں ہیں پچیس یا پچاس سے متجاوز نہ ہوتی تھیں ۔ حاجی زین العابدین کوایک مرتبدا کے سو روپے دے دیے کی ہدایت کی گئی تاکہ وہ مختلف اصحاب میں بانٹ دیں ۔ شاہ المعیل کی ہشیراوران کے صاحبرادے کوایک ایک سوروپیدیا گیا۔

مجابدين كاعمل

مجاہدین بھی تمام مواقع پر انتہائی احتیاط سے کام لیتے تھے۔مثلاً ایک مرتبہ امب سے سید صاحب کے پاس پیغام بھیجنا منظور تھا۔ اندیشہ تھا کہ یہ پیغام کسی کے ہاتھ نہ لگ جائے۔ چنانچ ایک معتمد علیہ تنولی تلاش کیا اور جو پیغام بھیجنا تھا لکھ کراس کے جوتے کے سلے میں سلوادیا۔
تلے میں سلوادیا۔

جب اہل سمہ کی غداری کے باعث بہت سے مجاہدین قبل ہو چکے تھے تو مولوی خیرالدین شیر کوئی لوندخوڑ میں مقیم تھے، انہیں حفاظت کی غرض سے اپنا مقام چھوڑ نا پڑا۔ پنجتار نہ پہنچ کئے تھے، اس لئے کہ راستہ خطرناک تھا، لہذا پڑان غار کا قصد کرلیا جولوندخوڑ کے شال مغرب میں ایک محفوظ مقام تھا۔ سید صاحب کے پاس بی خبر پہنچانے کی کوئی صورت نہ بنی۔ رائے میں مولوی صاحب کو ایک شخص ال گیا، اس کی کتاب کے عاشیے میں ایک جگہ رعبارت لکھ دی:

" تاای جااز فضل وکرم خدا آیده ایم و به پژان غاری رویم آس جناب دعافرمانید که باز زیرفتدم آس جناب حاضر شویم" به

قرجمه: خداكفنل دكرم بهماس مقام تك آكے اور بران غارجار ہے ہیں۔ دعافر مائي كد پھرآپ كے قدموں ميں پہنچانفيب ہو۔

آ مھواں باپ:

دعوت و بینغ دعوت و بینغ

تحریک کی بنیاد

سیدصاحب کی تحریک خالص دین اصول پر قائم ہوئی تھی اوراس کی ترقی وتوسیج کا انتظام فرمادیے انتظار دعوت و تبلیغ پر تھا۔ سیدصاحب نے ابتدائی ہے اس کیلئے بھی خاص انتظام فرمادیے تھے۔ پہلے وہ خود اپنے خاص رفیقوں کولیکر دورے کرتے رہے، پھر مولا ناعبدالحی اور شاہ اسلمیل دعوت و تبلیغ ہی کیلئے وقف ہو گئے۔ سرسید احمد خال شاہ اسلمیل کے حالات میں کھتے ہیں:

''بموجب ارشادسید اصفیاء لیعنی پیرطریق بدی (سیدصاحب) کے اس طرح سے تقریر دوعظ کی بنا ڈالی کہ مسائل جہاد فی سبیل اللہ بیشتر بیان ہوتے اور یہاں تک آپ کے میقل تقریر سے مسلمانوں کا آئینہ کباطن مصفا اور مجلا ہوگیا اور اس طرح سے راوحت میں سرگرم ہوئے کہ بے اختیار دل چا ہنے لگا ہم ان کارا و خدا میں فدا ہواور جان ان کی اعلائے لوائے محمد کی میں صرف ہو۔ (ا) مولا ناعبد الحکی کے متعلق سرسید فر ماتے ہیں کہ انہوں نے بھی وعظ شروع کر دیا تھا: ''لوگوں کو نہایت ہدایت حاصل ہوئی او ربد انفاق مولوی محمد اسلمیل صاحب کے ترغیب جہاد فی سبیل اللہ میں سرگرم رہے۔ (۲)

⁽۱) بیرحالات آخارالصناد ید کی طبع اول میں شائع ہوئے تھے۔ انجمن ترقی اردونے انہیں اپنے سدماہی رسالہ' تاریخ وساسات' میں بالا تساط چھاپ دیا۔ اقتباس کیلئے ملاحظہ ہو' تاریخ ساسات' بابت نومبر ۱۹۵۲ء ص: ۸۔ (۲) ایسٹا ایسٹا ص: ۷۷۔

ضرورى انتظامات

سید صاحب نے راہ بجرت میں قدم رکھنے سے پیشتر جگہ جگہ ایسے اصحاب مقرر کردیے تھے جود عوت وہلیغ کے ذریعے سے مسلمانوں کے عقائد وا کمال کی اصلاح کریں اور انہیں جہاد کی ترغیب دیتے رہیں بعض اصحاب کا وظیفہ قرار دیا گیا کہ مسلمان جہاد کے سلسلے میں جو مالی امداد دیں وہ ان کے پاس جمع ہوتی رہے۔ پھر یا تو یہ رقمیں سید صاحب کے قاصدوں کو دے دی جاتی تھیں، جو وقتا فو قنا ہندوستان آتے رہتے تھے اور مختلف حصوں کا دورہ کر کے رقمیں لے لیتے تھے، یا ہر مقام سے جمع شدہ رقمیں دبلی پہنچادی جاتی تھیں، جو فرا ہمی کر رکاسب سے ہوا مرکز تھا اور وہاں سے ہنڈیوں کی شکل میں سید جاتی تھیں، جو فرا ہمی کر رکاسب سے ہوا مرکز تھا اور وہاں سے ہنڈیوں کی شکل میں سید صاحب کے یاس بھیج دی جاتی تھیں۔

بہرحال اس تحریک کا فروغ دعوت وتبلیغ ہی پرموقوف تھا، جے سید صاحب نے مختلف اوقات میں امر بالمعروف اور نہی عن المنکر سے تعبیر فرمایا۔ دعوت وتبلیغ ہی کے ذریعے سے مسلمانوں میں حقیق دینی ذوق پیدا کیا جا سکتا تھا۔ ای طریقے سے کام لے کر مجاہدین کی جماعتیں تیار کی جاسکتی تھیں، اور یہی طریقہ وسائل جہاد کیلئے فراہمی زر کا ضامن ہوسکتا تھا۔

خاص داعیوں کا تقرر

جس حد تک میں اندازہ کر سکاہوں، سید صاحب دہلی، ٹونک، یو پی اور بہار کے علاقوں میں دعوت و تبلیغ کا پوراانتظام جہاد کیلئے رواند ہونے سے پیشتر کر چکے تھے، لیکن بعض حصے ایسے بھی تھے جہاں یا تو کوئی انتظام ہی نہ کیا جاسکا تھا یا جوانتظام تھاوہ ضرورت کے مطابق نہ تھا۔ مثلاً جمبئی، حیدرآ باد، مدراس ادر بنگال، لہذا سرحد بہنچ کر اور حالات کا جائزہ لے کرسیدصاحب نے ان حصوں میں مختلف اصحاب کوداعی مقرر کیا جوتقر بروبیان جائزہ لے کرسیدصاحب نے ان حصوں میں مختلف اصحاب کوداعی مقرر کیا جوتقر بروبیان

کے لحاظ سے مجاہدین میں متاز تھے۔ مثلاً مولوی سید محرعلی رام پوری بمولوی ولایت علی عظیم آبادی بمولوی عزایت علی عظیم آبادی بمولوی محمد قاسم ساکن بمبئی بسید اولادحسن قنوجی بحافظ قطب الدین جمکن ہے اور اصحاب بھی اس سلسلے میں مقرر ہوئے ہوں، مجھے صرف انہیں اصحاب کاعلم ہے۔ مفصل حالات تو ان کے سوائح میں بیان ہول گے، لیکن مرضوع کی پیمیل کیلئے ان کے ارسال اور داعیا نہ کاروبار کی مرسری کیفیت بیان کردیتا ضروری ہے۔

مولوی سید محمر علی رام پوری

مولوی سید محمطی رام پوری کے متعلق وقائع کا بیان ہے کہ انہیں سید صاحب نے حیدرآ باد (وکن) جانے کا حکم دیا:

انہوں نے عذر کیا کہ مجھ کو نہ اس قدرعلم ہے کہ کسی عالم سے مباحثہ یا مناظر ہ کروں اور نہ سلیقہ ہے کہ لوگوں کے انبوہ میں دعظ ودرس کہوں۔

سیدصاحب نے فرمایا کہ جس بات کا آپ عذر کرتے ہیں، اللہ تعالیٰ سے امید ہے کہ وہ عذر دور کردے۔ پھر آپ نے اپنی ٹونی، کرتا اور پاجامہ انہیں پہنایا اور پانچ آدی ان کے ہمراہ کیے جن میں سے تین کے نام یہ ہیں: قیم خال رام پوری، عنایت اللہ خال اور عبداللہ اور حکم دیا کہ پیرکوٹ میں بیوی صاحب سے ملتے ہوئے کراچی سے شتی پرسوار ہوں اور بمبئ میں از کر حیور آباد جا تیں۔ (۱)

مولوی صاحب موصوف کیچھ مدت حیدرآ باد میں رہے بھر مولوی ولایت علی عظیم آ بادی حیدرآ باد میں مقرر ہو گئے اور مولوی سید محمد علی کو مدراس جانے کا حکم مل گیا۔وہ محرم ۱۲۴۵ھ (جولائی ۱۸۲۹ء) میں مدراس پہنچے اور چند ہی مہینوں میں مسلمانانِ مدراس میں زبر دست دینی انقلاب پیدا کردیا،جس کی پوری کیفیت'' تنبیہ الضالین'' سے معلوم

⁽۱) وقا نُعض: ۵۰۵ بـ

ہوسکتی ہے۔(1)

مولوي ولايت على عظيم آبادي

مولوی ولایت علی عظیم آبادی کے متعلق راویوں کا بیان ہے کہ سید صاحب کے تعلق میں ان کی حیثیت وہی تھی، جیسے مردہ غسال کے ہاتھ میں ہو:

''کوئی کاردشوار حضرت ان کوفر ماتے، حیلہ یا عذر وا نکار جانے ہی نہ تھے، ندائی رائے کو کسی المریس وخل دیے، بلکدا کثر اوقات فرماتے تھے کہ اللہ تعالیٰ نے امردین میں سیدصا حب کو طبیب حاذ تی کیا ہے۔ ہمارے نفع وضرر کو وہی خوب بیجے ہیں۔ جس کو جومناسب جانے ہیں، وہ کارفر ماتے ہیں۔'

مولوی سید محمطی کی طرح انہیں بھی اپنی ٹوپی، کرتا، پاجامہ پہنا کر سینے اور پشت پر ہاتھ پھیرا اور دعا کی کہ اللہ تعالیٰ تنہاری مدد کرے۔وصیت فر مائی کہ کلمہ ُ حق کے بیان میں کسی کا خوف اور ملا حظہ خاطر میں نہ لا تا۔سید کرامت اللہ،مولوی عبدالقادر اورمولوی عبدالواحد کوان کے ہمراہ کردیا۔ بیتیوں مولوی صاحب کے ہم وطن تھے۔ (۲)

ان کے کام کی مفصل کیفیت بھی الگ بیان ہوگی۔ یہاں صرف اتنا بتادینا ضروری ہے کہ دعوت وہلئے سے انہوں نے ہزاروں مسلمانوں کوراوح ق پرلگادیا اور بہت ہے آدی ان کے حلقہ ارادت میں داخل ہوئے جن میں سکندر جاہ والی مملکت آصفیہ کے فرزند مبارز الدولہ کو ہرعلی خال بھی شامل تھے۔سیدصا حب کی شہادت کے بعد مولوی صا حب دورہ کرتے ہوئے عظیم آباد بہنچ۔ان کا طریقہ بیتھا کے قریبہ بقرید وعظ فرماتے۔

مولوى عنايت على عظيم آبادى

وقالع كاييان م كسيدصاحب فمولوى صاحب مدوح كوبلا كرفر مايا:

⁽١) حنبيه الضالين عن طريق سيد الرسلين تلمي نسخه.

⁽۲) وقالتيمن.۸-۵_

"آپ کو واسطے ترخیب جہاد کے بنگال سیجے ہیں۔انہوں نے عرض کیا کہ حاضر ہوں مگر دل چا ہتا ہے کہ یہاں کا بھی کوئی واقعہ دکیے لیتا۔آپ نے فرمایا کہ وہاں آپ کے ہاتھوں سے اللہ تعالیٰ کا کام بہت نظے گا اور آپ کا وہاں رہنا واسطے کوشش کا رخدا کے گویا ہمارے ساتھ یہاں رہنا ہے۔'(1)

انہیں بھی عمامہ اور کرتا عنایت فر مایا اور انہیں کے رفیقوں میں سے چھآ دی ہمراہ کردیے۔مولوی صاحب موصوف نے بنگال میں جو کارنا ہے انجام دیے وہ تفصیل سے ان کے حالات میں بیان ہوں گے۔ یہاں اثنا عرض کردیتا ضروری ہے کہ شرقی بنگال میں آج جودینی روح نظر آ رہی ہے وہ مولوی صاحب موصوف ہی کی سرگرم کوششوں کا منتجہ ہے۔

باقى إصحاب

باقی اصحاب میں ہے مولوی محمد قاسم ساکن بمین کو وعظ ونصیحت اور دعوت و جہاد کے لیے روانہ کیا۔ (۲) حافظ قطب الدین کو ہندوستان بھیجا۔ (۳) سیداولا دحسن قنو جی کو بھی ارشاد و ہدایت ہی کی غرض ہے والیس بھیج دیا تھا۔ چنا نچان کی زندگی کے تمام باقی اوقات اس کام میں صرف ہوئے۔ اپنے بھا نجے سید حمید الدین آور ان کے بھینچے سید ابوالقاسم (بن سید احمد علی خواہر زادہ سید صاحب) کو بھی وعوت و تبلیخ وارشاد ہی کیلئے میدانِ جنگ ہے والیس کیا گیا تھا۔

نتائج

دین واسلامیت کا جوعظیم الشان کارنامة تھوڑی کا مت بس انجام دیا تھاوہ دعوت وتبلیغ ہی کی برکات کا ایک کرشمہ تھا، لہذا یقین ہے کہ یہ نظام بہت منظم اور وسیع ہوگا۔ سیدصا حب کی شہاوت کے بعد بھی مدت وراز تک لوگ جہاد کی نیت سے سرحد پہنچتے رہے۔ کم از کم سہاوت کے بعد بھی مدت وراز تک لوگ جہاد کی نیت سے سرحد پہنچتے رہے۔ کم از کم سال ۱۸۱ء تک اس سلسلے میں کوئی فرق نہ آیا اور بیاس نظام کی پٹنگی کا طبعی نتیجہ تھا جوسید صاحب نے اپنی زندگی میں قائم کردیا تھا۔ ۱۸۶۲ء میں جماعت کے اکا ہر گرفتار کر لیے ساحب نے اپنی زندگی میں قائم کردیا تھا۔ ۱۸۹۲ء میں جماعت کے اکا ہر گرفتار کر لیے گئے اور ان پرمقد مے چلے۔ پھر مقدموں کا قصہ کی سال جاری رہا۔ اس کے بعد تحریک کی سہلی سرگرمی تو باقی ندر ہی تا ہم مجاہدین اِ کا دُکا ہر اہر سرحد پہنچتے رہے اور بیسلسلہ اس وقت نہم ہواجب انگریز ہند وستان سے رخصت ہوگے۔

نوال باب:

مالى انتظامات

ابتدائی دور

سید صاحب نے راہ ہجرت میں قدم رکھنے کے وقت تہ خانے سے جمع شدہ رقم نکوائی تو وس ہزاررو ہے نکلے۔آپ نے پانچ ہزاراز واج کے حوالے کردیے جوآپ کے بعد ہجرت کرنے والی تھیں ،صرف پانچ ہزارانے لئے رکھے۔ بیرو پے چھوٹی چھوٹی تھیلیوں میں ڈال کر انہیں مختلف مجاہدین کی کمروں میں باندھ دیا۔ گویا ہندوستان کی تطمیر کیلئے اسھے تھے تو صرف پانچ ہزار روپے اور تقریباً ساڑھے پانسو مجاہد ہمراہ تھے۔ بیر سروسامان ایسانہ تھا کہ سی بھی محض کے زویک قابل تو جہ قرار پاتا ہیکن سروسامان کی فروما گئی ارباب عزیمت کی عناں گیر بھی نہ ہوئی۔ وہ ہمیشہ فرض کی پکار پرسر بکف میدانِ فروما میں جہنچتے رہے۔ پھر جو پچھانہیں چیش آیا ہمیشہ شکرو صبر سے قبول کیا۔

ازواج کو یا نیج ہزاراس غرض ہے دیے تھے کہ آئیس نہایت کھن سفر در پیش تھا اور کچھ معلوم نہ تھا کہ منزل مقصود کون ی ہے اور اس پر پہنچنے میں کتنا وقت کے گا۔ یہ بھی اندازہ نہ تھا کہ عالم غربت میں زندگی کے دن کیوں کر بسر ہوں گے۔اغلب ہے کہ سید صاحب کے نیاز مندوں نے بیبیوں کی خدمت میں بھی پچھر قمیں بہ طور نذر پیش کی مواجب کہ دینا ضروری ہے ہوں، تا ہم اس مقدس خاندان کی شانِ ایٹار وقر بانی کے سلسلے میں یہ کہ دینا ضروری ہے کہ جب بیبیوں کو سندھ بینے کر کشکر اسلام کی عسرت کا علم ہوا تو انہوں نے دس ہزار رو پے کی رقم ہنڈ یوں کی شکل میں جاجی بہادر شاہ خال کے ہاتھ سیدصاحب کے پاس بھیج دی:

ایں سلسلہ از طلائے تاب است 😸 ایں خاندتمام آفاب است

متفرق تحائف

سیدصاحب کے نیاز مندقصد بھرت کے ساتھ ہی مختلف قتم کے تعالف پیش کرنے گئے۔ مثلاً گھوڑے ، تلواریں ، بندوقیں ، کپڑے ، خیصے ، برتن ، قلمی قرآن اور نقد روپے۔ یقین ہے کہ گوالیار وٹو نک کے والیوں اور اکا برنے بھی خاصی بڑی رقمیں پیش کی ہوں گی۔ لیکن راستہ بہت تخص اور طویل تھا ، پانچ چھ سوآ دمی تھے، للہذا خرچ بھی خاصا ہوتا گی۔ لیکن راستہ بہت تخص اور طویل تھا ، پانچ چھ سوآ دمی تھے، للہذا خرچ بھی خاصا ہوتا ہوگا۔ ایک بزار روپے ، ایک بندوق اور تینچوں کی ایک جوڑی امیر ان سندھ نے پیش موگا۔ ایک بعددوران سفر میں صرف امرائے کا بل سے کچھ رقمیں کی ہوں گی ، بس یہی سروسا مان تھا ، جس کی بنا پرسید صاحب نے ۲۰ ردمبر ۱۸۲۹ء کو جہاد کا آغاز کیا۔

سرحدكے حالات

سرحد میں پہنچنے کے بعد وقتا فو قتا دعوتیں تو ہوتی رہیں لیکن نظر بظاہر نفلا رو ہیہ کہیں سے نہ ملا۔ جنگ شید و سے پیشتر اور بعد مجاہدین پر بڑی عسرت کا زمانہ گذرا، یہاں تک کہ ایک موقع پر زیادہ سے زیادہ مضی بھر جوار روزانہ ہر مجاہد کو ملتی تھی اور بعض اوقات وہ درختوں کے پتے ابال کرکھاتے رہے۔

جب ہندوستان سے مجاہدین چہنچنے گئے تو کچھ روپے اور سامان سید صاحب کے پاس جمع ہوا۔ اس دور میں ایک مصیبت بیتھی کے سید صاحب جو انتظام فرما کر سرحد گئے سے اس کے مطابق ہنڈیاں پٹاور کے ساہوکاروں کے نام چہنچنے لگیں۔ پٹاور کے سرداروں نے ان ہنڈیوں کارو پیررکوادیا۔ آخر بڑی پریٹانیاں اٹھانے کے بعد منارہ کے ساہوکاروں نے دوساہوکاروں کے ماہوکاروں سے ربط بیدا کیا گیا جیسا کہ عرض کیا جا چکا ہے، وہاں کے دوساہوکاروں کے نام روایتوں میں آئے ہیں: ایک موتی ، دوسراسنتو۔ بیسورو پے کی ہنڈی پر بارہ روپے متی بام روایتوں میں آئے ہیں: ایک موتی ، دوسراسنتو۔ بیسورو پے کے ہنڈی پر بارہ روپے متی اسٹوکانے کو سید سے ، بین اسٹوکانے کو سید سے ، بین سید صاحب کوسورو پے کے صرف اٹھائی روپے ملتے تھے۔ ان مشکلات کو

صبرے برداشت کر لینے کے سواجارہ ندتھا۔ قیام خمر کے زمانے میں ایک مرتبہ تنگی اس حد پر پہنچ گئی کہ بجاہدین نے سید صاحب کی اجازت سے اجرت پر گئے جھیلنے کا کام شروع کردیا۔ اجرت کے علاوہ برخض کوآٹھ آٹھ دس دس گئے بھی مل جاتے تھے۔

دورِ کشائش

جب منارہ میں ہنڈیوں کا انظام ہوگیا تو رو پیرینی لگا۔ چنانچے سید صاحب نے اہام زئی پر پیش قدمی کی تھی تو ان کے پاس تمیں پینتیس ہزاررو پے نفذ جمع تھے۔ان میں سے پانچ ہزار کی رقم ساتھ لے لی گئے۔ باقی رو پیرٹوئی میں محفوظ مقام پر وفن کردیا گیا۔ امان زئی سے واپسی پر بیرو پیرنکالا گیا۔

خمر سے مراجعت پر نظام شرعی کے اجراء کیلئے دومر تبد پنجتار میں عظیم الشان اجتماع ہوااور دونوں مرتبہ کم وہیش اڑھائی ہزار آ دمیوں کیلئے کھانے کا انتظام کرناپڑا۔ بیٹرج سید صاحب کے بیت المال ہی ہے ہوا۔

کشائش کامستقل انظام اس وقت سے ہوا جب قاضی سید محمد حبان نے عشر کا انظام کردیا ہیں میں سید محمد حبان نے عشر کا انظام کردیا ہیکن میسلسلہ صرف چند مہینے قائم رہا۔ پھر مجاہدین کے خلاف سازشِ قل کے بعد سید صاحب بیثاور کے میدانی علاقے سے تشمیر کی جانب چلے گئے اور راہتے میں بالاکوٹ کی جنگ چیش آئی۔

خطوط کی شہادت

مختلف خطوں میں متفرق ہنڈیوں کی رسیدیں درج ہیں۔ مثلاً: صفحہ ہنڈی ۱۲۷ کا مکتوب دو ہزار پانسو ۱۸۷ کا مکتوب دو ہزار جارسو سات مو مات و مات

یداعداد صرف چندمکاتیب سے ماخوذی سے ۔یقین ہے کدایسے اور مکاتیب بھی ہوں گے جومیرے علم میں ندآسکے، یاضائع ہوگے، کین ظاہر ہے کہ بیر قیس ایک نہیں، جنہیں سکھوں اور اگریزوں جیسی جنگی قوتوں کے خلاف جہاد کے سلطے میں قابل ذکر سمجھا جائے۔ بایں ہمہ سید صاحب نے انہیں وسائل کی بنا پروہ کارنا مے انجام دیے جو ہمیشہ جریدہ عالم کے صفحات کی زینت بنے رہیں گے۔

ميال دين محد كابيان

میاں دین محمرسیدصاحب کے خاص خادم اور معتمد علیہ قاصد تھے اور وقا فو قاس غرض سے ہندوستان آتے رہتے تھے کہ سیدصاحب کے نیاز مندوں اور مقرر کیے ہوئے مرکزوں سے روبیہ جمع کرکے سرحد لے جا کیں۔وہ فرماتے ہیں کہ واقعہ بالاکوٹ کے وقت میں شاہ اکمی کے پاس دبلی میں تھا اور اس وقت میرے پاس چوہیں ہزار روپے تھے۔ان میں سے اڑھائی ہزار ہنڈی کی شکل میں سیدصاحب کے اہل وعیال کیلئے سندھ تھیجے دیے۔(۲)

حيات النساء بيكم كاواقعه

حیات النساء بیگم بنارس کی ایک مسلمان خاتون تھیں، جس نے آسٹس بروک نامی ایک انگریز سے شادی کرلی تھی۔ پھر وہ انگریز سے علیحدہ ہوکر سید صاحب کے حلقہ

⁽۱) صفحات كي والعاس مجوعه مكاتيب كي بين جيم مكاتيب شاه المعيل كام يقبير كرتابول.

⁽۲) وقائح ص:۲۲۵_

ارادت میں داخل ہوگئ۔اس نے ہزاروں روپ نقد، ہزاروں کامال اور مکان سید صاحب کی خدمت میں چیش کردیا۔آپ نے یہ نذرقبول نہ کی اور فرمایا کہ مال خبیث ہے۔ پھر حکیم سلامت علی خال ،مولوی غلام کی ،میرزا کریم اللہ بیگ اور مولوی عبدالقادر نے مل کردی ہزارروپے جمع کیے اور دوسوروپے ماہا نہ کرائے برا یک مکان کے کرحیات النساء بیگم کی طرف سے تجارت شروع کردی۔اس میں بہت نقع ہوا۔ اس نقع میں سے پانچ ہزار کی رقم میاں وین محمد کی خدمت میں چیش کی گئی۔انہوں نے بھی قبول نہ کیا اور کہا کہ ہے اواز تنہیں لے سکتا۔

شاہ آخل اور شاہ بعقوب کے موسومہ ایک مکتوب میں بھی حیات النساء بیٹم کا ذکر ہے۔(۱) میاں دین محمد نے سفر سے والیں جا کر سید صاحب سے اس امر کا ذکر کیا تو آپ نے فرمایا کہا چھا کیا بمیکن میدو پیدلے لینے میں پچھ ترج نے تھا۔

بإنج ہزاری تقسیم

میاں دین محمہ پھر ہندوستان آئے تو پانچ ہزار روپے لیے لیے۔ ان میں سے
اڑھائی ہزار سید صاحب کے عظم کے مطابق مختلف اصحاب میں تقسیم کردیے۔ پچھ مدت
بعد حیات النساء کا انقال ہوگیا، ساتھ ہی تجارت کا کارو بار گرز گیا۔ میاں دین تحمہ نے باتی
رقم بھی مختلف مجاہدوں کے اہل وعیال اور متعلقین میں بانٹ دی۔ بیت المال میں سے ان
مجاہدین کی بھی امداد کی جاتی تھی جن کے پاس سرحد تک سنر کیلئے کوئی سرمایہ نہ ہوتا تھا اور
ضرورت مند مجاہدین کے اہل وعیال کی امداد کے حالات تو پیش کیے ہی جا چکے ہیں۔
میاں یہ حقیقت بھی واضح کردینی جا ہیے کہ ان مجاہدین نے خود بھی کوئی رقم نہ ما گی، سید
صاحب اپنی معلومات کی بنایر جو پچھ کسی کودینا مناسب جمھتے تھے دے دیے تھے۔

⁽۱) "مجموعه مكاحيب شاواملعيل"، قلى نسخص: ١٦٤ ـ

ضروری گزارش

فراہی زرومال کی اس سرگزشت سے اندازہ کیا جاسکتا ہے کدسید صاحب نے کتنی تعوزی رقم سے تمام تنظیمات کیں۔ بیرویے زیادہ ترعام مسلمانوں سے ملے تھے عوام کا طریقہ بیتھا کہ ہرگھر میں ایک گھڑا رکھار ہتا ،کھانا پکانے کے ونت مٹھی بھر جاول یا کوئی دوسری جنس اس میں ڈال دی جاتی ۔ ہفتے کے بعد بیجنس جمع کر کے فروخت کر دی جاتی ۔ مخابرت کے جووسائل آج کل موجود ہیں ، بیاس زمانے میں موجود نہ تھے، کیکن دیکھیئے کس طرح مالی انتظامات اس درجه کمال پریمنجادیے تھے کہ ایک حبرجی کہیں ضائع نہ ہوتا تھا۔ ہمارے زمانے کے جماعتی نظاموں میںعوام کا جمع کیا ہواروپیہ کم تر ہی محفوظ رہایا صیح مقاصد برصرف ہوا، کیکن سیدصاحب کے نظام میں چھوٹی چھوٹی رقمیں مختلف دیہات وقریات ہے بالکل محفوظ بڑے مرکز وں میں پہنچتی تھیں۔ وہاں سے منزل بہ منزل سرحد پہنچائی جاتی تھیں۔ یہ نظام ۱۸۲۴ء تک اعلیٰ پیانے پر جاری رہااور ہمارے زیانے میں بھی اس دینی نظام کا مالی حصہ برخلل ہے یاک تھا۔ سواسوسال کی مدت میں معمولی سی خیانت كى بھى كوئى شكايت پيش ند بوئى -ايك مقام سے دوسرے مقام بررقيس بہنچانے والے لوگ سارا کام فی سبیل الله انجام دیتے تھے اور یائی تک اجرت نہ لیتے تھے۔خالص دینی نظام ہی اس امتحان میں بورا اتر سکتا تھااور سید صاحب نے اس نظام کی دیمی بنیادیں ہرلحاظ ہے پختہ داستوار کر دی تھیں **۔**

يسوال باب:

جماعت کی اسلامی اوراخلاقی شان (۱)

كبول كيالوائ امت كااوج الله كرين غوث وابدال سب الل فوج

اسلاميت كالبيلباب

جاعت کی اسلامی اور اخلاقی شان اس سے ظاہر ہے کہ جب اہل سمہ نے خفیہ سازش کر کے بہت سے جاہدین کو جا بجا شہید کردیا تو سید صاحب نے فرمایا تھا کہ ان فہداء میں سے ہرا کیک اپنے وطن کی انسانیت کا''خلاصہ' اور اسلامیت کا''لب لباب' تھا۔ اس حقیقت میں کوئی شبنیں کہ ہندوستان کے آسان نے ایسا کوئی لشکر نہ دیکھا جو علم وضل ، زہدوتقو کی ، حب وحمیت اسلام ، شجاعت وجوانمر دی ، ایٹار وفدا کاری اور بے غرضی و نے نسی میں سید صاحب کے لشکر کا نمونہ ہوتا۔ اس لشکر میں قرآن کے حافظ ، مفسر، محدث ، نقیہ ، صوفیا نے کرام ہر نمات و مشرب سے اصحاب شریک تھے۔ جنہیں اپنے حلقوں میں عزت کے بلند مراتب حاصل تھے۔ ان میں وہ لوگ بھی شامل تھے جنہوں نے بھی د ماخ میں قائم نہ کر سکتے تھے ، کیکن سید صاحب کی دعوت و تربیت نے ان میں ایسا جذبہ کی مان کہ اس ایسا جذبہ کی مان کہ دوت و تربیت نے ان میں ایسا جذبہ کی صادقہ ورا خہ پیدا کر دیا کہ وطن ، اہل وعیال ، اعز ہ وا قارب اور وسائل راحت و

عزت کوترک کر کے انتہائی تکلیفوں کی زندگی بخوشی گوارا کرلی۔

ان کی رگوں میں دوڑنے والے خون کی سب سے بڑی بے قراری پیھی کدراہ حق میں بہہ کراحیاءِ اسلامیت کا موجب بے کمال یہ ہے کہ سید صاحب کے ساتھ تعلق پیدا ہونے سے پیشتر بیتمام اصحاب بالکل و لیں ہی زندگیاں بسر کرتے تھے، جو ہندوستان کے مسلمانوں کو عموماً میسر تھیں ۔لیکن سید صاحب کی دعوت حق اوران کی حقائی تربیت نے ان لوگوں کی کا یا ہی بلیٹ دی اور وہ راہ خدا کے ایسے مجاہد بن گئے کہ اسلامی ہندگی تاریخ میں ان کی مثالیں شاید ہی ل سکیس ۔سید صاحب کی تربیت اور مروم گری کے بیگانہ کمال کی اس سے بڑی شہادت کیا ہو کہتی ہے؟

للهيت كىشان

سيدصاحب خودايك مقام برلكصة بين:

"مامردم بنابراتتال احکام رب العلمین واحیاء سنت سید المرسلین ترک الل وعیال خود گزیدیم دمهاجرت اخوان داوطان درزیدیم وجمع ماسوی الله را پس پشت انداختیم واطاعت وانقیاد واحکام رب العباد قبله جمت ساختیم وعلائل را شخه که بافرزند وعیال و مال ومنال واوطان واخوان می باشد از سویدائے قلب برکند یدیم وانواع رنج و تکالیف برخود پسندیدیم و تعطیل دا تمال را پنج گونه در مقدمه اقامت این رکن رکین و فصرت دین سید المسلین بدول تو قع منفعت از منافع و نیا روانه دیدیم و زن پاسداری محبان قدیمی واخوان صمیمی درین ماوه مشیدیم از ملاحظه منافع ومضار جان خود درین باب دست برداریم واز پاسداری ماسوی الله درین راه بیزار باز)

تسرجسمسه: جملوگول نےرب الخلمین کے احکام کی پیروی اور

⁽۱) "مجموعه م کا تیب شاه آملعیل" قلمی نسخص ۱۸۰۰ ـ

سبد الرسلين كى سنت كے احياء كى خاطر الل وعيال كوچھوڑا۔ بھائى بندول اور وطنوں ہے جرت اختيار كى۔ ہم نے خدا كے سواہر شئے كوپس پشت ڈالا اور خدا كا احكام كى اطاعت وفر ما نبردارى كو اپنانصب العين بنايا۔ انسان كوبال بچوں، الل وعيال، مال ومنال، وطنوں اور بھائى بندوں ہے جومضوط رشتے ہوتے ہیں، وہ سب دل كى گہرائيوں ہے نكال كر باہر پھينگ ديے۔ طرح طرح كے رخ اور تكليفيں اپنے ليے پيندكى ہیں۔ ركن اعظم كے قیام اور سردار انبياء كے دین كى تائيد میں كمی قتم كی ستى اور كوتاى گواراندكى۔ دنيوى فائدوں میں سے دین كى تائيد میں كہم روانہیں ركھتے۔قديم دوستوں اور مخلص بھائيوں كى باس دارى جھوڑ دى۔ اپنى جان كے نفع ونقصان ہے ہى دست بردار ہو گئادر اس اس دام میں خدا كے مواہر شئے كى پاسدارى ہے ہم بیزار ہیں۔

یہ سب پچھ زبان سے کہ لینا چنداں مشکل نہیں اکین جس بزرگ نے بیسب پچھ فر مایا وہ اپنے اصل نصب العین کیلئے ایک ایک دنیوی رشتے کو بے بروائی سے تو ڑ چکا تھا اور ماسوی اللہ ہے کامل بے تعلق کی کھن منزل طے کر کے اس مقام پر پہنچا ہوا تھا، جہال سے اپنی اور اپنے ساتھیوں کی ریم کیفیت بیان کی ۔

سيدالمسلين صلى الله عليه وسلم كااتباع

ایک اور کمتوب میں فرماتے ہیں کہ میرے پاس امراء وسلاطین کی طرح درہم ووینار کے خزانے نہیں،میراخزانہ تو کل علی اللہ ہے۔ ہرروز ربانی خزانے سے میرے لیے خرج پہنچ جاتا ہے:

" طریقهٔ من طریقهٔ جدخودسیدالرسلین است، یک روز نان خشک سیری خورم وشکر خدا بجامی آرم و یک روز گرسنه می مانم وصبر می کنم اشکر من جمیس چند از مهاجرین صادقین است که بنا بر مجرد خدمت وین رب العالمین کمربسته واز طرف خود جان خود را بکشتن داده ، چن جل وعلا ایشال را به منصب

شهادت سرفراز کندیا به نصرت و فتح موفق گرداند - بالجمله حال ظاهر هٔ ما حال فقراء ومهاجرین است که پیفمبرخداصلی الله علیه وسلم واصحاب ایثاں را دراواکل ز مان هجرت در پیش بود ـ " (1)

ترجمه: میراطریقدوی ہے جومیر بنانا سردارانبیاء نے اختیار فرمایا۔ایک روزسوکھی روٹی پیٹ بھر کر کھالیتا ہوں اور خدا کاشکر بجالاتا ہوں ایک روز بھوکا رہتا ہوں اور میر الشکر انہیں چند مخلص مہاجرین پر مشمل ہے جنہوں نے محض رب الخلمین کے دین کی خدمت کیلئے کر یا تدھی اور اپنی طرف سے جانیں راہ خدا میں قربانی کیلئے پیش کردیں۔ دعاء ہے کہ خدا آئیں منصب شہادت سے سرفرازی بخشے یا فتح ونصرت کی توفیق عطا فرمائے۔غرض ہمارا ظاہری حال ان فقیروں اور صابروں کا ساہے جس سے رسولی خدا صلی الشعلیہ وسلم اور آپ کے اسحاب کرام رضوان الشعلیہ ما جمعین کو جورت کے ابتدائی زمانے میں سابقہ بڑا تھا۔

راهِ رضا

سیدصاحب اور اینے رفیقوں کے پیش نظر اعلائے کلمۃ اللہ اور رضائے باری تعالیٰ کے
سوا پچھ نہ تھا۔ ان کے نزد یک بیعت کا مقصود ہی بیتھا کہ خدا کی رضا حاصل ہو فر ماتے ہیں:

دم مقصود از بیعت بردست مشائخ طریقت ہمیں است کہ راورضا مند ی
حضرت حق بدست آیدو راو رضا مند ی حضرت حق مخصر درا تباع شریعت غرا
است - ہر کہ سوائے شریعت مصطفو بیطر پی تحصیل رضا مند ی حق انگار د، پس
است - ہر کہ سوائے شریعت مصطفو بیطر پی تحصیل رضا مند ی حق انگار د، پس
بے شک آل شخص کا ذب و گراہ است ودعوائے او باطل و نامسموع، واساس
شریعت مصطفوی دوامراست اول ترک اشراک و خانی بدعات ۔ '(۲)

ترجمه : مشائخ طریقت کے ہاتھ پربیعت کا مقصود صرف یہ ہے کہ

ترجمه : مشائخ طریقت کے ہاتھ پربیعت کا مقصود صرف یہ ہے کہ

(1) "مجموعه مكاتيب شاه اسلعيل" قلمي نسخ ص: ٣٨٠ (٢) "مجموعه مكاتيب شاه اسلعيل" قلمي نسخ ص: ٨١٠

خدا کی رضا حاصل ہواورخدا کی رضاروش شریعت کی پیروی پرموقوف ہے۔جو مخص رسول الندصلی اللہ علیہ وسلم کی شریعت کے سوارضائے جن حاصل کرنے کا قائل ہے، وہ جمعوٹا اور محمراہ ہے، اس کا دعویٰ باطل ہے اور سنے جانے کے لائق نہیں۔رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی شریعت کی بنیاد وو با تیں ہیں: ایک ترکی اشراک، دوسری ترکی بدعات۔

پھر دونوں کی تفصیل بیان کرتے ہوئے فرماتے ہیں: ترک اشراک بیہ ہے کہ خدا کے سواکس کو مشکلوں اور بلاؤں کا دور کرنے والا نہ سمجھا جائے۔ نبی ، ولی ، صالح لوگ اور فرشتے خدا کی بارگاہ کے مقبول ہیں ، خدا کی رضا حاصل کرنے میں ان کی ہیروی کرنی چاہیے۔اس راہ میں انہیں اپنے پیشوا ماننا چاہیے۔انہیں زمانی حوادث پر قادر ماننا یاعالم السرجاننا ہرگز مناسب نہیں۔

ترک بدعات بیہ کہتمام عبادات، معاملات نیز معاشی اور معادی اموریش انبیاء کے خاتم حضرت محمد رسول الله صلی الله علیه وآله وسلم کے طریقے پر مضبوطی اور اولوالعزی سے قدم جمالیے جائیں۔ دوسر لے لوگوں نے جونئ رسیس پیدا کرلی ہیں ،ان سے دور رہنا چاہیے۔

. سیدصاحب نے جماعت کی تاسیس و تنظیم انہیں اصول پر کی تھی اوراس حقیقت میں کوئی شبنہیں کہ جماعت ہرمنزل اور ہرمر حلے میں انہیں اصول کاعملی مرقع بنی رہی۔

اخلاص في العمل

نواب وزیرالدولد نے لکھا ہے: سیدصاحب جماعت مجاہدین کو ہمیشہ تا کیدفر ماتے رہے تھے کہ بھی نفس وشیطان کے تقاضہ کی بنا پرمیدانِ کارزار میں قدم ندر کھنا:
''بدر جمت حضرت جہاں پناہ جل ذکرہ آل سپاو تقوی دست گاہ را اضلاص فی العمل بہآل مرتبہ شدہ بود کہ اگر محامد آلی یک یک سیابی از ال اشکر

ظفرانتای بقلم آیدوفتر ، باید غیرمتنای که قمش برانجام رسد- (۱)

ترجمه: خداکی رحت باس تقوی شعار سیاه کا خلاص اس مرتب پر پہنچا ہوا تھا کہ آگرایک ایک سیابی کی اللہت کے محاس تریم کیے جا کیں تو آئیس بوراکر نے کیلئے لامتنا ہی دفتر جا ہے۔

جنگ اتمان زئی سے پیشتر تمام مجاہدین کو ہدایت کردی گئی تھی کہ جولڑے اور مقابلہ کرے اس سے لڑو، جوامان طلب کرے اسے امان دے دو۔

سیدصاحب کے نزدیک بندگی کا معیار یہی تھا کہ ہر شنے خدا کی رضا کیلئے قربان ردی جائے۔وہ فرماتے ہیں:

"بنده كه درمقابله اعدائ مولائ خود غيرت وحميت نمى دارد، فى الحقيقت بنده نيست ومعتبيك جان ومال وعزت وآبروئ خودرادر تخصيل رضائح وبخودتگاه دارد فى الحقيقت محبّ نين" (٢)

ترجمه: جسبندے کول میں اپنے آقا کے دشمنوں کے خلاف غیرت وحمیت کی حرارت پیدانہ ہوء وہ بندہ نہیں ۔ اور محبت کا جودعو یدار محبوب کی خوشنودی کیلئے جان وہال اور عزت وآ بروقر بان کر دینے میں دریغ کرے اس کا دعوائے محبت بے اصل ہے۔

ايكابماصل

جماعت کی تربیت میں سیدصاحب کے پیش نظرا میک اہم اصل تھی ،جس کا ذکر سید جعفر علی نقوی نے یوں کیا ہے:

"مسلمان را می باید که درمقام خواهش نفسانی ومشهیات آل مشل طعام لذیذ وشیرینی دانواع فواکه دیگر برادران مسلمین را برنفس نقذیم دید وخوداز آنها

 موخرشود، ورواندارد كه زياده ازايشال به حظوظ نفسانی محظوظ گردد، بلكه دري امر كمى به جانب خولیش پسندنماید و درمقام رخج و تكلیف نفس خود را بردیگرال مقدم ساز د و آیدن بلا و تكلیف بر آنها نه پسند د ـ "(۱)

ترجمه: مسلمان کوچاہیے کہ لذیذ کھانوں بیٹھی چیزوں یائتم قسم کے میووں وغیرہ کے سلسلے میں جن کی خواہش ہر شخص کو ہوتی ہے، دوسر سے مسلمان بھائیوں کواپنے آپ پر مقدم رکھے اورخود پیچھے رہے، اس کیلئے مناسب نہیں کہ حظوظ نفسانی میں دوسروں سے زیادہ حصد لیجائے۔ بلکہ ایسے معاملات میں اپنے لئے کمی پند کرنی چاہیے۔ جب رنج و تکلیف کا موقع پیش آ جائے تو اپنے آپ کودوسروں ہے آگر کھے اور ان پر بلاو تکلیف کا آنالبندند کرے۔

تشليم وتؤكل

سیدصاحب نے اس تعلیم و تربیت کاعملی نمونہ پیش کردیا۔ جب وہ سرحد پہنچے تھے تو اہل سرحد میں ہے اکثر رؤسانے ان کی دعوت قبول کر کی تھی۔ مثلاً غلز کی ، ننگر ہاری ، شنواری ، آفریدی ، مہمند ، خلی ، خنگ ، مندڑ ، تنولی ، ان کے علاوہ کشمیر کے رئیسول اور سوات ، بغیر ، باجوڑا ورپکھلی کے باشندوں نے امداد کے پختہ وعدے کر لیے تھے۔سید صاحب اس کامیا بی کوئش اللہ کافضل قرار دیتے تھے۔وہ خود ککھتے ہیں :

" بزارشکر بجای آرم و برحال خود تعجب می نمایم که این ذرهٔ به مقدار و عاجز خاکسار را به این قرم و برحال خود تعجب می نمایم که این و مال این و عاجز خاکسار را به این تعت عظمی و عطیه کبری موفق گردانید یعجب ترآنکه صعیف و ناتوال به سره سامان را به موقف قبول خود رسانید ، عجب ترآنکه در تمای این کارو بارو به مقی این نشیب و فراز دل اخلاص منزل به اعتاد توکل مشحون دارم و به رضاوت کم مقرون به سید صفا گنجید کارآرز و سید افغیاد احکام رب العباد مالا مال است و از نشیب و فراز زمانه مبرا (۲)

(۱) ''منظوره''ص:۱۰۵۱_ (۲) ''جموعه مکاتیب شاه آملعیل' نقلمی نسخ می ۱۹۳–۱۹۳ ـ

ترجمه: برروز خدا کاشکر بجالا تا بول۔ اپ حال پر تعجب بوتا ہے کہ بچھ بے حقیقت ذر ہے اور بچھ خاکسار عاجز کواس بڑی نعمت اور اس عظیم عطیتے سے سرفرازی بختی گئی۔ یعنی بچھ ضعیف، کمز وراور بے سروسامان کے جان ومال کواللہ تعالی نے درجہ قبول بخشا۔ اس ہے بھی عجیب ترامر سے ہے کہ اس کاروباراوراو نجے نج میں میراول توکل سے لبریز ہے اور تسلیم ورضا ہے ہم کنار۔ میراسیدا حکام اللی کی پیروی کے جذبے سے مالا مال ہے اور زمانے کے نشیب وفراز سے بالکل یاک۔

ان اقتباسات سے جماعت کی عمومی حیثیت کاصحیح انداز ہ بخو بی ہوسکتا ہے۔ آئندہ باب میں تعلیم وتربیت کے باتی انوار ملاحظ فرما لیجئے۔

سيدصاحب كانمونه

سندما حب نے پیش کیا تھا، اس کی مثالیں تاریخ میں صدورجہ کمیاب ہیں۔ مثلاً راو ہجرت میں قدم رکھتے ہی وہ از واج واولا دے الگ ہوگئے۔ پھراس دنیا میں ان سے ملاقات میں قدم رکھتے ہی وہ از واج واولا دے الگ ہوگئے۔ پھراس دنیا میں ان سے ملاقات مقدر نہیں۔ اس کے بعد ان کے چند قریبی رشتہ دارساتھ رہے۔ مثلاً سیداحم علی ، ان کے ماتھ صاحبز ادے سیدموئی ، سید ابوائح نہ سید ابوائح ن سیسب ان کی زندگی میں یا ان کے ساتھ شہید ہوئے۔ ان کی دونوں بیویاں اور بعض اقربا سندھ میں رہے۔ بیولیوں نے وطن بدین غرض چھوڑا تھا کہ سید صاحب کے پاس پہنے جا عیں ، لیکن بیرکوٹ کے بعد نہ آگ جا نے کی کوئی صورت پیدا ہوئی اور نہ لوٹ سکی تھیں۔ پھھاقر بااسی نیت سے تھر ہارچھوڑ کر جانے کی کوئی صورت پیدا ہوئی اور نہ لوٹ سکی تھیں۔ پھھاقر بااسی نیت سے تھر ہارچھوڑ کر بیان کرلین سہل ہے لیکن انسان کیلئے اپنے او پر وارد کرنا سہل نہیں۔ عشق حق میں انتہائی استقامت کے بغیر بیرمزل طنہیں ہو کئی۔

پھر مخابرت کا مسئلہ بہت دشوار اور مصیبت خیز تھا اور ایک دوسرے کے متعلق پریشانی

کی خبری سن کو دلوں پر جوگذرتی ہوگی اس کا صحیح اندازہ کون کرسکتا ہے؟ ایک مرتبہ ایک معتمد علیہ قاصد نے بیویوں کو ایسی خبریں سنادیں جن کا بتیجہ یہی ہوسکتا تھا کہ وہ رنج وغم میں مبتلا ہوجا ئیں ۔سیدصا حب کو بیرواقعہ معلوم ہواتو لکھا کہ ہم بباطمینان اپنے کام میں مشغول ہیں ہتشویش یاقلق کی کوئی وجنہیں ۔اگر آپ کو صرف اس بات پر قات ہوا کہ:

در گزران ما مساکیین از ہجوم اعدائے کھار ومنافقین در کمال ضیق است و باب جہاد ہنوز مفتوح نہ شدہ و ہی راہ مقصود کشادہ نگر دیدہ و کھی بے سروسامان در میان کو ہتان گردش کی کئیم ، پس ایس معنی راموجب رنجش خود ہا ہر گزنہ باید در میان کو ہتان گردش کی کئیم ، پس ایس معنی راموجب رنجش خود ہا ہر گزنہ باید ایس راہ درا تکلیف نہ شمردہ ایک ۔''

توجمہ: ہم مکینوں کیلئے کافروں اور منافقوں کے ہجوم کے باعث عرصہ کیات تک ہے۔ جہاد کا دروازہ ابھی کھانہیں اور مقصود کا راستہ صاف نہیں ہوا بلکہ بے سروسامانی کی حالت میں کو ہتان کے درمیان چکر لگارہے ہیں، تو اس پر قطعار نج نہ ہونا چاہیے۔ الحمد لللہ کہ ہم اللہ کی فرماں پرداری میں ہمیشہ خوش اور بے غم رہے ہیں اور اس راہ کی تکلیفوں کو بھی تکلیفیں نہیں سمجھا۔

پھر فر ماتے ہیں کہ ماسوی اللہ کے رشتوں میں آپ کے ساتھ جورشتہ ہے وہ سب سے بورھ کرعزیز ہے اور بیرشتہ بھی صرف اس لئے عزیز ہے کہ خدا کی رضا کے تقاضوں میں شامل ہے۔

اطاعت رب العالمين كى لذت

ایک کمتوب میں بیویوں کوتح ریفر ماتے ہیں کہ اگر چہ آپ کوسب بچھ معلوم ہے اور لکھنے کی حاجت نہیں لیکن محض تذکیر وضیحت کے خیال سے لکھتا ہوں: '' آنچہ دراطاعت رب العالمین آ رام ولذت است در چیز دیگر متصور نے ، ہمیں راہ راست موجب سرخروئی دارین و بہبودنشا تین ودر چیز دیگر تھیل ایس سعادت واتمام ایں دولت نصیب ندشود ۔''

ترجمه: رب العالمین کی فرمال برداری میں جوآ رام اور لذت ہے وہ کسی دومری چیز میں متصور نہیں۔ یہی سیدھارات دونوں جہاں کی سرخروئی اور بہتری کا باعث ہے۔ کسی دوسری چیز میں اس سعادت کی تحیل اور اس دولت کا اتمام نصیب نہیں ہوسکتا۔

مہا جرات میں سیدصاحب کی خوشدامن (سیدہ زہرہ کی والدہ ماجدہ اور سیدہ سائرہ کی نانی) بھی تھیں۔ انہوں نے ایک مرتبہ وطن لوٹ جانے کا خیال ظاہر کیا۔ سیدصاحب کو یہ بات معلوم ہوئی تو لکھا کہ پریشان نہ ہوں، اس راستے پر قدم نہ رکھیں جو خلاف ہے۔تمام متعلقین کو تیل دیں اور حق سجانہ کی مخالفت و بال کا باعث ہوتی ہے:

" برخمیر منیر آشکارا ست که این بنده ضعیف را آنچه علاق یا خورد ان و بررگان سے باشد محض لله فی الله می باشد پس اگر احدے از خورد ان و بررگان مخالفت خدالازم کیروعلاقد او از دل اخلاص منزلم جم بدر سے رود۔ لازم که بذریعد استعفار این وسوسه را از خاطر شریف بدر قرموده به تسلی و به تشفی دیگران پرداز ندوا ثبات قدم را برخودصا حب ولازم سازند."

قوجمہ: آپ بردوش ہے کہ بڑے چھونے سے میرا جوتعلق ہے وہ صرف خدا کیلئے ہے۔ اگران میں سے کوئی خدا کے خلاف راستہ اختیار کرے گا تو میرے دل سے بھی اس کی محبت نکل جائے گی۔ ضروری ہے کہ آپ استغفار سے کام لیس اور یہ وسوسہ اپنے دل سے نکالیس۔ دوسروں کیلئے تسلی اور تشفی کا باعث ہوں اور اس داس راستے میں ثابت قدی اپنے او پرواجب ولازم بنالیس۔ باعث ہوں اور اس راستے میں ثابت قدی اپنے او پرواجب ولازم بنالیس۔ کہی نمونہ تھا جس نے جماعت کے تمام افراد کو استقامت کی چٹانیس بنایا، ان کے دل عشق حق سے معمور ہوئے اور انہوں نے دین کی راہ میں قربانی کے وہ مرقعے پیش دل عشق حق سے معمور ہوئے اور انہوں نے دین کی راہ میں قربانی کے وہ مرقعے پیش

کیے جن کی مثالیں ہندوستان کی تاریخ میں صدورجہ کمیاب ہیں۔

گیار ہواں باب:

جماعت کی اسلامی اوراخلاقی شان (۲)

جماعت اوراس كاسروسامان

سیدصاحب نے راوِ ہجرت کیں قدم رکھا تو ان کے رفیق پانچ چھرو سے زیادہ نہ سے اس میں سے اکثر کے پاس بندوقیں اور تلواریں تو تھیں، توپ کوئی نتھی۔ اتن چھوٹی جاعت اسخ تھوڑ سے سابان کے ساتھ طہر ہند کیلئے لگی تھی۔ ظاہر ہے کہ جولوگ سپاہ اور ساز دسامان کی کثر سے کیل پر جنگی تو سے کا اندازہ کرنے کے عادی تھے، وہ سیدصاحب کی فوج سے قطعا متاثر نہ ہو سکتے تھے۔ یقین ہے کہ راستے کا کثر رئیسوں نے اسی بنا پر سیدصاحب کے اقدام کو کی اہمیت کا مستحق نتہ جھا۔ قندھار سے مزید جاہدین ال گئے، ان سیدصاحب کی تعداد زیادہ سے زیادہ ایک ہزار ہوگی۔ اس سے جنگ کا آغاز ہوا۔ جب ہندوستان سے متعدد قافلے پہنچ گئے تو اندازہ سے کہ کل مجاہدین دواڑھائی ہزار ہوگئے ہوں گے، اس سے تعداد بھی نہ بڑھی البتہ جنگوں میں مقامی لوگ شریک ہوتے رہے، جو ہوں گے، اس سے تعداد بوھانے کے موجب بن جاتے تھے۔ لیکن استقامت کے موقع پر عمونی ساتھ جھوڑ جاتے تھے۔ لیکن استقامت کے موقع پر عمونی ساتھ جھوڑ جاتے تھے۔ لیکن استقامت کے موقع پر عمونی ساتھ جھوڑ جاتے تھے۔ لیکن استقامت کے موقع پر عمونی ساتھ جھوڑ جاتے تھے۔ لیکن استقامت کے موجب بن جاتے تھے۔ لیکن استقامت کے موجب بن جاتے تھے۔ لیکن استقامت کے موقع پر عمونی ساتھ جھوڑ جاتے تھے۔ لیکن استقامت کے موجب بین جاتے تھے۔ لیکن کے موجب بین جاتے تھے۔ لیکن کی تعداد کی کو تعدیر کے موجب بین جاتے تھے۔ لیکن کے موجب بین جاتے تھے۔ لیکن کے موجب بین جاتے تھے۔ لیکن کے بھوٹ کے موجب بین جاتے تھے۔ لیکن کے بھوٹ کے کا کو بھوٹ کے کا کو بھوٹ کے بھوٹ کے بھوٹ کے بھوٹ کے کا کو بھوٹ کے ب

فتوحات

تاہم بدامر خاص تو جہ کاستحق ہے کہ اس مخفری فوج سے سیدصا حب نے سرحد میں

سكهول كيلي حددرجه نازك صورت بيدا كردى اوروه بعض شرائط يراثك ياركا بوراعلاقه سیرصاحب کودے دیے کیلئے تیار ہو گئے۔سید صاحب نے یہ پیش کش بے تو قف مم ادى،اس ليے كدان كانصب العين سلطنت يارياست نه تفا بلكه وه مبندوستان كوغيروں کے تسلط سے پاک کر کے شرقی نظام جاری کرنا جائے تھے۔جن لڑائیوں میں انہیں شاندارفتو حات حاصل ہوئیں ،ان میں مجاہدین کی تعداد دشمنوں کے مقابلے میں بہت کم تقی۔مثلًا اکوڑہ کی جنگ میں سکھوں کی فوج یا نچ ہزار اور دس ہزار کے درمیان تھی اور اس کے پاس پوراجنگی سامان موجود تھا۔اس شکر پر جھانے کیلئے جومجاہدین بھیجے گئے،ان میں سے صرف ایک سوچھتیں ہندوستانی تھے اور اتنی قندھاری۔ پچھ کم سات سو مقامی لوگ تنصر جنگ كاسب سے بر ابوجه صرف مجاہدين نے اٹھايا اور شاندار فتح حاصل كى۔

1017

زیدہ کی اڑائی میں یارمحمدخال کالشکرآٹھ دس ہزارہے کم ندتھا، تا ہم صرف سات سو مجاہدین نے اسے فکست فاش دی۔مجاہدین میں سے صرف دوشہید ہوئے اور چارزخی۔ مایار کی افزائی میں درانیوں کے جار ہزار بیادوں اور آٹھ ہزار سواروں سے مقابلہ تھا، مجاہدین صرف ساڑھے تین ہزار تھاور میدان انہیں کے ہاتھ رہا۔

بدواقعات یقینا ایسے ہیں جن سے سیدصاحب کی شان تربیت اور کمال مردم گری روزِروش کی طرح آشکاراہے۔

كمال عجز وانكسار

پھرقا تل تو جدامریہ ہے کہ ان میں ہے کسی بھی کارناہے پر مجاہدین کے دل میں غرور پیدانہ ہوا۔ جنگ مایار کے بعد ہر مخص کی زبان بریدالفاظ تھے کہ اللہ تعالی نے محض اپنی قوت وقدرت سے ہمیں زور آوروں پر فتح عطا کی جو ملک وخزائن کے مالک تھے، اور اطمینانِ قلب کابیرحال تھا کہز دوخور د جنگ میں وہ اس طرح شریک ہوتے ، جیسے لوگ کسی

كے بال دعوت وطعام كيلئے جاتے ہيں۔

سيدصاحب في ايك موقع برتحر رفر ماياتها:

"المحدلله والمحنة كهموشين صادقين راند در بنگام فتح نخوت وغرور يهم مى رسدوند دروفت فكست نقاعد و فتور ب_"(1)

تسوج میں : اللہ تعالی کاشکراوراحسان ہے کے محلق مومنوں کے دل میں نہ فتح کے وقت ان میں انتشار میں نہ فتح کے وقت ان میں انتشار اورافسردگی آتی ہے۔

میدانِ جہادیس انہیں گونا گوں مشکلات ہے بھی سابقہ پڑا اور بعض اوقات شدید ضربیں بھی لگیں، تاہم ندانہوں نے ہمت ہاری، نداپی بے سروسامانی کے پیش نظر اصل کام سے کنارہ کشی اختیار کی۔وہ جہاد کوایک نہایت اہم اسلامی فرض سجھتے تھے اور اس کی بجا آوری میں تادم آ خراسی طرح سرگرم ومستعدر ہے جس طرح مخلص مسلمان نماز، روزہ، جے، زکو قرجیسے فرائع اواکر نے کے لئے مستعدر ہے ہیں۔

طریق زندگی

وہ مرحد پنچے تھے تو معیشت کی تنگی بری پریشان کن تھی۔ان میں سے شاید ہی کوئی ہو جوابے وطن میں راحت وآسائش کی زندگی بسر ندکر چکا تھا۔ بعض برے برے رئیسول کے لخت بگر تھے۔مثلاً میرفیض علی ابن میر ذوالفقار علی خال رئیس گور کھیوں شیخ امجد علی ابن شیخ فرز ندعلی رئیس عازی پور الیکن کوئی تکلیف ان کے عزم میں تزلزل پیدا نہ کرسکی۔عام طریقہ میں تقاکدرات کے کھانے سے فراغت کے بعد نماز اداکرتے۔ بہر سے دار پہرول پر کھڑے ہوجاتے۔ باتی مجاہدین سید صاحب کے ارشادات سے مستقیض ہونے کے اشتیاق میں آپ کے بینگ کے اردگر دبیٹھ جاتے۔ وہیں زمین پرسور ہے۔مولوی فتح علی اشتیاق میں آپ کے بینگ کے اردگر دبیٹھ جاتے۔ وہیں زمین پرسور ہے۔مولوی فتح علی

⁽۱) "مجموعه مكاتيب شاه المعيل" قلمي نسخ من ۵۵

فرماتے ہیں:`

''حضرت کے پانگ کے اردگر داکٹر لوگ آپ کی یا تیں سننے کور ہاکرتے تھے، اور اس کثرت ہے رہا کرتے تھے کہ کسی کا سرکسی کا پیر، کسی کا پیٹ اور کسی کی پیٹے، جس نے جہاں کہیں جگہ پائی بے تکلف سور ہا۔ (۱) ''منظور ہ'' سے بھی اس بیان کی تصدیق ہوتی ہے:

''از غایت بے تکلفی بستر جداگانہ دوضعیکہ اہل دنیارا باشد، نہ بود، بلکہ یائے کیے بہوئے سردیگرے دیہلوئے کسے قلاف احدے گردید''۔

تسرجسه : بتنكفى كابيعالم تفاكسى كالله بسر ندتها اورائل دنيا كرسى كالله بسر ندتها اورائل دنيا كر طور طريقوں سے وہ بالكل پاك تھے۔ ایك كا پاؤں دوسرے كے سركى طرف اوركسى كا يباوكسى كے خلاف ہوتا۔

نیکی میں سبقت

ہر خف کی آرزو تھی کہ نیکی کے کاموں میں سب ہے آگے رہے۔ اس کی بیسیوں مثالیں جا بجا پیش کی جا بھی ہیں۔ امب کا ایک واقعہ خاص طور پر قابل ذکر ہے۔ یہ مقام اس زمانے میں فتح ہوا تھا جب گذم کی فصل پکنے کے قریب تھی۔ سیدصاحب نے اعلان فرماویا تھا کہ اہل امب میں سے جو فض چا ہے، باطمینان واپس آکر اپنی فصل سنجال لے۔ جولوگ واپس نہ آئے، ان کی فصلوں کی دیکھ بھال مجاہدین کرنے گے۔ فصل کٹ کر غلہ جمع ہوگیا۔ ابھی اٹھا کہ قائل تھا کہ بارش شروع ہوگئی۔ سیدصاحب نے عہا ہدین کو غلہ اٹھا نے کا تھم دیا۔ منتی ہی اس کام میں شریک ہوگئے۔ میر فیض علی گورکھپوری نے بھاری ہو جھ اٹھالیا اور انہیں بڑی تکلیف ہوئی۔ یہ حالت دیکھ کر سید صاحب نے مشیوں کو یہ خدمت معاف فرمادی۔ میر فیض علی پھر بھی اس کام میں شریک ہوگئے۔ یہ حالت دیکھ کر سید ساحب نے مشیوں کو یہ خدمت معاف فرمادی۔ میر فیض علی پھر بھی اس کام میں گھ

^{(1) &}quot;وقائع"من:١٩٣٩_

رے۔سیدجعفرعلی نے کہا کہاب کیون تکلیف اضائے ہیں؟ فرمایا:

برچند فرضت از ماسا قطاشد، امااسخبا بأبرائي بجا آوري اي كارى روم-قوجهه: اگرچه ريگام فرض شد با ميكن ايك بسنديده امركى بجا آورى م

کے خیال سے جارہا ہوں۔

"سرت سیداحمد شهید" میں بدواقد تفصیلا بیان ہو چکا ہے کدایک مرتبدرات کے وقت شخ بلند بخت شخ محمد التی گورکھپوری کی تلاش میں آئے۔سید جعفر علی نے کہا کہ وہ سرکاری کھی خرید نے کے سلطے میں دن بھر پھرتے رہے، اب سور ہے ہیں، کہتے تھے کہ طبیعت اچھی نہیں مجھے جگایا نہ جائے۔اگر کوئی ضروری کام ہوتو مجھے فرما ہے۔

شخ بلند بخت نے فرمایا کہ پایندہ خال کی زنبور کیں جگہ جگھری پڑی ہیں، انہیں انہیں انہیں ہے۔ چنانچے سید جعفر علی ای وقت روانہ ہوگئے ۔ ساری رات سفر میں گزاری، اگلے دن چاشت کے وقت تک تمام زنبور کیں لے آئے۔ سفر اتنا کھٹن تھا کہ سید جعفر کو بخار آئے۔ سفر اتنا کھٹن تھا کہ سید جعفر کو بخار آئے۔ شخ محمر آخی گور کھپوری بار باران سے جھگڑتے تھے کہ جب تھم میرے نام آیا تھا تو آپ نے کیوں یہ تکلیف اٹھائی؟

عبدالمجید خال آفریدی ساکن جہان آباد (رائے بریلی) کا وافغہ بھی''سیرت'' میں بیان ہو چکا ہے۔ جنگ اکوڑہ کے موقع پرانہیں بخارآتا تھا اور خاصے کمزور ہوگئے تھے، اس وجہ سے سیدصاحب نے انہیں جنگ کیلئے منتخب نہ فرمایا۔ وہ بیتا بانہ سیدصاحب کی خدمت میں حاضر ہوکرعرض پرداز ہوئے: خدمت میں حاضر ہوکرعرض پرداز ہوئے:

"حضرت! میں کھا اینا ہو تہیں کہ چلنے کی طاقت ندمواور بہلا محاربہ ہے، جس میں جہاد فی سیل اللہ کی بنیاد رکھی جائے گی۔ میرانام ضرور شامل فرماد یجے، تا کہ سبقت کی فضیلت سے محروم ندرہ جاؤں۔"

سید صاحب نے ان کا ذوق وشوق دیکھ کرخواہش پوری کردی اور دعاء کی۔خان موصوف نے کمزوری کے باوجود چودہ آ دمی اپنے ہاتھ سے قل کیے۔ پھران کی تکوارٹوٹ صنی ہمولوی امیر الدین ولایت نے اپنی ایک ملوار انہیں دیدی۔اس سے بھی کئی آمیوں کو موت کے گھاٹ اتارا۔ آخرخود بھی خلعت شہادت سے سرفر از ہوئے۔

> شہاد**ت یامنزل مرا**د اقا<u>ل</u> نے *لکھاہے*:

شہادت ہے مطلوب و مقصودِ مومن کی نہ مال غنیمت، نہ کشور کشائی
اس شعری عملی تصویریں صرف جماعت مجاہدین میں ملتی ہیں۔ جو بھائی شہادت یا تا
تھا، اس کے متعلق سب یہی کہتے تھے کہ وہ جو مراد لے کر خدا کی راہ میں وطن سے نکلا
تھا، پوری ہوگئی۔اللہ تعالیٰ ہم سب کواپنی رضامندی کی راہ میں صرف کردے اور ہم سب
سے راضی ہو۔

الل سرکی غداری کے موقع پرمولوی خدا بخش رام پوری مینی میں تھے۔ایک ملاک سعی وکوشش سے وہ اور چند دوسر ہے جابد محفوظ رہے۔ایک روز وہ مینئی کے ملاسید محمد سے با تیں کررہے تھے، مجاہدین کی مظلومیت کا ذکر چھڑ گیا تو ملا صاحب بے اختیار اشک بار موسکے ۔مولوی خدا بخش نے کہا:

"مابرائ جمیں شہادیت ازمقام دور دست آمدہ ایم کسائیکه شهید شدند به مرادخودرسیدند و کسائیکه باقی اندجمیں ارادہ دارنداللہ تعالی امام مارا سلامت دارد، انشاء اللہ سامان جہاد بازمجتع خواہد گردید"(1)

فرجمہ: ہم شوق شہادت ہی لے کردوردراز سے یہاں آئے تھے۔ جولوگ شہید ہوئے وہ مراد کو پہنچ گئے ، جو باتی ہیں ان کا ارادہ بھی یہی ہے کہ راہ حق میں جائیں دے دیں۔اللہ ہمارے امام کوسلامت رکھے۔انشاءاللہ ان کی برکت سے پھر جہاد کا سامان جمع ہوجائے گا۔

^{(1) &}quot;مخلورة"من:٩٩٣_

موت سے بے پروائی

کیا خوب فرمایا میخ بلند بخت دیوبندی نے کہ ڈرخوف مرگ سے پیداہوتا ہے ہم اپنی جانیں خدا کی راہ میں قربان کر چکے ہیں، پس ہمیں کیا ڈرہے؟

سیرصاحب کی تربیت نے بجاہدین کے دل سے خوف مرگ زائل کردیا تھا۔ تربیت کا یہ سب سے برا کارنامہ تھا، جس برخاص توجہ مبذول ہونی چاہے۔ کوئی قوم زندگی کی مزل میں ترقی نہیں کر سختی جب تک خوف مرگ سے کا ملا پاک نہ ہوجائے۔ تاریخ ایسے لوگوں کے بھی تذکروں سے لبریز ہے جنہوں نے دنیوی عزت ودولت اور حکومت وفر مال روائی کیلئے موت سے بے بروائی اختیار کی۔ اسلام نے توحید کے استحکام، خدااور یوم آخرت پر کمال ایمان کے نسخہ سائی سے خوف مرگ کی بیاری کا علاج کیا۔ سید صاحب نے اتباع سنت نبوی صلی اللہ علیہ وسلم میں بہی نسخہ استعال کیا۔ جو جماعت خوف مرگ سے آزاد ہوجائے ،اسے دنیا کی کوئی طاقت ہراسال نہیں کر سکتی۔ اقبال نے ایک مرگ سے آزاد ہوجائے ،اسے دنیا کی کوئی طاقت ہراسال نہیں کر سکتی۔ اقبال نے ایک فیت نوف نوف کی مسلمانوں کوخوف مرگ سے نام اسل جائے۔

ا نے وہا بے جارگاں راساز وبرگ 🏶 وار ہاں ایں قوم رااز ترس مرگ

بارجوال باب:

جماعت کی اسلامی اوراخلاقی شان (۳)

اخوت دمساوات

سیرت سیداحمد شہید کے علاوہ گزشتہ ابواب میں بیسیوں ایسے دافعات پیش کیے جانچکے ہیں جن سے جماعت کے اوصاف ومحاس بخو بی آشکارا ہورہے ہیں۔ یہاں پھر منتخب واقعات اجمالاً پیش کیے جاتے ہیں تا کہ محاس کی سرسری تصویر یکجاسا منے آجائے۔

جماعت کی ایک بنیادی خصوصیت بیتھی کہ ہر فرداخوت ومساوات کا ایک ناور پیکر تھا۔ اس میں علاء ورو سابھی شریک تھے، لیکن کسی جماعتی کاروبار میں بھی اعلیٰ وادنیٰ کا سوال پیدانہ ہوا۔ ہر شخص ہر کام میں سب سے آگے رہنے کی کوشش کرتا تھا۔ کھانے پینے، رہنے سہنے یا پہننے اوڑھنے میں سب برابر تھے۔خودسید صاحب بھی کسی معاملہ میں اپنے آپ کو جماعت سے الگ ندر کھتے تھے۔ یہاں صرف چندوا قعات بہ طور نمونہ درج کیے جاتے ہیں:

ا۔ قاضی مدنی بنگالی کے سائیس''لا ہوری''کوعنایت اللہ نے ایک معمولی معاطفے پردو کھونے رسید کردیے۔عنایت اللہ جماعت خاص کا آدی تھا اور سیدصاحب کے قدیم رفیقوں میں شار ہوتا تھا۔آپ نے خود بیر معاملہ قاضی القضاۃ کے حوالے کردیا۔عنایت اللہ نے عدالت میں اپنے جرم کا اقر ارکرئیا۔

قاضی صاحب نے لا ہوری کے حق میں فیصلہ کردیا۔ فیصلے کے بعد لا ہوری نے عنایئت اللہ کو سینے سے نگالیا اور کہا کہ میں خدا کی رضا کے لئے اپنے بھائی کو معاف کرتا ہوں۔

۲۔ مولوی عبدالو ہاب کھنوی قاسم غلہ کمزور و نجیف آدمی ہے۔ نقسیم رسد کے لئے انہوں نے دستور مقرر کرایا تھا کہ ہرخص کو باری ہاری رسد دیے۔ مولوی اما علی عظیم آبادی نو وار دیتھے اور دستو تقسیم کا آئیس علم نہ تھا۔ انہوں نے جوش میں مولوی صاحب کو دھکا دے دیا۔ یہ حالت و کھے کہ بعض مجاہدین غصے میں آگے اور اما معلی کو مار نے کے لئے تیار ہو گئے۔ مولوی صاحب نے آئیوں روک دیا اور کہا: اما معلی میر ابھائی ہے، دھکا دیا تو مجھے دیا، آپ لوگ کیوں جوش میں آگئے؟ یہ بات سید صاحب کے پاس پیچی۔ آپ نے مولوی عبدالو ہاب سے پوچھا۔ انہوں نے عرض کیا کہ اما معلی نیک بخت نے مولوی عبدالو ہاب سے پوچھا۔ انہوں نے عرض کیا کہ اما معلی نیک بخت آئے تھے، باری ان کی نہ تھی، انہوں نے جلدی کی آور مجھے دھکا لگ گیا۔ اما معلی نے خود سید صاحب کی خدمت میں حاضر ہو کرا پی اور مجھے دھکا لگ گیا۔ اما معلی نے خود سید صاحب کی خدمت میں حاضر ہو کرا پی اور مجھے دھکا لگ گیا۔ اما معلی نے خود سید صاحب کی خدمت میں حاضر ہو کرا پی اور مجھے دھکا لگ گیا۔ اما معلی نے خود سید صاحب کی خدمت میں حاضر ہو کرا پی نے تی کیا تھی دیا تھی۔ انہوں نے جلدی کی زیاد تی کے انہوں کے کہ کا قرار کر لیا اور عرض کیا کہ میر اقسور معاف کرا د بیجے۔

سے اہل سے کی غداری کے وقت حافظ عبدالعلی اور مولوی محمد رمضان بھی شیوہ میں تھے۔ سید امیر علی بیت المال کا روپیہ لے کر پنجتار چلے گئے۔ انہیں حافظ عبدالعلی نے گاؤں کے باہر پہنچادیالیکن خود یہ کہہ کرلوث مجھے کہ میں اس نازک وقت میں اپنے ساتھیوں کوچھوڑ کرنہیں جاسکتا۔ مولوی محمد رمضان کوشیوہ کے رئیس اپنے ہاں لے جانا جا ہے تھے کیکن انہوں نے بھی رفیقوں سے علیحدگ محمد ارزی کی اور ان کے ساتھ شہید ہوئے۔

ہم۔ میٹئی میں جن مجاہدین کو قاتلانہ حملے کا ہدف بنتا پڑا ان میں بنیر کا ایک نو جوان حبیب خال بھی شامل تھا۔ بلوائی بار بارا سے آوازیں دیتے تھے کہ تم ہمارے ہم قوم ہو ہندوستانیوں سے الگ ہوکر ہمارے پاس چلے آؤ۔اس نے ہر مرتبہ یکی جواب دیا کہ کا ہرین کے ساتھ شہید ہوجانا میرے نز دیک ہزار درجے بہتر ہے ادر تنہارے ساتھ جینا منظور نہیں۔

مسلمانوں سے جنگ

سیدصاحب کی تحریک کے سلسلے میں ایک مسئلہ توجہ کا مستحق ہے اور وہ یہ کہ انہیں سرحدی سرداروں اورخوا نین سے لڑائیاں پیش آئیں۔ ''سید احمد شہید' میں ان لڑائیوں کے اسباب تفصیلا بیان ہو چکے ہیں۔ سید صاحب کی مسلمان سے لڑنے کے روادار نہ سے ایکن بعض مسلمان رئیس خود سید صاحب کے خلاف اغیار کے جاسوس یا معاون بن سے ایکن بعض مسلمان رئیس خود سید صاحب کے خلاف اغیار کے جاسوس یا معاون بن گئے اور ان کی وجہ سے قدم قدم پر تنظیمات جہاد میں رکاوٹیس پیدا ہوتی رہیں۔ مثلاً پٹاور کے درانی سردار، خادے خال رئیس ہنڈ، پایندہ خال تنولی والی امب سید صاحب نے کے درانی سردار، خادے والے والی امب سید صاحب نے ایک موقع پر تقریر کرتے ہوئے فرمایا:

''ہم لوگ آئی مدت سے اس ملک میں واسطے جہاد فی سبیل اللہ کے آئے ہوئے ہیں اور مسلمانوں کی ریاست سمجھ کر یہاں الرے ہیں۔فقط اس نیت سے کہ سب مسلمان بھائیوں کے اتفاق سے دین اسلام کا کام درست ہو،لیکن یہاں کے مسلمان بھائیوں کی نااتفاقی کا پیال کے مسلمان کا حامی بن کر بچ فریر کرنے کی نکالے ہیں تو آئیس مسلمانوں سے ایک نہ ایک ان کا حامی بن کر بچ میں حارج ہوتا ہے'۔

اس کے بعد یار محد خال اور خاد ہے خال کی مخالفانہ کارروائیوں کو تفصیلاً بیان کیا۔ جنگ مایاد کے بعد پشاور پر چیش قدمی شروع ہوئی تواس وقت بھی مختلف اہل سرحد سے فرمایا:

'' مابرائے تائید دین اسلام آمدہ ایم وشراکت مسلمانان دریں امر خواہیم - سردار شا (سلطان محد خال) از کج فہی خود شراکت ماگز اشتہ با کفار گول سار گردید''

تسر جمعه: ہم اسلام کی حمایت کیلئے بہاں آئے اور سلمانوں کواس کام میں شریک کر لینے کے خواہاں تھے۔ آپ کے سردار سمجھ کی کجی ہے جارا ساتھ چھوڑ کر کافروں کے ساتھ ل گیا۔

ان حالات میں سیدصاحب کیلئے دوہی صور تیں تھیں: یا ان فتوں کا انسداد کرتے یا کارو بارِ جہاد سے دست کش ہوجاتے۔ انہوں نے پہلا راستہ اختیار کیا اور یہی ان کے لیے زیبا تھا۔ ان مسلمان رئیسوں کے سامنے ذاتی امیال واغراض کے سواکوئی دینی ہومی یا ملکی مقصد نہ تھا۔

عزييت

جماعت مجاہدین کی پوری زندگی عزیمت کی دستاہ یہ ہے۔ گھر ہار، اہل وعیال، اعز اوقر ہا ہے علیحدگی، راحت وآسائش کا ترک ، غربت میں گونا گوں تکلیفوں کا اختیار، یہ چیزیں عزیمت ہی کا کرشمہ تھیں۔ وہ ہر لحظا پی جا نیں ہتھیلیوں پر لیے پھرتے تھے۔ یہ بھی نہیں کہ موجودہ زمانے کے عام جماعتی کارکنوں کی طرح انہیں شہرت وناموری کی امید ہو، یا سمجھ رہے ہوں کہ فتح وکا مرانی کی حالت میں بڑے بڑے عہدے پائیں گے، ان کے پیش نظر خدمت دین کے سوا پچھ نہ تھا اور جو پچھ کررہے تھے صرف خدا کیائے کررہے تھے۔ عزیمت کا مفہوم اور کیا ہوتا ہے؟ انہوں نے ہر میدائی میں اخلاص وعزیمت کے جیرت انگیز نمونے پیش کے، جن کی مثالیں اسلامی ہندگی تاریخ میں شاذی مل کی سی کے جیرت انگیز نمونے پیش کے، جن کی مثالیں اسلامی ہندگی تاریخ میں شاذی مل کیس گی۔ یہاں صرف چندواقعات بہطور نمونہ پیش کے جاتے ہیں:

ا۔ اسب اور چھتر بائی فتح ہو چکے تھے۔سیدصاحب پنجتارتشریف لے گئے تتھے۔تھوڑے سے جاہدین ان دونوں قلعوں کی تفاظت پر مامور تھے۔اس مالت میں معلوم ہوا کہ سردار پایندہ خال تنولی بھاری لشکر جمع کرکے دونوں قلعوں پر جملے کرنا چاہتا ہے۔دریا پار کے مختلف قلعوں سے سکھ فوج کی گولیاں

بھی آتی رہتی تھیں۔ چھتر ہائی کے لئے خطرہ بہت زیادہ تھا۔ پیٹے ولی محدروز اندہ سے کو اور اندہ تھا۔ پیٹے ولی محدروز اندہ سے کو ساتھ اسب سے چھتر ہائی جاتے ، دن وہاں گزارتے اور رات کی تاریکی تیں واپس آتے ۔ کو یا خاصی کمبی مدت تک آمدورفت کا میسلسلہ جاری رہا۔

السمہ کی غداری کے باعث بہت ہے مجاہدین مظلومانہ شہید ہو چکے تھے۔سیدصاحب نے پنجارے شمیر کی طرف جانے کا فیصلہ کرلیا تھا۔
اسب اور چھتر بائی کے قلعے بدستور مجاہدین کے قبضے میں تھے۔ شخ بلند بخت اسب کی جماعت مجاہدین کے سالار سے اور حافظ مطفیٰ کا ندھلوی کو چھتر بائی میں قلعہ داری کا منصب حاصل تھا۔ دونوں سالاروں یا جماعتوں کیلئے نہ سید صاحب کے تھم کے بغیر قلعہ چھوڑ ناممکن تھا، نہ آئیس کمک پنجی سمی تھی۔ بلکہ صاحب کے تھم کے بغیر قلعہ چھوڑ ناممکن تھا، نہ آئیس کمک پنجی سمی تھی۔ بلکہ حاص انظامات کے بغیر وہ کہیں جا بھی نہ سکتے تھے۔ اس اثناء میں ان کے پاس سکھوں کا پیغام پہنچا کہ ہم آپ کو بڑے سے بڑا تھہ وہ دینے کیلئے تیار ہیں۔ مسلموں کا پیغام پہنچا کہ ہم آپ کو بڑے سے بڑا تھہ وہ دینے کیلئے تیار ہیں۔ ہمارے پاس چلے آؤ۔دونوں سالاروں کا جواب ایک تھا۔ ہم یہاں شخ بلند ہمارے باس فیل کرتے ہیں۔ فر بانا:

"این سردارکوکہو، ہم امیر المونین کے تابع فرمان ہیں۔ حضرت کے شکم کے بغیر کوئی کام نہیں کر سکتے۔ اپنے وطنوں ہے اس لیے آئے ہیں کہ کافروں سے بغیر کوئی کام نہیں کر سے ۔ نہ ملک چاہتے ہیں نہ مال ۔ ہمیں نوکری سے کیاغرض؟ ہماری موت اور زندگی امیر المونین کے ساتھ ہے۔ قادر ذوالجلال کے سواہم کسی سے نہیں ڈرتے ۔ اگر رنجیت سکھ بھی اپنالشکر لے کرآئے تو نہ ڈریں گے۔ ڈرخوف مرگ سے بیدا ہوتا ہے، ہم اپنی جانیں خدا کے راستے میں قربان کر چکے ہیں، پس میں کیا ڈر؟ ہماری طرف سے کہہ وینا کہ پھر ہمیں ایسا پیغام نہ بھیجا حائے۔ "(۱)

⁽۱) *منځورهٔ من ۸۲۰۱-۹۲۰۱_

سر جبسید صاحب کو یقین ہوگیا کہ سکھ بالاکوٹ پر حملے کا پختہ ارادہ کر چکے ہیں تو آپ نے پچوں سے بالاکوٹ جانے کی تیاری کر لی لیکن درہ ہوگڑ منگ کی حفاظت کا انظام ضروری تھا، اس لیے کہ اندیشہ تھا، شاید سکھا س پر حملہ کر دیں۔ آپ نے روائی سے پیشتر میاں ضیاء الدین پھلتی اور خضر خال قندھاری کو ایک جیش و کے کر بھوگڑ منگ میں اقامت کا تھم دیا۔ خضر خال نے بوے بجز سے عذر پیش کرتے ہوئے کہا: جنگ در پیش ہے، اس عالت میں حضرت کی رفاقت نہ چھوڑوں گا۔ اس جانباز مجا ہدکو بڑے اصرار سے روکا گیا کہ مجور شنگ کی حفاظت بھی اتن ہی ضروری ہے جتنی کہ جنگ میں رفاقت۔

تخل شدا ئد

عجامدین کی پوری زندگی تکلیفیں اور مشقتیں برداشت کرنے میں گذری۔ان کے لیے دورانِ بھرت و جہاد میں آسائش کے چند لمح بھی نہ آئے۔اکثر ایسا ہوتا کہ دفت پر کھانا نہ مانا، یا مانا تو ضرورت سے بہت کم ہوتا، لیکن ان کی زبان پر بھی شکایت کا ایک حرف بھی نہ آیا۔ مثال کے طور پر مایار کی لڑائی کے دن آبیں صبح سے شام تک کھانے کا موقع نہ ملا۔ رات کو تو رو پہنچ تو اتنے تھک چی تھے کہ کھانا کھانے کا ہوش بی نہ رہا۔ سید جعفر علی نقوی منشی خانہ کے معزز رکن تھے۔ جنگ مایار کے بعد جن اصحاب کو شاہ اسلمیل جعفر علی نقوی منشی خانہ کے معزز رکن تھے۔ جنگ مایار کے بعد جن اصحاب کو شاہ اسلمیل کے ساتھ مردان جانے کا تھم ملاءان میں سیرجعفر علی بھی تھے۔وہ فرماتے ہیں: میں نے شاہ صاحب سے عرض کیا کہ رات کو بچھ نہ کھایا تھا، دن کے وقت ایک خشک کھڑا ملا ، دبی کھا کہ یا یہ بہرا کی لیا۔اجازت ہوتو جلدی جلدی دونوالے کھالوں؟ انہوں نے فرمایا کہ روثی ساتھ لے لواور تو روسے با ہر نکل کرکھانا۔ سیرجعفرنے اسی پڑمل کیا۔

مردان سے بیٹاور پر پیش قدمی شروع ہوگئ۔اس سفر میں بھی ایک موقع پررسد نہل سکی تھوڑا ساغلہ ہاتھ آیا، وہ قندھاریوں میں تقسیم کردیا، جولشکر ہے آ گے بڑھ کر دریا کے کنارے موریچ بنائے بیٹھے تھے۔ باقی مجاہدین نے صرف گائے کے گوشت کی ایک ایک بوٹی پراکتفا کیا۔سیدصاحب بھی مجاہدین کی طرح فاقے سے رہے۔

ہیں ہوں ہے۔ سے بیات بوت سب ن جہرین مرن ہے۔ سر ہے۔

بعض اوقات تکیفیں بہت بڑھ جاتی رہیں۔ مثلاً ابتدائی دور میں مجاہدین زیادہ تر
ساگ بات پر گزارہ کرتے رہے۔ چشکلئ میں رسد کی تنگی کے علادہ اکثر مجاہدین بیار
ہوگئے۔ مولوی فتح علی کہتے ہیں کہ سیٹروں مجاہدین میں سے صرف چھسات تندرست رہے
ہوں گے ادران کی حالت بیتی کہ دن رات کا ایک ایک لحمہ بیاروں کی تیارواری اور دوادارو
میں صرف ہونے لگا۔ سیدرستم علی چلگانوی اکوڑہ میں زخی ہوکر دواڑھائی مہینے صاحب
میں صرف ہونے لگا۔ سیدرستم علی چلگانوی اکوڑہ میں زخی ہوکر دواڑھائی مہینے صاحب
فراش رہے۔ چشکلی چنچنے پران کی صحت پوری طرح بحال نہ ہوئی تھی ، تا ہم تنہا چالیں
فراش رہے۔ چشکلی جنچنے پران کی صحت پوری طرح بحال نہ ہوئی تھی ، تا ہم تنہا چالیں
پیاروں کی تیارداری کا بارا ٹھالیا اور حتی المقدور کسی کو بھی تکلیف نہ ہونے دی۔

باتھے۔۔۔کام

مجاہدین کی ایک خصوصیت بیتی کہ کسی کو بھی ہاتھ سے کام کرنے میں تامل نہ تھا۔ سید صاحب اپنے واقعات سناتے رہتے تھے کہ ہم نواب امیر خال کے لشکر میں تھے اور کیڑے وصونے کیلئے جاتے تواپ آٹھ دس ساتھیوں کے کیڑے بھی دھولاتے۔ ایک مرتبہ مردان میں مشہر سے تو محبد کے پاس کی جگہ ہاتھی بندھنے کے باعث گندی ہوگئ تھی ۔ سیدصا حب نے خود کھارلیا، شاہ اسلعیل نے نوکری سنجال کی اور تھوڑی دیر میں ساری جگہ صاف کردی۔

پنجتار میں جوجگہ نماز کیلئے مخصوص کر لی تھی ،اس کے اردگر دایک احاط تھا۔ نہ جھت، نہ فرش ،نماز پڑھتے وقت مجاہدین کے کنگر چھتے تھے۔ایک روزسیدصا حب مجاہدین کو لے کر جنگل میں نکل گئے اور اتن گھاس کا ٹ لائے کہ فرش پر ایک فٹ موٹی تہ بچھاوی گئی۔ ای طرح چند روز بعد چھپر بنا کر جھت کا انتظام کرلیا۔ مجاہدین ہی نے مجد میں تو سیع کرلیا۔ مجاہدین ہی نے مجد میں تو سیع کرلیا، نہیں مرقوم ہے:

'' حضرت کی تعلیم کے مطابق کسی کوکسی کام میں عار ندتھی۔سب اپنے ہاتھ سے کپڑے دھوتے ، کھانا لگاتے ،جنگل سے لکڑی لاتے ، چکی چیتے ، بیاروں اور معذوروں کی قے اور نجاست اٹھا کر باہر چینکتے ، جولوگ بعد میں آئے انہوں نے پہلوں کو دکھ کرسبق حاصل کرلیا۔''

حق گوئی میں بیبا کی

مجاہدین سیدصا حب کا اتناادب کرتے تھے کہ اس کی مثال ملنی مشکل ہے، تاہم حق بات کہنے میں کی و باک ندھا۔ سیدصا حب نے خود کئی مرتبہ بجاہدین سے فر مایا تھا کہ میں بشر ہوں اگر کسی وقت کوئی ہے جایا خلاف شریعت بات میری زبان سے صادر ہوتو ضرور مجھے آگاہ کرنا، ورنہ قیامت کے روز سب کا دامن پکڑوں گا۔ چنا نچہ ایک مرتبہ میاں عبداللہ کیلئے با اختیار 'مردود''کالفظ زبان مبارک سے نکل گیا۔ میاں نظام الدین چشتی فیراللہ کیلئے با اختیار 'مردود' کالفظ زبان مبارک سے نکل گیا۔ میاں نظام الدین چشتی نے آپ کویاددلایا کہ بیلفظ کسی مسلمان کیلئے کیسا ہے؟ فر مایا سخت قصور ہوا۔ پھر سب کے سامنے میاں عبداللہ سے معافی ما تھی۔ شاہ اسلمعیل آئے تو خود انہیں بیواقعہ سنایا، ساتھ ہی سامنے میاں عبداللہ سے معافی ما تکے کا ذکر کیا۔

ایک مرتبد حسن زئی قبیلے نے سید صاحب سے عشر معاف کروینے کی ورخواست کی۔ آپ نے تالیف قلوب کی غرض سے درخواست منظور کر لیا۔ اس کا چرچا ہواتو شاہ اسلامیل نے صاف کردیا کہ عشر حقوقی شری میں سے ہےاورامام بھی اسے معاف نہیں کرسکتا۔

امب پر حملے کا خطرہ پیدا ہوا تو سیدصاحب نے شاہ اسلیل کولکھا کہ مستورات کو قلعے سے نکال کر کی محفوظ مقام پر بھیج دیا جائے۔ شاہ صاحب بیجھتے تھے کہ مستورات کو نکالا تو گردوپیش کے علاقے میں سرائیمگی پیدا ہوجائے گی۔انہوں نے اس علم کی تقییل کو خلاف مصلحت بتایا۔سیدصاحب نے دوبارہ بید تکھا کہ مستورات کو قلعے میں نہ رکھنا چاہیے۔شاہ اسلیما اگر چھیل علم میں ہمیشہ مستعدر ہے تھے لیکن اس علم کے خلاف اپنی چاہیے۔شاہ اسلیما اگر چھیل علم میں ہمیشہ مستعدر سے تھے لیکن اس علم کے خلاف اپنی

رائے ظاہر کرتے ہوئے صاف صاف لکھ دیا کہ اس پرعمل کرنے سے شوکت ِ اسلام کو نقصان پہنچا تو خدا کے نزد کیک اس کی جواب دہی آ یہ ہی کے ذمہ ہوگی۔

عفت و پاک بازی

مجاہدین کی عفت و پاک بازی ورجہ کمال پر پنجی ہوئی تھی۔ قیام خبر کے زمانے میں ایک مرتبہ ملاکلیم اخوندزادہ نے گاؤں کی عورتوں کوآپس میں باتیں کرتے سنا کہ سید باوشاہ کے ساتھی یا تو نفسانی خواہشات سے محروم ہیں یا اولیاء ہیں۔ بن چکیوں پر آٹا پسوانے آتے ہیں، وہاں عورتیں بھی ہوتی ہیں لیکن کیا مجال کہ آج تک کمی مجاہد کی تگاہ عورت کی طرف آٹھی ہو۔ ملاکلیم نے کہا: واقعی اولیاء ہیں۔ یہ سیدصا حب کی صحبت و تربیت کا اثر ہے کہان کا فطرف آٹھی ہو۔ ملاکلیم نے کہا: واقعی اولیاء ہیں۔ یہ سیدصا حب کی صحبت و تربیت کا اثر ہے کہان کی نظر شرع شریف کے خلاف قطعانہیں اٹھتی۔

بشاور پر پیش قدمی کے دوران میں مجاہدین جارسدہ سے تکنئی ہوتے ہوئے مٹ بہنچے تو اشکر کی حق شناسی دیکھ کرلوگ بکارا تھے:

''ایں عجب نشکر است۔ باوجود آنکه شش ہفت ہزار سوار و پیادہ نزول کردہ اندامابر کے ظلمے نمی رود۔''(1)

ترجمه : بيعيب الكرب- اگر چدسات بزارسواراور بياد برات بوتا بين كسى برظام نيس موتا بيات كسى برظام نيس كسى برظام نيس كسى برطان كسى برخان كسى برطان كسى برخان كسى برطان كسى برطان كسى برطان كسى برخان كسى

محض محرمات ہی نہیں بلکہ مروہات ہے بھی گریز کا بیال تھا کہ اپنی تحریک کواس قسم کی چیز ہے بھی آلودہ نہ ہونے دیا۔ عبدالغفار خال بشاوری کا واقعہ بیان ہو چکا ہے، اسے قلب سازی میں کمال حاصل تھا۔ کہنا تھا کہ جتنے روپے چاہیں بنا کردے سکتا ہوں اور ان سے سب کچھ خرید سکتے ہیں۔ سیدصا حب نے صاف صاف فرمادیا کہ ہمارے ساتھ رہنا ہے تو قلب سازی چھوڑ دو، ورنہ سکھوں کے علاقے میں چلے جاؤ۔

⁽۱) "منظورة"ص: ۸۹۰ ـ

شان تربیت

سید صاحب کاطریق تربیت بیتها که کی کوخصوصا تعم نددیتے تھے۔ عمو افر مادیتے تھے کہ فلال کام ہونا چاہیے یا خود کام شروع کردیتے تھے۔ ایک مرتبہ قیام المب کے زمانے میں بانی کی ضروت پیش آگی۔ سیدصاحب نے فرمایا کہ کوئی بھائی دوچار شکیس دریا ہے لیآئے۔ برخض نے سمجھا کہ پانی آگیا ہوگا۔ جب معلوم ہوا کہ پانی نہیں آیا تو سیدصاحب نے خود مشک اٹھالی، پھر تمام مجاہدین مشک، پکھال، ڈول، بدھنا، گھڑا لے کر دوڑ پڑے۔ سیدصاحب پانی لے کر آئے تو فرمایا کہ میری خاطر داری سے کام نہ کرنا چاہیے، للہیت کا مفہوم ہی ہے کہ ہر بھائی ہر کام صرف خدا کی رضا کیلئے کرے۔ خواہی نے کہ ہر بھائی ہر کام صرف خدا کی رضا کیلئے کرے۔ خواہی نے کہ ہر بھائی ہر کام صرف خدا کی رضا کیلئے کرے۔ خواہی نے کہ ہر بھائی ہر کام صرف خدا کی رضا کیلئے کرے۔

'' آنجناب رامنظور بود که تیم علی العموم باشد دمسلماناں برآ ل سبقت کنند و بالخصوص سے رائھم دادہ نیشود۔''(1)

تسر جسمیہ: سیدصاحب کومنظور بیتھا کھم علی العموم دیا جائے اور مسلمان اس کی تمیل میں پیش قدمی کریں تخصیص سے کسی کو تھم نہ دیا جائے۔

سيادت

ہمارے زمانے میں سیادت کے احترام وعزت پر بڑا زور دیاجا تا ہے۔ اس سلسلے میں سیدصا حب کے تصویسیا دت کا بھی اندازہ کرلینا چاہیے۔ قیام اسب کے زمانے میں ایک آدی سیدصا حب کے پاس بھی مانگنے کیلئے آیا۔ آپ نے جہاد کی ترغیب دی۔ اس نے کہا کہ میں ضعیف ہوں اور میرے بال بچسکصوں کے علاقے میں میں۔ آپ نے فرمایا کہ میں شکر جھیج کرتمہارا سامان اور بال بچمشگوالوں گا۔ وہ بولا: اس طرح جا نمیں فرمایا کہ میں اشکر جھیج کرتمہارا سامان اور بال بچمشگوالوں گا۔ وہ بولا: اس طرح جا نمیں

⁽١) "متظورة"من:٣٢٧-

تلف ہوں گی اور اگر دیمن کامیاب ہو گیا تو مصیبت پیش آئے گی۔سید صاحب نے فرمایا کہاسے دوروپے دے دیے جائیں۔وہ بولا کہ میں سید ہوں۔حضرت یہ سنتے ہیں غصے میں آگئے اور فرمایا:

''وقتیکه به شاکارے فرمودم که بردیگرال واجب وبرسادات اوجب است،آل وقت عذر کردیداکول برائے یک دوروپیه سیادت خود رای فروشید!ای عجب است که شخصے برائے بجا آوردن احکام الی اظهار سیادت خود نه کند، چداقد ام وسبقت درامور عبادت شایان شان سیادت است و درمقام طمع اظهار سیادت خودی نماید''(۱)

ترجمه : جب تمهیں ایک ایسکام کاظم دیا جودوسروں کیلئے لازز اور ساوات کیلئے بدر جہا لازم ہے،اس وقت تم نے عذر کردیا۔اب ایک دو روپے کیلئے اپنی سیادت نے رہے ہو،کس قدر تجب کا مقام ہے کہ اس فخص نے خدائی کام بجالانے کے سلسلے میں تو سیادت کا اظہار نہ کیا،اگر چہ معاملات عبادت میں سبقت اور پیش قدمی سیدوں کے شایان شان ہے اور طبع کی خاطر اسے سید ہونے کی نمائش کرتا ہے۔

بیشک سیاوت کا دعویٰ ای صورت میں زیبا ہے کہ انسان کاعمل اسکے شایانِ شان ہو۔

آخری گزارش

بیاس جماعت کی تربیت و تنظیم اوراسلامیت کا ایک سرسری خاکد تھا، جو مختلف مآخذ سے متفرق حالات جمع کر کے مرتب کیا گیا۔ نہیں کہا جاسکتا کہ اس میں جماعت کی پوری تصویر آگئی، لیکن اس سے اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ سیدصاحب نے تھوڑی مدت میں اپنی بے مثال تربیت سے کیسی جماعت پیدا کردی تھی، جس کی اسلامیت زوال کے تاریک

⁽¹⁾ معتقوروانس:۲۲هـ

دور بین آفآب جہانتاب کی طرح درخشاں رہی اوراس کی روشن بھی ماندنہ پڑے گی۔ای نقتے سے سیدصاحب کی مردم گری کا درجہ بھی آشکارا ہوسکتا ہے۔آپ کے ظہور سے پیشتر پیلوگ آئیں مشاغل میں مصروف تنے، جن میں لاکھوں دوسرے افراد کی زندگیاں بسر ہوری تھیں،لیکن آپ نے پانچ چوسال میں ایسا گروہ پیدا کرلیا، جس کے نمونے یہاں ہوری تھیں،لیکن آپ نے پانچ چوسال میں ایسا گروہ پیدا کرلیا، جس کے نمونے یہاں ہماری صدیوں کی تاریخ میں بہت ہی کم ملیں گے۔اس مردم گری کے مزید کمالات ان مجاہدین کے حالات میں چیش ہونگے جنگے منظم سے سوانح آئندہ ایواب کی زینت ہیں۔

تير جوال باب:

بيرمحمه قاصد كاايك سفر

سیدصاحب کے قاصد

سید صاحب کے تمام قاصدوں کی صحیح تعداد معلوم نہ ہوسکی۔ان میں ہے بعض پنجاب کے راہتے ہندوستان آتے ،جن شہروں اور قصبوں میں سید صاحب کے نیاز مند اور مخلصین موجود ہوتے ،ان میں مفہرتے اور پیغامات پہنیاتے ہوئے رہلی جاتے ، جو پغامات اوروصول وارسال زر کاسب سے بروامر کر تھا۔ وہاں سے حسب ضرورت پورب اورثو تک کا چکر بھی لگالیتے ،ای رائے سے وہ واپس جاتے تھے۔روپید درسرے ذریعوں ير ولي كافي جا تا تها يعض اوقات قاصد بهي مختلف مقامات سے جمع شده رويد يے كر وبلى بينيات وبال شاه محمد اسحاق منذيان تيار كرادية يا بهى بهى رديون كواشر فيول ميس تدیل کرے کیڑے میں اس طرح می دیاجاتا کہ کسی کو خبر نہ لگ سکے۔ پنجاب ہی کے راسة وووالي على جاتے بي وكدان كالباس فقيرانه اور سياحانه وتا اس لئے عموماً كسى مقام برتعرض ندكيا جاتا يعض قاصدس عدس سنده جاتے جہال سيد صاحب كابل ومال پركوك ميل مقيم تھے۔ پھر ماز واڑ ہوتے ہوئے ٹونك چینجے۔ يہيں سے بلك كر سندہ ہوتے ہوئے یہ سرحد چلے جاتے۔میال دین محمد کے ایک سفر کے متعلق بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ ایک مرتبہ بنارس بلکہ اس سے بھی آ سے تک ہوآئے تنصر بهرحال سيدصاحب نے مخابرت ومكا تبت كا پخته انتظام كرلياتھا اور قاصد مقاصد كاخفا كابعى يوراخيال ركمت تھے۔

پيرمحمه قاصد

ان معتبر قاصدوں میں ہے ایک کانام پر محمد تھا، جوسید صاحب کے قیامِ سرصد کے دوران میں خداجانے کتنی مرتبہ ہندوستان آیا اور واپس گیا۔اس کے تمام سفروں کی کیفیت تو محفوظ نہیں، جسن اتفاق سے صرف ایک سفر کی تفصیلات روایات کے ذخیر کم میں محفوظ رہ گئی ہیں۔ جنہیں اس غرض سے یہاں درج کیا جاتا ہے کہ اندازہ ہوجائے کہ سید صاحب اوران کے رفقاء مشکلات ومصائب کے سنحوفناک ہجوم میں ابنادینی اور قومی فرض اواکر تے رہے۔ یہ سفر تمبر ۱۸۲۹ء میں شروع ہوا تھا اس لئے کہ میاں پر محمد کا بناییان سے کہ اے جنگ زیدہ میں فتح وکامرانی کا نامہ بشارت دے کر بھیجا گیا تھا اور جنگ زیدہ میں فتح وکامرانی کا نامہ بشارت دے کر بھیجا گیا تھا اور جنگ زیدہ میں فتح وکامرانی کا نامہ بشارت دے کر بھیجا گیا تھا اور جنگ زیدہ میں بھی ہوگھی۔

بہرحال پیرجمد فقیرانہ جیس میں سرحدے چلا اور پنجاب سے گذر کرمظفر گرمیں مولوی خدا بخش میر خمی کے پاس پہنچا جوانگریزی کچبری میں ملازم تھے۔ آئییں نامہ فنج دکھایا اور وہ بہت خوش ہوئے۔خط کی فقل رکھ لی۔ رخصت کے وقت سات سورو پے کی اشرفیاں اور نین سکھ کا ایک تھان سیدصا حب کے لئے دیا۔ دی یا ہیں روپے مشتی محمدی انصاری کے لئے دیے جوسیدصا حب کے میرمنشی تھے۔ پیرمحمد کوراستے کے خرج کے لئے بچھوقم دی۔

مظفرتگرے دہلی

مظفر گرے دبلی تک کے سفری اجمالی کیفیت ذیل میں درج ہے:

ا مظفر گرے بیرمجمہ محلت گیا اور مولوی وحید الدین سے ملا۔ انکے بھائی حافظ قطب الدین چند ہی روز پیشتر سید صاحب سے رخصت کیکر آئے تھے۔ نامہ فتح کی نقل انہوں نے بھی لے لی اور قاصد کوخر ہے راہ بھی دیا ہوگاروایت بیس اس کا کوئی ذکر نہیں۔ انہوں نے بھی ہے لی اور قاصد کوخر ہے راہ بھی دیا ہوگاروایت بیس اس کا کوئی ذکر نہیں۔ ساہو گاروایت بیس اس کا کوئی ذکر نہیں۔ ساہو گاروایت بیس اس کا کوئی ذکر نہیں کے ساتھ میر تھر پہنچا۔ وہاں شخ محر تقی اور شن عبد اللہ سے بیرمجمد میر تھر پہنچا۔ وہاں شخ محر تقی اور شن عبد اللہ سے ملاجو انگریزی

فوجوں میں گوشت کے تھیکیدار تھے۔ان کے علاوہ داروغہ محد راحم اور قاضی حیات بخش
سے بھی ملاقات کی۔آ خرالذکر کے فرزندقاضی احمد اللہ سید صاحب کے پرانے رفیقوں
میں سے تھے اور جہاد کی غرض سے سرحد میں تشریف فرما تھے۔ان حضرات نے بھی قاصد
کوخر بچ راہ دیا۔قاضی صاحب نے اپنے فرزند کے نام ایک خط بھی حوالے کیا۔ چونکہ وہ
بہت تک دست تھاس لئے خرج کے واسطے صرف ایک دو بیہ پیش کر سکے۔
میر تھے سے دفعت ہوکر پیر محمد دبلی بہنچا اور شاہ اسحاق کی در سگاہ میں مقیم ہوا۔

قیام د ہلی

دیلی میں شاہ اسحاق اور شاہ یعقوب سے ملاقات کی اور نشکر اسلام کے پورے حالات سنائے۔ شاہ اساعیل نے ایک خط دیا تھا، وہ شاہ صاحبان کو پہنچایا۔ اس خط میں مولوی سیر مجبوب علی دہلوی کے متعلق کچھ خت با تیں درج تھیں، جو مجاہدین کا قافلہ لے کر سیر صاحب کی خدمت میں پہنچ تھے لیکن بعض ناگزیر تکالیف سے دل تنگ ہوکر واپس چیلی آئے تھے۔ شاہ اسحاق نے وہ خط چھپالیا۔ لیکن مولوی سیر محبوب علی کو کسی ذریعے سے خبر مل کی اور پیر محمد ملا تو اصرار کیا کہ وہ خط لاکر دکھاؤ۔ چتا نچہ پیر محمد نے شاہ اسحاق سے خط نے کرمولوی صاحب کو دکھایا۔ پڑھ جگنے کے بعد انہوں نے کہا کہ شاہ اسماعیل کا پچھ تصور نہیں، دیلی کے مضدوں نے جو مجھ سے عنادر کھتے ہیں، مجھ پر بہتان وافتر ابا ندھ کر لکھے ہوں گے۔

پیر محمہ نے مولوی محبوب علی کی معیت میں شاہ اسحاق کی ہمشیر سے بھی جو پس پردہ تھیں، باتیں کیں اور حکیم مومن خال ہے بھی وہ ملا۔

سفرنونك

پر محد وہلی سے تو تک میا جہاں اس زمانے میں سید صاحب کے بمانج سید

عبدالرحمٰن آئے ہوئے تھے۔ چنانچدان سے ملاقات کی۔نامہ فتح دکھایا۔سیدعبدالرحمٰن نے وہ خط نواب امیر الدولہ اس منے وہ بھی بہت خوش ہوئے۔نواب وزیرالدولہ اس وقت سرونج میں بتے ،ان سے ملنے کے لئے پیرمحمر مرونج میااور میں بائیس روز وہاں رہا۔ نواب وزیرالدولہ سید صاحب کے متعلق بار بارمخلف با تیں پوچھتے تھے۔رخصت کے وقت تاکید کی کہ ہماری طرف سے حضرت کے ہاتھ پر نیابتا بیعت امامت کرنااور آپ کے لئے تو شدخانہ سے دوعمہ چھریاں لیتے جانا۔ان میں سے ایک کا دستہ شیر ماہی کا تھا اور دوسری کاسنگ یشب کا۔

والیسی کی تیاری

پیرٹھ ٹونک سے دبلی آیا۔ شاہ اسحاق نے تین ہزار کی ہنڈی اور تین سورو پے کی اشرفیاں دیں۔ سات سورو پے کی اشرفیاں جو خدا بخش میرشمی نے دی تھیں پہلے سے ان کے پاس جمع تھیں۔ ان رقبوں کی تفاظت کا مناسب! نظام کر کے واپسی کے سفر کی تیاری کر لی۔ عین اس وقت معلوم ہوا کہ پیرٹھ کے ہندوستان آنے کی اطلاع رنجیت سنگھ کی حکومت کے حکومت کو سائٹی ہے اور اس کا حلیہ بھی بتادیا گیا ہے۔ چنا نچہ لا ہور سے کھے حکومت کے مختلف کا رندوں کو تھم بھیج و ہے گئے کہ اس جلیے کا آدمی جہاں ملے گرفنار کرایا جائے۔ حکومت پنجاب کے وکیل دبل کے پاس بھی ہے تھم آیا۔ اس سے بیذ کرمن کرایک تخلص نے حکومت پنجاب کے وکیل دبل کے پاس بھی ہے تھم آیا۔ اس سے بیذ کرمن کرایک تخلص نے شاہ اسحاق تک اطلاع پہنجائی۔ پیرٹھ خود کہتا ہے:

'' میں سفر میں فقیراندلہاس رکھتا تھا۔ میرے پاس بڑے بڑے دانوں کی ایک شیع ،ایک روئی دار میرزئی اور ایک پانی مجرنے کی ڈورتھی اور ایک تو نہا تھا اور ایک دوہرا کرتا اور ایک دو بٹا۔

سفرمراجعت اور گرفتاری

خطرے کاعلم ہو چکا تھا، لیکن پیرمجد کے لئے اس کے سواچارہ نہ تھا کہ وہ بنجاب ہی کے راستے واپس جاتا۔ چنانچے خدا پر بھر وسہ کرتے ہوئے چل پڑا۔ ہرروز پچپیں تمیں کوک کی منزل طے کرتا ہوا دریائے شانچ کو عبور کرکے کپور تھلہ پہنچا۔ اس سفر میں چھ دن گذر گئے۔ ایک روز کپور تھلہ میں تھم کر بھر چلا اور دریائے بیاس عبور کیا۔ وہاں تین آ دمی السلطے کئے جن کا بیان مید تھا کہ وہ سیدصا حب کے پاس جازہ ہیں۔ ایک رات جنڈیالہ میں گئے جن کا بیان مید تھا کہ وہ سیدصا حب کے پاس جازے ہیں۔ ایک رات جنڈیالہ میں گزاری، ایکے روز امر تسر پنچے اور ایک معجد میں قیام کیا۔ اسکے سفر میں سے ایک جگہ عبور دریائے راوی کا ذکر ہے اور دوسری جگدا بین آ بادمیں قیام کا۔

پیرمحرکہنا ہے کہ میں کھانانفیس کھا تاتھا، جے مبری وضع قطع اور فقیراندلباس سے کو کی مناسبت نہ تھی۔ ایک مسلمان دکاندار نے یہ کیفیت دیکھی تو سمجھا کہ یا تو میرے پاکر دست غیب ہے یا میں کیمیا گرہوں۔ چنانچیاس نے اصرار کیا کہ جھے بھی کوئی تبرک عنایت فرمائے۔ پیرمحمد نے کہا کہ سوبار سورہ فاتحہ اور سورہ اخلاص پڑھا کرو، خداروزی میں برکت دےگا۔

ایمن آباد سے بیرمحمد اور ساتھی گجرات اور کھاریاں ہوتے ہوئے جہلم پہنچے وہال کے راستے میں ونتو رامل گیا۔اس نے بیرمحمد کی طرف غور سے دیکھا اور اپنے ایک سوا سے کہا کہاسے اپنے ڈیرے میں لے چلو۔

تلاشى اورقيد

پیرتحد کابیان ہے کہ میں ڈیرے پر پہنچا تو معلوم ہوا کہ سوارشاہ میرخاں آفریدی کے رسالے کے ہیں۔ان لوگوں نے بھی مجھے پیچان لیا اور بہت متناسف ہوئے کہ بھا کم بہت بے ڈھب پھنے ہو۔شاہ میرخاں وہاں موجود نہ تتھ اور لا ہور آئے ہوئے تھے۔ میں نے چاہا کہ اپنی رقیس، ہنڈی اور خطوط انہیں دے دوں۔ اس اثناء میں ایک سکھ سوار
مجھے ساتھ لے جانے کیلئے آگیا اور میں کوئی شئے بھی اپنے سے جدا نہ کرسکا۔ تلاقی میں
ساری چزیں نکل آئیں، مجھے زود کوب بھی کیا گیا۔ بالآ ٹرایک ڈیرے میں قید کردیا گیا۔
وہاں سے لا ہور روانہ ہوئے۔ مجھے بھی پابہ زنجیر ساتھ لے لیا۔ میں نے ہر چند کہا
کہ میں قاصد ہوں مجھے کیا معلوم لوگ خطوں میں کیا پچھ لکھتے ہیں، میں تو خط پہنچانے کا
ذمہ دار ہوں۔ دنورانے کہا کہ سب پچھ کے بتا دودر نہ تہیں بھانی کی سرادوں گا۔

حالات اسيري

لا ہور پنچ تو پرمحد کو انارکلی کی جھاؤنی میں قیدر کھا گیا۔ اس کا بیان ہے کہ ایک بھٹگی کو میر اساتھی بنادیا گیا۔ اس میں بمجھے نماز کی تخت تکلیف تھی۔ ونتو را سے ایک روز میں نے شکایت کی تو اس نے سکھوں کو تخت ست کہا، چنانچہ بیہ صیبت رفع ہوگئی۔ کھانا مجھے اچھانہ ماتا تھا لیکن ایک شخص رحوز نرم نواز 'تھا اس نے اپنے ہاں سے میرے لیے کھانا مقرر کردیا۔ پھر مجھے وزیر سکھے کے پاس بھیجا گیا جو ایک مرتبہ سید صاحب کے پاس سفیر بن کر آتھا، میکہ سید صاحب کے پاس سفیر بن کر آتھا اور آپ کا بہت احتر ام کرتا تھا، بلکہ سید صاحب کے طلقے کا خیال تھا کہ وہ خفیہ خفیہ مسلمان ہو چکا ہے۔ وزیر سکھے نے چوکی پہر اموقوف کردیا۔ پیرمحمر صرف بیڑی پہنے ہوئے مسلمان ہو چکا ہے۔ وزیر سکھے نے پاس سے اسے نفیس کھانا بھی مل جاتا تھا۔

و ہیں سید انور شاہ امرتسری سے ملاقات ہوئی جوسفر ہجرت میں سید صاحب کے ساتھ تھے اور واقعہ بازار تک ساتھ رہے، پھر انہیں سید صاحب نے واپس بھیج دیا۔ وزیر سنگھ نے پچھ مدت بعد پیر محمد کو کو تو الی میں بھیج دیا اس زیانے میں خدا بخش نامی ایک کو تو ال تھا۔ اس نے پیرمحمد سے بہت اچھا سلوک مرعی رکھا ، یہاں تک کہ عام قید یوں کی رپورٹ میں اس کا ذکر ہی نہ کرتا تھا کہ مبادا کوئی غیر مناسب تھم اس کے متعلق جاری ہوجائے۔ اسیری بی کے زمانے میں بی خبر ملی کدسید صاحب نے مایار کی اثر ائی میں درانیوں کو محکست دی اور پیٹا در میں داخل ہو گئے۔ چندروز بعد پیر محرکور ہا کردیا گیا۔

بعد میں معلوم ہوا کہ پیرمحمد کی گرفتاری اور اسیری کی خبر ہندوستان میں بھی پہنچ گئی تھی اور حکیم مغیث الدین سہارن پوری نے بیگم سمرو سے کہہ کر دنتو را کوایک خطائکھوایا کہ پیرمحمد کو رہا کر دیا جائے۔خو و ان مسلمانوں نے بھی رہائی کیلئے کوششیں کی ہوں گی جوسید صاحب سے عقیدت وارادت رکھتے تھے اور پیرمحمد کے حالات سے آگاہ ہو چکے تھے۔

رہائی کے بعد

رہائی کے بعد پیرمحمد لا ہور ہی میں تھا کہ خبر ملی کہ سید صاحب نے سلطان محمد خان درانی سے عہد و پیان کے بعد پشاوراس کے حوالے کردیا ہے۔ سیدانورشاہ بھی ان دنوں لا ہور ہی میں مقیم ہے۔ بچھ مدت پیرمحمد نے ان کے پاس گزاری۔ وہ خود کہتا ہے:
''دو (سیدانورشاہ) بڑے نامی شخص ہے۔ بہت لوگ ان کے مریداور معتقد ہے اور مان گو آدی ہے۔ امیروں معتقد ہے اور وہ عجیب خوش طبع اور بن تکلف اور صاف گو آدی ہے۔ امیروں میں امیر، غریوں میں غریب، درویش میں درویش، بڈھوں میں بڈھے، میں امیر، غریوں میں جوان ، سیدوں میں سید، لڑکوں میں لڑکے اور پنجاب میں ان کی جوانوں میں جوان ، سیدول میں سید، لڑکوں میں لڑکے اور پنجاب میں ان کی قدرومنزلت ہرکی کے روبروتی ۔ یہاں تک کہ سکھلوگ بھی ان کی عزت دنو قیر کرتے ہے اور جس کووہ بخت ست کہتے ہے کوئی برانہ مان اتھا۔''(۱)

ای زمانے میں درانیوں اور بعض سر داروں نیز خوانین سمہ کی سازش سے مجاہدین کے جابجا شہید ہونے کی دردنا ک خبریں ملیں ،لہٰ ذاسید انورشاہ نے پیر محمد کومشورہ دیا کہ اب سرحد جانے کے بجائے تنہیں ہندوستان چلے جانا چاہیے۔

⁽۱) وقائع احمدي جلدة خرى ص: ١٣١١_

لا ہور سے دہلی

چنانچہ پیرمحمد لا ہور سے ہندوستان روانہ ہو گیا۔سات آٹھ روزسہارن پور میں تھیم مغیث الدین کے مکان پر رہا۔انہوں نے رخصت کے وقت خرچ راہ دیا ، پھر میرٹھ چھاؤنی میں شخ محرتقی اور شخ عبداللہ کے پاس پہنچا۔میرٹھ شہر میں قاضی حیات بخش سے ملاقات کی اور دیلی پہنچ گیا۔

اہل سمہ کی سازش اس کے الم انگیز نتائج اور پنجتار سے سیدصاحب کی ہجرت کے متعلق اطلاعات دبلی آ چکی تھیں۔ پیر محمد بہر حال واپس جانے پر مقرتھا۔ شاہ صاحب نے فر مایا کہ بے شک چلے جاؤلیکن ہم کوئی رقم یا ہنڈی اس وقت تک نہیں بھیج سکتے جب تک قطعی طور پر معلوم نہ ہوجائے کہ سیدصاحب نے کہاں اقامت اختیار کی ہے۔ غرض پیر محمد دبلی سے دوبارہ سرحد کی طرف نکل پڑا۔ صرف بچاس روپے پاس تھے۔

دوسراسفر

دہلی سے روائلی کے بعد شاملی میں قیام کاذکر ہے، جہاں کانور بخش جراح نظراسلام میں تفاران کے مکان سے قریب ایک مسجد تھی جس میں بیر تحد شہرا۔ نور بخش کے باپ اور بھائیوں سے ملاقات کی۔ وہاں بانس بریلی کے امداد علی خان تحصیلدار تھے، بیر محمدان سے بھی ملاتو انہوں نے مسجد سے اٹھواکر اپنے پاس شہرا لیا۔ وہاں چند بڑھئی کام کررہے تھے یخ صیلدار سے کہ کران سے ککڑی کا ایک کشتی نما بیالہ تیار کرایا جس کے بیند سے میں روپے رکھنے کیلئے ایک خانہ بنوالیا اور روپے رکھ کراس پرڈاٹ لگادی۔ پھرامر تسر ہوتا ہوا سمجرات پہنچا، جہاں سے سیالکوٹ اور کشمیر کا راستہ اختیار کرلیا، اس لئے کہ عام افواہ بیتی

ایک سید کی شفقت

پیر پنجال سے دواڑھائی کوں در ہے فان پورنا می ایک مقام تھا، پیرمجہ وہاں کی مجد میں اترا۔ایک شمیری آیا اور اس نے کہا کہ یہاں سے اٹھ جاؤ۔ پیرمجہ کہاں جاتا؟ پجھ دیر بعد وہ شمیری دوبارہ آیا اور پیرمجہ کواپنے ہاں کے ایک سید کے پاس لے گیا۔اس نیک بخت نے پیرمجہ کواپنے پاس تھر الیا، کھانا کھلایا، تنہائی میں پوچھا کہ اپنا حال بچ بچ بنادو۔ جب معلوم ہوا کہ پیرمجہ سیدصا حب کا قاصد ہے تو اس کی دلداری اور تواضع میں کوئی کسر اٹھانہ رکھی ، یہ بھی بتایا کہ ہمیں جو خبریں ملی ہیں،ان سے معلوم ہوتا ہے کہ سید صا حب پچوں میں ہیں، شاہ اساعیل افٹکر لے کر بالاکوٹ پنچے ہوئے ہیں اور مولوی خبر الدین منظفر آباد میں ہیں، شاہ اساعیل افٹکر لے کر بالاکوٹ پنچے ہوئے ہیں اور مولوی خبر الدین منظفر آباد میں ہیں۔ چار پائج روز کے بعد اس سید نے پیرمجہ کیلئے اون کے پاتا ہے اور گھاس کی چیلی تیار کرادی جس کے بیر برفتانی علاقے میں سے گذر نامشکل تھا۔

ایک فقیری دغابازی

پیر پنجال کی چڑھائی میں ایک فقیراور ایک تشمیری پیرمجمہ کے ساتھی بن گئے۔ پہاڑ سے گذر جانے کے بعد ایک گوجر کے مکان میں تھہرے اور روٹی پکوائی۔ ساتھی فقیر نے پیرمجمہ کے آئے میں کوئی نشہ آور چیز ملادی جسے کھاتے ہی آ ہستہ آ ہستہ غفلت طاری ہوگئ۔ کمر میں جو تھلی بندھی ہوئی تھی ،اس میں چار پانچ روپے تھے، وہ فقیر نے کھول لی اور پیر محمد کاہاتھ پکڑ کرایک نالے پرچھوڑ گیا جوکوس سواکوس پرتھا۔ سار ااسباب خود لے گیا۔

تشميري کي مهرباني

تین روز نالے پرگزارے۔ پھر ہوش آیا تو ایک بستی میں پہنچا، ایک مسلمان سمیری سے اشارۃ کہا کہ میں بھوکا ہوں۔اس نے روٹی پر کھی اور شہدلا کر پیش کیا۔ ہوش وحواس بجا ہوئے تو اس کشمیری سے کہا کہ بھائی میں بے یار دیددگار ہوں ،کوئی الی جگہ بتادو جہاں آٹھ دی دن گر ارلوں جسم میں پیمی طاقت آجائے توجاؤں۔ پیمی کھانا دے دیا کرو گے تو مہر بانی ہوگی درندتم پر پیمالزام نہیں۔اس در دمند مخص نے ایک موٹا کمبل اوڑ ھے کے لئے دے دیا اور ایک جگہ بتادی جہاں کوئلوں اور آگیٹھی کا انتظام کردیا۔ گھر والوں کو تاکید کردی کہ جو پچھ پکا کرے ان شاہ صاحب کو کھلا دیا کرو۔

دغا باز فقير کی تلاش

وہاں کا حاکم رام پور کا پٹھان تھا۔ شمیری نے اس سے ذکر کیا تو پیرمحرکو بلوایا گیا۔
سارے حالات سے سپائی بھیج کراس فقیر کو تلاش کرایا۔ گوجر کے مکان سے پہتہ چلا کہ وہ
دامن کو ہ کی بستیوں میں رہتا ہے۔ پہلے اس کے متعلقین پکڑے آئے پھر وہ فقیر بھی گرفار
ہوکر آیا۔ پیرمحد نے حاکم کو بتا دیا کہ میراسار ااسباب یہ لے گیا ہے۔ چالیس رو پ تو کشی
نما پیالے میں تھے۔ پانچ رو بے میری تھیلی میں تھے۔ حاکم نے کہا چندروز تھہر چاؤتو ہر چیز
مل جائے گی ، لیکن پیرمحرکو قوت بحال ہوتے ہی بیاضطراب پیدا ہوا کہ جلد سے جلد سید
صاحب کی خدمت میں بہنچ جائے۔ اسے ایک لیجے کے لئے بھی تھہر نادو بھر ہوگیا۔

آ خری منازل

چنانچہ دہ دوسرے روز چلنے کے لئے تیار ہوگیا۔ تشمیری نے ناشتے کیلئے پچھ روٹیاں پکوادی اور دور دزکا آٹادے دیا۔ ایک شخص پٹاور جار ہاتھا اور وہ راستے سے خوب واقف تھا، اس کا ساتھ ہوگیا۔ راستے میں ایک گہرا تالہ ملاجس پرلکڑی کا بل بنا ہوا تھا۔ منزل بہ منزل مظفر آباد پہنچا۔ اس سے پیشتر مولوی خیر الدین مظفر آباد سے ہٹ بچکے تھے اور سکھوں کی ممل داری پہلے کی طرح بحال ہو چکی تھی۔ (ا)

(۱) روایت کا بیدهسد پیرے نزدیکے نظر ٹانی کا مختاج ہے، اس لئے کہ مظفر آباد کی لڑائی اور بالا کوٹ کی جنگ میں فصل بہت کم ہے۔ آگر اس بیان کو درست تسلیم کیا جائے تو مانتا پڑھے گا کہ مولوی خیر الدین نے مظفر آباد سے نگل کرایک مہینے سے زیادہ مدت بالاکوٹ چنچنے میں گزاری۔ اس کا کوئی جموت موجود نہیں ہے۔ اس کے بعد پیر محمد نے متعدد بستیوں کا ذکر کیا ہے جن کے نام درج نہیں اور نہ بید معلوم ہے کہ وہ کس رائے ہے بالا کوٹ گیا الیکن اس نے تکلیفیں بہت اٹھا کیں ، دووقت معلوم ہے کہ وہ کس رائے گئیت سے کچاسا گ کھا کر گز ارا گیا۔ اپنی میرزئی ایک مخص کو دیکر بالا کوٹ کا رہبر بنایا اور شخ بلند بخت بالا کوٹ والے فشکر کے امیر شخے۔ پیر محمد بالا کوٹ سے پچوں جانا چاہتا تھا، لیکن شخ بلند بخت نے روک لیا کہ حضرت خود چندروز میں یہاں آنے والے ہیں۔

غورطلب تكتي

سیصرف ایک سفر کی کہائی ہے، خداجانے ان قاصدوں نے مسلسل سفروں میں کیا کیا تکلیفیں اٹھا میں ہیکن اپنا کام وہ اس انداز میں انجام دیتے رہے گویا بیا ایک اہم دین فرض تھا۔ سیدصاحب کا کمال ہی ہے کہ ہرکام کیلئے حدورجہ موزوں آ دمی انتخاب فرما لیتے تھے۔ پھران قاصدوں کی شانِ دیانت ملاحظ فرما ہے کہ جورتم سیدصاحب کے لئے دی جاتی تھی، اس میں سے ایک حبہ بھی اپنی ذات پر فرچ نہ کرتے تھے۔ ذاتی تکالیف کی انہوں نے بھی پرواہ نہ کی، بمیشہ بیام پیش نظر رہتا تھا کہ جوکام امام نے انہیں سونیا ہے، اسے احسن طریق پرجلداز جلد پوراکردیں۔ ان تمام برکات کامر چشمہ بیتھا کہ سیدصاحب کی پوری تحریک دینی کی اور جواصحاب بھی اس میں شامل ہوئے، خواہ وہ کسی سیدصاحب کی پوری تحریک کے دینوں اور جواصحاب بھی اس میں شامل ہوئے، خواہ وہ کسی کام پرنگائے گئے، اسے کاریش بچھ کر پوراکرتے تھے اور ہرتم کی دنیاوی مشقتیں اس لئے خوثی فردش برداشت کرتے تھے کہ بارگاہے باری تعالی سے اجروثو اب یا کمیں گے۔ دنیوی منافع کے خیال سے بھی ان کا دامنِ قلب بھی آلودہ نہ ہوا۔

چودهوال باب:

منظومات

مدحيات يمنظوم

سید صاحب اوران کی جماعت کیلئے مدحیہ تقمیں بھی خاصی بڑی مقدار میں لکھی سیکسی مناسب معلوم ہوتا ہے کہ ان میں سے جتنی نظمیں اب تک دستیاب ہوسکیں اُنہیں اُنہیں میاں درج کردیا جائے تا کہ وہ کیجا محفوظ ہوجا کیں۔آئندہ جونظمیں ملیں،انہیں شامل کرلینامشکل نہ ہوگا۔

یہ جی عرض کردینا جا ہے کہ ان میں سیدصاحب اور ان کی جماعت یا ان کے کام کی مدح وستائش اس طرح مختلط ہے کہ ایک کو دوسری سے الگ کرنے کی کوئی صورت نہیں ، لہذا میں آئییں ، کہنبہ درج کرر ہاہوں۔

بها نظم بها نظم

نقبی مسائل کی ایک منظوم قلمی کتاب کے ستاون اور اق ہاتھ آئے ، ان کے مصنف کے متعلق مندرجہ ذیل کے متعلق مندرجہ ذیل کے متعلق مندرجہ ذیل اشعار آیدارورج متھے:

دوم این است که برخ وتشویش ، بیت الله برده جمره خویش (۱)

(۱) مصنف نے بیسید صاحب کا دوسرااحسان بتایا۔نظر بہ طاہر پہلا احسان بیتایا ہوگا کہ انہوں نے ہدایت کی راہ پرلگایا۔ به انواع کرم بنواخت مارا ، بیض حج مشرف ساخت مارا از آنجا پی بہ توقیر وسکینہ 角 شدم باوے سوئے شہر مدینہ زبح شور تا پایان قندهار 🛞 شد از فیض کراماتش یرُ انوار تمای شرک و بدعت محو فرمود 🛞 رواج سنت از اول برافزود ازد باب غزا گشته کشاده 🏶 رداج کج ازوے اوفاده نهاد او مرچو در راهِ شهادت 🏶 نهاده سر به پایخ او سعادت شهید و غازی و نیخ مبتد 🛞 امام و سید السادات احمد شریعت را رسید ازوے رواج 🙈 طریقت یافت بر سرطرفہ تاج یکست از ملک مندستان رشادش الله سواد شرک و بدعت از سوادش به ملك سكه چوشيخ او علم شد الله سر بر سرش از وستش قلم شد به دارالفنرب وی زدسکه زانسال 🛞 که رفت از بند شورش تاخراسال چو از ذوق شهادت تشنه لب بود چو جامش یافت شد خود رفت و آسود

دوسرى نظم

سیدعبدالرزاق حنی سینی متخلف به کلاتی رائے بریلی کے باشندے تھے اور ٹو نک میں سکونت اختیار کرلی تھی۔ انہوں نے صمصام الاسلام یا مجاہدات الاخیار کے نام سے فتوح الثام کولقم کیا تھا۔ اس میں حمد، نعت، مناقب اصحاب واہل بیت ومناقب سید عبدالقاور جیلانی کے بعد' حضرت مش العارفین امام الزاہدین، مجدد ما قا ثالث وعشر سیدناوم شدنامولانا جناب سیداحمد غازی وشہید کے مناقب یوں لکھتے ہیں:

قلم کو بیں میرے بزار افتار ، کہ لکھتا ہے وصف شد نامدار

شہ اصفیاء سید احمد بنام ﴿ سِبر ہدایت کے ماہ تمام وہ سے نور چیٹم امام رسل ﴿ وہ سے عاشق خالق جزوکل وہ ساقی کہام شراب طہور ﴿ فرشتہ بریرت سے صورت میں نور عیاں شان سے ان کے تحی شان حق میں نور عیاں شان سے ان کے تحی شان حق ہوئے ان کے قربان حق نہیں ہند میں کوئی شہر و دیار ﴿ کَتُلْفُ نَہُ ہوں ان کے وال بیٹار وہ ای سے جس پر نظر ڈال دی ﴿ وہیں ہوگیا بس وہ کال ول وہ ای سے ایسے کہ عالم بڑے ﴿ ہوئے مستقیق اور خادم رہے وہ سے اہل حق اور فنا فی الرسول ﴿ گریزاں سے اللی کے خواہاں سے بس دیتھی خادموں کو کچھان کے ہوں ﴿ رضائے اللی کے خواہاں سے بس خوش مول میں وہ ہوگے ﴿ بین دونوں جہاں اکے قدموں سے خوش سے وہ جام شہادت چڑھا ﴿ ہوئے واصلِ حضرتِ کبریا ہیں وہ ہوگے ﴿ بین دونوں جہاں اکے قدموں سے خوش ہو ان پر خدا کا کرم ہیں ہیں وہ سے ہادی و رہنمائے ایم (۱)

مومن کے فارسی قصیدے

تحکیم موم^ت نے میر ہے علم کے مطابق سیدصاحب کی مدح میں دوتصیدے کہے۔ پہلاقصیدہ انسٹی شعر کا تھا، دوسراایک سودس کا۔ دونوں عرقی کے قصیدوں پر کہے تھے۔ان میں سے فتخب اشعار ذیل میں درج ہیں۔ پہلاقصیدہ:

از فیض عام کست؟ ندانم که این زمان ای زرمی کند نثار به بر کشور آفآب اے خاکیاں! نوید که خرم زماندایست ای نیکوست چرخ باہمہ نیکوتر آفآب مردست بسته داد کشاد گره فلک ، برفرق بے کلاه نهاد افسر آفآب

⁽١) "صعدام الاسلام" مطبوع اعظم المطابع جون يورص:٧٧-

خوام اللفي كند ايام رفة را ، نابيد از طرب به زروگوبر آفآب برهر ستاره سوخته سوزودل فلك ﴿ برغم كشيره راكشد اندربر آفات ادکارگر و کار سرانجام کن فلک 🐞 او حکمرال و حکم بجا آور آفآب سبط ني امام زمال زاحساب او ، بردوئ خاك ريخت زرافرآ فآب او دور چرخ و محم خداوند آسال ، او مابتاب وسنت پیغیر آفاب برمنبرے کہ خطبہ بنامش ادا کنند 🏶 سوز دبیداغ حسرت آل منبرآ فاب زنار كبكشال مكند مند وے فلك 🍪 صبيائے نور افكند از ساخر آفتاب كم يايد خادمان تراخادم آسال ﴿ كُم رتبه عاكران ترا عاكر آفاب لككركشى چناتكم به فوج تومى رود ﴿ مَرْجُ بِينَ بِينَ وَبِي لَكُم آفاب تا در مجابدان بشمارند بر سحر الله برصمت ازشعاع كعد جادرآ فآب تانطبهٔ مریح نو خواندیم و او را 🛞 آورد ماه سیم ثار و زر آقاب دوسرے تصیدے میں آسان کے ظلم وجور بیان کرتے ہوئے کہتے ہیں:

زجال گزشتم واز جان نے توانم رفت ، بنی جذبہ کر داورم کند الداد پہر مرتبہ ممدوح قد سیال احمد الله المبر النکر اسلام، المام پاک نهاد بخ شار عطا یش قواعد دگراست ، رقم کنند بخ صد بزار صفر احاد نظاره تو بر تیرگی زول گویا ، سرشت تست به نور بدایت وارشاد بیام دبلی ویرال بدهزت این است ، کداے زمقدم تو برخرابه نور سواد بیام دبلی ویرال بدهزت این است ، کداے زمقدم تو برخرابه نور سواد بیاو کو و الکافورون چواه تمام ، تمام ساخته کارے کہ کردہ بنیاد (۱)

⁽۱) مومن کا فاری کلام مرف ایک مرتبه چهپاتها اب بهت کمیاب ہے۔ صدیق تحرم انتیاز علی خال صاحب عرقی ناظم کتب خاندرام پورنے میری درخواست پرید دونول تعیدے اور بعض دوسرے قطعات نقل کرائے بھیج دیے، جس کیلئے وود کی شکر ہیکے ستحق ہیں۔

مومن کےاردواشعار

تھیم مومن نے اردو میں بھی بہت سے شعر سید صاحب کی مدح میں لکھے ہیں۔

مثلًا:

فدایا گشکر اسلام تک پنجا کہ آپنجا کی ایوں پردم بنا ہے جوش خوں شوتی شہادت کا نہ کربیگانہ مہرامام افتدا سنت کی کدانکار آشنائے کفر ہے انکی امامت کا امیر لشکر اسلام کا محکوم ہوں لینی کی ارادہ ہے مرافوج ملائک پرحکومت کا زمانہ مہدی موعود کا پایا اگر موشن کی توسب ہے پہلے تو کہتے سلام پاک حضرت کا

شوق برم احمدود وق شہادت ہے مجھے ، جامدمون کے پینج اس مبدی دورال تلک

ايك قطعه

سيدصاحب كے متعلق ايك قطعه درج ہے:

گلاب ناب سے دھوتا ہوں مغزاندیشہ کو کر مدحت سبط تشیم کوٹر ہے وہ کون اہام، امام حامیانِ احمد کا کہ محض مقدی سنت پیمبر ہے زمیں کومبر فلک سے نہ کیوں ہو دوی نور کا کہ اس کارایت اقبال سامیہ سشر ہے عروج سنگ درقصر جاہ کوجس کے کا ہزار طعن حضیض اوج لا مکال پر ہے زبکہ کامنہیں ہے اسے سوائے جہاد کا جوکوئی اس سے مقابل ہے سووہ کافر ہے ذبکہ کامنہیں ہے اسے سوائے جہاد کا جوکوئی اس سے مقابل ہے سووہ کافر ہے

شرف ہے مہر کو اسکے زمانے ہے دائم کے زبسکدروزوشب انساف ہے برابر ہے وہ بادشاہ ملاکک سیاہ کو کب دیں کے کہ نورشس وقمر جس کے گردافشر ہے وہ شعلہ خصلت وحساد سوز و کفر گداز کے کہ جس کا نقش قدم مہرروز محشر ہے وہ برق نزکن وباب شرک اہل ضلال کے کہ شعلہ خوشتہ حاصل تو داندا فگر ہے وہ تیم مان فلک تو س ونجوم احثم کے گرترک چرخ غلام اسکا مہر چا کر ہے وہ تیم مان فلک تو س ونجوم احثم کے مرترک چرخ غلام اسکا مہر چا کر ہے وہ شاہِ مملکت ایمال کہ جس کا سال خروج امام برحق مہدی نشاں علی فر ہے امام برحق مہدی نشاں علی فر ہے امام برحق مہدی نشاں علی فر ہے

متتنوی جہادیہ

آپ مولانا خرم علی بلہوری کا ایک جہادیہ سیرت سیداحمہ شہید میں پڑھ چکے ہیں۔ حکیم مومن خال نے بھی جہاد پرایک مثنوی کھی تھی جوذیل میں درج ہے:

بی اب تو کھے آھیا ہے خیال کے کہ گردن کشوں کو کروں پائمال بیت کوشش و جاں ناری کروں کے کہ شرع پیمر کو جاری کروں وکھادوں بی انجام الحاد کا کے نہ چھوڑوں کمیں نام الحاد کا کے نہ کی کر ہوں اس کام میں نافکیب کے ظہور امام زماں ہے قریب وہ خطر طریق رسول خدا کے کہ سایے ہے جس کے فیل مہرومہ زب سیداحمد قبول خدا کے سر امتحان رسول خدا کو گوہری کا نہ پوچھو شرف کے علی و حسین و جسن کا خلف رہے حشر تک زندہ وہ نیک ذات کے ہے کفار کی موت اس کی حیات ضدا نے بہر تنایا اسے کے سر قبل کفار آیا اسے خدا نے اس کی حیات خدا نے بہر تنایا اسے بی سر قبل کفار آیا اسے خدا نے اس کی حیات نوا نے خدا نے بہر بنایا اسے کی سر قبل کفار آیا اسے خدا نے بہر قبل کھار آیا اسے بیا بہر تو بہر تھار کے بہر تو بہر تو بہر تو بہر تو بہر تو بہر تو بہر تھار کے بہر تو بہر تو بہر تو بہر تو بہر تو بہر تو بہر تیا بہر تو بہر

دم اس دست وباز و پہ دیوے اجل کے لیب تیج کے بوتے لیوے اجل اجل میں ہمیشہ دواں ہو ظفر رکاب اس کی کیڑے رواں ہو ظفر

کیوں کیا لوائے امامت کا اوج کے کہ بین فوٹ وابدال سب اہل فوج
خردار ہوجاؤ اے اہل ول کے کہ رحمت برتی ہے اب متصل
ہوا مجتمع لفکر اسلام کا کا آگر ہوسکے وقت ہے کام کا
ضرور ایسے مجمع میں ہونا شریک کا کہ کہ خوش تم سے ہو وحدہ کاشریک
جو داخل سپاہِ خدا میں ہوا کی فدا جی سے راہِ خدا میں ہوا
صبیب صبیب خداوند ہے کے خداوند اس سے رضامند ہے
میب صبیب خداوند کے کے خال ناری کرو
فدا کے لئے جاں ناری کرو

سمجھ لو جو پکھ بھی ہے تم کو تمیز ﴿ نہ جان آفریں ہے کردن جان عزیز کسی کو نہیں ہے اجل کی خبر ﴿ کَدَ آجائے بیٹے ہوئے اپنے گھر تو مقدور کس کا کہ آنے نہ دے ﴿ تن خشہ ہے جان کو جانے نہ دے تو بہتر یہی ہے کہ جان کام آئے ﴿ پُنِ مرگ تربت مِن آرام پائے قیامت کو اٹھو تو تم بامراد لے الحمد محو اور دل شاد شاد

عجب وقت ہے یہ جو ہمت کرو گا حیات ابد ہے جو اس دم مرو جو ہے عمر باتی تو غازی ہوتم کا سزاوار گردن فرازی ہو تم یہ ملک جہاں ہے تہارے لیے گا تعیم جناں ہے تہارے لیے شراکت جہال کی ہے طالع کا اوج ، کہ ایبا امام اور الی ہے فوج سعادت ہے جو جانفشانی کرے سعادت ہوں کامرانی کرے یہاں اور وہاں کامرانی کرے

اللی مجھے بھی شہادت نصیب کے یہ افضل سے افضل عبادت نصیب اللی اگرچہ ہوں میں تیرہ کار کے پہترے کرم کا ہوں امیددار او اپنی عنایت سے توفیق دے کے عروبی شہید اور صدیق دے کرم کرنکال اب یہاں سے مجھے کے طادے امام زماں سے مجھے یہ دعوت ہو مقبول درگاہ میں کے مری جاں فدا ہو تری راہ میں میں مرور ہوں اس فوج کے ساتھ محشور ہوں اس فوج کے ساتھ محشور ہوں

فارسى كى دونظميس

میں نے مولانا ابوالکلام آزاد کے پاس ایک قلمی نسخہ دیکھا تھا،اس کا نام تھا:
ملھماتِ احمد ید فی الطریق المحمدید منتخباز "صراطِ مستقیم مع فوائد
وزوانسد" ازمولوی البی بخش کا ندھلوی۔اس میں سیدصاحب کے متعلق دوفاری تظمیس
محی تعیمی جوذیل میں درج ہیں۔ان میں نشاط تخلص استعال کیا گیا ہے۔معلوم ہے کہ فقی صاحب نشاط تخلص فر ماتے تھے جیسا کہ" ابتذکرہ "میں ان کے منتخب اردواور فاری اشعار سے واضح ہے۔ (1)

دوست بر کخطه بر ماشد یخ مخواری که ه از چدره روز فزونست دل افگاری ما بست نزد یک تراز جال به من خته حبیب ه از کجا خاست ندائم تیش وزاری کها

⁽۱) التذكرة مشمولة شرح قصيدة بانت سعادازملتي الي بخشر

یار اندربغل وصرت دیدار جال کی آه زیں وصل کدافزودطلب گاری ما یارب احوال دل خته ندانم چه شود کی میر احمد نه رسد گر به طلب گاری کا اے نشاط ار چه ضعفی طلب ہمت کن غیر ازیں سید برحق که کند یاری ما

جناب سید احمد که باشد فیض ربانی به بسان مهر انوری کند جر ذره نورانی محددالف این شد جناب احمد اول (۱) به مجددالف این جناب احمد اول (۱) به مجددالف این مناب احمد اول (۱) به محددالف این رضائے تولیش رافانی به تخلق احمدی کال به نور ایزدی واصل به محدون مدرضاء تق رضائے تولیش رافانی طریقت کاروبار او شریعت پیش کاراو به حقیقت بست یاراو، به یمن لطف بسحانی نیار و خطره در خاطر بجز تا نیزدین حق بی نیاید در خیال او مگر مشروع حقانی بی اے فورشدراودی به بی بی می در این محد سیدن را به بی بی در این محدد سیدن را به بید در محدت نبود که چول من به بروبال بینم بفر ماجمت ارزانی بینم بفر ماجمت ارزانی بینم بفر ماجمت ارزانی بینم بود که چول من به بروباله به بال زور بازویت رسد تا قرب بردانی

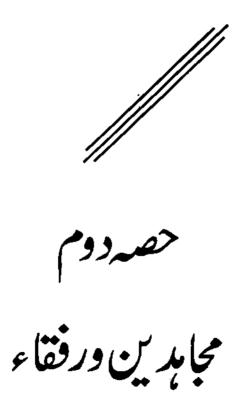
سب سے آخر میں مولوی نجف علی صاحب جھری کے چنداشعار فیش کرتا ہوں جو موصوف نے ایک کتاب میں لکھ کرنواب میں لکھ کتھ ۔ یہ کتاب دساتیری فاری میں لکھ کرنواب وزیرالدولہ کی خدمت میں پیش کی گئتی ۔ مجھے اس کا کیک تلمی نسخدا پناغزیز دوست فلیل الرحمٰن صاحب واودی کے باس دیکھنے کا موقع ملا، جو غالبًا اصل کتاب کا واحد نسخہ تھا۔ اس میں سیدصاحب کے متعلق مرقوم ہے۔

⁽۱) مراد ہے شیخ احمد سر ہندی۔

⁽٢) مرادبسيداحد سے تخصیص كى دجديمعلوم بوتى بكدونون بزرگ طريقينقشدىد كمشبورم شديق-

تابش گوہر خدا دانی کی ربیر یتمسایی یزدانی سرور آگہان راز نہاں کی پیٹوائے ستودگان جہال سید احمد گذار پاک احمد مخار مصطفیٰ را ستودہ فرزندے کی مرتفعٰی را گزیدہ دل بندے دل نہ بتہ دریں نشمن فاک کی پیٹوائے رسیدگان خدا کی پیٹوائے رسیدگان خدا کی پیٹوائے رسیدگان خدا مرمہ جھم دل نہ فاکش باد

برصغير مندمين تحريك احيائ وين اورسر فروشا نهجد وجهد كي كمل سر كذشت



پېلاباب:

مولا ناعبدالحي

عبدالحی بن ہبة اللہ بن نور اللہ، وطن بو هانہ ضلع مظفر گر۔ شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی ہے آپ کے دوگونہ رشتے کا ہمیں علم ہے۔ اول یہ کیمولا ناعبدالحیٰ کی پھوپھی شاہ صاحب کی اہلیہ تھیں، دوسر ہے شاہ صاحب کی ایک صاحبز ادی کی شادی مولا ناعبدالحیٰ سے ہوئی۔ اغلب ہے پھلت والوں کی طرح مولا ناکے خاندان کی رشتہ داریاں بھی پہلے ہی سے شاہ صاحب کی صاحبز اوی سے مولا ناکے کوئی اولا دنہ ہوئی تعلیم دہلی ہی میں خود شاہ صاحب کی صاحبز اوی سے مولا ناکے کوئی اولا دنہ ہوئی تعلیم دہلی ہی میں خود شاہ صاحب اور ان کے بھائیوں سے پائی۔ چوں کہ بہت قربی رشتہ دار تھے، اس لئے شاہ عبدالعزیز بہت شفقت فرماتے تھے اور چوں کہ بہت قربی رشتہ دار تھے، اس لئے شاہ عبدالعزیز بہت شفقت فرماتے تھے اور شقہ مولا ناعبدالحیٰ اپنی شفات کے ستحق عبدالعزیز کے شاہ صدیقی تھے 'ابجد العلوم' میں بہ حوالہ '' الیا نع الجنی'' مرقوم ہے کہ شاہ عبدالعزیز کے شاگردوں میں سے فقہ خفی مولا ناسے بہترکوئی نہ جانتا تھا اور درسیات میں عبدالعزیز کے شاگردوں میں سے فقہ خفی مولا ناسے بہترکوئی نہ جانتا تھا اور درسیات میں بھی ان سے زیادہ ماہرکوئی نہ تھا۔ (ا)

ملازمت

انگریزوں کوابتدائے حکومت میں اس بات کی بڑی خواہش وجبتو تھی کہ خاندانی اور ذی وجاہت علاءا فتاء وصدارت کے مناصب قبول کرلیں، تا کہ ثنالی ہند میں انگریزی حکومت عوام کے نزدیک مقبول ہو سکے۔ چنانچہ میرٹھ میں مفتی عدالت کا عہدہ خالی ہوا تو

⁽۱)''ابجدالعلوم' من: ۹۱۵_

کوشش کی گئی که شاہ عبدالعزیز مولانا عبدالحیٰ کو بیے عہدہ قبول کرنے کی اجازت دے دیں اور انہوں نے اجازت دیدی۔ یوں کچھ مدت تک مولانا عبدالحیٰ میر ٹھو میں مفتیٰ عدالت بھی رہے۔

ببعت

سیدصاحب نواب امیر خال کا ساتھ چھوڑ کر دہلی آئے اور جہاد فی سبیل اللہ کے لئے ایک مستقل جاعت کی تاسیس کا انتظام کرنے لگے تو مولا ناعبدالحی کوسیدصاحب سے کب فیض کا موقع ملا، جس کی کیفیت 'سیرت احمد شہید' میں پیش کی جا چکی ہے۔ اس کا خلاصہ یہ ہے کہ مولا ناعبدالحی نے شاہ عبدالعزیز کے مشورے کے مطابق سیدصاحب سے نماز حضور قلب کے معلق سوال کیا۔ سیدصاحب نے فرمایا کہ مولا نا! بات چیت سے تو می مقصد حاصل فلب کے معلق سوال کیا۔ سیدصاحب نے فرمایا کہ مولا نا! بات چیت سے تو می مقصد حاصل نہیں ہوسکتا۔ اٹھے اور میرے پیچھے دور کعت نماز پڑھے۔ اس کے بعد مولا نانے بیعت کر لی اور شاہ اسلیل بھی آئیں کی ترغیب سے سیدصاحب کے مرید ہوئے۔ (۱)

نواب وزیرالدولہ نے ''وصایا'' میں اس واقعہ کاذکریوں کیا ہے کہ مولانا نے صحابہ کرام گی نماز کا اشتیاق ظاہر کیا تھا۔ سیدصاحب نے ترکیب بیان فرمادی۔ مولانا نے نماز عشاء کے بعد اس ترکیب کے مطابق دور کعت نفل کی نیت باندھی۔ سیدصاحب مجرے کے دروازے پر بیٹھ گئے۔ مولانا نے پوری رات انہیں دور کعتوں میں گزار دی۔ بس اس وقت سے سیدصاحب کے ساتھ الی عقیدت اور راہ ایمان پر ایسی استقامت نصیب ہوئی کہ اسے لفظوں میں بیان نہیں کیا جاسکتا۔ (۲)

مولا نافر مایا کرتے تھے کہ خدانے مجھے ایسے شیخ کی خدمت میں پہنچایا، گویا حضرت خضر کی زیارت نصیب ہوئی، لیکن مجھے ان سے اس کے سواکوئی غرض نہیں کہ اپنے لئے دعا

⁽۱) سيداحمشهيدجلداول ص:١١٦-١١٤ (٢) "وصايا" حصد دم ص: ١٠٠

كراؤل _(1)

رفافت

مولانا جب سے مرید ہوئے سیدصا حب کی رفاقت نہ چھوڑی۔ سفر وحضر میں اکثر ساتھ رہے ہسنر جج میں بھی ساتھ تھے اور سیدصا حب کے جہاز میں ججاز بین کے سفر میں کی سند کی اور ان کی سفر میں کی سند کی اور ان کی سفر میں کی میں دوستان لائے۔ ردِ بدعات، احیائے سنن اور ترغیب جہاد میں مسلسل وعظ فر ماتے رہے۔ وعظ کا آغاز مدرسے میں ہواتھا۔ جب لوگ برکثرت منامل ہونے لگے تو شاہی مسجد میں اجتماع ہونے لگا۔ مولانا رشید الدین مرحوم سے بدعات و محد ثان کے متعلق آپ کا اور شاہ آسلیل کا ایک مناظرہ بھی ہوا تھا، جس کی روکداد آپ نے مرتب فرمادی تھی۔ (۲)

بیان کیا جاتا ہے کہ معترضوں کی طرف سے مولانا رشید الدین سترہ سوال مرتب کرکے لائے تھے، وہ پیش ہوئے تو مولانا عبدالحی نے فرمایا:

"ملائے محض میستم، سیابی گری ہم دانم ۔ اگر باساز و تفنگ گراں بارقطع کے منزل راہ پیادہ پانمودہ باشم وتعب آں دامن گیرحال من باشد، درآں وقت نیز اگر سوالات پیش خواہید نمود، بہتا ئیدتعالی جواب باصواب خواہیدیافت۔"

ترجمه: میں زامانہیں، سپاہ گری بھی جانتا ہوں۔ اگر بھاری بندوق اور گولی بارود لے کر ایک منزل بیادہ طے کرے آؤل اور تکان کے باعث چورجاؤں۔ اس وقت بھی جوسوالات پیش کرو گے، خدا کی مدد سے ان کا شافی جواب پاؤگے۔

^{(1) &}quot;وصايا" حصد دوم ص: ٥٠١ ـ

⁽r) تراجم عليائے اہل حدیث ص: ۱۲۷۔

ہجرت

مولانا،سیدصاحب کے ساتھ جہاد کیلئے نکلے سے نواب وزیرالدولہ فرہاتے ہیں کہ نو نک پہنچنے کے بعد مولانا کے موصوف، عاجی احمد اور مولانا عبد القدوس کومریدوں کی تعلیم و تربیت کے لئے مقرر فرمادیا۔ میراخیال ہے کہ انہیں بعض انظامات کی تکیل کے لئے روک دیا تھا۔ مولانا کوسیدصاحب سے مفارقت گوارا نہتی ہیں کئی بنا پر خمبر گئے ، تاہم ہروقت انظارتھا کہ سیدصاحب کب بلاتے ہیں۔ پانچ مہینے گذر جانے کے بعد سید صاحب کی طرف سے نامہ طلب صادر ہوا۔ مولانا نے فورا سفر کا سامان تیار کیا اور روانہ ہوگئے۔ اگر چہ پرانی بیاریوں کے باعث بہت کمزور ہوگئے تھے، لیکن سیدصاحب سے ملاقات کے شوق میں سب بچھ بھلادیا۔ راستہ جلتے چلتے رفیقوں سے الگہ ہوجاتے۔ سید ما حسب کا خط نکال کر پڑھتے تو بے اختیار دفت طاری ہوجاتی۔ پھر شوق گرم جوثی سے تیز صاحب کا خط نکال کر پڑھتے تو بے اختیار دفت طاری ہوجاتی۔ پھر شوق گرم جوثی سے تیز جونفی سامنے آتا کہتے ، مجھ سیدصاحب نے طلب فرمایا ہے۔ غرض اس حال میں مرقوم تھا:

"جھ پروئی ہی حالت طاری ہوئی جس کا ذکر حدیث شریف میں آیا ہے کہ قیامت کے وقت موکن کو جنت معلی میں فوطردیں عے اوراس نے زندگی میں جومعیبتیں اور مشقتیں برداشت کیں ان کا رنج وملال جان وتن سے دھل جائے گا۔(۱) ·

سفركاراسته

مولانا تھائیسر، مالیر کوٹلہ، ممروٹ اور بہاول پور ہوتے ہوئے سرحد پہنچے تھے۔

^{(1) &#}x27;'وصایا''حصد دوم ص: ۲۰۰۷– ۱۰ ار

مافت کے طول اور مشقتوں کو دنظر رکھیں تو شان عزیمت کا اندازہ ہوجاتا ہے۔ اس کی سرمری کیفیت ہے ہے کہ نواح بہاول پورے شکار پورتک کا پوراعلاقہ زیر آ ب تھا۔ دی روز کی مسافت چیتیں روز میں طے کر کے بہاول پورے شکار پور پینچے۔ پھر بھاگ، حاجی مظھری ہوتے ہوئے براہ بولان قدھار گئے۔ بیاری کے باعث وہاں تقریباً ڈیڑھ مہینہ کھرے رہے۔ قدھار سے مرشوال کو کابل، ۱۸ رکو جلال آباد پینچے۔ پھر پشاور کا راستہ چیوڑ کرمہنداور باجوڑ کے مواضع ہے ہوتے ہوئے چار باغ سوات میں سیدصاحب سے ملاتی ہوئے۔ شد یدسر دی اور برف باری کا موسم کھی (بلوچستان) میں گزارا۔ آئیس کے سفر جرت قرار سفر جرت قرار مردوم تھائیس کے نظمی سے سیدصاحب کا سفر ہجرت قرار دے لیا۔ حالاں کہ سیدصاحب دوسرے راستے سے گئے تھے۔

یداوائل ذی الحجہ۱۲۳۲ھ(اواخرمکی ۱۸۲۷ء) کا واقعہ ہے۔سیدصاحب کے ساتھ پنجنار گئے۔ جب انہوں نے درانی سرداروں کی مخالفانہ تدبیروں کوختم کرنے کی غرض سے خمر (سوات) میں قیام ضروری سمجھا تو مولانا بھی ساتھ آئے۔

وفات

بہت بوڑھے ہو چکے تھے، پھر بواسر کا شدید دورہ ہوا" وقائع" کا بیان ہے کہ کوئی
دوامفیدنہ پڑتی تھی اور بیاری بڑھتی جاتی تھی، یہاں تک کہمولا ناپرنزع کی حالت طاری ہوگئی:

''کی وقت آپ ہے ہوش ہوجاتے تھے اور کسی وقت ہوش میں آتے
تھے۔ آپ کا بیحال من کر حضرت علیہ الرحمۃ (سیدصاحب) تشریف لائے۔
جب مولا ناصاحب کو ہوش آیا، حضرت کو دیکھا اور پہچا تا۔ حضرت نے بو چھا کہ
اس وقت کیا حال ہے؟ کہا نہایت تکلیف ہے۔ آپ میرے واسطے دعا کریں
اور میرے سینے پراپنے قدم دھریں کہاس کی برکت سے اللہ تعالی اس مصیبت
اور میرے سینے پراپنے قدم دھریں کہاس کی برکت سے اللہ تعالی اس مصیبت
سے جھے کو نجات دے۔ آپ (سیدصاحب) نے فرمایا: مولا ناصاحب! آپ

کے سینے میں علم قرآن وحدیث کا تخبیذہ، یداس قابل نہیں کہ میں اس پر قدم رکھوں۔ پھرآپ نے بسم اللہ کر کے اپنا دست مبارک رکھا۔ مولانا صاحب کو قدر نے تسکین ہوئی اور کی بار' اللہ رفیق الاعلیٰ ، اللہ رفیق الاعلیٰ 'اپنی زبان سے کہااور یہی کہتے کہتے انتقال فر مایا۔ (1)

شعبان ۱۲۳۳ ہے گا تھویں تاریخ تھی (۲۳ رفر دری ۱۸۲۸ء) اور انتقال رات کے وقت ہوا تھا۔ اگلے دن صح کے وقت شاہ اسلمیل ، مولوی محمد سن رام پوری ، قاضی علاؤالدین بھردی ، میاں جی نظام الدین چشتی اور میاں جی محی الدین خسل میت میں مصروف ہوگئے۔ سیدصاحب مولانا کے فضائل ومحاس بیان کرتے رہے۔ آپ نے فرمایا۔ مولانا دین کے ایک دکن تھاور بڑی برکت والے خص تھے۔ اللہ تعالی نے ان کواٹھالیا، جومرضی ملک کی۔ آٹھوں سے برابر آنو بہدرہ تھے۔ جنازہ اٹھانے والوں میں خود سیدصاحب ملک کی۔ آٹھوں سے برابر آنو بہدرہ تھے۔ جنازہ اٹھانے والوں میں خود سیدصاحب ملک کی۔ آٹھوں سے برابر آنو بہدرہ تھے۔ جنازہ اٹھانے مال فیمر کے علاوہ تقریباً سات سو بہدین شریک تھے۔ آپ ہی نے نمازِ جنازہ پڑھائی ، جس میں اہل خمر کے علاوہ تقریباً سات سو مجاہدین شریک تھے۔ خمر کے جنوب مشرق میں ایک تیر کے فاصلے پر قبرستان تھا، جہاں لشکر اسلام کے اس مائی تازیخ الاسلام کوؤں کیا گیا۔ آخ کل بیمزار ''دئی بابا' کا مزار کہلاتا ہے۔

تربيت كاعمده نمونه

مولاناعبدالحی سیدصاحب کی دین تربیت کے کمال کا ایک نہایت عمدہ نمونہ تھے۔علم وفضل، بردھاہے، ضعف وناتو انی، وطن، اہل وعیال اور عزیزوں سے بالکل بے پروا ہوکر رضائے باری تعالی کے ابتغاء میں سرحد پہنچ گئے اور اسی حالت میں مالک حقیق سے جا سطے۔ رضائے باری تعالی کا بیجذ بسیدصاحب ہی کی تربیت وصحبت کی بدولت بیدار ہوا۔ سطے۔ رضائے وفات سے پیشتر ایک وصیت نامہ لکھوادیا تھا، جس میں تمام چزیں اپنی مولانانے وفات سے پیشتر ایک وصیت نامہ لکھوادیا تھا، جس میں تمام چزیں اپنی

⁽١) "وقا كنع"م: ٥٢٥ _

دوسری اہلیہ (والد ہُ مولا ناعبدالقیوم) سے حوالے کردی تھیں۔ مولا ناعبدالقیوم کا سن اس زمانے میں تیرہ چودہ سال ہوگا۔ وہ سیدصا حب کے ساتھ سرحد پہنچ گئے تھے۔ مولانا کی وفات کے بعد سیدصا حب عبدالقیوم کواپنے ساتھ بٹھا کر کھانا کھلاتے۔ پھراس خیال سے انہیں ہندوستان بھیج دیا کہ ان کی والدہ کومولانا کے انتقال کی خبر ملے گی تو ان کے پاس غم غلط کرنے کا بھی کوئی ذریعہ ہونا جا ہے۔ عبدالقیوم کے دوخیقی ماموں شیخ جلال الدین اور شیخ صلاح الدین ساتھ ہندوستان آئے۔

ابل وعيال

اوبربیان کیا جاچکاہے کہ شاہ عبدالعزیز کی صاحبز ادی سے مولانا کی کوئی اولا دنہ تھی۔ غالباً اس اہلیہ کی وفات پر مولانا نے اپنی چچیری بہن سے شادی کی جن سے عبدالقیوم پیدا ہوئے۔(۱) جب سیدصاحب نے نکاح بیوگان کی سنت تازہ کی تو شاہ آسکیل نے محض بغرض احیاءِ سنت اپنی بیوہ بمشیر کی شادی مولانا عبدالحکی ہی سے کردی تھی، گویا انقال کے وقت مولانا نے دو بیوا کیس چھوڑیں۔ سیدا حمظی رائے بریلوی نے نواب وزیرالدولہ کومولانا کے انقال کی اطلاع دیتے ہوئے لکھاتھا کہ دونوں بیواؤں کے لئے الداد کا بندوبست کردیا جائے۔

بعض مبالغهآ ميزباتين

آخر میں دوباتوں کا ذکر ضروری ہے بعض اصحاب نے لکھا ہے کہ سید صاحب نے دوسرا نکاح کیا تو ایک مرتبہ خلاف معمول صبح کی جماعت میں پچھتا خیر ہوگئ۔ دوسرے دن پھر سید صاحب سے تکبیر اولی فوت ہوگئی۔مولا ناعبدائحی نے سلام پھیرنے کے بعد سید صاحب سے مخاطب ہوکر کہا کہ عبادت الہی ہوگی یا شادی کی عشرت؟ سید صاحب

⁽۱) نیض روح قدی کابیان بھی یمی ہے۔

نے اپنی خلطی کا اعتراف کرئیا۔ایک اور واقعہ بیان کیا جاتا ہے کہ سیدصاحب نے فرمایا: مجھ سے کوئی بات خلاف سنت و کیھئے تو متنبہ کرد بجئے۔مولانا عبدالحی نے کہا: جب آپ سے کوئی مخالف سنت فعل دیکھوں گاتو آپ کے ساتھ ہوں گائی کہاں؟

میرے زدیک بید دونوں باتیں مبالغہ آمیزی پر بہنی ہیں۔ سیدصاحب سے غلطی کا صدور غیر ممکن نہ تھا، لیکن ایسی کوئی متند روایت نہیں ملتی کہ آپ عشرت ہیں بہتلا ہوکر واجبات ہیں تسائل کے مرتکب ہوئے ہوں اور مولا تا عبد انحیٰ کا تعلق سیدصاحب سے ایسانہ تھا کہ' عبادت اللی ہوگی یا شادی کی عشرت' جیسا جملہ فریاتے۔ اس میں تبلیغ کی ہمی کوئی خوبی نظر نہیں آتی عبادت اللی میں سیدصاحب غیر معمولی مشقتیں برداشت کرتے رہے۔ نواب وزیر الدولہ کے بیان کے مطابق انہوں نے مدت تک عشاء کے دضو سے فجر کی نماز پڑھی۔ وہ اپنی جماعت میں عزیمت کا ایک عجیب وغریب بیکر متصاور جو کچھ نہ کورہ بالا واقعے میں ان سے منسوب کیا گیا ہے، اے کسی درج میں بھی قابل قبول نہیں سمجھا جا سکتا۔ دبی دوسری بات تو وہ مولا تا عبد الحیٰ کے لئے سراسر نازیبا ہے۔

ایک شخص کہتا ہے کہ جمعے خلاف سنت فعل سرز دہوتو آگاہ کر دیجئے۔اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ ہر حال میں اتباع سنت کا خواہاں ہے۔ ہوسکتا ہے، نادانستہ اس سے کوئی خطا سرز دہوجائے۔اس حالت میں ہر عالم سنت کا فرض یہی ہے کہ اسے آگاہ کر دے۔اس کا ساتھ چھوڑ جانے کی دھمکی کون می دین پروری ہے؟ حقیقت یہ ہے کہ لوگ اشخاص کے محاسن بیان کرتے وقت جوش عقیدت میں بعض بنیادی با تیں نظر انداز کرجاتے ہیں۔ مولا ناعبدائحی یقینا بہت بڑے بزرگ تھے اور ان کی زندگی کے روشن شواہد ہمارے سامنے موجود ہیں، کین مبالغہ آمیز واقعات ان کی عظمت میں قطعاً کوئی اضافہ نہیں کرتے۔

صراط متقيم كاعربي ترجمه

مولا نا عبدالحيُ' 'صراطِ منتقيم'' كي ترتيب مين بھي شريك رہے۔وہ اور شاہ اسلعيل

سید صاحب کی زبان سے جو حقائق سنتے سے ، انہیں قلمبند کر کے آپ کو سنادیے سے۔ روا یتوں کتاب کا ایک حصہ شاہ آسمعیل کا مرتبہ ہے اور باقی مولا ناعبد الحق کا لکھا ہوا ہے۔ روا یتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ بعض اوقات ان ہزرگوں کو اپنی تحریرات میں پانچ پانچ مرتبہ ترمیم کر فی پڑی۔ اس کے بعد سید صاحب نے اس پر اظہار الحمینان فرمایا۔ قیام حرمین کے زمانے میں مولا ناعبد الحق نے ''صراطِ متنقیم'' کا ترجہ عربی میں کردیا تھا تا کہ عربی دال اصحاب بھی اس سے فاکدہ اٹھا سیس ۔ بعض اصحاب نے لکھا ہے کہ مولا نا موصوف نے نکاح بیوگان پر بھی ایک رسالہ مرتب فرمایا تھا۔ ممکن ہے ''صراطِ متنقیم'' کی طرح اس رسالے کی بھی عبارت مولا ناعبد الحق کی ہو ہیکن میخود سید صاحب کا ہے ، اس لئے کہ اس کے متن قلمی نسخ دسید صاحب کا ہے ، اس لئے کہ اس کے متن اس کے عقامی نسخ در کھے ، ان میں اس کا انتساب سید صاحب ہی سے کیا گیا تھا۔

علم فضل

مولانا عبدالحی کے علم وضل کی تعریف خود شاہ عبدالعزیز نے فرمائی۔ ایک مرتبہ کہا کہ علم تغییر میں مولانا عبدالحی میرانمون ہیں۔ ایک خط میں شاہ صاحب نے مولا تا اور شاہ اسلیل کو تاج المفسرین، فخر المحد ثین اور سر آ مد علما محققین لکھا، نیز فرمایا کہ دونوں تغییر، عدیث، فقد، اصول منطق وغیرہ میں مجھ سے کم نہیں۔ دونوں کو علماء ربانی میں شار کیا۔ خود مولانا کی بیحالت تھی کہ بار بار فرمات ، مجھے جو پچھ ملاء سیدصاحب کی برکت سے ملا۔ شاہ اسلیل بعض اوقات غصے میں بے قابو ہوجاتے تھے۔ چنانچہ کڑھی امان زئی میں جو واقعہ پیش آیا ''دہ سید احمد شہید'' میں نقل ہو چکا ہے۔ (۱) درانیوں کی طرف سے ایک قاصد آیا، وہ انعام لینے کی غرض سے بالا خانے کی سیرھی پر کھڑ اہو گیا، جہاں سیدصاحب قاصد آیا، وہ انعام لینے کی غرض سے بالا خانے کی سیرھی پر کھڑ اہو گیا، جہاں سیدصاحب

⁽۱) سيداخدشهبيدجلدودم ص: ۲۸۵_

مقیم تھے۔ شاہ صاحب نے اسے نری سے ہنانے کی کوشش کی تو وہ چینے چیخ کررونے لگا۔
شاہ صاحب نے دو تین طمانچے مارے۔ ایک مرتبدان کا ہاتھ سٹرھی میں لگا جولکڑی کی تھی۔
ایک باریک ریشہ تھیلی میں چھا اور خون جاری ہوگیا۔ عین اس وقت سید صاحب برآ مد
ہوئے۔ خون دیکھ کر واقعہ بوچھا اور سنا تو فرمایا آپ کا غصہ بڑھ رہا ہے، اسے دور کرنا
چاہیے۔ بعدازاں شاہ صاحب نے منشی محمدی انصاری کے سامنے ندامت کا اظہار کیا۔ منشی محمدی انصاری کے سامنے ندامت کا اظہار کیا۔ منشی محمدی انصاری کے سامنے ندامت کا اظہار کیا۔ منشی محمدی انصاری نے سامنے ندامت کا اظہار کیا۔ منشی محمدی انصاری نے سامنے ندامت کا اظہار کیا۔ منشی محمدی انصاری نے سامنے ندامت کا اظہار کیا۔ منشی محمدی نصاحب نے کہا کہ مولا ناعبد انحی کو بھی غصہ آتا تھا، لیکن وہ راہ شریعت سے ادھراً وھر بھی نہ مورے۔ غصے کے باو جود شری ولائل ان کی تمام باتوں پر غالب رہتے تھے۔ شاہ صاحب نے فرمایا: مولا ناکا غصہ 'آورد'' ہوتا تھا، وہ امور شرعیہ پر بہقصد وارادہ غصہ لاتے تھے۔ میرا غصہ 'آد' ہے جب آتا ہے۔ خود نش پر غلبہ یالیتا ہے۔

غرض صاحب ''الیانع الجنی' کے قول کے مطابق مولانا عبدالحی تقوی ، عمل ، تا شیر وعظ ، خواہشات کی تقلیل اورلباس وغذا میں قناعت کے لحاظ سے خدا کا نشان سے ۔ بہت کم خن ، متوکل اور باوقار آ دی تھے۔ سنت کے شیدائی ، رسوم و بدعات سے تنظر نورایمان ان پر برس رہا تھا۔ صالحت ان کی بیشانی سے نمایاں تھی۔ اپنی تعریف سن کر ناراض ہوتے ، نسیحت سے انہیں خوشی حاصل ہوتی ۔ وہ ایسے جامع الصفات بزرگ تھے کہ قلم بیان سے عاجز ہے۔

دوسراباب:

شاهاسمعيل

بلندنسبتيل

شاہ اسلامی شاہ عبدالغنی کے اکلوتے بیٹے، شاہ ولی اللہ محدث دہلوی کے بوتے، شاہ عبدالعزیز محدث، شاہ رفع الدین محدث اور شاہ عبدالقادر محدث کے بیشتیج تھے۔ پاک وہندگی وسیع سرز مین میں علم وفضل، وعظ وار شاد، درس و قدریس اور خدمت واسلامیت کی الی بلند شبتیں شاید ہی کسی کے جھے میں آئی ہوں، جن سے شاہ اسلامیل مشرف ہوئے۔ لیکن شاہ شہید کی عظمت کا اصل سرمایہ یہ ہے کہ انہوں نے اپنے عمل سے ان نسبتوں کی شانِ برتری کو چار چاندلگا دیے۔

عرفی خوب کهه گیا که:

مایۂ اوزندگی از گہرخویش گیر ﷺ تا بجایں عز وناز از اب وعم داشتن بیہ بالکل درست ہے، لیکن اگر کسی کو اپنے حسن عمل کے ساتھ بلند نسبتیں بھی میسر آ جا کیں تو اس کی خوش نصیبی پرکون رشک نہ کرے گا؟

ولادت

شاہ صاحب متندروایت کے مطابق ۱۲ رربع الآخر ۱۱۹۳ھ (۱۹راپریل ۹۷۷۱ء) کواپن نھیال پھلت ضلع مظفر نگر میں پیدا ہوئے۔(۱)

(۱) "حيات طيبة" ص: ۱۵، و"حيات ولي" طبع اول ص: ۳۵۳ ـ

تاریخ ولادت کے متعلق اور روایتی بھی ہیں، کین ان کا استناد محلِ نظر ہے۔
میرشہامت علی نے شاہ صاحب کی مشہور تھنیف'' تقویت الایمان' کا ترجمہ انگریزی
زبان میں کیا تھا، جو ۱۸۵۲ء میں چھپا تھا۔ اس کے ساتھ ایک دیبا چبھی لکھا تھا، جس میں
شاہ صاحب کی تاریخ ولادت ۱۸ رشوال ۱۹۲۱ھ بتائی، گراس کیلئے کوئی حوالے نہیں دیا، للبذا
میرستندر وانیوں کے مقابلے میں شایان توجہیں۔

شاہ صاحب کی والدہ ماجدہ کااسم گرامی فاطمہ بتایا گیا ہے۔ وہ مولوی علاء الدین علاء الدین علاء الدین علاء الدین علاء الدین سے براہ کی بھشرر قبہ کی شادی ہوئی تھی۔ کی شادی ہوئی تھی۔

ابترائي تعليم

شاہ صاحب نے ابتدائی تعلیم اپنے والد ماجد سے پائی۔ وہ ۲۱ررجب ۲۱۳ اھ (۱۲ اربریل ۱۹۸۹ء) کو فوت ہو گئے۔ جب شاہ صاحب کی عمر صرف دس سال کی تھی۔ اسی وقت سے شاہ عبدالقادر نے آئیس دامن تربیت میں لے لیا، یاسر سیدم حوم کے الفاظ میں" بجائے فرزندوں کے پرورش کیا"۔ شاہ عبدالقادر کی اولاد میں صرف ایک صاحبزادی تھی، مساۃ زینب، جس کاعقد شاہ رفع الدین کے فرزند عبدالرحمٰن عرف مصطفیٰ سے ہوا تھا۔ ان کے بھی صرف ایک بیٹی ہوئی، جس کا نام کلؤم تھا۔ شاہ عبدالقادر نے کلؤم کا نکاح شاہ آملیل سے کی تسبیس کا نکاح شاہ آملیل سے کردیا تھا۔ اس طرح شاہ عبدالقادر کوشاہ آملیل سے کئی تسبیس پیدا ہوگئیں۔ اول یہ کہشاہ آملیل ان کے قیقی جیتے جسے، دوم یہ کہ انہوں نے شاہ صاحب کو ابنا بیٹا بنالیا تھا، سوم یہ کہ اپنی نواسی کا نکاح ان سے کردیا تھا۔ شاہ عبدالقادر نے اپنی زندگی میں کل جا کراد تھمس شرعیہ کے مطابق اپنی صاحبزادی اور بھا نیوں کے نام کردی خشی اوران کی اجازت سے آیک حصہ شاہ آملیل کود سے دیا تھا۔ (۱)

⁽۱) ارواح فلاشص:۳۹ ـ

غيرمعمولي دل ود ماغ

ابتدائی تعلیم کے بعد زیادہ ترکتابیں شاہ عبدالقادر سے پڑھیں۔شاہ رفیع الدین اور شاہ عبدالعزیز سے بھی فیض حاصل کیا۔ دماغ ابتدائی سے غیر معمولی تھا۔ نواب صدیق حسن خال نے لکھا ہے:

"جو هر ذ كاوت او به غايت عالى افرآده بود و حكايات ذ مانت وفطانت وخلانت وفطانت وخلانت ميزنقل ممجلس وزيب محقل المل علم است "(1)

قرجمہ: انک ذکاوت کاجوہر بہت بلند پایتھااوران کے ذہن وہم کی تیزی کے قصاب تک الل علم کی ہرجلس کیلئے باعث وزینت سمجھے جاتے ہیں۔

سرسید نے بھی بہی تھا ہے کہ ایسے افراد کا پیدا ہونا خدائے ذوالجلال کی قدرت کا
ایک خاص کرشمہ تھا۔ غیر معمولی ذہانت کے ساتھ طبیعت میں استغنا بھی بہت تھا۔
مطالع پر چنداں تو جہ نہتی ۔ سرسید فرماتے ہیں کہ مقام سبق اکثر محفوظ ندر ہتا۔ بھی اصل
مقام چھوڑ کر آ مے سے شروع کردیتے ۔ شاہ عبدالقادر ٹو کتے تو کہددیتے کہ بچ کا حصہ
آسان سمجھ کرچھوڑ دیا ۔ بھی پڑھا ہوا حصد دوبارہ پڑھنے گئتے ۔ تنبیہ پرعرض کردیتے کہ
فلال فلال بات سمجھ میں نہیں آئی اور اس پر ایسے اعتراضات وارد کردیتے کہ استاد کو نہیں
دور کرنے کیلئے خاص تو جہی ضرورت پیش آتی ۔

پندرہ سولہ سال کی عمر میں تعلیم سے فارغ ہوگئے۔ بڑے بڑے عالم راستے میں ان
سے ایسے مسائل پوچھ لیتے ، جن کا جواب کتابوں اور شرحوں کی مدد کے بغیر نہ دیا جاسکتا،
لیکن شاہ اسلعیل بے اعانت کتب ایسے جواب دیتے کہ عالم محوجیرت رہ جاتے ۔ فقہ کا
ہرمسکلہ آیات واحادیث سے متند فرماتے ۔ معقول کی پیشتر کتابوں پر حاشیے تحریر کیے۔ ایک
رسالہ منطق میں تکھا، اس میں شکل اول کے بعید الطبائع اور شکل رابع کے ابدہ البد ہیات

⁽¹⁾ اتحاف النبلا مِس:١٦١هـ

ہونے کا دعویٰ کیا۔ سرسید کہتے ہیں کہ اس کے دلائل کی قوت ارسطو کو بھی معرض جیرت میں ڈال دیتی اور وہ اپنے دلائل کو تارِعنکبوت ہے بھی ست ترسجھتا۔ سعاوت خال رنگین کا ایک قول بعض اصحاب نے نقل کیا ہے کہ شاہ اسلاملی غیر معمولی ذکاوت دیکھ کر اس نے کہا تھا، اس خاندان سے جواٹھتا ہے باون گز ااٹھتا ہے۔

دعوت ونبليغ

جیاک "سداحرشہید" میں بایا جاچکا ہے،سیدصاحب سے بیعت کے بعدزندگ احیائے وین اور رو برعات کیلئے وقف کردی۔سدشنبداور جمعہ کوشاہی مسجد میں وعظ فرماتے۔ سرسید لکھتے ہیں کہ نماز جمعہ کیلئے ایس کثرت ہونے لگی، جیسے عیدگاہ میں نماز عیدین کیلئے ہوا کرتی ہے۔تقریریں ایس جامع ہوتی تھیں کہ ہر مخص کواس کے شہرے کا جواب مل جاتا تھااور سادگی کا پیعالم تھا کہ عالم وعامی یکسال ان سے مستفید ہوتے تھے۔ کھ مت بعدسید صاحب کے ایماء سے وعظ وتقریر میں جہاد فی سبیل اللہ کے مائل بیان فرمانے لگے سرسید کے الفاظ میں مسلمانوں کا آئینہ باطن مصفا اور مجلّی ہوگیا اور راوحق میں اس طرح سرگرم ہوئے کہ جمخص بے اختیار جا ہے لگا کہ اس کاسر فی سبیل الله فدا مواور اسکی جان وین محمری کاعلم بلند کرنے کے سلسلے میں کام آئے۔(۱) ان کی وضع سادہ اور بے تکلف تھی ،لینی عام علماء کی طرح دعظ میں جبہ وغیرہ کا اہتمام نہ كرتے تھے،اسلئے ابتداء میں بعض سامعین ناخوش ہوئے قرآن مجید كی چندآ يتيں بڑھ كرتفيير شروع كى توسامعين كے دل خوف خدا ہے لرزا تھے اور انكى آئكھيں اشكبار ہوگئيں۔ بعض ثقات سے سنا کہ بارہ سال کے اشتغال دمراقبہ سے جونسبت پیداہوتی ہےوہ شاہ صاحب کے ایک وعظ ہے پیدا ہوجاتی تھی۔ پنجائی تاجر دکا نداری میں بہت مشاق تنے۔وہ اعتراف کرتے تھے کہ خرید وفرو دنت کی کثرت اور نفع کی زیادتی کے باوجود وعظ

(1) " آ نارالصناديد" پيواله تاريخ دسياست ،وحيات وليص: ٣٥٨ ـ

www.BestUrduBooks.wordpress.com

ے اشے اور دکان کھو لئے کو جی نہیں چاہتا۔ ہزاروں لوگ تا نمب ہوئے۔ ان میں زنانِ
ہازاری بھی تھیں۔ ایک مرتبہ ایا م محرم میں قلعے کے اندر بلائے گئے۔ اکبرشاہ ثانی بادشاہ بھی
مجلس میں شریک تھا۔ شاہ صاحب نے ایک آیت پڑھ کر حضرت امام حسین کے مراتب مبر
ایسے انداز میں بیان فرمائے کہ اسوہ حسینی کا نقشہ آنکھوں کے سامنے تھی حمیا۔ فرمایا کرتے
تھے کہ ہندوستان کے مسلمان شرک و بدعات کی بلائے خت میں مبتلا ہیں۔

بعض غيرمتنندروايتي

مخلف اصحاب نے شاہ صاحب کی ورزشوں مثلاً تیرا کی بسواری، شمشیر زنی ، نیز ہ بازی، یے بازی، بنوٹ وغیرہ کے متعلق لمبی چوڑی داستانیں بیان کی ہیں۔ یہ بھی لکھاہے کہوہ تیز دھوپ میں معبد فتح بوری کے تیتے ہوئے فرش بر گھنٹوں چلتے رہتے تھے۔ مجھےان روایات کی کوئی سنداب تک ندل سکی ۔ای طرح میرے نزدیک شاہ صاحب کے مواعظ اور دوره کینجاب کی جومفصل روندادی" حیات طیبی میس چھی بین، وہ بالکل بے اصل میں۔ دور و بنجاب یقینا بعیداز قیاس نہیں لیکن اس کا کوئی ثبوت نہیں ملتا،اور جوتفصیلات بیان کی گئی ہیں ان میں ہے بعض یقینی طور برمحلِ نظر ہیں۔شاہ صاحب لاریب ایک غیر معمولی انسان تصاورورزشوں یا دورے کے بغیر بھی ان کی عظمت میں کوئی کی نہیں آسکتی۔ سیدصاحب سے بیعت کے بعد زیادہ وقت انہیں کی معیت میں گذرا۔ جہاد کے لے تبلیغ و تنظیمات کا کام سب سے بڑھ کرانہیں نے انجام دیا۔سیدصاحب کے ساتھ مج كيا_اس وقت تك ان كي والده ماجده زنده تعيس - في كيليّ ساته مستركيس - مكم معظمه ميس انہوں نے سیدصاحب کی بیعت کی ، وہیں وفات پائی اور جنت اُمعٹی میں ڈن ہو کیں۔ "ارمغانِ احباب" میں میاں نذیر حسین صاحب مرحوم کا ایک بیان درج ہے کہ شاہ ھا حب حج کے بعد یا نچ جے مہینہ دہلی میں رہے، جب مٹکاف کلکتہ ہے آیا تو وہ استعجالا

دہلی سے چلے سئے کیوں کہ کلکتہ میں اس سے مولانا کی بحث ہوگئ تھی۔(۱)

كارنامه مائ جهاد

کر جمادی الاخری ۱۲۱۳ھ (کارجنوری ۱۸۳۷ء) دوشنبہ کو رائے ہریلی سے سید صاحب کے ساتھ راہے جرت میں قدم رکھا اور وطن عزیز سے سیٹروں میل کے فاصلے پر ایک غیر معروف کوشے میں شہادت پائی، جسے ان کی اور سید صاحب کی شہادت کے باعث ہمیشہ کی ناموری حاصل ہوئی۔

دورانِ جہاد میں ان کے کارنامے''سیداحمدشہید'' کے صفحات پر تفصیلا بیان ہو پچکے ہیں اوران کے اعاد سے کی ضرورت نہیں۔اجمالاً ان کی کیفیت ذیل میں درج ہے:

ا۔ وہ تمام انظامات میں سیدصاحب کے مشیر خاص تھے۔

سیدصاحب کیلئے امامت جہاد کا پورا بندوبست انہیں نے کیا تھا۔

سور جنگ شيدومين جان پر تھيل كرسيدصا حب كومحفوظ مقام پر پينچايا۔

۳ ہزارہ میں جہاد کی ابتدائی مظیمات انبیں نے کیں۔

۵۔ جنگ هنگیاری میں تھوڑی ہی جمعیت سے سکھوں کے بہت بزے

نشكر كوشكست دى يستصول كي كوليول سے شاہ صاحب كي قباجھلني ہوگئي لميكن نه

آپ میدان سے ہٹے نہ مور ہے میں پناہ لی ، نہ جنگ روکی ۔ ای لڑائی میں شاہ صاحب کی ایک انگلی زخمی ہوگئی، جے دکھا کرآپ مزاعا فرمایا کرتے تھے کہ بیہ

ہاری آنگشت شہادت ہے۔

۲ بیت شریعت کے سلیلے میں علائے سرصد ہے تمام گفتگو کمیں شاہ
 صاحب ہی نے کی تھیں۔

⁽۱) '' ارمغانِ احباب' بحواله معارف فروری ۱۹۲۹ء۔ رادی کا درجه اتنا بلند ہے که اس بیان بیں شہنہیں ہوسکتا۔ جھے صرف اتنامعلوم ہے کہ فج ہے دالیسی پرشاہ صاحب کوفوراُ دیلی آنا پڑا ، اس لئے کہ شاہ عبدالعزیز کا انتقال ہو چکا تھا۔ پھر وہ بہطور خود دعوت وسلیغے میں دورے کرتے رہے۔ مشکاف ہے جھٹڑ ہے کے متعلق کوئی تفصیل معلوم نہ ہوتک ۔

ے۔ ہنڈ کامضبوط و مستحکم قلعہ چھوٹی ہی فوج کے ساتھ فتح کرلیا اور دشمن کے صرف دوآ دمی مارے گئے ، اپنے کسی آ دمی کے نزاش تک ندآئی۔ ۸۔ جنگ زیدہ میں صرف سات سومجاہدین سے درانیوں کی آٹھ

 ۸۔ جنگ زیدہ میں صرف سات سومجاہدین سے درانیوں کی آٹھ ہزارفوج کوشکست فاش دی۔

9۔ مایار کی جنگ میں درانی فوج بارہ ہزار سے کم نتھی اور مجاہدین صرف ساڑھے تین ہزار تنے ، جن میں بدی تعداد ملکیوں کی تھی تا ہم درانی مقالبے پر تھہر نہ سکے۔

۱۰۔ امب وعشرہ کی لڑائیاں شاہ صاحب کے کمال سپدگری کا ایک روشن شوت ہیں۔

11۔ انتظام عشر کے سلسلے میں وہ سید محمد حبان قاضی القصنا قر کے مشیر خاص تھے اور جنگ مردان میں آئہیں کے حسن تدبیر سے فتح حاصل ہوئی۔ 17۔ بشاور میں صلح کی تمام گفتگوئیں سید صاحب کی طرف سے شاہ صاحب ہی نے کی تھیں۔

غرض وہ سیدصاحب کی بوری تحریک جہاد میں اول سے آخر تک روح روال سے

ر ہے۔

اطاعت إمام

نواب وزیرالدولہ نے لکھا ہے کہ وہ اور مولانا عبدالحی سیدصاحب کے سامنے بالکل بے حس وحرکت رہتے تھے اور آپ کی بات کا جواب بھی بڑی مشکل ہے دیتے تھے۔(۱) تاہم شرعی معاملات میں شاہ صاحب کسی کی پرواہ نہ کرتے تھے اور جو کچھ دل میں ہوتا تھا،سید صاحب کے سامنے بھی بیبا کا نہ بیان کردیتے تھے۔ایک موقع پرحسن زئی قبیلے

⁽١) "وصايا" حصدووم ص: ٩٠١_

نے سیدصاحب سے عشر معاف کرالیا، شاہ صاحب کو معلوم ہوا تو کہا کہ عشر زکو ۃ وخمس کی طرح حقوق شریعت میں سے ہے، اسے معاف کرنے کا اختیار امام کو بھی حاصل نہیں۔ چنانچے سیدصاحب نے ان کی رائے کے مطابق عمل کیا۔

جنگ مایار کے بعد شاہ صاحب سے پیشتر مردان پہنچ گئے تھے اور وہاں اس شرط پر
رسول خاں رئیس مردان سے صلح کر لی تھی کہ لشکر تصبے میں نہ آئے گا۔اس کے متعلق سید
صاحب کے پاس مفصل اطلاع بھی بھیج دی تھی، اتفاق سے وہ اطلاع سیدصاحب تک نہ
پہنچ سکی اور آپ لشکر کے ساتھ قصبے میں داخل ہوگئے۔ شاہ صاحب کو اس پر سخت رنج ہوا۔
انہوں نے سمجھا کہ سیدصاحب نے شرط کا خیال ندر کھا۔ چنانچ سامنے جنچ ہی کہا:

'' جناب خود خلاف شرع امر کے مرتکب ہوئے ۔لشکر اسلام میں سے
ایک آ دمی کے عہد کا ایفاء بھی امام اور پور لے لشکر پر واجب ہوجا تا ہے۔ مجھے
آپ نے اپنا نائب بنا کر بھیجا تھا، کیکن میر ے عہد کا بھی خیال ندر کھا، اور قصبے
میں داخل ہوگئے۔ یہ لشکر ہے، جے میدان میں تھیم ناچا ہے، بیرز ادوں کا قافلہ
میں داخل ہوگئے۔ یہ لشکر ہے، جے میدان میں تھیم ناچا ہے، بیرز ادوں کا قافلہ
میں داخل ہوگئے۔ یہ لشکر ہے، جے میدان میں تھیم ناچا ہے، بیرز ادوں کا قافلہ
میں داخل ہوگئے۔ یہ لشکر ہے، جے میدان میں تھیم ناچا ہے، بیرز ادوں کا قافلہ
میں داخل ہوگئے۔ یہ لشکر ہے، جے میدان میں تھیم ناچا ہے، بیرز ادوں کا قافلہ
میں داخل ہوگئے۔ یہ لیک کے سے میدان میں تھیم تھیم آئے۔

حقانی ربانی بزرگ

سید جعفر علی نقوی کھتے ہیں کہ نسوار کی عادت تھی۔ کتابت کی مشق نہ تھی۔ البتہ ضروری احکام ومکا تبت کی عبارتیں بے تکلف ہو لتے جاتے تھے اور منشی کھتے تھے منظورہ کے الفاظ ہیں' قدرت بہ کتابت چنا نکہ باید نہ داشتند''۔''ارواح ثلاث سے بھی اس کی تصدیق ہوتی ہے۔ کھا ہے کہ ایک مرتبہ پنجہ کش نے انہیں کتابت سکھانے پر آمادگی ظاہر کی فر مایا معمولی لکھنا کافی ہے۔ (1) سید صاحب نے شاہ صاحب کی سواری کیلئے ایک گوڑ ادے دیا تھا، لیکن وہ بھی اس پر نبوار نہ ہوئے۔ اپنے رفیقوں میں سے کس ایک کو

⁽۱) ارواح ثلاثة ص:۸۷_

سوار کرادیتے اور خود بیدل چلتے عقیدہ بیتھا کہ خدائی کام ہے، جتنی زیادہ مشقت اشماکیں گے اتنابی زیادہ تواب ملے گا۔

قرماتے تھے کہ میں خواب کی تعبیر نہیں جانتا۔ جس طرح دوسر بے لوگ عقل سے قرائن تجویز کر لیتے ہیں، میں بھی کر لیتا ہوں۔ معانی قرآن وحدیث مجھے اللہ نے عطا فرمائے۔ بظاہراستاد سے پڑھا، کیکن جو بچھاللہ نے دل پر ڈال دیاوہی میرااصلی علم ہے۔ یہ بھی کہا کر تے تھے کہ نماز میں غفلت نہیں ہوتی ،اگر ہوتی بھی ہے تو جلد آگاہ ہوجا تا ہوں۔ حقانی ربانی آ دمی تھے۔ اپنی کسی خلطی یا کمزوری کے اعتراف میں تامل نہ ہوتا تھا۔ اگر چے عمرزیادہ نتھی کیکن جسم خاصا کمزورتھا۔ پہاڑی چڑھائی میں چند قدم چلنے سے سانس

الرچد مرزیادہ نہ میں بین محاصا مرورھا۔ پہاری پر میاں میں پدید اپ کے باقی پھول جاتا تھا۔ زیادہ بوجہ بھی نہ اٹھا کے تھے، چنانچ ایک مرتبہ سیدصا حب دریا ہے پانی لانے کیلئے اٹھے تو انہوں نے مشکیزہ لے لیا۔ شاہ صاحب مشکیزہ نہ اٹھا کتے تھے، لہذا اس کو لے لیا، تا ہم تعلیم عزیمت کی غرض ہے ایک موقع پر زنبورک اٹھوا کرا پنے کندھے پر رکھ لی۔ یاؤں لڑ کھڑانے گئے تو زنبورک ساتھیوں نے سنجال لی۔ (۱)

نواب وزیرالدولہ نے لکھا ہے کہ بعض اوقات بیاری کی تکلیف میں وودون سونہ
سکتے ، یہاں تک کہ اٹھنے بیٹھنے کی طاقت بھی ندر ہتی ، تا ہم سیدصا حب کی طرف ہے کی
جنگی مہم کے انتظام کا حکم بیٹنج جاتا تو بے تو قف ہتھیار سنبھال کرشیر کی طرح مسلمانوں کے
معاملات کی درتی میں مصروف ہوجاتے ۔ (۲) دینی کا موں میں نہ خود بھی تساہل کوراہ
دی ، نہ کسی رفیق سے کام کے وقت نرمی کا برتاؤ رکھا۔ شاہ صاحب کے رعب و ہمیت کا بیہ
عالم تھا کہ ایک مرتبہ کوئی درانی سپاہی کسی خاتون کا مال چھیننا چاہتا تھا، خاتون نے شاہ
صاحب کا نام لیا تو سپاہی سب بچھ چھوڑ کر بھاگ نکلا۔ جنگ مایار ناگزیر ہوگئی تو سید
صاحب کا نام لیا تو سپاہی سب بچھ چھوڑ کر بھاگ نکلا۔ جنگ مایار ناگزیر ہوگئی تو سید

⁽١) يتمام معلومات منظوره " كالمتلف صفحات بيدماخوذ مين - (٢) " وصايا" من ١٠٩٠

میں اپنی طرف سے لکھ بھیجا کہ اپنی تشریف آوری کی خبر کوشہرت دیجیے، اس لئے کہ آپ کی شجاعت اس علاقے کہ آپ کی شجاعت اس علاقے کے خاص وعام پر روثن ہے۔ کیا عجب ہے دشمن آپ کا نام س کر مرعوب ہوجا کیں اوراس طرح مصالحت کی کوئی صورت نکل آئے۔

نواب صديق حسن خال كابيان

مولا ناسیدمحمعنی رام پوری نے لکھا ہے کہ وہ حافظ قرآن تھے اور مبھر عالم تیس ہزار حدیثیں انہیں نوکے زبان تھیں ۔(1) نواب صدیق حسن خاں فرماتے ہیں:

ترجمہ: معقول ومنقول میں پہلوں کی یاد بھلادیے تھے۔فروع واصول میں ائمہ کو پرے بھادیے تھے۔جس علم میں ان سے بات کروگ واصول میں ائمہ کو پرے بھادی تھے۔جس علم میں ان سے مناظرہ کی نوبت جان لوگے کہ وہ اس فن کے امام ہیں اور جس فن میں ان سے مناظرہ کی نوبت آگی پیچان لوگے کہ وہ اس کے حافظ ہیں۔ساری عرضدا کے کلمے کی بلندی، رسول الله صلی الله علیہ وسلم کی سنتوں کے احیاء، خداکی راہ میں جہاد اور ضلقِ خدا کی مہایت میں گزاروی۔کسی اسلامی مقام پرایک معے کیلئے بھی آرام نے فرمایا۔

فراست ِمومن

سیدصاحب فرمایا کرتے تھے کہ خدانے مجھے آلموار، گھوڑ ہے اور آ دمی کی خاص پہچان عطا کی ہے، یہاں تک کہ میں جو تادیکھ کر آ دمی کی سیرت کا حال بیان کرسکتا ہوں، البت (۱) سعیہ الفالین ص ۱۹۰۰۔ (۱) سعیہ الفالین ص ۱۹۰۰۔ اس میں غلطی کا بھی امکان ہے۔ شاہ صاحب کو بھی بھیرت کا خاص نور عطا ہوا تھا اور وہ مرسری ملاقات میں آ دمی کی نیت اور اراوے کے متعلق اندازہ فرمالیتے تھے جوعمو فا درست ہوتا۔ وہ سیدصاحب کے تھم ہے بہلی مرتبہ بالاکوٹ آئے تھے تو شکھوں کے لشکر برشبخون کا فیصلہ کرلیا تھا۔ میں آخری وقت میں تاکیدی تھم آیا کہ شاہ صاحب خود چوں آ جا کیں اور بالاکوٹ کی حفاظت کا کام صبیب اللہ خال گڑھی والے کے حوالے کردیا جائے۔ شاہ صاحب نے یہ فرمان پاتے ہی شبخون کا ارادہ ملتوی کردیا اور پچوں جانے کی جائے۔ شاہ صاحب نے یہ فرمان پاتے ہی شبخون کا ارادہ ملتوی کردیا اور پچوں جانے کی تیاری کرلی۔ ساتھ ہی فرمایا: حبیب اللہ خال نے جب دیکھا کہ بھوگڑ منگ کی طرف جملے کا خطرہ بردھ گیا ہے تو سید صاحب سے کہا کہ ادھر کی حفاظت فرما کمیں ، بالاکوٹ کی دیکھ بھال میں کروں گا، کیکن یقین ہے کہ تھوڑ ہے بی دنوں میں حبیب اللہ خال پھر جمیں بالاکوٹ بلائے گا۔

شاہ صاحب کی بیرائے حرفاً حرفاً درست ثابت ہوئی۔ چنانچہ کچھ دیر بعد وہ اورسید صاحب حبیب اللّٰدخاں کے بلانے پر بالا کوٹ آئے ، جسے ان کی شہادت سے دائک شرف حاصل ہونے والاتھا۔

بيمثال شخصيت

سی می کاف کی پر چھا کیں بھی ان کے قلب صافی پر نہ پڑی تھی ۔ کھانے پینے ،
رہنے سہنے اور ہنے میں حد درجہ سادہ تھے۔ سفر جج میں کلکتہ ہنچ تو لباس ایسا پہن
رکھا تھا کہ خشی امین الدین کو پہلی نظر میں ان کے شاہ آسلمیل ہونے کا یقین نہ آیا۔ جب
معلوم ہوا کہ یہی وہ شخصیت ہے جس کی ناموری سے ملک کے درود بوار گونج رہے ہیں تو
منشی صاحب یہ سنتے ہی آبدیدہ ہو گئے۔

مشہور ہے کہ دوران جہاد میں بھی بھی گھوڑے کو کھر میا کرتے۔اس حالت میں بھی

كونى فخف وين ياعلى مئله يوچيخ كيليم آجاتا توساتھ ساتھ جواب ديتے جاتے۔ايک نياز مندنے لکھاہے:

. تصانیف

سیدصاحب سے وابستگی نے بعد شاہ صاحب نے اپنی حیات عزیز جن اہم کا مول کیلئے وقف کردی تھی ،ان کے پیش نظر تصانیف کا موقع بہت کم تھا، تا ہم انہوں نے مقاصد اصلاح کیلئے کتابیں بھی تکھیں، جن میں سے بعض اپنے موضوع پر آج بھی نادر ویگانہ ہیں۔مثلاً:

ا۔ ایضاح ابحق الصریح فی احکام المیت والصریح۔اہل علم کا بیان ہے کہ حقیقت بدعت میں ایس کوئی کتاب کسی زبان میں آج تک نہیں ککھی گئی۔

۲۔ منصب امامت۔

۳۔ عبقات۔

٣- تنويرالعينين في اثبات رفع اليدين _

٧۔ اصول نقد۔

-- صراط منتقیم کا ببلاحسه۔

٨ - اليناح الحق الصريح _

۱۰ ایک روزی - بیختفر سارساله بے۔ مولوی ففل حق خیرآ بادی نے " تقویت الایمان" پر کھھ اعتراضات کیے تھے۔ شاہ صاحب نماز کیلئے مجد کی طرف جار ہے تھے۔

راتے میں مولوی فضل حق کا رسالہ ملائمازے فارغ ہونے کے بعد ایک ہی نشست میں اس کا جواب ممل کردیا، لہذا ایک روزی نام پایا۔

علاوہ بریں انہوں نے بہت کی کتابوں پرنہایت قیمتی حاشیے لکھے تھے جوسب کی سب ضائع ہوگئیں۔مولا نارشیدالدین کا نادر کتب خاندایا م غدر میں لٹ گیا تھا۔ان کے فرزندمولوی سدیدالدین حددرجدانسوں سے فرمایا کرتے تھے کدا ہے کتب خانے کا اس قدرر نج نہیں، جتنا کہ ان حواثی کے ضائع ہوجانے کا ہے جوشاہ صاحب نے ان کتابوں پر کھے تھے۔(۱)

سیدصاحب کے مکا تیب کابرواحصہ بھی آئیس کالکھوایا ہواہے۔ پچھ منظو مات بھی ان سے منسوب ہیں۔ مثلاً ایک نعتیہ قصیرہ فاری ہیں، ایک قصیدہ سیدصاحب کی مدح میں، تو حید پرایک مثنوی فارس میں موسوم' بسلک نور' اوراس نام کی ایک مثنوی اردو میں۔

امت محمد سيكا حكيم

علیم جیل الدین کہتے ہیں کہ شاہ صاحب کا ذہن حدورجہ سریع الانقال تھا۔ پانچ آدمیوں کوسا سنے بٹھا کر پانچ مختلف مضامین لکھواتے تھے اور کسی کا قلم رکتا نہ تھا۔ (۲) ایک مرتبہ''محد کا لئے'' نامی ایک شخص نے عرض کیا کہ میرے نام کا بچھ کہہ دیجیے، ب تکلف فرمایا:''ہروم نام محمد کا لئے' (۳)

سید صاحب کے ساتھ بالاکوٹ میں شہید ہوئے۔ مولوی فضل حق خیرآ بادی سے خاصی کھکش رہی تھی۔ مولوی فضل حق خیرآ بادی سے خاصی کھکش رہی تھی۔ مولوی صاحب نے شہادت کی خبر اس وقت سی جب طلب کوسبق پڑھارہ ہے تھے۔ یہ سنتے ہی کتاب بند کردی۔ گھنٹوں بیٹھے روتے رہے۔ اس کے بعد کہا کہ اسلامی کو ہم مولوی نہ جانتے تھے، وہ امت چجر یہ کا حکیم تھا۔ کوئی شے نہھی جس کی

⁽۱) "حیات بعدالممات" ص:۱۶۱ (۲) "ارواح قلاش" ص:۲۷ (۳) "ارواح قلاش" می:۸۷ (۳)

انیت اور کمیت اس کے ذہن میں نہ ہو۔ (۱)

مزاح

شاہ رقیع الدین محدث دہلوی کے نواسے اور شاہ اسحاق کے داماد مولوی نفیر الدین سید صاحب کے ساتھ جج کیلئے نہ گئے تھے لیکن کلکتہ تک معیت میں رہے۔ وہ اس وقت بعض ضروری کامول کے سلسلے میں رک گئے تھے، بعد از ال شاہ اسحاق کے ساتھ فریف بحض ضروری کامول کے سلسلے میں رک گئے تھے، بعد از ال شاہ اسحاق کے ساتھ فریف حج ادا کیا۔ وہ فرماتے ہیں کہ قیام کلکتہ کے دوران میں مجھے روز انہ شاہ اسلمیل کے پاس حاضر ہونا پڑتا تھا اور آیک گھڑی رات گئے تک ان کی قیام گاہ میں رہتا۔ پھر شاہ صاحب محصمیری قیام گاہ پر پہنچانے کیلئے ساتھ آتے۔ ان کی طبیعت میں مزاح بہت تھا۔ درواز ہ کھنکھناتے تو چوکیدار پو چھتا کون؟ شاہ صاحب بہ آواز بلند فرماتے نعظوس غطوس اس محظوس اس

ز مدو تقویل

شاہ صاحب کے زہدوریاضت کے سلسلے میں مولا نا عبدالقوم کی ایک روایت خاص ہوجہ کی مستحق ہے۔ اس کا مفادیہ ہے کہ ضلع بلند شہر کی تحصیل سکندر آباد میں شاہ صاحب کے خاندان کو پچھاراضی ملی ہوئی تھی۔ شاہ اسلحیل مخصیل کیلئے وہاں جایا کرتے تھے اور جاتے آتے غازی آباد میں ایک بھٹیاری کے یہاں تھہرا کرتے تھے۔ ایک مرتبہ تحصیل کے وقت وہ یہار ہوگئے اوران کی جگہ شاہ رفیع الدین کے فرزند شاہ موئ کو بھیجا گیا۔ شاہ آسلحیل نے انہیں مخصیل کے متعلق تمام تفصیلات بتادیں اور غازی آباد کی بھٹیاری کا بتادیتے ہوئے یہ انہیں محصیل کے متعلق تمام تفصیلات بتادیں اور غازی آباد کی بھٹیاری کا بتادیتے ہوئے یہ بھی کہددیا کہ اسے بتادین میں اساعیل کا بڑا بھائی ہوں۔ شاہ موئ کی چار پائی کے نیچے اور بھٹیاری کو اپنا نام ونشان بتادیا۔ اس نے رات کے وقت شاہ موئ کی چار پائی کے نیچے بھٹیاری کو اپنا نام ونشان بتادیا۔ اس نے رات کے وقت شاہ موئ کی چار پائی کے نیچے بھٹیاری کو اپنا نام ونشان بتادیا۔ اس نے رات کے وقت شاہ موئ کی چار پائی کے نیچے

دولو فے ،ایک چٹائی اور ایک جانماز رکھ دی۔مویٰ نے کہا:اس سامان کی کیا ضرورت ہے؟عشاء کی نماز مجد میں پڑھآئے ہیں جہ کھروہیں نماز پڑھ لیس مے۔بھیاری نے ان کی طرف تعب سے دیکھتے ہوئے کہا: ہیں تو پہلے ہی سمجھ گئ تھی کہ آسلمیل کے بھائی نہیں ہو اور اب تو یقین ہوگیا۔مولوی آسلمیل بھی نماز مسجد ہی ہیں پڑھا کرتے تھے، گروہ رات کو تھوڑی دیرسوکراٹھ بیٹھتے اور وضوکر کے مبح تک نفلول میں قرآن پڑھتے رہتے تھے۔تم کہتے ہو مجھے پانی کی ضرورت نہیں۔ میں تو سمجھی تھی کہتم بڑے بھائی ہواور عابد بھی ان سے زیادہ ہوگھ کے بھی نہ نکلے۔

شاہ موی کہتے تھے کہ میں بھٹیاری کی یہ بات من کر مارے شرم کے پانی پانی ہوگیا اورکوئی جواب بن ندآیا۔(۱)

دوخطرناك موقع

شاہ صاحب کی شجاعت، دلیری اور بہادری ستائش سے بالا ہے۔ وہ اپنی جانِ عزیز جس بلند مقصد کیلئے نذر کر چکے تھے، اس میں ہرقدم پرشہادت کا خطرہ موجود تھا، تاہم شاہ صاحب کی حالت میتھی کہ وہ گولیوں کی بارش میں انتہائی بے تکلفی سے جاتے تھے، ووسرے لوگ چھولوں کی بارش میں بھی اس طرح جانا گوارانہ کریں۔

ال سلیلے میں سوائح نگاری کے نقط نگاہ سے یہ بتادینا ضروری ہے کہ دومرتبہ شاہ صاحب عین موت کے مندسے بچے۔ایک مرتبہ جنگ ہایار میں جہاں انہوں نے کی درانی سواروں کو مارگرایا۔اس اثناء میں ایک سوار ان کے بالکل قریب آگیا۔وہ بندوق نہ مجر سکے خود فرماتے تھے کہ مجھے شہادت کا یقین ہوگیا۔ مین اس موقع پر حافظ و جیدالدین مجلتی کی نظر بڑی۔انہوں نے دور سے درانی سوار پر بندوق سرکی۔وہ گولی لگتے بی گرااور شاہ صاحب بال بال بچے۔ووچار لیمے کی بھی تاخیر ہوجاتی توان کا زندہ بچنامشکل تھا۔

⁽۱) ''ارواح هلافهٔ'من:۵۰–۵۱

دوسرا واقعہ سفر ہجرتِ ٹانیہ میں چیش آیا۔ دریائے سندھ کے کنارے تاکوٹ میں منزل ہوئی۔شاہ صاحب کو شاہ سے سنداندھیرے میں دریا پر چلے گئے۔ شخت سردی کا موسم اور دریا کا پانی برفانی عسل کرتے ہی باہرنگل کر کپڑے پہنے۔ عین اس وقت باس ہوکر گرے اور بہوش ہو گئے۔ ضبح صادق کے وقت دوسرے جاہدین وضو کیا دریا پر گئے تو انہیں اٹھایا۔ چار پائی پرلٹا کرلائے ،کمبل اڑھائے، پاس آگ جلائی، سورج نکلنے برشاہ صاحب کو ہوش آیا۔

افراط وتفريط اورتوسط

ا یک مرتبہ وعظ ونصیحت کے نتائج کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا:

" برچندمردم بسیار برراه راست آمده اندلاکن آنچیمن می خواجم نیج کس از ایشال اختیار آل وضع نه نموده، وآل راه توسط است، در افراط وتفریط که در ملاز مین صحبت حضرت امیر الموشین یافته و من بر چند بسیار سعی می نمایم که آل طریقه توسط به تعلیم یافتگان ازمن حاصل شود لاکن حسب مرادمن آج کیاز ایشان تعلیم قبول نمی کند بی راه و فراط می روند یا تفریط می کنند بی معلوم می شود که بدایت کامله که مصون از افراط و تفریط باشد جزهمیت آل جناب میسرنخوا به شد، الا ماشاء الله ."

ترجیمی: اگر چدوعظ ونصیحت سے بہت سے آدی راوراست پر آمے کین جوضع میں چاہتا تھا وہ کی نے اختیار نہ کی اور وہ افراط وتفریط کے درمیان توسط کی راہ تھی۔ بیتو سط سید صاحب کی صحبت سے فیض یاب ہونے والوں میں پایا جاتا ہے۔ میں بہت کوشش کرتا ہوں کہ توسط کا بیطر یقد مجھ سے تعلیم پانے والے بھی سیکھ لیس بیکن یا تو وہ افراط کی راہ اختیار کر لیتے یا تفریط کرنے جو افراط وتفریط سے محفوظ ہو کرنے گئتے ہیں۔ پس معلوم ہوگیا کامل ہدایت جو افراط وتفریط سے محفوظ ہو

سیدصاحب کی محبت کے بغیر کسی کومیسر نہ ہوگی الا ماشاء اللہ۔ بیشاہ صاحب کی حق اندیشی جق شناسی اور حق کو کی تھی۔

شهادت

شہادت کی تفصیل''سید احمد شہید''میں درج ہوچکی ہے۔ مختلف راوبوں کے مانات کا خلاصہ بدہے:

ا۔ پہلے ان کی پیثانی یا سر پر کولی گلی، جس سے نفیف ساز تم آیا لیکن ڈاڑھی خون سے تر ہوگئی۔

۲۔ پھرآپ کو نظے سردیکھا گیا۔ بندوق بھری ہوئی تھی اور مٹی کوٹ کے فیلے کی طرف کئے، جہال بہ کثرت کولیاں آرہی تھیں۔

۳۔ ایک صاحب نے انہیں مٹی کوٹ کے نالے کے قریب دھانوں کے کھیتوں میں ہندوق چلاتے دیکھا۔

۳۔ ایک اورصاحب نے انہیں اس حالت میں دیکھا کہ رائفل کندھے پڑھی بنگی تلوار ہاتھ میں تھی اور پیشانی سے خون بہدر ہاتھا۔

۵۔ ایک روایت ہے کہ سید صاحب کے متعلق پوچھا کہاں ہیں؟ لوگوں فے اس جوم کی طرف اشارہ کیا جہاں گھسان کا زن تھا۔ مولا نا أدهر جلا گئے۔

یہ تمام روایتی اصل میدانِ جنگ کے متعلق ہیں، جو بالاکوٹ اور مٹی کوٹ کے ٹیلے کے درمیان تھا۔ لیکن شاہ صاحب کی قبروہاں سے دور شرق میں ست بے کے نالے کے پار ہے۔ یقین ہے کہ دوہ دہیں شہید ہوئے۔ معلوم ہوتا ہے کہ لڑتے لڑتے سکھوں کے دباؤ کے تحت میچھے ہٹتے ملے۔ آخرست بے کے نالے سے گذر کر شہادت پائی۔ ارباب بہرام خال کی قبر بھی ساتھ ہی تھی۔ اس لئے خیال ہے کہ وہ بھی مولانا کے ساتھ ہی شہید ہوئے۔

تيسراباب:

سیرصاحب کے بھانج

سيدمحمعلى

سید محمطی بن سید عبدالبخان بن سید محموظان (عم محرم سیداحد شهید) بن سید محمد نور
بن سید محمد مدی بن شاه علم الله سید عبدالبخان کی شادی سید احد شهید کی علاتی بمشیرسیده
نجیه سے بوئی تھی۔ ان سے چار فرزند ہوئے جن میں سب سے بزے سید محموعلی تھے۔
تاریخ ولا دت معلوم نہیں، قیاس میہ ہے کہ سیداحمد شهید سے کم وہیش چار برس بزے ہوں
گے۔ سید عبدالبخان غالبًا لکھنو میں ملازم تھے۔ وہیں شوال ۱۲۱۲ھ (فروری یا مارچ
میں عبدالقاور خال جائس کے مکان واقع اساعیل سی میں فوت ہوئے۔
فاندانی حالات کے متعلق ایک قلمی رسالے میں بیت تاریخ وفات یوں مرقوم ہے:

زرضوان چوشتیم تاریخ فوت ایک میشتا که خوش آمدی مرحبا ۱۲۱۲هه

سفرجج

سید محمطی کی توجہ ابتداء ہی سے تحصیل علم پر مبذول رہی۔ سوائح نگاروں نے انہیں '' فاضلے گراں مائی' لکھا ہے۔ سیدصا حب عموماً انہیں ملا کہہ کر پکارت متے سکھنو کے پہلے سفر ہیں سیدصا حب کے ساتھ نہ جا سکے۔ سیدصا حب جج کے لئے تیار ہوئے تو دوسرے اقرباء کی طرح سیدصا حب نے سیدمجمعلی کو بھی دعوت وی۔

ایک روایت معلوم ہوتا ہے کہ وہ ابتداء میں تنہا تیار ہوئے۔سیدصاحب نے پوچھا کہ بال بچوں کو کیوں ساتھ نہیں لیتے تو انہوں نے عذر کیا۔سیدصاحب نے فر مایا:

" بھائی! شاید موت کاؤر ہے۔ بالفرض والتقد میموت بیش بھی آ جائے تو نہیں سنا کہ مرگ انبوہ جشنے دارد؟ مع ہذا حج وعمرہ کا تواب ملے گا۔ نیز شرف شہادت جس کا جو یا ہر مسلمان ہے۔''

اس کے بعد سید محمر علی نے اہل وعیال کو بھی ساتھ لے لیا۔سفر حج کے بیشتر حالات انہیں کی زبانی ہمیں معلوم ہوئے۔

ٹونک کی زندگی

ہجرت میں شریک سفر نہ ہوئے۔ مید صاحب کی شہادت کے بعد ٹونک میں مقیم ہوگئے تھے۔ نواب وزیرالدولداونچا عہدہ دینا چاہتے تھے، سیدمحم علی نے عذر پیش کردیا اوراپ خرچ کا اندازہ کر کے صرف بچاس رد پے ماہانہ وظیفہ قبول کیا۔ عالبًا ای زمانے میں ''مخزنِ احمدی' ککھی جوسید صاحب کے ابتدائی حالات کے متعلق واحد متند ذریعہ معلومات ہے۔ ابتدا میں قندھاریوں کی چھاؤنی (لکھنو) میں بہت رہے تھے اور سیکڑوں لوگ ان کے معتقد ہو مجھے تھے۔ آپ نے ہمیشہ سادہ فقیرانہ زندگی بسر کی۔ میرڈی الحجہ لوگ ان کے معتقد ہو مجھے تھے۔ آپ نے ہمیشہ سادہ فقیرانہ زندگی بسر کی۔ میرڈی الحجہ معلومات ہے کہ تھے۔ شعر اور نیونک میں ان کی کئی نظمیس ہیں۔ سید ابوالحن علی نے لکھا ہے کہ آز اومنش اور بے تکلف برگ سے۔

ازواح واولار

ان کی پہلی شادی بی بی علیہ بنت سید محر مزال سے ہوئی۔اس بی بی کے بطن سے ایک فرزند سیدنور الہدی تصاور دو بیٹیاں۔ووسری شادی سے تین بیٹے ہوئے اور ایک بیٹی۔ سیدنورالہدیٰ ۱۲۲۲ھ میں پیداہوئے اور ۲۹۹اھ میں ہینے سے وفات پائی۔وہ اور ۲۹۹اھ میں ہینے سے وفات پائی۔وہ او کک میں بخشی الملک بن گئے تھے اور سیدنورالہدیٰ خاں بہادر ہیت جنگ کا خطاب پایا۔ ان کے بڑے فرزندسید عثمان والد کے عہدے پر مامور ہوئے اور چھوٹے فرزندسید محمد کو نظامت کا عہدہ ملا۔سیدعثمان نے شلع فتح پور میں تین گاؤں فرید لیے تھے۔

سيداحدعلى

سید احمد علی بن سید عبدالسجان، سید احمد شهید کے دوسرے بھانج آپ سے عمر میں دو برس بڑے نظم، ذی وقار اور میں دو برس بڑے نظر وی نے لکھا ہے کہ' بہت صالح ، ذی علم ، ذی وقار اور صاحب دین و دیا نت تھے۔' ان کی شادی قاضی سیدرجیم کی صاحبز ادی بی بی زینب سے ہوئی تھی۔ ابتدا میں بمقام کھنو کما زم تھے۔سیدصا حب کے ساتھ مع اہل وعیال جج کیا۔سیدصا حب کے جو پانچ ہزار روپے رسالدار فقیر محمد خال کے پاس بطور امانت جمع تھے وہ سید احمد علی ہی لے کر کلکتہ گئے تھے اور جاتے ہوئے ستر روپے میں شاہ عبدالعزیز اور محدث دہلوی کے ارد و ترجمہ قرآن کا مخطوط خرید لے گئے تھے۔جس کی نقل عبدالتد نے بخرض طباعت حاصل کر لی تھی۔

جہاد

جے سے مراجعت پر غالباً اپنے مشاغل میں مصروف رہے۔سفر بھرت میں سید صاحب کے ساتھ نہ گئے۔ جس زمانے میں سیدصاحب بنیر وسوات کا دورہ کرر ہے تھے تو مجاہدین کا قافلہ لے کر سرحد پنچے اور مختلف جنگوں میں شریک رہے۔ جنگ امب میں اس فوج کے سالار تھے جس نے ستھانہ کی جانب سے پیش قدمی کی تھی۔سید صاحب مشوروں میں بھی انہیں شریک رکھتے تھے۔

عزم چھوکڑہ

نے اسب کے بعد ہزارہ میں پیش قدمی کا فیصلہ ہوا تو سیدصاحب نے مشیروں سے
پوچھا کہ سے امیر لشکر بنایا جائے؟ سیداحم علی بھی اس مجلس میں شریک تھے۔ انہوں نے
خلاف معمول کہا کہ میں بیر خدمت انجام دینے کیلئے تیار ہوں، بشرطیکہ مجھے ساتھیوں کے
انتخاب کی اجازت دی جائے ۔ سوائح نگاروں نے تکھا ہے کہ سیداحم علی نے پہلے کی موقع
پرائیں پیش کش نہ کی تھی اور انہیں بھینے کا سیدصاحب کو خیال بھی نہ تھا۔ وہ خود تیار ہو گئے تو
سیدصاحب نے انہیں اجازت دیدی۔ اپنی سواری کا گھوڑ اان کے حوالے کردیا اور سیداحم
علی کی خواہش کے مطابق وہ سیاہ قبا بھی انہیں ویدی جو سید صاحب نے ہے مردمضان
علی کی خواہش کے مطابق وہ سیاہ قبا بھی انہیں ویدی جو سید صاحب نے ہے مردمضان
میں کے اواخریاؤی قعدہ کے اوائل میں ضلع ہزارہ کی طرف روانہ ہوگئے۔

لتنكر كي تقسيم

عجابدین کے پاس کشتیاں زیادہ نہ تھیں اور پور کے شکر کو دریا کے پارا تار نے ہیں بہت وقت لگا، نیز اندیشہ تھا کہ بحالت عبورہی سکھوں سے تصادم نہ ہو جائے ، اسلے شکر کو تین محصوں میں تقسیم کر کے تین محتلف گھاٹوں سے پارا تر نے کا حکم دیدیا گیا۔ مولوی محمد حسن (رام پورمنہاران) سیدا حرعلی کے مشیر خاص سے عبور دریا کے بعد سیدا حرعلی نے وہ راستہ اختیار کیا جسے آ جکل لستاں کا راستہ کہتے ہیں۔ وہ لساں سے شاہ کوٹ پہنچ اور اس پر قبضہ جماتے ہوئے چھولڑہ میں واغل ہو گئے ایستی سے باہر مانسمرہ کے راستے پر خیمدز ن ہوئے۔ باقی دونوں لشکر بھی محتلف راستوں سے بھولڑہ پہنچ گئے اور انہوں نے سیدا حرملی کے قریب ڈیر سے ڈال دیے۔ جومقامی خوانین ساتھ سے ، انہوں نے ستی میں قیام کیا۔

آغاز جنگ

مؤرخین کا بیان ہے کہ سید صاحب نے لشکر کی روائٹی کے وقت سید احمر علی کو جو ہدایتیں دی تھیں،ان میں سے ایک بیتھی کہ دامن کوہ کو کسی حالت میں بھی نہ چھوڑنا۔
پھولڑہ پنچ تو ساتھیوں کے مشورے سے انہوں نے میدان میں اقامت اختیار کرلی۔
مانسمرہ کی جانب سکھوں کالشکر آنے کی افواہ تھی،اس لئے او نجی جگہ پہرے بٹھادی اور انہیں تاکید کردی کہ سکھ لشکر کو دیکھتے ہیں بندوقیں سرکردیں۔ وو دن اطمینان سے گذر گئے۔ تیسرے دن صبح کی اذان ہوئی ،مجاہدین نماز کی تیاری میں لگ گئے۔ بعض وضو کئے۔ تیسرے دن صبح کی اذان ہوئی ،مجاہدین نماز کی تیاری میں لگ گئے۔ بعض وضو ہم کرکے سنتیں پڑھ رہے تھے، بعض وضو ہی کررہے تھے کہ پہریداروں کی بندوقیں سر کرکے سنتیں پڑھ رہے تھے، بعض وضو ہی کررہے تھے کہ پہریداروں کی بندوقیں سر کرکے سنتیں پڑھ رہے تھے، بعض وضو ہی کررہے تھے کہ پہریداروں کی بندوقیں سر کرکے سنتیں پڑھ رہے تھے، بعض وضو ہی کررہے تھے کہ پہریداروں کی بندوقیں سر کو کیادین کی صدیدان میں پہنچ گئے کے کہا ہوئی بندی کاموقع بھی نیل سکا۔

شهادت

سیداحمی فورا قبلدرو کھڑ ہے ہوکر دعاء ما تکنے گے۔ساتھوں کو بھی پکارکر کہا۔ دعاء ختم نہ ہوئی تھی کہ سکھ سوار سر پر آپنچے۔انہوں نے پہلے ہے ایک منصوبہ تیار کرایا تھا۔ میدان میں پہنچ تی وہ چھوٹی ٹولیوں میں نقسم ہوکر ادھراُ دھر بھر گئے۔ مجاہدین بھی ان کے تعاقب میں منتشر ہوگئے۔ یہ حالت دیکھتے ہی سکھ سوار گھوڑ ہے دوڑا کر اکشے ہوگئے اورانہوں نے زیردست اجتماعی حملے شروع کردیے۔ مجاہدین چوں کہ پیدل سے اس لئے جلد بجتم ہوکر مقابلے پرنہ جم سکے اور بحالت انتشار جا بجا شہید ہوگئے۔
اس لئے جلد بجتم ہوکر مقابلے پرنہ جم سکے اور بحالت انتشار جا بجا شہید ہوگئے۔
لاتے رہے۔سیداحم علی اور میرفیف علی گور کھپوری کیجا تھے۔دونوں اپنی جگہ قائم رہ کر مردا تگی سے لاتے رہے۔ سیداحم علی کا سنگ چھمات خراب ہوگیا اور بندوق سے کام لینے کی کوئی صورت نہ رہی ، چنانچہ وہ نالی پکڑ کر بندوق کو گئے کے طور پر استعمال کرنے گئے۔ آخر

نیزوں، تلواروں اور گولیوں کے زخموں سے چور ہوکر گرگئے۔ای حالت میں وفات پائی۔ راویوں نے بیان کیا ہے کہ ان کے بے شارزخم کیے،لیکن سب زخم جسم کے اسکلے حصہ میں تھے، پچھلے جھے میں خراش تک نہ آئی۔

خبرشهادت

پھواڑہ سے جو قاصد الرائی کی خبر لے کرامب گیا، وہ دریاسے پاراترا تو سیدصاحب
نے دور سے اسے دکھ لیا۔ وہ پہلے میاں عبدالقیوم سے الما۔ وہ چند لمحے زمین پر بیٹھ گئے۔
سیدصاحب نے فرمایا: قاصد کو بلاؤ، وہ کیسی خبرالیا جے سفتے ہی میاں عبدالقیوم زمین پر بیٹھ گئے۔ محبوب بھا نبح کی شہادت کی خبر بن تو بے اختیار آ تھوں سے آنسوجاری ہوگئے۔ اناللہ وانالیہ راجعون پڑھتے ہوئے فرمایا: المحدللہ وہ جومراد لے کرآئے تھے، اللہ تعالی نے انہیں اس مراوکو پہنچایا۔ ایک روایت ہے، قاصد نے جب بیان کیا کہ شمشیر و نیز ہ کے تمام زخم سید احم علی کے چہرے پر گئے تو پھر آنسوجاری ہوگئے۔ آپ المحدللہ المحدللہ کہتے ہوئے دونوں امہوں سے آنسو پو نچھتے جاتے تھے۔ سیداحم علی اگر چہ بھا نجے تھے لیکن سیدصاحب ہمیشہ انہیں 'نہمائی'' کہہ کر پکارتے تھے۔ سیداحم علی اگر چہ بھا نجے تھے لیکن سیدصاحب ہمیشہ انہیں نہمائی'' کہہ کر پکارتے تھے۔ ماموں بھا نجے جی رضاعت کا رشتہ بھی تھا۔ تمام بھانجوں میں آنہیں کے ساتھ سب سے زیادہ محبت تھی۔ خودسید صاحب کا بیان ہے کہ سید احم علی تجی بات کہنے میں مراعات ادب کی بھی پرواہ نہ کرتے تھے۔

اولاو

آپ کا نکاح سیده زینب دختر قاضی سیدرجیم سے ہوا۔ تین فرزند ہوئے :سیدزین العابدین عرف عابد میاں ،سیدمویٰ عرف حسن ثنی (شہید جنگ مایار) اور سید ابوالقاسم -تین صاحبز ادیاں تھیں :سیدہ بتول ،سیدہ حمیر ا،سیدہ صدیقہ۔

سيدموسي

سیدمویٰ جن کا دوسرانام سن مشنی تھا،سیداحمعلی شہید پھولاہ کے بیضے صاحبزادے تھے۔اپنے بھائی سیدابوالقاسم کی طرح یہ بھی سیدصاحب کے ساتھ جہاد کیلئے آئے۔سید ابوالقاسم کوسیدصاحب نے بعض کا موں کیلئے واپس بھیج دیا،سیدمویٰ ساتھ رہے۔ جب ابوالقاسم کوسیدصاحب نے بعض کا موں کیلئے واپس بھیج دیا،سیدمویٰ ساتھ رہے۔ جب سے ان کے والد شہید ہوئے تھے،بہت ممکن اور بے جین رہتے تھے۔ بھی بھی اپنے رفیقوں سے کہتے کہ کی الوائی میں جانے کا اتفاق ہواتو انشاء اللہ میں بھی الوکر شہید ہوں گا۔

مجروحيت

سیدصاحب کواپے شہید بھانجے کے جگر بندکی کیفیت معلوم تھی۔ جنگ ہایار کے دن
سیدموی سواروں میں شامل تھے۔ غازیوں کالشکر تو روسے مایار کی جانب چلا تو سیدصاحب
نے سیدموی سے فرمایا کہ اپنا گھوڑا کسی بھائی کو دے دواور خود ہمارے ساتھ پیادوں میں
شامل ہوجاؤ۔ عرض کیا ، مجھے سواروں ہی میں رہنے دیجیے۔ سیدصاحب نے زیادہ اصرار نہ
کیا۔ سواروں نے درانیوں پر جملہ کیا تو سیدموی دشن کی صفوں میں گھس کرخوب لڑے۔ آخر
زخموں سے دونوں ہاتھ برکارہوگئے۔ کئی زخم سرمیں سکے اور باس ہوکر گرگئے۔

جنگ کے بعد زخیوں اور شہیدوں کی دکھ بھال شروع ہوئی تو خادے خال قد معاری ان کے پاس بہنچا۔خان موصوف کابیان ہے کدایک جگددور سے اللہ اللہ کی آواز آئی۔ بزدیک جاکردیکھا تو سیدموئی تھے۔سر کے زخموں سے اتنا خون بہا تھا کہ ان کی آئی۔سندہوگئی تھیں۔اس حالت میں بھی سب سے پہلے بدیو چھا کہ کون ہواور فتح کس کی ہوئی ؟ خادے خال نے نام بتایا اور ساتھ ہی کہا کہ سید بادشاہ کو خدانے فتح دی۔ یہ سکر بولے : "کمدیلاً"۔

سیدصاحب کے ارشادات

فادے فال انہیں اٹھا کر پہلے مایار کی معجد کے ججرے میں لے گیا پھر دوسرے رخوں کے جمراہ انہیں تو روسیے دیا گیا۔سیدصاحب انہیں دیکھنے گئے تو فر مایا بیفرزند تو فیق اللی سے بوابہاور لکا۔مالک حقیقی کاحق ادا کیا۔پھرسیدموی سے کہا:

"بیٹا! لکھنو میں دیکھا ہوگا کہ لوگ شیطان کے اکسانے سے فاحشہ عورتوں کیلئے یاکسی کے سامنے متکبرانہ کھانس کراڑائی چھٹر لیتے ہیں اوراس میں اپنے ہاتھ یاوں کھو ہیشتے ہیں۔اس طرح ان کاثمرہ دنیا میں حمیت جابلیت اور عقبی میں عذاب ایم ہے۔اللہ کاشکر ہے کہ تمہارے ہاتھ یاوی راہ مولا میں کام آئے۔

اب اگر دیموکہ کوئی شخص خوش رفتار گھوڑ ہے پرسوار اسے دوڑاتا کداتا
ہواجارہا ہے تو بھی بیرصرت دل میں نہ لانا کہ میرے ہاتھ پاؤں سلامت
ہوتے تو میں بھی ایسا ہی کرتا تیمبارے ہاتھ پاؤں بارگاہ ربانی میں قبول
ہوئے خوش نصیب ہیں وہ ہاتھ جورضائے مولا میں قربان ہوں اوراس پاک
ذات کی خاطر کئیں جو جہانوں کی پناہ گاہ ہے۔اگر کسی کوشمشیر بر ہنہ کے ساتھ
بٹابازی کرتے ہوئے ویکھوتو یغم دل میں نہ لانا کہ میرے ہاتھ پاؤں ہوتے تو
بٹابازی کرتے ہوئے ویکھوتو یغم دل میں نہ لانا کہ میرے ہاتھ پاؤں ہوتے تو
ایسے ہی جو ہردکھا تا تیمبارے دست و پاکو بڑار شبہ ملا۔ان زخموں کے عوض میں
تہارے جوارح کو بروردگار تھیم کی بارگاہ میں بہت شاندار اجرملا۔''

شان صبر وتتكيب

سیدموی نے صابراندعرض کیا: میں ہزار زبان سے اللہ کی رضا پر راضی اور شاکر ہوں۔الحمد للہ کہ میری ہستی نیک ترین عبادت میں صرف ہوئی۔خدا اے قبول کرے

ليكن آپ ہے ايك آرزوہ:

'' ہرروزخود تکلیف اٹھا کراپنے جمال مبارک سے آئکھیں منور فر ماتے رہیے۔ میں معذور ہو چکا ہوں،خود آپ کی مجلس میں حاضر نہیں ہوسکتا۔ اس کے سوانہ مجھے کوئی رنج ہے اور نہ حسرت۔''

وفات

سیدموی کوتوروسے پنجتار بھیجے دیا گیا۔علاج با قاعدہ ہوتار ہا، کین ان کے زخم اجھے نہ ہوئے۔ بنجتار سے انہیں وکھاڑہ پنجاد یا گیاجو بلی ظائب و ہوا بہتر تھا۔سیدصا حب کی اہلیہ بھی تیارداری کیلئے ساتھ گئیں۔ شخ حسن علی اور ان کے عزیز بھی ہمراہ تھے۔ جب سید صاحب نے وسط رجب ۱۲۳۲ھ میں ہجرت ثانیہ کا قصد کیا اور پنجتار سے وادی جملہ کی جانب روانہ ہوئے تو دکھاڑہ بیغام بھیج دیا کہ سب لوگ کنگئی پہنچ کر انتظار کریں۔ چنانچہ سیدصا حب کی اہلیہ سیدموی اور دوسرے حضرات پہلے پہنچ گئے۔

مولوی سید جعفرعلی نفتوی لکھتے ہیں کہ میں سیدمویٰ کی خدمت میں حاضر ہواتو وہ بہت ہار تھے اور بار بار امیر المومنین کا پوچھتے تھے۔سیدصا حب نے صرف سیدمویٰ کی خاطر کنگئی میں دودن گزارے۔شدت علالت کے باعث انہیں وہیں چھوڑ دیااور تیسرے دن روانہ ہوگئے۔دوروز بعدسیدمویٰ نے وفات پائی اور کنگئی کی خاک میں ابدی نیند سوئے۔

ان کا نکاح سید محمعلی کی صاحبزادی حدیقہ سے ہوا تھا،لیکن اولا دکوئی نہ ہوئی۔ غالبًا رخصتی بھی نہ ہوئی تھی۔اس سیدہ کا نکاح بعد از اس سید محمد یعقوب سے ہوا۔سید موک کے دو بھائی ابوالقاسم اور سیدزین العابدین ٹونک میں مقیم رہے۔

سيدحميدالدين

بیسیدصاحب کے تیسرے بھانجے تھے،سیداحم علی شہید پھواڑہ سے چھوٹے ادرسید عبدالرمن سے بڑے۔تاریخ ٹونک سے معلوم ہوتا ہے کہ شعر بھی کہتے تھے اور حمیدی ان کا تخلص تھا۔ابندا بی سے سیدصاحب کے ساتھ وابستہ ہوگئے تھے۔سفر جح بیس ساتھ رہے۔سفر بجرت میں بھی ساتھ تھے۔وہی تھے جو مختلف منازل سے سفر کے حالات خطوط کی شکل میں اپنے عزیزوں کو بھیجتے رہے۔ یہ خطوط جن میں سے ایک کے سواسب محفوظ بیں، نہ صرف حالات سفر کا بہترین مرقع ہیں بلکدان میں مقامات سفر کی تمدنی، معاشرتی، اقتصادی اور جغرافیائی تفصیلات بھی نہایت عمرگ سے بیان کی گئی ہیں۔ جب سیدصاحب پنجتار سے خمر تشریف لے گئے تو سید حمید الدین اور بعض دوسرے اصحاب کو کا برخاص کی پنجتار سے خمر تشریف لے گئے تو سید حمید الدین نے اپنے ایک خط میں تکھاتھا کہ میں نے غرض سے ہندوستان بھیج دیا گیا۔سید حمید الدین نے اپنے ایک خط میں تکھاتھا کہ میں نے زبی برادری کے آدمیوں کا ایک الگ بہیلہ بنالیا ہے۔

سیدصاحب کی زندگی میں یا ان کی شہادت کے بعد سید حمید الدین نے ٹو تک میں اقامت اختیار کر لی تھی نواب وزیرالدولہ نے انہیں میر منتی کے عہدے پر مامور کردیا۔ نواب کی نظروں میں وہ اس درجہ معزز ومعتمد سے کہ حکمران خاندان کے بعض افراد نے سرکشی کے بعد فرمانبرداری اختیار کی تو سید حمید الدین ہی کی وساطت سے وہ دربار میں حاضر ہوئے۔۲۰ برجمادی الاولی ۱۲۸۲ھ (۱۱ براکتوبر ۱۸۲۵ء) کوشام کے وقت ٹو تک میں وفات یا گی۔ بڑے ہی صالح ، پر ہیزگار اور باوقار تھے۔ان کے دوفرز ند تھے:سید محمد سعید اور سیدعبد المجید۔ بیٹو تک میں مقیم رہے اور ان کی اولا داب تک وہاں موجود ہے۔

سيدعبدالرحلن

یہ سید صاحب کے سب سے چھوٹے بھا نجے تھے اور خاندان کے لوگ انہیں چھوٹے میاں کہتے تھے۔قرآن مجید حفظ کرلیا تھا،''سید احمد شہید''میں بتایا جاچکا ہے کہ

ایک موقع پر تبجد کے وقت اٹھ کرسورہ کروم کا ایک رکوع حفظ کررہے تھے،سید صاحب نے رکوع سن لیا اور مبح کی نماز کے بعد بتایا کہ مرا قبلوجہ اللّٰد کامضمون یہی ہے۔

سیدصاحب معتمد الدولہ آغامیر کی دعوت پر لکھنؤ گئے تھے تو راتے میں سے سید عبد الرحمٰن کو پہلے بھیج دیا تھا کہ قندھار یوں کی جھاؤنی میں اپنا مکان صاف کراکے فرش بچھا کر رکھیں ، نیز پچھ چنے بھنوالیں نمک مرج اور گڑ بھی لے لیں۔اس سے معلوم ہوتا ہے کہ سیدعبد الرحمٰن نے کھنؤ کے کسی جیش میں ملازمت اختیار کر کی تھی۔

سندهيس اقامت

سیدصاحب کے ساتھ بھرت کی۔ ٹونک بینینے کے بعد انہیں رائے بریلی واپس بھیج
دیا گیا تا کہ سیدصاحب کے اہل وعیال کو لے کرآئیں۔ پھراس دنیا بین سیدصاحب سے
ملاقات کی سعادت نصیب نہ ہوئی۔ سیدعبدالرحمٰن پہلے خاندان کی مستورات کے ساتھ
لونک پہنچہ، پھر سندھ گئے اور سید صاحب کے انتظام کے مطابق بیرکوٹ بین سید
صبغۃ اللہ شاہ کے پاس تھہر گئے، جن کے خاندان نے بعد میں پیر پگاڑ و کے نام سے بمہ کیر
شہرت حاصل کی۔ سید صاحب چا ہتے تھے کہ اہل وعیال اور دوسرے متعلقین کو اپنے
ساتھ سرحد بلوالیں، لیکن درانی سرداروں کی عداوت کے باعث راستے مخدوش ہوگئے
ساتھ سرحد بلوالیں، لیکن درانی سرداروں کی عداوت کے باعث راستے مخدوش ہوگئے
بالاکوٹ بین شہاوت پائی اوراہل وعیال کیلئے آگے جانے کا سوال بی باقی نہ رہا۔

سیدعبدالرحن نے تمام متعلقین کے ساتھ تقریباً دس سال سندھ ہی میں گزارے۔ جس زمانے میں مولوی سیدنصیرالدین دہلوی احیائے تحریک جہاد کے اراد سے جرت کر کے سندھ پہنچے تھے، سیدعبدالرحن وہیں موجود تھے، لیکن پیرکوٹ سے میر ان سندھ کی ملاقات کیلئے حیدرآباد گئے ہوئے تھے۔ مولوی سیدنصیرالدین کو بھی وہیں بلالیا اور میروں سے ان کی ملاقات کرائی۔ بعداز ال مولوی صاحب کی اعانت کیلئے اعلام ناموں پرد شخط کر کے بھیجتے رہے۔ ایک اعلام نا ہے کے آخر میں اپنے قلم سے مندر جد ذیل عبارت کھی:

"از نیاز مند درگاہ ایز دی عبدالرحلٰ بہ خدیات سامات محبان ودوستان

مکتوب الیہم سلام برسد مضمون واحد بود، لہذا علیحدہ ترقیم نمود ہضعیف را بہ ہر
صورت درا ہتمام ایں مہم دانند ووسع وامکان خود باصرف ایں عبادتِ عظمیٰ
گردانند۔(۱)

ترجمه: خداکی درگاہ کے نیاز مندعبدالرحمٰن کی طرف سے ان محبول اور دوستوں کو سلام بینچے جن کے نام یہ اعلام نامہ بھیجا جارہا ہے۔ مضمون واحد تھا، اس لئے علیحدہ نہ لکھا۔ میں بہر حال اس مہم کے اہتمام میں مشغول ہوں، آپ حضرات بھی اپنی ہر قوت وطاقت اس بڑی عبادت یعنی جہاد میں صرف کریں۔

بقيهزندگي

تاریخ ٹو نک ہے معلوم ہوتا ہے کہ میر علی مراد خاں والی خیر پور نے سید عبدالرحمٰن کو اپنے مصاحبوں میں شامل کرلیا تھا۔ ۲ ۱۲۵ھ (۱۸۴۰ء) میں نواب وزیرالدولہ نے انہیں دعوت دے کراپنے پاس بلایا۔ چنانچہ وہ سیدصا حب کے اہل وعیال اور دوسرے متعلقین کے ساتھ سندھ سے تشریف لائے۔ نواب نے انہیں قطب الا مراء بہا در منظفر جنگ کا خطاب دے کراپنے مشیروں اور مصاحبوں میں شامل کرلیا۔ نیز اپنی سیاہ کا خاص جرئیل مقرر کیا۔ باقی عمرانہوں نے اسی عہدے پرگزاری۔

ان کی دوشاد یاں ہوئیں۔ پہلی شادی سیدصاحب کے بڑے بھائی سیدابراہیم کی صاحبز ادہ تھا،سیدعبدالرزاق۔ صاحبز ادہ تھا،سیدعبدالرزاق۔ یہ وار فرعت ہوگیا۔دوسری شادی مولوی سیدحیدرعلی دیوان ٹو تک کی صاحبز ادی جم النساء بیٹم سے ہوئی۔ان کے بطن سے صرف دولز کیاں تھیں۔

⁽¹⁾ اخبار مولوي تعيير الدين مخطوط ص ٢٠ ٤ ـ

سيدمحمر ليعقوب

بیسیدصاحب کے بڑے بھائی سید ابراہیم کے صاحبز ادے تھے۔ ان سے سید صاحب کا دوہرارشتہ تھا، ان کی والدہ سیدہ فاطمہ سیدصاحب کی دوسری اہلیہ سیدہ ولیہ کی حقیقی بہن تھیں، اس لئے سیدصاحب کو یہ بہت عزیز تھے۔ چنانچہ ایک مرتبہ سب کے سامنے فرمایا کہ میں خدااور اس کے رسول برحق کی اطاعت میں عزیزوں اور رشتہ واروں میں سے کی کی خوثی، ناخوثی کو خاطر میں نہلاؤں گا:

''اس وفت مجھے سب سے زیادہ محمد لیعقوب عزیز ہے۔ دنیا کی چیزوں سے وہ جو چاہے لے لے بہکن اللہ اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے احکام بجالانے بیس اس کی بھی رعایت نہ کروں گا۔''

بقيهزندگي

سید صاحب کے ساتھ تج کیئے گئے۔ آپ کے ساتھ جمرت کی ایکن انہیں بھی سید عبدالرحمٰن کے ساتھ ٹو تک سے والی جیج دیا تھا۔ پھر یہ مستورات کے ساتھ سندھ میں رہے۔ وہاں سے ٹو تک والی آئے۔ نواب وزیرالدولہ انہیں بڑا عہدہ دینا چا ہے تھے لیکن قبول نہ کیا۔ پچاس روپ وظیفہ لے لیا۔ ای میں عمر گزار لی۔ نہایت متقی اور پر بیزگار تھے۔ احکام شرعیہ کا بہت لحاظ رکھتے تھے۔ ۱۲۸۷ھ (۱۸۷۰ء) میں فوت بر بیزگار تھے۔ احکام شرعیہ کا بہت لحاظ رکھتے تھے۔ ۱۲۸۷ھ (۱۸۷۰ء) میں وقت موئے۔ ان کے تین صاحبزادے تھے: سید یوسف، سید ایوب اور سید ابراہم سید صاحب کی چھوٹی صاحبزادی سیدہ ہاجرہ کی شادی سید یوسف سے ہوئی تھی۔سیدہ ہاجرہ کا انتقال ۲ ردئے الآخر ۲ ۱۲۵ھ (۲ رنومبر ۱۸۵۹ء) کو بوا۔ سید یوسف نے کرمفر ۱۲۸۱ھ کا انتقال ۲ ردئے الآخر ۲ ۱۲۱ھ (۲ رنومبر ۱۸۵۹ء) کو بوا۔ سید یوسف نے کرمفر ۱۲۸۱ھ (۱۸۲مئی ۱۲۵ء) کو بوعارضۂ فالح تکیہ رائے ہر کی میں وفات پائی۔ ان کی اور ان کے بھائیوں کی اولا دٹو نگ میں موجود ہے۔

چوتھاباب:

مولا نامحمه بوسف سيحلتي

بینائبا شاہ ولی اللہ کے بھائی شاہ اہل اللہ کے پوتے تھے۔ نواب وزیرالدولہ نے
کھا ہے کہ علم میں '' بے مثل' اور عمل میں '' بے بدل' تھے۔ (۱) سیرصاحب راجپوتانہ
سے دبلی پنچ تو انہوں نے مولا ناعبدائی اور مولا ناشاہ اسلیل سے پہلے سیدصاحب سے
بیعت کی اور ترقی کدارج میں وہ مقام حاصل کیا کہ ان دونوں بزرگوں کیلئے باعث رشک
بیعت کی اور ترقی کدارج میں وہ مقام حاصل کیا کہ ان دونوں بزرگوں کیلئے باعث رشک
بیخ رہے۔ ارادت اور خدمت گزاری میں کوئی ان کے برابرنہ پہنچ سکا۔ سیدصاحب نے
دکر وفکر اور مراقبے کے بجائے بندوت، تلوار اور دوسر ہے تھیار چلانے کی مش کا تھم دیا
تاکہ جہاد کا سروسامان ہو سکے تو مولا نامجہ یوسف نے الی مشق بہم پہنچائی کہ ہے بہ ہے
بندوقیں چلاتے تھے اور ایک مرتبہ سرکر کے دوسری مرتبہ جرنے اور سرکر نے میں تین بار
بیک جھیکئے سے زیادہ دیر نگتی تھی۔ (۲)

ابتدائی سے سید صاحب نے اپنے اور جماعت کے تمام انظامی امورمولانا محمد
یوسف کے حوالے کردیے تھے۔ انہیں کے پاس روپیہ جمع ہوتا۔ وہی چیزیں خریدتے۔
انہیں کے پاس حساب کتاب رہتا۔ جب کام بڑھ گیا تو سیدصاحب نے ان کی امداد کیلئے
مقرر کردیے۔ حافظ قرآن تھے۔قضاء حوائج بشریہ کے سواقرآن ہروفت ان کی زبان پر
جاد کی رہتا تھا۔ رمضان شریف میں روزاندا کی مرتبہ قرآن شریف ضرورختم کر لیتے۔ پچھ
حصر تراوی میں سناتے ، باتی تجدمیں پڑھتے۔

(۲) وصا<u>ما</u> حصدوم ما ۱۰۲

(١) وصاياحمدووم ص: ٢٠

شانِ اتقاء

سید صاحب نے ایک مرتبہ انہیں رائے ہریلی سے مظفر گریا سہار نپور گھوڑ الانے کیا جیجا جو کمی شخص نے بطور نذر پیش کیا تھا۔ یہ آئے ، وطن راستے میں پڑتا تھا۔ عام مقامات کی طرح وہاں بھی صرف ایک رات تھہرے۔ اس سے زیادہ قیام نہ کیا۔ اس لئے کہ سید صاحب نے ایک خاص کام کیلئے بھیجا تھا اور اس سلسلے میں دوسرا کام گوارا نہ ہوا۔ عزیزوں نے ہر چند کہا کہ ایک آ دھ دن کے زیادہ قیام میں مضا کھنہیں۔ مولا نانے قبول نہ کیا۔ اس سے بھی جمرت انگیز ترامریہ ہے کہ واپسی میں گھوڑ اساتھ تھا، تا ہم ایک لمحے نہ کیا۔ اس بے سوار نہ ہوئے۔ اس لئے کہ وہ سید صاحب کا تھا اور ان کی کوئی چیز اون کی طوازت کے بغیرائے مصرف میں لانان کی شان انقا کے منافی تھا۔

علالت

جنگ شیدو کے بعد سیدصاحب نے بونیر وسوات کا دورہ شروع کیا تو دوسر بے دفقاء
کی طرح مولا نامجہ یوسف بھی ساتھ ہے۔ ای سفر ہیں وہ بیار ہوئے اور بیاری مسلسل
بڑھتی رہی ۔ عالبًاضیق انفس کا عارضہ تھا۔ شدید علالت کے باوجود نہ یہ سیدصاحب سے
مفارقت پر راضی ہے اور نہ سیدصاحب کو یہ پہند تھا کہ انہیں کی مقام پر چھوڑ جا کیں۔
دورے کے سلسلے ہیں سیدگل باد ثناہ پشاوری نے ایک جمپان سیدصاحب کی سواری کے
دورے کے سلسلے ہیں سیدگل باد ثناہ پشاوری نے ایک جمپان سیدصاحب کی سواری کے
لیے بھیج دیا تھا، آپ نے مولا نامجہ یوسف کو اس میں سوار کرائے ساتھ لے لیا۔ اوچ سے
نگلے ہوئے تیسرادن تھا کہ ایک گاؤں کے لوگوں نے آپ کوروک لیا اور عرض کیا کہ پاس
کے گاؤں والوں سے ہماری شمش چلی آر بی ہے، آپ صلح کرادیں اسیدصاحب وہاں
مسجد میں تھم گئے اور گاؤں والوں کو بلا کر صلح کیلئے بات چیت شروع کردی۔ زیادہ تر
ساتھی قریب کے ایک بورے گاؤں والوں کو بلا کر صلح کیلئے بات چیت شروع کردی۔ زیادہ تر
ساتھی قریب کے ایک بورے گاؤں میں سے علے سیدصاحب مسجد بی ہیں تھے کہ میاں

وین محد نے حاضر ہو کرعرض کیا: مولوی محد بوسف کو بڑی تکلیف ہے۔سید صاحب نے فرمایا، بارگاہ اللی میں وعاء سیجیے اور ان کی خدمت میں حاضر رہیے۔

ملاح

مجمع میں پاس کے گاؤں کا بھی آدمی تھا۔وہ بولا کہ جارے ہاں تین آدمی طبابت کرتے ہیں،مولوی صاحب کوان کے پاس بھیج دیجے۔سیدصاحب نے فرمایا: تندری اور بیاری اللہ تعالیٰ کے ہاتھ میں ہے۔لوگوں نے علاج کی ضرورت پرزیادہ زوردیا تو سیدصاحب نے اجازت دے دی، چارآدمی مولانا محمد یوسف کی چارپائی اٹھا کر پاس کے گاؤں میں لے گئے۔میاں عبدالقیوم بھی ساتھ تھے۔

وفات

راویوں کابیان ہے کہ گاؤں پہنچ کر بیاری شدید صورت اختیار کر گئی۔ مولانانے اس حالت میں کہا کہ میراول تان بیاز کھانے کو چاہتا ہے اور تھوڑ اساد ہی بھی لاؤ۔ تیار داروں نے عرض کیا کہ مجوزی تیار ہے، وہی کھانی جا ہے۔ مولانا نے فرمایا کہ میں تو صرف نان یاز کھاؤں گا۔

ولىالله

سیدرستم علی چلگانوی گھوڑے پر سوار ہوکر بید در دناک خبر سید صاحب کے پاس لائے۔آپ اس وفت تک مسجد میں تشریف فرمانتھ۔ سنتے ہی کہااناللہ واناالیہ راجعوں۔ اور تھوڑی دیر خاموش رہے۔ پھر فرمایا:

بددنیابری تخت جکدے،جو یہاں سے ثابت قدم گیاد ای خوش نعیب ہے۔

یداشارہ تھا کہ مولا تا محمد بوسف اس دنیا سے تابت قدم گئے۔ سید صاحب دیر تک مولا نا کے اوصاف بیان فرماتے رہے۔ اہل محملت میں سے شخ ضیاء الدین، شخ صلاح الدین، شخ عبدالحکیم، شخ ناصر الدین اور حافظ عبدالرحمٰن کومیت لانے کیلئے بھیج دیا۔ اہل سرحد مردوں کوعموماً ان قبرستانوں میں فن کرنا افضل بچھتے تھے، جہاں کسی مشہور بزرگ کی قبرہ وتی ۔ جس گاؤں میں مولا نافوت ہوئے، وہاں بھی ایک بزرگ فن تھے، اس لئے اہل دہ نے عرض کیا کہ مولا ناکو میں فن کرنے کی اجازت دیجے۔ سید صاحب نے فرمایا کہ مارے مولوی صاحب خودولی اللہ تھے، ان کی میت یہاں لے آئے۔

لشكراسلام كےقطب

قاضی احمد الله میرتفی نے عشل وکفن کا انتظام کیا۔سید صاحب نے نماز جنازہ پڑھائی۔پھرمولا ناشاہ اسمنعیل سے مخاطب ہوکر فربایا:

"پوسف جی اس السکر اسلام کے قطب تھے۔ آج الشکر قطب سے خالی موگیا۔ دہ برے قانع ، زاہد ، متوکل ، متقیم الحال اور متقل مزاج تھے۔"

بدالفاظ زبان برجاری تصاور آنکھوں سے آنسو بہدر ہے تھے۔سیدصاحب اورشاہ اسلامی اسلامی کا دیاری میں ہواجو اسلامی کا دیاری میں ہواجو اوج اور بھانڈ اکے درمیان تھا، نام معلوم نہیں۔

كمال ديانت

نواب وزیرالدولہ نے لکھا ہے کہ غلے اور دومری چیزوں کی تقییم مولانا محمد بوسف کے ہاتھ میں تھی۔ انہوں نے ایک بیانہ مقرر کرلیا تھا،سب کو ای کے مطابق غلہ دیتے۔سید صاحب بھی متنیٰ نہ تھے۔ بھی بھی آپ مولانا سے مزاحاً فرماتے کہ مجھے زیادہ کیوں نہ دیا۔ مولانا ادب سے عرض کرتے بھی ہوتو پوری جنس خدمت والا میں حاضر کردیتا ہوں بھر مجھے حضرت نے تقیم کا تھی دے دکھا ہے، اس میں مساوات کوزک نہیں کرسکتا۔

نواب موصوف بی کابیان ہے کہ ایک مرتبہ سیدصاحب عشاء کی نماز اواکر کے ماکل بہاستراحت تھے کہ پینے کیلئے پانی مانگا۔ مولا نا یوسف کوزہ مجرکرلائے۔ اس اثناء ہیں سید صاحب کی آئے ملک گئی۔ مولانا کوزہ ہاتھ ہیں لیے چپ چاپ کھڑے رہے کہ جب بیدار ہوں گئے، پانی چیش کروں گا۔ آخر شب سیدصاحب بیدار ہوئے تو بانی حاضر کیا۔ رات بحر کھڑے رہ کرارادت کا جوشاندار نمونہ پیش کیا تھا، سیدصاحب نے اس کی تحسین فرمائی اور مولانا کیلئے دعاء کی۔

"وصایا" میں ایک جگه مرقوم ہے کہ مولانا محمد یوسف اشرف رفقاء اور اکرم خدما سے تھے۔امانت میں بے مثل اور دیانت میں بے بدل۔(۱)

⁽¹⁾ زياد وتر حالات تواب وزيرالدولد كوصايات ماخوذ بين ما حظه وحصد ومصن الاتالال

بإنجوال باب:

سيدا بومحدا ورسيدا بوالحسن

سیدابومحمر نصیر آبادی سید صاحب کی زوجہ اولی بی بی زہرہ کے خالہ زاد بھائی تھے۔

بوے خوب صورت اور خوش روجوان تھے۔لباس بھی بہت عمرہ پہنتے تھے۔ برسوں اکھنو میں ملازم رہے۔اہل اللہ کمیدان میں بٹالین میں جمعدار تھے۔سپہ گری کے علاوہ مختلف فنون میں طاق تھے۔گوڑ ہے کی سواری میں مہارت تامہ حاصل تھی، کھا نابہت اچھالگاتے تھے۔آ مکینہ سامنے رکھ کر اپنا خط خود بنا لیتے ۔ کپڑ نے قطع کرنے اور سینے میں بھی کمال حاصل تھا۔ بمیشہ پر تکلف لباس پہنتے تھے،اس لئے ہر مجمع میں ممتاز ہوتے۔سید صاحب حاصل تھا۔ بمیشہ پر تکلف لباس پہنتے تھے،اس لئے ہر مجمع میں ممتاز ہوتے۔سید صاحب کون ہیں؟ سید صاحب جواب دیتے، یہ ہمارے بھائی ہیں۔عادت تریف کے مطابق کون ہیں؟ سید صاحب جواب دیتے، یہ ہمارے بھائی ہیں۔عادت تریف کے مطابق کون ہیں؟ سید صاحب جواب دیتے، یہ ہمارے بھائی ہیں۔عادت تریف کے مطابق کون ہیں؟ سید صاحب جواب دیتے، یہ ہمارے بھائی ہیں۔عادت تریف کے مطابق کون ہیں معلوم تھا کہ سید ابوم کی طبیعت کی نبج پرچل رہی ہاوروہ کہاں بہنچ کر اصلاح کی طرح معلوم تھا کہ سید ابوم کی طبیعت کی نبج پرچل رہی ہاوروہ کہاں بہنچ کر اصلاح کی محمد من معلوم تھا کہ سید ابوم کی طبیعت کی نبج پرچل رہی ہاوروہ کہاں بہنچ کر اصلاح کی میں منزلیس طے کر لے گی۔

ببجزت

سیدصاحب نے بجرت میں قدم رکھا تو دوسرے عزیزوں کی طرح بی بھی رخصتی طلاقات کیلئے تکیشریف پنچے اور رائے بریلی سے دلمو تک ساتھ گئے۔ لوگوں نے پوچھا، سید ابو محمد! کیا آپ بھی جہاد کیلئے جارہے ہیں؟ جواب دیانہیں، ہم تو صرف میاں

صاحب(۱) کوچھوڑنے آئے ہیں۔ دلمو کے ایک دومنزل آھے چل کر پوچھا تو پھریکی جواب دیا۔ ٹونک میں بیسوال دہرایا گیا تو فرمایا: اجمیر قریب ہے، خیال ہے کہ اسے بھی دیکھتے چلیں۔ اجمیر سے بھی واپس نہ ہوئے تو سب پرآشکارا ہوا کہ گھرسے معیت کا پختہ ارادہ کرکے آئے تھے۔

بيعت ورضا

مختلف جنگوں میں شریک رہے۔ سرحد کنچنے کے بعد تمام تکلفات چھوڑ دیے ہے۔ بالک معمولی لباس پہنتے اور مجاہدین میں جورسد تقسیم ہوتی ای پر قناعت کرتے۔ جنگ مایار کیلئے تو روسے روانہ ہونے گئے تو گھوڑا تھان پر چھوڑ کر سیدصاحب کی ضدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کیا:

''میاں صاحب! جس روز سے میں آ کے ساتھ گھر سے نکلا ہوں، یہی سمجھتار ہاکہ آپ میرے عزیز اور رشتہ دار ہیں۔ آپ کوعروج ہوگا تو میر سے لیے بھی ترقی اور بہبود کی صورت نکلے گی، ندمیری معیت خدا کے واسطے تھی، نہ تو اب جان کر کسی لڑائی میں شامل ہوا۔ اب اس فاسد خیال سے تو بہر تا ہوں۔ اس فرض سے حاضر ہوا ہوں کہ آپ رضائے باری تعالیٰ کے لیے جہاد کی بیعت لیں اور دعاء کریں کہ خدا اس نیت اور اراد سے پر ٹابت قدم رکھے۔

عزم جنگ

سید صاحب نے بیعت لی اور دعاء کی موقع کی نزاکت اور سید ابو محمد کی شانِ اخلاص دیکھ کر حاضرین کی آنکھوں میں آنسو جاری ہوگئے۔ دعاء کے بعد ابو محمد نے سید صاحب سے مصافحہ کیا۔ پلٹ کر گھوڑے کی طرف چلے توان کی آنکھوں سے بھی آنسو بہہ

⁽١) فاندان كتمام لوگسيدما حبكوميال صاحب بي كتب تقد

رہے تھے۔ بہم اللہ کہہ کردایاں پاؤل رکاب میں رکھاسوار ہوتے ہی پکار کر کہا:
''جھائیو! گواہ رہنا، اب تک ہم شان دشوکت اورخواہش نفس کیلئے کھوڑے پرسوار ہوتے تھے۔ خدا کا اس میں کچھواسطہ نہ تھا۔ اب ہم محض خدا کی خوشنودی اور رضا مندی کیلئے بہنیت جہاد سوار ہوتے ہیں۔''

شهادت

یہ بھی سواروں میں شامل تھے۔ چھیداان کے گھر کا آدمی تھا،اس کا بیان ہے کہ جب درانیوں نے ہمارے سواروں پر یورش کی اور غازی پیچھے ہے تو سیدابو جم بھی ان میں شامل تھے۔وہ کچھدور جا چھے تھے کہ میں درانی سواروں میں گھر گیا۔ گھرا کر انہیں مدد کے کئے آواز دی۔میری اُ واز سنتے ہی باگ موڑی اور آکر درانی سواروں سے لڑنے لگے۔ میں موقع پاکرنکل گیا۔وہ لڑتے رہے، میں نے دور سے دیکھا کہ انہوں نے دودرانی سواروں کو مارگرایا۔ پھرخود بھی زخم کھا کر گھوڑے سے گر گئے۔

قاضی گل احمد الدین پوٹھوواری شیوہ سے توروجارے تھے۔ مایار میں تو پوں کی آواز سی تو چاہا کہ جنگ میں شریک ہوں۔ میدان میں پنچ تو درانی شکست کھا کرجا چکے تھے اور مولوی مظہر علی کو شہدا کی لاشیں اور مجروعین اٹھوانے کا حکم ہو چکا تھا۔ سید صاحب نے قاضی کل کو بھی ای کام پر مامور کر دیا۔ وہ فرماتے ہیں، میں نے ایک جگہ سید ابو محمد کو ذخی پڑے ہوئے دیکھا۔ زخم ایسے کاری تھے کہ ان کے ہوش وجواس بجانہ تھے۔ میں نے کئی باران کے کان میں پکار کر کہا: سید ابو محمد ! حضرت امیر المونین کو فتح حاصل ہوئی۔ وہ ہونٹ چاٹ رہے تھے اور آہتہ آ ہت المحمد لللہ المحمد لللہ کہدرے تھے۔ مجھے کچھ جواب نہ دیا۔ میں نے ساتھیوں کو آواز دی کہ آئیوں اٹھاؤ۔ کمبل میں رکھ کراٹھایا۔ کچھ دیر بحد جاں بحق ہو گئے۔ ساتھیوں کو آواز دی کہ آئیوں اٹھاؤ۔ کمبل میں رکھ کراٹھایا۔ کچھ دیر بحد جاں بحق ہو گئے۔

اخلاق وعادات اور كمالات

سید ابومحد کے متعلق ایک خاص ذریعے سے مزید معلومات حاصل ہوئیں جو ذیل میں درج ہیں:

''آ کھ، ناک، رنگ، روپ میں بہت خوب صورت تھے۔ گھوڑا پھیرنے میں آنہیں خاص کمال حاصل تھا۔ا کثر ثیخ زمین میں گاڑ لیتے۔اس پرکوڑی رکھ دیتے۔ گھوڑا تیز دوڑا تے ہوئے اوگی سے کوڑی اڑادیتے اور ثیخ بدستور گڑی رہتی۔ کیاا مکان کہاوگی میخ میں لگے۔اپٹے گھوڑے کی ماکش خود کرتے۔''

اہل اللہ کمیدان ان کی بہت عزت کرتے تھے۔خاص کام انہیں سے لیتے۔انہوں نے ایک نہایت نفیس درباری لباس تیار کرار کھا تھا، جسے وقا فو قا پہنتے۔لوگ بچھتے کہ سوؤیر ھ سوسے کم کے ملازم نہ ہوں گے۔ عام لباس یہ تھا: سر پر بگڑی، چست انگر کھا، غوارہ دار پاجامہ۔ پندرہ ہیں وضع کی پگڑی باندھ کتھے تھے۔اپنا خط خود بناتے ۔ ٹھوڑی پر سے ڈاڑھی کتر کرصاف کرتے۔ نہ بھی حقہ بیا، نہ کوئی نشہ استعال کیا۔نہ بھی کسی نامحرم عورت کی طرف نگاہ اٹھائی۔نہ منہیات بشرعیہ کے نزویک گئے۔کسی کے ہاتھ کا کھا تا پہند نہ تھا۔خود کھا نا پکانے کے ماہر استاد تھے۔اپنا کپڑا خود قطع کرتے ۔ لیاف، رضائی، مرزئی میں روئی ایسی عمر گی ہے ہر تے کہ ندافوں کی عقل دنگ رہ جاتی ۔مزاج میں لطافت میں روئی ایسی عمر گی ہے ہر تے کہ ندافوں کی عقل دنگ رہ جاتی ۔مزاج میں لطافت بہت زیادہ تھی۔

جذبه خدمت

سیدصاحب کی معیت اختیار کر لینے کے بعد یہ کیفیت ہوگئ تھی کہ غریب امیر ، اپنے بیگانے ، کسی کی تیار داری یا خدمت گزاری میں نہ ننگ وعارتھی اور نہ کراہت و کا ہلی کے روا دار ہوتے ۔ اپنے ہاتھ سے کھانا کھلاتے ، اپنے ہاتھ سے بول و براز اٹھاتے۔ بڑے خوش اخلاق اور بیشرانسان تھے۔ بھی کسی سے جھگڑا نہ کیا، بے ضرورت بھی کہیں نہ گئے۔ سبید ابوالحسن

سید ابوالحن بھی نصیر آباد ہی کے تھے۔ جماعت میں انہیں عمو ما دادا ابوالحن کہاجا تا تھا۔ یہ بھی پہلے اہل اللہ کی بٹالین میں جمعدار تھے۔سیدصاحب کے ساتھ بجرت کی لیکن اجمیر تک کسی کو خبر نہ ہونے دی کہ بجرت کا پختہ ادادہ کر کے نکلے ہیں۔ یہ جماعت خاص کے علمدار تھے۔ نشان صبغۃ اللّٰد انہیں کے پاس رہتا تھا۔ جنگ بالا کوٹ میں سیدصاحب مسجد بالاسے نکلے تھے تھ دادا ابوالحن اپنے نشان کے ساتھ آگے آگے تھے۔ مسجد ذریریں سے نکلی حصوں پر جملہ کیا تھا تو تھوڑی دور چل کر ایک جگہ تو قف فر مایا تھا۔ دادا ابوالحن اس دفت بھی ساتھ تھے۔ پھر معلوم نہ ہوسکا کہ میدانِ جنگ کے کس جھے میں اور کس حال میں شہادت یائی۔ اس میں شہبیں کہ بالاکوٹ ہی میں شہبید ہوئے۔

چھٹاباب:

قاضى محرحبان

قاضی سیدمحمد حبان کا نزاغور بند (سرحد آزاد) کے باشندے تھے۔ بہت بڑے عالم، ذکی الطبع، غیوراورخوش تقریر تھے۔منظورہ میں ہے: ''مردا شجع واورع صاحب علم ونافع فہم کامل وطبع تیز'' قرجمہ: حدرجہ شجاع وتقی ان کاعلم نفع بخش تھا فہم کامل اورطبیعت تیز۔

عالبًا ہندوستان میں رہ کرعلم عاصل کیا اور کچھ دت کلکتہ کے سی درسے میں مدرس بھی دہے۔ سیدصا حب سے عرض بھی رہے۔ سیدصا حب سے عرض کیا کہ میں آسودہ حال ہوں۔ رہ پید پید خدانے دے رکھا ہے۔ کسی دنیوی چیزی احتیاح نہیں ۔ صرف خدا کیلئے آیا ہوں۔ دل پراٹر ہوگا تو بیعت کروں گاور ندوالیس چلا جاؤں گا۔ سیدصا حب نے فرمایا کہ بیعت کیجے، اللہ تعالی برکت دے گا۔ بیعت ومراقبہ کے بعد قاضی صاحب نے کہا کہ میں اندھا تھا، آئکھیں کھل گئیں۔ کافر تھا، مسلمان ہوگیا۔ سید صاحب نے فرمایا: یوں نہ کھے۔ یہ کہے کہ پہلے ہی ہے مسلمان تھا، اب ایمان تی کرگیا۔

قاضى القصناة

اس وفت سے قاضی صاحب نے وابستگی اختیار کی ، پھر آخری دم تک سیدصا حب کا ساتھ نہ چھوڑا۔ سادات ستھانہ اورار باب بہرام خاں تہ کا لی کے سواسر حد کے کسی شخص کو سیدصا حب کی معیت میں عظمت ورفعت کا وہ مقام نصیب نہ ہوا جس پر قاضی حبان فائز رہے۔ بیعت اقامت شریعت کے بعد سید صاحب نے انہیں قاضی القصاۃ مقرر فرمادیا تھا۔ چنانچہ فوداکیک کمتوب میں جو بیعت مذکورہ ہوجانے کے بعد لکھا گیاتھا، فرمایا: ''درہمیں جمع کی فاضل جلیل متدین رامنصب قضا سپر دہ شدد دستار قضا برسم اوبست شدومنشور تضاب اودادہ شد۔''(ا)

قرجمه: ای جمع (جمع برائه اقامت شریت) میں ایک بلندم رتبہ عالم اور دیندار کومنصب قضاسونب دیا گیا۔ دستار قضا اس کے سر پر باندھ دی گئی اور قضا کا فرمان اس کے حوالے کر دیا گیا۔

صلح وجنگ اوراصلاح وارشاد کے سلط میں مختلف تدبیروں پرغوروخوض کیلئے جتنی مجلسی منعقد ہوئیں،ان سب میں سید حبان شریک ہوتے تھے۔ چوں کہ وہ مقامی آ دی تھے اوراپنے ہاں کے حالات کو بہتر سجھتے تھے،اس لئے ان کے مشورے بہت مفید وکار آ مد سمجھے جاتے تھے۔سروار پابندہ خال تنولی کی ضد کے باعث جنگ کی نوبت آئی اور وہ تکست کھا کر دریا کے پار چلا گیا تو قاضی حبان ہی کی کوشش سے سلح ہوئی تھی۔قاضی صاحب نے پابندہ خال سے ملاقات کے بعدایی بے باکانہ گفتگوکی کہ خان کیلئے فوراضلح کر لینے کے سواکوئی جارہ نہ رہا۔

أيك لطيفه

قاضی صاحب فصلِ خصومات کیلئے علاقے کا دورہ کرتے رہتے تھے۔ سرحدی لوگ دریا میں نظے نہانے مکے عادی ہو چکے تھے۔ انہیں بہت منع کیا کیکن حسب دلخواہ اثر نہ ہوا۔ مجوراً حکم دے دیا گیا کہ جو خص نہا تا ہوا پکڑا جائے ،اسے جرمانے کی سزادی جائے۔ایک مرتبہ قاضی صاحب دورہ کرتے ہوئے کھتبل پہنچے۔ وہاں ایک شخص نے تواضعاً قاضی صاحب کو تازہ مجھلی کھلائی۔اتفاق سے دوسرے یا تیسرے روز وہ نگا نہا تا ہوا پکڑا گیا۔

مقدمہ قاضی صاحب کے روبروپیش ہوا۔ جرم ثابت ہوگیا اور قاضی صاحب نے حسب ضابط آٹھ آنے جرمانہ کردیا۔ اس نے جوش اور غصے کے عالم میں کہا کہ قاضی صاحب جرمانہ تو کردیالین مجھلی معاف نہ کروں گا۔ قاضی صاحب نے مسکرا کرفر مایا کہ مجھلی ہفتم ہو چکی۔ ابتہاری معافی کی احتیاج نہیں، جوضابطہ جاری ہے، وہ کن نہیں سکتا۔

ابل رسوم كامعامله

ایک مرتبہ قاضی صاحب نے وعظ فر مایا کہ جوائل رسوم خدااور رسول کے احکام کے خلاف باپ دادا کی ریت پر چلتے ہیں ، شریعت کا تھم سنایا جائے تو نہیں مانتے ، وہ لوگ عملاً کا فر ہیں ، اس لئے کہ اپنی ریت کو خدا اور رسول کے احکام پر ترجیح دیتے ہیں۔ قاضی صاحب کا ایک شاگر داس پر سخت پابند ہو گیا۔ ایک روز اس نے کسی ملا سے گفتگو کرتے ہوئے یہی بات وہرائی تو اس نے کہا کہ قاضی حبان جموث کہتا ہے۔ یہ بات قاضی صاحب تک پینی تو انہوں نے اس محض کو بلاکر واقعہ دریافت کیا۔ وہ بولا میں نے کسی صاحب میں ویکھا ہے کہ الل رسوم کا فرنہیں۔ بوچھا کس کتاب میں ؟ جواب دیا "مدیتہ لمصلی" میں ۔ قاضی صاحب یہ سنتے ہی جوش میں آگئے۔ اسے زمین پر گراکر گھونسوں سے مارنے گئے کہ نامعقول اپڑ ھتا ہے مدیۃ لمصلی اور مسئلہ بیان کرتا ہے اہل رسوم کا؟ جن کتابوں میں اہل رسوم کے مسائل ہیں وہ تو تیرے استادوں نے بھی نہ پڑھی ہوں جن کتابوں میں اہل رسوم کے مسائل ہیں وہ تو تیرے استادوں نے بھی نہ پڑھی ہوں گی۔ تو بہ کراور کلمہ پڑھو ور نہ کتھے جھوڑ نے کانہیں۔ چنا نے کھم پڑھواکر جھوڑا۔

انتظام عشر

پایندہ خال سے سیدصاحب کی سلم ہوئی تو قاضی حبان نے خودیہ بجویز بیش کی کہ بیثاور کے میدانی علاقے کے لوگ خود سے ہورہ جیں، جنہوں نے بہ طیب خاطر ادا عِشر کا اقرار کیا تھا دہ بھی بے پروانظر آتے ہیں۔ اگر کچھ لٹکر میرے ہمراہ کردیں تو وعظ وقعیت سے

سارے علاقے کو پابندِشر بیت بنادوں۔جونہ مانیں ان سے برور منواؤں۔شرط بیہ کہ مجھے اس کشکر کا امیر بناکر پورے اختیارات دے دیجے۔اس کئے کہ میں مقامی آ دمی ہوں، این بھم وطنوں کی طبیعت ومزاج کو خوب جانتا ہوں۔ ایبا آ دمی یہاں اور کوئی نہیں۔ شاہ استعمل کو میرے ساتھ کرویجے تا کہ اگر مجھ سے نادانستہ کوئی فعل خدا اور رسول کی رضا کے خلاف سرز د ہونے گئے تو شاہ صاحب مجھے روک دیں۔سید صاحب نے بیرائے قبول فرمائی۔ تقریباً چھسوسوار اور پیادے قاضی صاحب کے ہمراہ کردیے۔ان کے ساتھ نقارہ، شری اور چھز نبور کیں بھی تھیں۔ رخصت کرتے وقت تھیجت فرمائی کہ بیضد اور رسول کا کام شری اور چھز نبور کیں بھی تھیں۔ رخصت کرتے وقت تھیجت فرمائی کہ بیضد اور رسول کا کام ہے، ایسانہ ہو کہ اس میں نفس کی خواہش دنیل ہو جائے۔

قاضی صاحب نے پورے علاقے کا دورہ کیا اور ہر جگہ شرکی احکام نافذ کردیے۔ کھلا بٹ کے لوگوں نے مخالفت کا ارادہ کیا، لیکن قاضی صاحب ایسے انداز میں بستی پہنچ گئے کہ کسی کو مخالفت کی جرائت نہ ہوئی۔ اس سلسلے میں جن مقامات کا ذکر آیا ہے، ان کے نام یہ ہیں: ٹوپی، شیخ جانا، نواکلئی، کھلا بٹ، مرغز، شنڈ کوئی، کدا، بی پیر، ہنڈ، زیدہ، شیوہ، چارگئی، سدم، گھڑیالی، اسلمعیلہ، امان زئی۔

مردان پر بورش

ہوتی اور مردان کرکیس نے مخالفت کا فیصلہ کرلیا اور وہ اپنے بھائی کو نائب بناکر خود بیٹا ور چلا گیا تا کہ درانیوں سے مدد لے کر قاضی حبان کا مقابلہ کرے۔قاضی صاحب کو بیحالات معلوم ہوئے تو شاہ اسلمیل، رسالدار عبدالحمید خان وغیرہ سے مشورہ کیا کہ کیا کرنا چاہیے۔سب نے رائے دی کہ پیچے ہمنا مناسب نہیں،مردان پر بورش کرنی چاہیے۔ جو کچھے پیش آئے گا، دیکھا جائے گا۔قاضی صاحب اس پر بہت خوش ہوئے اور قصبے پر بورش کا فیصلہ کرلیا۔

شهادت

انہوں نے جنگی مسلحوں کو پیش نظر رکھ کراقدام کیا اور قصبہ قبضے میں آگیا۔ صرف کرھی میں تھوڑی ہو تی رہی۔ قاضی صاحب نے گڑھی پر بقضہ جمانے کی تدبیر یہ سوچی کہ خانہ بہ خانہ ہوتے ہوئے اس کے پاس پہنی جا کیں۔ تھوڑے ہے آدی ان کے ساتھ تھے۔ پیش قدی کرتے ہوئے ایک گلی سامنے آگی۔ گڑھی سے گولیاں بارش کی طرح آربی تھیں اور گلی سے گذر کر دوسرے مکان میں پہنچنا مشکل تھا، لیکن قاضی صاحب فرح آربی تھیں اور گلی سے گذر کر دوسرے مکان میں پہنچنا مشکل تھا، لیکن قاضی صاحب نے رکنا پسند نہ کیا۔ ان کے چار پانچی ساتھی سلامت نکل گئے۔ پھرایک شخص کے گولی گئی وہ شہید ہو گئے۔ آخر قاضی صاحب وہ شہید ہو گیا۔ دوسرے ریلے میں بھی پچھ آدمی ہی تھے آدمی ہی گئے مشہید ہو گئے۔ آخر قاضی صاحب صاحب خود چند آدمیوں کے ساتھ آگے ہوسے۔ تمام ساتھی ہی گئے گئیکن قاضی صاحب کے سرمیں گولی گئی اور شہادت یائی۔

ف مدكن

گڑھی کی تنجیر تک پی خبر مسلخا اخفا میں رکھی گئی۔قاضی حبان علم وضل،غیرت وجمیت ویں اور زہدوتقوئی میں سرحد کے بگانہ فرد ہے۔اعلائے کلمۃ اللہ میں ان کی جرائت و بیبا کی بے مشل تھی۔تمام غازیوں کوان کی شہادت سے خت صدمہ پہنچا۔سیدصا حب بھی اس واقعے پر بہت متالم ہوئے۔مولا ناشاہ آلمعیل چا جے تھے کہ آئیس مردان ہی میں وفن کردیں،لیکن قاضی حبان کے بھائی راضی نہ ہوئے اور وہ اپنے قومی دستور کے مطابق میت کوچاریائی پرڈال کروطن لے گئے۔

ساتوال باب:

مولوی خیرالدین شیرکوٹی

ان کے ابتدائی حالات معلوم نہ ہوسکے۔نہ یہ پتا چل سکا کہ مولوی صاحب نے کب سیدصاحب سے بیعت کی اور کس قافلے میں سرحد پنچے۔ان کا نام پہلے پہل اس فوج کے سلسلے میں نہ کور ہے جومولا ناشاہ آسلیل کی سرکردگی میں بسکھ لسبی (ہزارہ) بھیجی گئ تھی۔ مسللے میں نہ کور ہے جومولا ناشاہ آسلیل کی سرکردگی میں بسکھ لسبی کے ایماء پر غازی سکھ لشکرگاہ ومسکلہ پر شبخون میں یہ میاں محمد تقیم کے نائب ومشیر سے انہیں کے ایماء پر غازی سکھوں سے باہر آئے شخصاور مولوی صاحب خودا کے جھوٹی کی جماعت کیساتھ اس وقت تک سکھوں کا مقابلہ کرتے رہے، جب تک غازیوں کا بڑا حصہ باہر نکل کر محفوظ مقام پر نہ پہنچ گیا۔

مختلف خدمات

سید صاحب خمر سے واپس ہوکر پنجتار میں مقیم ہوئے تو مولوی خبر الدین کاؤیرہ فصیل سے باہر تھا۔ پھر سید صاحب کے تھم سے انہوں نے اور مولوی احمد الله نا گیوری نے قاسم خیل میں گولے ڈھالنے کا کارخانہ بنالیا تھا، جہاں ڈیڑھ سیر، تین سیر اور پانچ سیر کے گولے تیار ہوتے تھے۔ خادے خال جزل دنتو راکوسو به سرحد میر چڑ ھالایا تھا اور سیرکے گولے تیار ہوتے تھے۔ خادے خال جزل دنتو راکوسو به سرحد میں کو کھا کہ گفتگو اس کا ارادہ بیتھا کہ خود پنجتار پر جمله کرے۔ پھر واپس ہوگیا اور سید صاحب کو کھا کہ گفتگو کیلئے اپناوکیل بھیج دیجئے سید صاحب نے مولوی خیر الدین ہی کو بھیجا تھا۔ موصوف نے دنتو رائے تمام اعتر اضات کا شافی جواب دیا۔ دنتو رائے تھر پولا، مولوی صاحب نے بھی ونتو رائے تمام اعتر اضات کا شافی جواب دیا۔ دنتو رائے تھر پر ناز ہوگا، ہمارا بھروسا الله پر دنتو رائے تھر پر ناز ہوگا، ہمارا بھروسا الله پر دائی کا انداز اختیار کرلیا۔ آخر میں کہددیا، آپ کو اپنے لفکر پر ناز ہوگا، ہمارا بھروسا الله پر

ہے۔اس کالشکرسب سے زیادہ قوی ہے۔

سفارت

سیدصاحب نے ایک مرتبہ پایندہ خال کی طلب پر بھی پھھ آدمی تفتگو کیلئے بھیجے تھے ان میں بھی مولوی صاحب شامل تھے۔ پھر سکھوں کی طرف سے پیغام مصالحت موصول ہونے پرمولوی صاحب موصوف اور حاجی بہادر شاہ خال کو بھیجا تھا۔انہوں نے دوبارہ دنتو رااورا یلارڈ ہے مفصل بات چیت کی۔

اس سلیط بین علمی اور ذہبی مسئلے بھی زیر بحث آئے۔ مولوی صاحب نے نہایت ایجھے انداز بیں مسائل کی توضیح فر مائی اور تاریخی حوالوں سے اپنے موقف کو درست ٹابت کیا۔ سکھ سرحدی رؤسا سے عمواً گھوڑے اور باز خراج میں وصول کیا کرتے تھے۔ دنتو را نے حسن تدبیر سے کام لیتے ہوئے کہا کہ ہم خلیفہ صاحب (۱) کو تحفہ بھیج ہیں، خلیفہ صاحب بھی ہمیں تحفہ بھیجیں۔ مثلاً گھوڑا مرحمت فرما کیں۔ مولوی صاحب نے فی الفور صاحب بھی ہمیں تحفہ بھی ہمیں موجوب سے فقیر عزیز الدین بھی اس موقع پر جواب دیا کہ گھوڑاتو کیا، ہم گدھا بھی نہیں دے سکتے۔ فقیر عزیز الدین بھی اس موقع پر موجود تھے، انہوں نے بھی کہا کہ جرنیل صاحب کی تجویز مان لینے میں مضا نقد نہیں۔ مولوی صاحب نے جواب دیا:

''جو فخص ملک و جا گیر کا طلب گار ہو، اس کیلئے یہ چیز اچھی ہوگی، جس کی نیت اعلاء کلمۃ اللہ ہے، اس کیلئے یہ بہت بری ہے۔ دوسری نیکیوں کی طرح جہاد بھی فساونیت سے باعث و بال بن جا تا ہے۔ اس نیت میں ہم اور حضرت کیساں ہیں۔ فرق صرف یہ ہے کہ ہم نے آئیں امام بنایا ہے اور امام کے بغیر جہاد ہیں افساد کا باعث ہے، اس کے انکار جہاد ہیں افساد کا باعث ہے، اس کے انکار

⁽۱) جامت مجابرین بس سید صاحب "امیر الموشین" کے لقب سے یاد کیے جاتے تھے ۔ سکھ انہیں " خلیف" کہ کر کار تے تھاد سرحدی باشندے عوناً "سید بادشاہ" کہتے تھے۔

میں ہم اور حضرت برابر ہیں۔''

مولوی صاحب کی دالیسی پرسیدصاحب نے جب بیسنا کہ ہم گھوڑا کیا گدھا بھی نہ دیں گے تو خوش ہوکر فر مایا:اسی غرض سے میں نے آپ کو بھیجا تھا۔ دوسر مے محص سے ایسی صاف گوئی ممکن نہتھی۔

جيفتر بائى اورلوندخوڑ

نخ امب کے بعد مولوی صاحب کو چھتر بائی کی حکومت دے دی گئی تھی اور وہ عازیوں کی ایک جماعت کے ساتھ گڑھی ہیں رہتے تھے۔سفارت کے سلیے میں وہ پنجتار پہنچ۔ فنج پشاور کے بعد سید صاحب انہیں قاضی القضاۃ بنانا چا ہتے تھے۔مولوی صاحب نے معذرت کردی۔سید صاحب نے اصرار فر مایا تو عرض کیا: مجھے گنہگار نہ بنا کیں۔ میں یہ فعدمت قبول نہ کروں گا۔عدالتی اور مالی کاموں میں اکثر لوگوں کے پاؤں بھسل جاتے ہیں۔سید صاحب نے انہیں لوند خوڑ ،کاٹ لنگ اور ڈاگئی کے انتظامات سونپ دیے۔وہ قدھاری اور ہندوستانی غازیوں کی ایک جماعت کے ساتھے لوند خوڑ میں مقیم ہوئے۔

ذالش وتدبر

سلطان محمہ خال اور بعض دوسرے خوانین کی سازش ہے بھرے ہوئے مجاہدین پر بے خبری میں حملے ہوئے اور وہ جا بجاشہید کردیے گئے تو مولوی خیرالدین کو بھی اپنے ہال دفا گل انظامات کرنے پڑے۔ انہوں نے لوند خوڑ کے تمام خوانین کواکھا کیا اور کہا کہ میں حضرت کے حکم سے جارہا ہول۔ اپنے میں سے ایک مخص کو میرے ساتھ بھیج دیجئے۔ بڑے اطمینان سے روانہ ہوئے۔ ابتدا میں رخ پنجتار کی طرف تھا۔ پھر اس لئے پڑان غاربینی گئے کہ پورے میدانی علاقے میں سے میح سلامت گذر کر پنجتار بنچنامکن نہ تھا اور خان پڑان غاربی خارب کے اسلامت گذر کر پنجتار بنچنامکن نہ تھا اور خان پڑان غاربے کا خاص پراعتا د تھا۔ کے مدت وہال گزاری۔ پھر سیدصا حب کے تھم سے داستے کے غارکے اضاص پراعتا د تھا۔ کے مدت وہال گزاری۔ پھر سیدصا حب کے تھم سے داستے کے خارکے اضاص پراعتا د تھا۔

بعض خوا نین نے مہمان داری اور حفاظت کا ذمہ افھایا۔ یوں مولوی صاحب اپنے غاز بول کے ساتھ پنجتار پنجے۔ خالفت کی آگ اس طرح یکا کیک جا بجا بحر کر اٹھی تھی کہ کی غازی کا زندہ رہنا ایک غیر معمولی واقعہ مجھا جا تا تھا۔ مولوی صاحب کمی مت تک مرکز مجاہدین سے منقطع رہنے کے باوجود سلامت رہے، اس لئے جب وہ پنجتار آئے تو آئیس اور ان کی جماعت کے لوگوں کو 'زندہ شہید' کالقب ملا۔

هجرت ثانيه سے اختلاف

سیدصاحب نے سلطان محمد خال اور خوا نین کی خوفنا ک سازش کے دروانگیز نتائج
د کھی کر بنجنارکو جھوڑ جانے کا فیصلہ کرلیا تو مختلف اصحاب نے اختلاف کیا تھا۔ ان میں ایک مولوی خیر الدین شیر کوئی بھی ہے۔ مولوی صاحب نے عرض کیا کہ موجودہ مرکز چھوڑ نا قرین مصلحت نہیں کسی دومرے علاقے میں جائیں محمیق پہلے بہی امر مشتبہ ہے کہ دہاں کے لوگ ہمارے قیام پر راضی ہوں گے۔ پھر انہیں وعظ وقسیحت سے قیام جہاد پر آمادہ کرنے میں عمر بسر ہوجائے گی۔ سیدصاحب نے ترک پنجنار کے اسباب میں گردو پیش کی مخالفت کے علاوہ یہ بھی فر مایا کہ فتح خال پنجناری کے متعلق بھی تو اطمینان نہیں، جس کی کہ خالفت کے علاوہ یہ بھی فر مایا کہ فتح خال پنجناری کے متعلق بھی تو اطمینان نہیں، جس کی مخالفت کے علاوہ یہ بھی خراف میں اس سے فشکر کا سروسا مان کرلوں گا ور میدانی علاقے کے تمام مخالفوں کو راو راست پر لے آفل گا۔ سیدصاحب نے بعض اور میدانی علاقے کے تمام مخالفوں کو راو راست پر لے آفل گا۔ سیدصاحب نے بعض قوی تر دلائل کی بناء پر بیرائے قول نے فرمائی۔

تنخواه دارسياه كى تجويز

بعض دوسرے اصحاب کی طرح مولوی خیرالدین کی بھی رائے تھی کے رضا کارانہ جہاد پر انحصار کے بجائے سپاہی ملازم رکھے جائیں، کیوں کہ اس طرح بظاہر جہاد کے کامیاب ہونے کی امیر نہیں۔ سید صاحب بوجوہ اس کے بھی خلاف تھے، کیوں کہ تخواہ دارسیاہ کے اسیع مصارف درکار تھے، جو بڑے علاقے پر قبضہ جمائے بغیر مہیانہ ہو سکتے تھے۔ اوائل حال میں سید صاحب سی طریقہ اختیار نہ کر سکتے تھے۔ نیز ان کی خواہش تھی کہ مسلمانوں میں دنیوی فوائد سے قطع نظر کرتے ہوئے جہاد کا جذبہ عام ہوجائے اور وہ رضا کا رانہ تمام واجبات اواکریں، جوشریت کی طرف سے ان پرعائد ہیں۔

بھوگڑ منگ اور بالا کوٹ

سیدصاحب پنجتارے راج دواری پنچتو دوسرے امور کے علاوہ درہ ہموگر منگ کی حفاظت ضروری تھی، جہال سے سکھ اندر آ کر مختلف وادیوں پر ترکتازیں کرتے رہے تھے۔ چنانچہ آپ نے چارسوغازیوں کی ایک جماعت شاہ اسلیمل کی سرکر دگی میں در بے کی حفاظت کیلئے مامور کر دی مولوی خیرالدین کوشاہ صاحب کا نائب بنایا۔ شاہ صاحب خود بچاس غازیوں کے ساتھ بچوں میں تھہر گئے جودر ہے چندمیل شال میں ہے۔ مولوی ضاحب مولوی خیرالدین کوساڑھے تین سوغازیوں کے ساتھ بھوگر منگ بھیج دیا۔ مولوی صاحب نے حفاظت کا انتظام اس اعلی بیانے پر بہنچادیا کہ سکھوں کوشنکیاری کی گڑھی ہے جودر سے خواظت کا انتظام اس اعلی بیانے پر بہنچادیا کہ سکھوں کوشنکیاری کی گڑھی ہے جودر سے کے باہر قریب ہی واقع ہے، نگلنے کا حوصلہ نہ رہا۔ در سے کے اندر کی تمام بستیاں مطمئن ہوگئیں۔

سكصول بربهيبت

 غازیوں کے ساتھ درے پر پہنچ محنے۔اس اثناء میں سکھ چھپ چھپا کر گڑھی کے اندر چلے محنے نے بندھیرا ہو گیا تو مولوی صاحب واپس ہوئے۔

مظفرآ بإد

جب کشمیر کی طرف برجے کا فیصلہ ہواتو سیدصاحب نے مختلف خوا نین کی درخواست پر مولانا شاہ اسلیم کو تھم ویا کہ آپ بالاکوٹ چلے جا کیں۔مولوی خیرالدین نے کا رشعبان ۱۲۳۹ھ (۱۰ افروری ۱۸۳۱ء) کو ظهر کے وقت بھوگر منگ سے کوچ کیا اور پہاڑی رائے سے بالاکوٹ پہنچ گئے۔دوروز بعدمولانا واروہوئے تو خوا نین نے اصرار کیا کہ مظفر آباد کھر بھیجا جائے۔مولانا نے مولوی خیرالدین کو بھیجنا چاہا۔انہوں نے معذرت کردی اور عرض کیا کہ ان خوا نین کا پہنے اعتبار نہیں، خداجانے کہاں مصیبت میں الجھا کر الگ ہوجا کیں،البتہ مظفر آباد کا خان زبروست خال ججھے پانچ برارروپے نقد دے تو اپنے جیش کا سازوسا مان درست کر کے یہ خدمت انجام دوں گا۔مولانا نے تین سو غازیوں کا لئکر تین آ دمیوں کی مشتر کہ سالاری میں بھیج ویا۔سیدصاحب کو یہ حالات معلوم ہوئ تو مولوی خیرالدین کو کھا کہ آپ کا عذر معقول تھا انیکن اب ضرور جانا چاہے،اس لئے کہ جولوگ گئے جیں مباوا اُن کی ناواقلی کے باعث نقصان پہنچ اور کاروبارِ جہاد میں خلل جولوگ گئے۔مولوی خیرالدین بھی ویں آ دی باعث نقصان پہنچ اور کاروبارِ جہاد میں خلل برے۔ چنانچ مولوی خیرالدین بھی ویں آ دی لئر مظفر آباد بھی گئے۔

عزم بالاكوث

مظفر آبادین کم مولوی صاحب نے زبردست خال سے ضروری سازوسامان کا مطالبہ کیا۔اس اثناء میں عازیوں نے جھاؤنی پر قبضہ کرلیا اور صرف گڑھی سکھوں کے قبضے میں رہ گئی۔زبردست خال نے تفیہ سکھوں سے جوڑتو ڈشروع کردیے اور کام کا بہترین وقت تذبذب میں ضائع کردیا۔اس اثناء میں مظفر آباد کی گڑھی کی سکھفوج کیلئے بہت بوی کک کی آمد کا حال معلوم ہوا۔ زبردست خال ہے سنتے ہی ضروری سامان لے کر بھا گئے تیارہوگیا۔ مولوی صاحب کو بھی لوٹا پڑا۔ وہ بہاڑوں کے بیج میں سے روانہ ہوئے۔ راستہ بہت دشوارگز ارتقا، ای حالت میں مولوی صاحب کو بخت بخارآ گیا۔ ساتھ ہی خبر ملی کہ بالاکوٹ میں سیدصاحب اور سکھ فوج کے درمیان جنگ ہونے والی ہے۔ ہر غازی چاہتا تھا کہ جلد سے جلد بالاکوٹ بینی جائے۔ مولوی صاحب جل نہ سکتے تھے۔ انہیں چاہتا تھا کہ جلد سے جلد بالاکوٹ بینی جائے۔ مولوی صاحب جل نہ سکتے تھے۔ انہیں چاہتا تھا کہ جلد سے جلد بالاکوٹ بینی جائے اور پائی کی قبح کو وہ اس جگہ دریا کے مشرقی کنارے پر نمود ار ہوئے، جہاں بالاکوٹ جانے آنے کیلئے بل بنا ہوا تھا۔ یہ بل ایک رات پہلے پر میں معرف سے قوڑ دیا گیا تھا۔ غازی درہ کا غان کی طرف پلئے کہ کی گھاٹ سے دریا عبور کریں۔ جب وہ ان بہاڑوں پر پہنچ جو قصبہ بالاکوٹ کے شال میں ہیں تو معلوم دریا عبور کریں۔ جب وہ ان بہاڑوں پر پہنچ جو قصبہ بالاکوٹ کے شال میں ہیں تو معلوم ہوا کہ جنگ شم ہوگئ، بہت سے غازی شہادت با گئے، جو باقی بیجو وہ وہ اپس جارے تھے۔

بهتكول مين قيام

مولوی صاحب باقی خازیوں کے ہمراہ نندھیاڑ پنچ، جہاں سیدصاحب کی اہلیہ اور بعض دوسری خوا تین تھیں، بھکول کے اخوند محمد ارم شم کھا کر کہدر ہے تھے کہ میں نے سید صاحب کو زندہ دیکھا ہے۔ جس زمانے میں شخ ولی محمد ایک جماعت کے ساتھ خونہ (سوات) چلے گئے تھے تا کہ سیدصاحب کی اہلیہ کو سندھ بھینے کی کوئی تدبیر کریں، مولوی خیرالدین اور بعض دوسرے مجاہدین نندھیاڑ ہی میں رہے۔ پھر شخ ولی محمد کو فتح خال پنجتاری بداصرارا پے ہاں کے گیا۔ کچھ مدت بعد شخ موصوف نے مولوی خیرالدین اور دوسرے اصحاب کو بھی بلالیا۔ مولوی صاحب نندھیاڑ سے روانہ ہوگئے لیکن بھکول پر پہنچ دوسرے اصحاب کو بھی بلالیا۔ مولوی صاحب نندھیاڑ سے روانہ ہوگئے لیکن بھکول پر پہنچ کہ جہال سے ایکار کر دیا۔ وہ کہتے تھے کہ جہال کے اور پنجتار جانے سے انکار کر دیا۔ وہ کہتے تھے کہ جہال سے امیر المونین نے ہجرت کی میں دہاں نہ جاؤں گا۔ دوسرے اخوند محمد ادم کے بیانات

ے انہیں یقین ہوگیا تھا کہ سیدصا حب زندہ ہیں۔ تین نوسلم ان کے ساتھ تھے عبداللہ عبد اللہ عبداللہ عبداللہ عبداللہ کے اور عبدالرجم ۔ بعد کے حالات معلوم نہ ہو سکے، نہ مولوی صاحب کا ذکر کسی سلسلے ہیں آیا۔ ایک روایت ہے معلوم ہوتا ہے کہ وطن واپس آ گئے تھے۔ اس حقیقت میں کوئی شبہ نہیں کہ مولوی صاحب کاعلم وضل ، جنگ و تد ہیر اور سیاست و ملک داری میں بہت بلند یا بیتھا۔ علم دین میں بھی ان کارتبہ بہت او نچا تھا۔ راویوں نے لکھا ہے کہ بہت بہت او نچا تھا۔ راویوں نے لکھا ہے کہ بہت ہی متین ، دوراندیش اور طیم تھے۔

میں نے مولانا مظہرالدین شیرکوئی مرحوم ایڈیٹر''الامان''کی زندگی میں مولوی خیرالدین کے خاندان کے حالات دریافت کرنے میں کوئی دقیقہ سعی اٹھا ندر کھا، کیکن افسوس کہ چھمعلوم نہ ہوسکا۔مولانا مظہرالدین کی وفات کے بعد تفحص ودریافت کا کوئی ذریعہ ہی باقی ندر ہا۔

مظفرآ باديء واليسي كاراسته

مظفر آباد سے والیسی کا راستہ سید نظام حسن شاہ کاظمی کی تحقیق کے مطابق بی تھا نہ مظفر آباد سے گوسیّداں اور کنڈا ہوتے ہوئے نورسیری، وہاں سے دریائے کشن گنگا کوعبور کرکے گھنڈی پیراں، پیڑسچا اور کہوڑی، کہوڑی سے سید پور، پھرنورگی جہاں سے بالاکوٹ دس گیارہ میل تھا۔ گڑھی حبیب اللّد خاں کا راستہ کہل تھا، جواس لئے اختیار نہ کیا کہادھر سکھوں کا لشکر موجود تھا۔

آ مھواں باب:

يثنخ بلند بخت اورشخ على محمه

شیخ بلند بخت سردھنہ میں سیدصاحب سے ملے تھے۔جب آپ نے میرٹھ مظفر نگر اورسہار نپور کا دورہ کیا تھا۔ یہ غالبًا سردھند میں ملازم تھے۔ وہیں بیعت کی۔ بیعت کے بعد ہمہ تن تحریک جہاد کیلئے وقف ہو گئے اور مجاہدین کی جماعت میں شامل ہوکر سرحد ہنچے۔اینے اوصاف ومحاس اور فنون سیہ گری میں مہارت کے باعث ابتدا ہی ہے متاز اصحاب میں محسوب تھے۔سیدصاحب نے قیام خمر کے زمانے میں غازیوں سے قواعداور عاند ماری کرانی شروع کی تھی تو مختلف جیشوں کو مختلف اصحاب کی تربیت میں دے ویا تھا۔ ان اصحاب میں سے ایک شخ بلند بخت بھی تھے۔معلوم ہوتا ہے کہ اہم کام بھی انہیں سونے جاتے تھے،جس ہےان کی عظمت کا پیتہ چاتا ہے۔ چنانچہ جب اطلاع ملی کہ پایندہ خال تنولی فرار کے اضطراب میں زنبور کیں چھوڑ کیا ہے اور انہیں لانے کیلئے ایک تجرب کارآ دی کو بھیجنا ضروری ہو گیا تو بیکام شخ بلند بخت ہی کے حوالے ہوا۔انہوں نے شیخ محمد اسحاق مورکھپوری کواس مہم پر بھیجنا جا ہاتو سیرجعفرعلی نفوی نے بیکام اینے ذے لے ایا۔کوہ کنیرڑی کی جنگ میں بھی شریک تھے۔اسب کے محصورین نے جب حوالگی کا فیصلہ کیا تو ان سے تفتگو کیلئے بھی شخ موصوف بی کو بھیجا گیا تھا۔

صبرواستقامت

فتح اسب کے بعد چھتر ہائی کا محاصرہ طول پکر گیااور اس غرض کیلئے توبوں کی

ضرورت پیش آئی تو سیدصاحب نے شیخ موصوف ہی کو پچیس تمیں غازیوں کے ساتھ پنجتار بھیجاتھا کہ وہاں سے بہ تفاظت تو پیں لے آئیں۔ غیر حاضری میں ان کے چھوٹے بھائی شیخ علی محد شہید ہو گئے۔ شیخ بلند بخت کوسفر مراجعت میں بمقام ستھانہ بیٹم آگیز خبر ملی تو اس پیر صبر سے فرمایا: الجمد لللہ تمارا بھائی جو مراد لے کر آیا تھادہ پوری ہوگئی۔ ہم سب کواللہ تعالیٰ شہادت نصیب کرے۔

قلعه دارامب

ہزارہ کی جانب پیش قدمی کا معاملہ التواہی پڑگیا تو سیدصا حب شاہ آسلیل کوامب میں چھوڑ کرخود پنجتار ہے آئے تھے اور آس پاس کے میدانی علاقے کا دورہ شروع کر دیاتھا۔ گڑھی امان زئی میں معلوم ہوا کہ سردار پشاور اور احمد خال کمال زئی بہت بڑی فوج لے کر جنگ کیلئے آر ہے ہیں ،سیدصا حب گڑھی امان زئی سے تو روتشریف لے گئے اور مولانا کو بھی امب سے بلالیا۔ شاہ صاحب نے محاذ امب کے تمام انتظامات شخ بلند بخت کے حوالے کردیے۔ ہجرتے ثانیہ تک شخ کا پوراوقت امب ہی میں گذر ااور وہ جنگ مایاریا فتح پشاور میں شریک نہ ہوئے۔

شانءعز نيت

سلطان محمد خال اور بعض دوسرے خوانین کی سازش سے مجاہدین میدانی علاقے کے مختلف دیہات میں شہید کیے جاچکے تو سیدصاحب نے پنجتار کوچھوڑ دینے کا فیصلہ کرلیا۔اس وقت تک شخ بلند بخت غازیوں کی ایک جماعت کے ساتھ المب ہی میں مقیم تحصاوران کے ماتحت حافظ مصطفیٰ کا ندھلوی کوچھٹر بائی میں متعین کردیا گیا تھا۔مجاہدین کی دردناک شہادت نے مفسدوں کے حوصلے بہت بڑھادیے تھے،اس لئے کہ انہیں کی دردناک شہادت نے مفسدوں کے حوصلے بہت بڑھادیے تھے،اس لئے کہ انہیں یقین تھا،مجاہدین کوالدادندل سکے گی۔ چنانچہ ایک مرتبہ سردار پایندہ خال نے شخ بلند بخت

کو پیغام بھیجا کہ ہمارے تمام مقامات خالی کردو، ورند جنگ کیلئے تیار ہوجاؤ۔ شخ کے پاس اگر چہ بہت کم عازی تھے، لیکن بے تو قف جواب دیا: ہم امیر المومنین کے تکم کے بغیر ایک الحج زمین بھی نہیں چھوڑ سکتے۔ جنگ کرنا جا ہے ہوتو شوق ہے کردیکھو۔

جب شخ کواطلاع ملی کہ پایندہ خال کھ بّل بائی کے گھاٹ سے اپنالشکر دریا کے غربی
کنارے پر پہنچار ہا ہے اور وہ ضرور اسب پر حملہ کرے گا تو انہوں نے عازیوں کو حکم دیدیا
کہ بہتی کے جو مکانات منہدم ہیں، ان میں سے لکڑیاں ٹکال کر گڑھی میں لے آؤتا کہ
لکڑی کیلئے باہر جانے کی ضرورت ندرہے۔ دوتو پیں گڑھی کے اس طرف گاڑدیں، جدهر
سے حملے کا خطرہ تھا۔ ایک توپ مشرق میں اور دوسری مغرب میں نصب کرادی۔ پایندہ
خال نے حملہ کیا، لیکن وہ مشرق سمت کی خار بندی کے ہیرونی طقے میں ایک مرتبہ آگ
نگانے کے سوا کچھند کرسکا۔ ہیں بچیس روز کی ش کش کے بعدنا کام لوث گیا۔

نصب العين

ایک روزکر پلیاں کی جانب سے جوسکھوں کے زیرافتد ارتھا، آواز آئی کہ کسی معتبر آدی کو دریا پرجیجو، ایک ضروری پیغام پہنچانا ہے۔ شیخ بلند بخت نے اللی بخش رام پوری، حسن خال ساکن زبانیہ اور آدی کو بھیجا۔ معلوم ہوا کہ سکھ سردار کی طرف سے ایک خط آیا ہے۔ اس کا مضمون بیتھا کہ غازی بہت بہادر، امانت دار اور نمک حلال جیں۔ انہوں نے شجاعت کاحق ادا کر دیا۔ گڑھی میں پایندہ خال کا جوسامان ہے، وہ اسے دے انہوں نے شجاعت کاحق ادا کر دیا۔ گڑھی میں پایندہ خال کا جوسامان ہے، وہ اسے دے دیا جائے اور غازی ہمارے پاس جلے آئیں۔ ہم انہیں عزت کی ملاز متیں دیں مے۔ شیخ دیا جواب میں کہلا بھیجا:

"ان سردارے کہدوکہ ہم امیر المونین کے تالع فرمان ہیں۔ حضرت کے تالی مردارے کہدوکہ ہم امیر المونین کے تالع فرمان ہیں۔ حضرت کے تک کہ کہ کام نہیں کر سکتے۔ اپنے وطنوں سے اس لئے آئے ہیں کہ کا فروں سے جنگ کریں، نہ ملک جا ہے ہیں نہ مال۔ ہمیں نوکری سے کیا

غرض۔ ہماری موت اور زندگی امیر المونین کے ساتھ ہے۔ قادر ذوالجلال کے سواکس نے نہیں ڈرتے۔ پایندہ خال اور اس کے نشکر کی کیا حقیقت ہے؟ اگر رنجیت سکھی کھی اپنالشکر لے کرآئے تو ندڈریں ہے، ڈرخوف مرگ سے پیدا ہوتا ہے، ہم اپنی جانیں خدا کے رائے میں قربان کر پھے ہیں۔ پس ہمیں کیا ڈر ہے، ہم اپنی جانیں خدا کے رائے میں آربان کر پھے ہیں۔ پس ہمیں کیا ڈر ہے؟ ہماری طرف سے کہ دینا کہ پھر جمیں ایسا پیغام نہ جھیجا جائے۔"

سیدصاحب نے ہجرتِ نانیہ کا فیصلہ کرلیا تو سید اکبرشاہ ستھانوی کولکھا کہ ہمارے عازیوں کولمہ ایس پہنچاد یاجائے۔ چنانچے سیدا کبرشاہ نے دونوں گڑھیاں خالی کرائیں اور پورا مال واسباب نکال کر ستھانہ لے گئے۔ جب سے پابندہ خال نے حملہ کیا تھا۔ غازیوں میں سے صرف ایک آ دمی شہید ہوااور تین آ دمیوں کے خفیف زخم مال نامیں پابندہ خال کے ساٹھ آ دمی مقتول اور بینزالیس مجروح ہوئے۔

شهادت

شخ بلند بخت نے عشرہ میں تھہر کر اپنے تمام غازیوں کو اکھا کیا، پھر ہر ڈھیری
(وادی چملہ) میں سیّد صاحب سے جالے۔ بعد کے حالات تفصیلاً معلوم نہیں۔ صرف
اتنامعلوم ہے کہ بالاکوٹ میں شہادت پائی۔ سیّد جعفر علی نقوی نے شہادت کی کیفیت سے
بتائی ہے کہ میدانِ جنگ میں چچھے مڑکر دیکھا تو جھ سے تقریباً آٹھ قدم کے فاصلے پر
ابراہیم خال تھے۔ میں ان کی طرف جانے لگا تو دائیں جانب سے شخ بلند بخت آتے
ہوئے ملے مجھ سے بوچھا کہاں جاتے ہو؟ عرض کیا، ابراہیم خال کے پاس۔ وہ چپ
چاپ بائیں طرف چلے گئے اور وہیں گولی کھا کر جام شہادت نوش کیا۔

معلوم ہوتا ہے کہ جب میدانِ جنگ میں سید صاحب کی گمشدگی کا آوازہ بلند ہوااور فدائی ان کی تلاش میں سراسیمہ وار پھرنے گئے تو شخ بلند بخت اپنی حفاظت سے بالکل بے پرواہوکر تلاش میں نکل پڑے۔اسی حالت میں گولی گئی۔

يشخ على محمد

یے ٹی بلند بخت کے تقیق بھائی تھے۔ عالبًا مجاہدین کے پہلے قافلے میں شریک نہ سے، اس لئے کہ ابتدائی فہرست میں ان کا نام نظر نہیں آتا، لیکن اس میں شبہیں کہ اپنے کہ ابتدائی فہرست میں ان کا نام نظر نہیں آتا، لیکن اس میں شبہیں کہ اپنے معائی کی طرح بہت مختاط، دور اندلیش اور ہمنت وریقے۔ چنا نچہ سیّدصا حب نے جب سرداران پشاور کے آخری فیصلے کا پختہ ارادہ کرلیا۔ اور اس سلسلے میں خبر سے اوتمان زئی پر حملے کا منصوبہ تیارہ وگیا تو ایک جماعت درہ خیبر کی ست بھیجی گئی تھی تا کہ دہاں کے لوگوں کو اٹھا کر بیثا ور پر اقدام کیلئے آبادہ کر دیا جائے۔ اس جماعت میں سیّداح معلی، مولوی مظہر علی عظیم آبادی، شخ دل محمد بھاتی وغیرہ اکابر کے علاوہ شخ علی محمد بھی شریک تھے۔

عام خدمات

معلوم ہوتا ہے کہ شخ موصوف پشتو بے تعلقت ہو لتے تھے۔ چنا نچہ جب غازی زیرہ میں رات کے وقت یار محمد خال در آئی کے شکر پر حملے کیلئے نگلے تھے اور راستے میں انھیں یار محمد خال کے سواد ان کئے تھے تو ان کے تمام سوالات کا جواب پشتو میں شخ علی محمد ہی نے دیا تھا۔ شخ موصوف ان منتخب سواروں میں بھی شریک تھے، جنھیں مولا نا شاہ اسلمیل نے سید صاحب اور پایندہ خال کی ملاقات کے وقت مقام ملاقات سے قریب ایک خفیہ جگہ کھڑا کر دیا تھا۔

شهاوت

فنح اسب کے بعد پایندہ خال کا ایک لشکر چھتر بائی کی گڑھی میں محصور ہو گیا تھا جو امب سے تقریباً چیمیل شال میں دریا کے کنار ہے واقع تھی۔غازیوں نے گڑھی کا محاصرہ کرلیا تھا،لیکن تو پوں کے بغیراس کی تنخیر مشکل نظراً تی تھی۔مولا نا شاہ اسلعیل محاصر فوج کے سالار تھے۔انھوں نے گڑھی کی دیواروں پر چڑھنے کیلئے سٹرھیاں بنوالی تھیں اور دریا

کی سمت چھوڈ کر گڑھی کے اردگر واپنے مختلف جیش مورچوں میں بٹھا دیے تھے۔تو پیس

لانے کیلئے آدمی پنجتار چلے گئے تھے۔ان کے انتظار میں حملہ ملتوی ہو چکا تھا۔اس اثناء
میں حافظ عبد اللطیف کوخدا جانے کیا سوجھی کہ مولا نا کواطلاع دیے بغیر بطورخود مورچوں
میں چرچھر کرغازیوں سے کہد یا ،عمر کے بعد گڑھی پر جملہ ہوگا۔انھیں غالبًا خیال تھا کہ
میں چرچھر کرغازیوں سے کہد یا ،عمر کے بعد گڑھی پر جملہ ہوگا۔انھیں غالبًا خیال تھا کہ
ایک بجاہدانہ اقدام سے گڑھی فتح ہو سکتی ہے اور تو پوں کے انتظار میں معطل بیٹھ رہنے کی
کوئی ضرورت نہیں ہے۔

غازیوں نے سمجھا کہ پیغام خودمولا ناشاہ اسمعیل نے دیا ہوگا۔ چنانچہ وہ عمری نماز سے فارغ ہوتے ہی اچا بک گڑھی پر حملہ آور ہوئے۔ حافظ عبد اللطیف خود تکبیر کہتے ہوئے سب سے آگے تھے۔ حملہ آورکانوں اورخار بندیوں سے گذرتے ہوئے گڑھی کی دیواروں کے پاس پہنچ گئے۔ اس وقت سٹرھیوں کی ضرورت پڑی جومولا نا کے خیمے میں تھیں۔ سٹرھیاں ما تگی گئیں تو مولا نا جیران کے جملہ کس سے تھم سے ہوا۔ موقع بحث کا نہ تھا۔ مولا نا نے سٹرھیاں دے دیں انھیں دیواروں سے لگایا گیا تو چھوٹی تکلیں اورغازی او پر نہی جو چند نہی تھے۔ تاریخی چیلی تو سب کومور چوں میں واپس ہونا پڑا۔ اس یورش میں جو چند غازی شہید ہوئے۔ ان میں سے ایک شخ علی محمد تھے۔

للهيت

مین بلند بخت اس وقت تو بین لانے پنجار کے ہوئے تھے۔والیسی میں ستھانہ بھی کر بھائی کی شہادت کی خبر ملی۔امب پنچے تو سید صاحب نے حسب معمول محبت سے پاس بٹھایا۔ پچھودر خاموش رہے، پھر شہید کی تعزیت کرتے ہوئے تملی دی: آپ کے بھائی جو مراد لے کر اللہ کے راہتے میں نکلے تھے، وہ پوری ہوئی۔ ہم سب کواللہ اپنی رضامندی کی راہ میں صرف کردے اور ہم سب سے راضی ہو۔ ہم سب بھائیوں کی بہی مراد ہے۔

بھائی کے عزیز نہیں ہوتا، پھراییا بھائی جو دنیا میں خیر وسعادت کا قابل فخر پیکر تھا، وطن سے دوری عزیز ول سے ملیحدگی اور اقرباسے مفارقت کی حالت میں موت آئی۔ ہم لوگوں نے زندگی کے جو تصورات قائم کررکھے ہیں، شخ بلند بخت ان سے فارغ نہ تھے۔ انھیں بھی ہررشتہ وییا ہی عزیز تھا، جیسا ہمیں عزیز ہے، لیکن ایک بلند تر جذب اور رفیع تر نصب العین نے ان کی تمام محبول اور علاقہ مندیوں کو دوسرے ہی سانچ میں و فعال دیا تھا۔

نوال باب:

مولوی مظهر علی عظیم آبادی

یہ غالبًا اس زمانے میں سیدصاحب سے بیعت کر چکے تھے جب آپ کی دعوتِ
اصلاح کا شہرہ ہوا تھا۔ سفر جج کے سلیلے میں سیدصاحب عظیم آباد پنچے تو اس حیثیت میں
مولوی مظہر علی کے مکان پر مجئے ، گویاان سے دیرین مراسم تھے۔ نیز اس موقع پر روایات
میں مولوی صاحب کے اہل وعیال اور اہل محلّہ کی بیعت کا ذکر ہے۔ خود مولوکی صاحب کی
بیعت کا ذکر نہیں۔ یہ بھی اس بات کی دلیل ہے کہ مولوک صاحب سفر جج سے پیشتر بیعت
میں مولوی صاحب سفر جج سے پیشتر بیعت

وعوت وارشاد

او نچ درج کے عالم ہونے کے علاوہ مولوی صاحب بڑے غیور فض تھے۔
بیعت کے ساتھ ہی دعوت اصلاح شروع کر دی۔ بعض اوقات جوش کے عالم میں مکر
چیز وں کو بر ورمنا دینے پر بھی آ مادہ ہوجاتے تھے۔ چنا نچہ ایک موقع پر تعزیے کو نقصان
پہنچایا، اس بناء پرمولوی صاحب کے خلاف مقدمہ قائم ہوگیا۔ ایک شخص نے ضانت دیکر
انہیں گرفتاری سے بچایا۔ مولوی صاحب ضانت پر رہا ہوتے ہی وطن چھوڑ کر گور کھیور
جا پہنچ۔ وہاں بھی دعوت اصلاح جاری رکھی۔ چنا نچہ مولوی جعفر علی نقوی نے اپنے والد
جا بہنچ۔ وہاں بھی دعوت اصلاح جاری رکھی۔ چنا نچہ مولوی جعفر علی نقوی نے اپنے والد
جا جا ہے۔ ایک مسلمان زمیندار نے دوسکی مبنوں سے بیک وقت نکاح کر رکھا تھا،

سید قطب علی نے بار باراسے منع کیا بشری مسئلہ بتایا بھین وہ جواب دیتا کہ بھاری براوری مسئلہ بتایا بھین وہ جواب دیتا کہ بھاری براوری میں بید ستور پہلے سے چلا آ رہا ہے، ہم کیوں چھوڑیں؟ سید قطب علی نے مجبور ہوکر اس سے سلام کلام بند کردیا۔ مولوی مظبر علی ان اطراف میں پنچے ادرانہوں نے تلقین کی تو اس نے معا ایک بیوی کو طلا تی دے دی۔ اس سے ثابت ہوتا ہے کہ مولوی صاحب کے بیان میں خدانے خاص تا ثیر ودیعت کروی تھی۔

تعليم عزييت

ای زمانے میں سیدصاحب سے ملنے کیلئے دائے بریلی پہنچ کہ آپ نے فراد کے حالات سنے تو بہت ناداض ہوئے۔ پھر مولوی صاحب سے خاطب ہو کر فر مایا: آپ ہم مولات سنے تو بہت ناداض ہوئے۔ پھر مولوی صاحب سے خاطب ہو کر فر مایا: آپ ہم مولات دیا ہے ہوں گے کہ کوئی بہت بڑا کار نامدانجام دیا، حالال کہ آپ نے خت خلطی کی۔ خود خی کر نکل آئے اور ایک نیک ول مسلمان (ضامن) کو پھنا دیا۔ آپ میں نتائج کی برداشت کا حوصلہ نہ تھا تو اصلاح شروع کیوں کی تھی؟ آپ کی تو بیعت بھی قائم نہیں دیا۔ سے مبر سے دی سے بیعت سیجئے، وطن جائے اور جو پچھ پیش آئے اسے مبر سے برداشت کیجئے، وطن جائے اور جو پچھ پیش آئے اسے مبر سے بیعت سیجئے، وطن جائے اور جو پچھ پیش آئے اسے مبر سے برداشت کیجئے۔

مولوی صاحب نے بے چون و چرااس علم کی تعمیل کی ، لیکن خدا کی رحمت دیکھئے کہ
ان کے جاتے ہی مقدمہ ختم ہوگیا۔ حقیقت یہ ہے کہ سید صاحب اپنے تمام خلفاء اور
داعیوں سے شان عزیمت کے متقاضی تھے۔ اس کے بغیر اصلاح کا کام پورا نہ ہوسکتا
تھا۔ مولوی مظہر علی پر ناراض ہونے کی وجہ بھی یہی تھی کہ وہ مقام عزیمت میں ٹابت قدم
نہ رہے اور مقدمہ قائم ہوتے ہی ج کرنکل گئے۔

قافله مجابدين

سیدصاحب کی طرف سے بلاوے کے خطوط پہنچے تو مولوی صاحب مجاہدوں کا

قافلہ لے کر سرحد گئے تھے یا کم سے کم وہ بالکل ابتدائی قافلوں میں مقام جہاد پر بینی گئے سے ،اس لئے کہ جنگ شیدو کے بعد جوغازی چنگئی بہنچ تھے،ان میں مولوی صاحب کا نام موجود ہے۔

جنگ ِمردان

اغلب ہے، مختلف لڑا ئیوں میں شریک رہے ہوں، جنگ مردان میں ان کا ذکر بالتھری آیا ہے۔ اس جنگ میں سید محمد حبان قاضی القصاۃ سپہ سالار تھے۔ انہوں نے شہر پہنے کر حملے کیلئے غازیوں کی فوج کو مختلف جیشوں میں تقسیم کردیا تھا۔ مولوی مظہر علی کو ہدایت فرمائی تھی کدا بنا جیش لے کر کھلیا نوں کی طرف جا ئیں۔ اُدھر سے بندوقوں کی آواز آئے تو نقارہ بجائے ہوئے شہر پرحملہ کردیں۔ مولوی صاحب نے حرفا حرفاس ہدایت پھل کیا۔ کھلیا نوں والے بندو فی بھا گے اور مولوی صاحب اپنا جیش لیکر آگے ہو ہے۔ ان کی ران کے بالائی حصے میں گولی گئی اور وہ زمین پر گر پڑے، لیکن عزیمت، ہمت اور عشق مقاصد کی شان ملاحظہ ہوکہ گولی گئے کا معاملہ کسی پر ظاہر نہ کیا تا کہ کوئی ساتھی ان کی دکھے بھال میں یورش سے باز ندر ہے، گرتے ہی زمین پر پیٹھ گئے، جو غازی باس سے گذر تا اور حال پوچھ گیا ہوگا، جسے نکا لئے کیلئے دم بھر کیلئے بیٹھ گئے ہوں گے۔ شاہ گذر تا اور حال پوچھ گیا ہوگا، جسے نکا لئے کیلئے دم بھر کیلئے بیٹھ گئے ہوں گے۔ شاہ آ سیمتا کہ پاؤ میں کا ناچھ گیا ہوگا، جسے نکا لئے کیلئے دم بھر کیلئے بیٹھ گئے ہوں گے۔ شاہ آسمتی کہا، آپ میراخیال نہ فرمائیں، اسلیمی کہا، آپ میراخیال نہ فرمائیں، اسلیمی کا فیصلہ کر لیجئے۔ فتح کے بعدد کیلے لیچھ گا، میں میں حال میں ہوں۔

يثاور مين منصب قضا

بٹناور فتح ہوااورسید صاحب اپنے غازیوں کے ساتھ وہاں پہنچے تو مولوی مظہر علی صاحب نے مہابت خاں کی مبجد میں خطبے دینے شروع کیے،جس میں سورہ صف کی تفییر نہایت دل پیند الفاظ میں پیش کی۔اس وجہ سے وہ اہل پشاور میں بہت ہر دل عزیز ہوگئے۔ چنانچہ سلطان محمد خال درّانی سے معاہدہ صلح کے بعد پشاوران کے حوالے کیااور وہاں قاضی کے تقریر کا سوال سامنے آیا تو مولوی مظہر علی ہی اس عہدے کیلئے منتخب ہوئے یعلم وفضل اور زہدوتقوی کے علاوہ یہ بات بھی پیش نظرتھی کہ اہل پشاور انھیں بہت پہند کرتے ہیں۔سیدصاحب پشاور سے بنجتار کی طرف روانہ ہوئے تو مولوی مظہر علی جمکنی تک ساتھ گئے، وہاں سے پشاور لوئے۔ پھر عالم ناسوت میں ملاقات مقدر نہ تھی۔

درٌانیوں کی بدعہدی

سلطان محمہ خال نے پیتاور پر دوبارہ قابض ہوتے ہی سازش کا جال بچھانا شروع کردیا تھا۔ جب اس نے اندازہ کرلیا کہ میدانی علاقے کے اکابراس کے ہم نوابن گئے ہیں تو مولوی مظہ بعلی سے تھلم کھلا نزاع پر آمادہ ہوگیا۔ ایک روزمولوی صاحب اس کے پاس پنچے تو فور آسوال کیا کہ میرے بھائی یار محمہ خال کو کیوں قل کیا گیا؟ ساتھیوں نے ایک ہنگامہ سابر پاکر دیا۔ مولوی صاحب نے جواب دیا کہ شور مچانے سے مجھوفا کدہ نہیں ، باری باری ایک ایک سوال کرواور جواب سنتے جاؤ۔ پھر تمام تفصیلات کھول کر بیان کیں اور باری ایک ایک سوال کرواور جواب سنتے جاؤ۔ پھر تمام تفصیلات کھول کر بیان کیں اور عابت کر دیا کہ خادے خال اور یار محمہ خال سے جوسلوک ہوا، وہ شرعاً بالکل جائز تھا۔ مولوی صاحب نے سے حالات سیدصاحب کولکھ بھیجے۔ آپ کے تھم سے شاہ آسمنیل نے مولوی صاحب نے سے طالات سیدصاحب کولکھ بھیجے۔ آپ کے تھم سے شاہ آسمنیل نے نیاس محلول کہ طاری کو ایک مظہر علی کے پاس بھیج کرتا کید کر دی کہ کوئی مخص اطمینان قلب کیلئے سوال کر سے خواب دیدیں۔ بحث کی نوبت آئے تو بیتے مربوالے کرکے آپ چھے آسیں۔ تو نوٹر می سے جواب دیدیں۔ بحث کی نوبت آئے تو بیتے مربوالے کر کے آپ چھے آسیں۔ بھی آسیں۔ بحث کی نوبت آئے تو بیتے مربوالے کر کے آپ چھے آسیں۔

شان احتياط

سید صاحب سے سلطان محمد خال کی صلح ارباب فیض اللہ خال نے کرائی تھی

۱۰، عبد کیا تھا کہ اگر سلطان محمد خال نے دوبارہ خیانت کی تو ہیں اس کا ساتھ جھوڑ دول گا۔
پٹاور کے حالات گرٹے و کیھے تو ارباب نے مولوی مظہر علی کو اطلاع دے دی تھی کہ جھے
سلطان محمد خال پر اطمینان نہیں رہا، آپ امیر المونین سے واپسی کی اجازت لے لیں۔
مولوی صاحب بڑے محتاط اور حد درجہ فرض شناس بزرگ تھے۔ انھوں نے مناسب نہ
سمجھا کہ تمام حالات کا اندازہ کے بغیر کوئی بات کھیں اور عجلت میں غیر محقق امورسید
صاحب تک پہنچانے کے مرتکب ہول۔

شهادت

انھیں حالات میں سلطان محمد خال اور اس کے در بار بول نے مولوی مظہر علی کو پہاور میں شہید کردیا۔ شہاوت کی تفصیل صرف اس قدر معلوم ہو سکی کہ ایک روز سلطان محمد خال نے ضروری مشورے کے بہانے ہے مولوی صاحب کو ایک خاص کمرے میں بلوایا۔ وہ پنچے تو ہر طرف سے ان پر تلواریں پڑنے لگیں۔ اسی حالت میں وہ واصل بحق ہوئے۔ راو بول کا بیان ہے کہ مولوی صاحب بہت بڑے عالم متقی ، ذکی الطبع ، صاحب اخلاق بہندیدہ واوصاف جمیدہ ، سیدصاحب کے خلص معتقدا ورمحب رائے تھے۔ موصوف سیدگری میں یکنائے زمانہ اور شجاعت و بہادری میں یکا نے جاتے تھے۔

دسوال باب:

يشخ محمدالتحق كور كهيوري

نسبت بمقام سے ظاہر ہے کہ یہ گور کھیوں کے باشند ہے تھے۔ معمولی تعلیم پائی تھی۔
شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی سے کسب فیفل کے شوق میں اپنے وطن مالوف سے پیدل
دبلی پنچے۔ یہ اس زمانے کی بات ہے، جب سیدصاحب ایک بڑے قافلے کے ساتھ جج
کیلئے گئے ہوئے تھے۔ شیخ آئی نے شاہ صاحب سے بیعت کی درخواست کی تو جواب
میں ارشادہوا کہ میں گونا گوں عوارض میں مبتلا ہوں، میر انواسہ درس و قدریس میں مشغول
ہے، میرے فلیفہ سید احمد واپس آئی سے گو ان سے بیعت کر لینا۔ شیخ آئی نے عرض
کیا کہ میں آپ سے بیعت کا آرزومند ہوں، صرف دس روز دہلی میں تظہروں گا، پھر
واپس چلا جاؤں گا، اس لئے کہ میرے چھوٹے چھوٹے بیچ میں اور ان کے گزارے کی
کوئی سیل نہیں۔

ببعث

سیدصاحب مج سے واپس آئے تو شاہ عبدالعزیز کا انقال ہو چکا تھا۔ شیخ اسحاق بیعت کے شوق میں سیدصاحب کے پاس رائے بر پلی پہنچ گئے اور بیعت کر لی۔ چندروز کے بعد سیدصاحب نے خانوادہ ہائے فیض روحانی کے معمول کے مطابق منصب خلافت وینا چاہاتو شیخ اسحاق نے بیرعذر پیش کیا کہ میں قرآن مجیداور چند ضروری مسائل دین کے سوا بچرنہیں جانا۔ منصب خلافت اسے لمنا چاہیے جے دین کا وسیح علم حاصل ہو۔ سید صاحب نے بے تکلف فرمایا کہ میراعلم بھی اسی قدر ہے۔ شیخ اسحاق نے عرض کیا کہ ہمارے وطن میں ایک بزرگ عالم دین ہیں جو ہروقت یا دِ خدا میں مصروف رہتے ہیں۔ انہیں خلافت عطافر مانا مناسب ہوگا۔ سید صاحب نے فرمایا کہ میں آپ کو بھی خلیفہ بنا تا ہوں اور اس بزرگ کوساتھ لائمیں گے تو انہیں بھی خلافت دے دول گا۔ شیخ کا اشارہ سید قطب علی کی طرف تھا، جنہیں منصب خلافت طنے کی کیفیت ان کے حالات میں درج ہے۔

هجرت

سیدصاحب مجاہدین کی پہلی جماعت کو لے کر جہاد کیلئے سرحد تشریف لے گئے تو شخ اسحاق کادل بھی اس کار خیر میں شرکت کے ولولوں سے بے تاب ہو گیا۔ چنا نچہ وہ بال بچوں کو خدا کے حوالے کرکے گھر سے نکل پڑے۔ پچھ مدت عظیم آباد میں تھہرے رہ جو مجاہدین کا ایک بڑا مرکز تھا۔ پھر ایک قافے میں شریک ہوکر دہلی پہنچ اور شاہ محمد اسحاق کے پاس مقیم رہے۔ اس زمانے میں سید محبوب علی اسپنے قافلے کے ساتھ سرحد سے واپس آپکے تھے۔ اس وجہ سے عاز مین جہاد پراک گوندا فسر دگی طاری ہوگئی تھی اور قافلوں کے جانے کا سلسلہ معرضِ تعطل میں پڑچکا تھا۔ شخ محمد اسحاق ارباب عزیمت میں سے تھے۔ عام افسر دگی ان کے عزم و ہمت پر قطعا اثر انداز نہ ہو تکی۔ وہ صرف جار رفیقوں کو لے کر فقیرانہ لباس میں نکل پڑے اور سکھوں کی حکومت سے گذرتے ہوئے سیدصا حب کے پاس پہنچ گئے۔ چوں کہ بیکل پانچ آ دمی تھے، اس لئے جماعت مجاہدین میں 'دبنچ تن' کے پاس پہنچ گئے۔ چوں کہ بیکل پانچ آ دمی تھے، اس لئے جماعت مجاہدین میں 'دبنچ تن' کے

جنك مايار

شیخ صاحب تمام لڑائیوں میں شریک رہے۔ مایار کی جنگ میں انہوں نے مردا تگی

اور عزیمت کا جونقشہ پیش کیا، اس کی سیح کیفیت الفاظ میں نہیں ساسکتی۔ سید صاحب کے حالات میں بیان ہو چکا ہے کہ سواروں کا جیش ایک اتفاقی غلطی کے باعث غنیم کی ترکناز کا ہرف بن کرمنتشر ہوگیا تھا۔ پیٹے اسحاق جوشِ شجاعت میں گھوڑا لے کرسواروں میں شامل ہو گئے تھے۔ ایک درانی سوار نے نیزے سے ان پر حملہ کیا۔ وہ وار بچانے کیلئے وائیں جانب جھکے۔ نیزے کی انی سینے کے بجائے ہائیں کندھے میں گھس گئی۔ پھراور درانی سوار مان پر ٹوٹ برے۔ پیٹے نے مقابلہ جاری رکھالیکن بری طرح زخی ہوگئے۔ دائیں ہاتھ کی انگلیاں کٹ گئیں۔ تلوار کی ایک ضرب سر پر بڑی۔ بائیں کندھے پر نیزے کے زخم کے انگلیاں کٹ گئیں۔ تلوار کی ایک ضرب سر پر بڑی۔ بائیں کندھے پر نیزے کے زخم کے بعد تلوار کا بھی ایک شدید زخم لگا۔

بعد در او ما بیک الدیم است با است از خموں سے چور ہوجانے کے باعث لانے کی سکت باتی نہ رہی تو شخ نے اپنی راکفل ایک غازی کے حوالے کی ، بلوار دوسرے غازی کو وے ، کی ، جس کے پاس تیم کے سواکوئی ہتھیار نہ تھا اور ان دونوں سے کہا کہ یہ غدا کا مال ہے ، میں آپ کو امین مجھ کر دیتا ہوں۔ امید ہے کہ آب ان کا حق اداکر نے میں کوئی دقیقہ می اٹھانہ رکھیں گے ۔ پھر آہتہ آبتہ میدانِ جنگ ہے مایار کی طرف روانہ ہوئے ۔ راستے میں میاں جی محی الدین طی جن کا پاؤں سخت زخی ہو چکا تھا اور وہ سہارے کے بغیر چلنے سے عاجز تھے۔ شخ اسحاق کے ہاتھا گر چہ بری طرح زخی ہو چکے تھے ، کیکن انہوں نے میاں جی محی الدین کو سہارادے کر اٹھایا اور ساتھ لے کر آبتہ آبتہ چلے ۔ تھوڑی دور جاکر دونوں کو ش آگیا اور زمین پرگر پڑے ۔ پھر ہوش آیاتو ایک درخت کے سائے میں جاکر لیٹ گئے۔ اور زمین پرگر پڑے ۔ پھر ہوش آیاتو ایک درخت کے سائے میں جاکر لیٹ گئے۔

درانیوں کی شکست کے بعد مولوی سید جعفر علی نفوی مؤلف''منظورۃ السعداء' شخ کے پاس پہنچے تو انہوں نے سب سے پہلے الوائی کا حال پو چھا۔ فتح کی خبر من کر جوشِ مسرت سے فرمایا کہ آؤ بھائی گلے سے لگ جاؤ، پھر کھا: پیصدیث سچی ہے کہ شہیدوں کی سکرات موت کی کیفیت و لی بی ہوتی ہے، جیسے کسی کو چیونٹی کا نے۔(۱) میراجیم زخموں

⁽۱) ما يجد الشهيد من مس القتل الاكما يجد احدكم من مس القرصة. <u>www.BestUrduBooks.wordpress.com</u>

ے چور ہوگیا، لیکن کا ناچینے سے زیادہ تکلیف نیس ہوئی۔

ويواندشاه

علاج بي تمام زخم المجمع مو مح ليكن الكليال كث جانے كے باعث ان كا وايال ہاتھ بندوق یا تلوار چلانے کے قابل ندر ہاتھا۔ تاہم انہوں نے مجاہدین کا ساتھ نہ چھوڑا۔ میچه مدت تک فروسه (نزداسب) میں تھانیدار رہے۔اللہ تعالی اور اس کے رسول یاک صلی الله علیه وسلم کی محبت ول بربهت غالب تقی - ایک مرتبه مولا ناشاه اسلعیل نے وعظ مِن "وَاللَّذِيْنَ المَنُوْ آاَشَدُ حُبًّا لِلَّهِ" كَيْفير بؤے بِرَتا فيرانداز مِن فرمانی - في محمد اسحاق براس وعظ كا تنااثر ہوا كه بے اختيار رونے لكے اور كھانا پينا ترك كرديا مولاناكو اس وافعے كاعلم بواتو بلاكروجه يوچيى فينخ نے كہا كه جھے اپنى بيوى سے محبت ہے اور مروقت اس كاخيال ربتا ب-بيصورت والدنين امَنُوْ آ اَشَدُ حُبًا لِلْهِ "كمنافى ہے۔ مولانانے بوجھا کہ کیااس وقت بھی یہی کیفیت تھی جب آپ وطن میں تھے؟ جواب ویا کہاس وقت تو بیر کیفیت نتھی الیکن اب بیخیال دل سے زائل بی نہیں موتا۔ مولا نانے پھر یو چھا؟ کیا آپ ہوی کی محبت کے جوش میں اشکر اسلام کوچھوڑ کر وطن جاسکتے ہیں؟ جواب دیا ہر گزنہیں۔ مجھے دل پراتنا قابو حاصل ہے کہ یہاں اگر ہزاروں تکلیفیں بھی پیش أجاكين توخوشي خوشي حوش اور كااوروطن كاقصدنه كرون كامولاناف فرمايا بجراطمينان رکھے کہ آب اَشَدُ حُبّا لِلْهِ كروه مِن شامل بين اس كے بعد كھانا كھايا-

ایک مرتبہ سیدصاحب کا وعظائ کرشنے محمد اسحاق کے دل میں بیروسوں بیٹھ گیا کہ ان کا ایمان لوٹے خلل سے پاک نہیں۔ چنانچہ شدت ِ رنج وغم میں خور دونوش سے ہاتھ اٹھالیا۔ سیدصاحب نے بلاکر آلی دی تو مطمئن ہوئے۔ شیخ صاحب کی اس والہانہ کیفیت کود مکھ کرسیدصاحب انہیں محبت سے 'ویوانہ شاہ'' کہہ کر پکاراکرتے تھے۔

بالأكوث

بالاکوٹ کی لزائی میں شریک تھے، لیکن مایار کی جنگ میں دائیں ہاتھ کی انگلیاں

کٹ گئی تھیں، اس لئے بندوق نہ چلا سکتے تھے اور انہیں گنڈ اسادے دیا گیا تھا۔ وہ مولانا
احمد اللہ نا گپوری کی جماعت میں شریک تھے۔ مولانا احمد اللہ میدانِ جنگ میں سید
صاحب کے ساتھ رہنے کا فیصلہ کر چکے تھے، انہوں نے اپنے بعد کی کو جماعت کا امیر
بنادینا ضروری سمجھا۔ مولوی سید جعفر علی نقوی کو یہ منصب چش کیا تو موصوف نے جماعت
میں سے جن اصحاب کو اہل تر بتایا، ان میں حافظ صطفیٰ کا ندھلوی اور مولوی محمد حسن بناری
کے علاوہ شیخ محمد اسحاق گور کھیوری بھی تھے۔

سکھوں نے مٹی کوٹ کے نیلے سے اتر کر بالاکوٹ پر پیش قدی شروع کی تو مجاہدین قصبے کی مسجد کلاں میں اور اس ہے آس پاس جمع تھے۔ سکھوں کی طرف سے گولے اور گولیاں اولوں کی طرح برس رہی تھیں۔ مولوی سید جعفر علی نقوی کے بیان کے مطابق اس وقت شخ محمد اسحاق نے فرمایا: اب دل میں شہادت کے سواکوئی خیال باقی ندر ہا۔ مجاہدین نے قصبے سے اتر کر سکھوں پر پورش کی تو ابتدا ہی میں شخ محمد اسحاق کے بائیں بازو پر گولی گئی۔ دایاں بازو پہلے بیکار تھا، بایاں بھی بیکار ہوگیا تو وہ یہ کہتے ہوئے قصبے میں واپس آگئے کہ میں اب مرف دعاء کے قابل رہ گیا ہوں۔

شهادت

یقینی طور پرمعلوم نہ ہوسکا کہ جنگ بالا کوٹ میں ان پر کیا گذری۔ حاجی غریب اللہ گورکھپوری ان مجاہد میں سے تنے جومٹی کوٹ کے دامن میں لڑتے ہوئے شہید ہوئے سکھوں سے جومٹی کوٹ کے دامن میں لڑتے ہوئے محمد اسحاق سکھوں سے جوم کے باعث تصبے میں پہنچ مجمد اسحاق

بالاكوت ميں بيہوش پڑے تھے سكھوں كى فوج نے قصبے كى جنوبى ست سے پیش قدى كى تو شيخ غريب الله ست ہے جوش تھے، اس تو شيخ غريب الله ست ہے كاراستے چلے گئے۔ شيخ محمد اسحاق چونكہ ہے ہوش تھے، اس لئے انہيں اٹھا كرنہ لے جا سكے۔ بعد ميں معلوم ہوا كہ جتنے مجاہدين قصبے ميں زخمول كے باعث معذور پڑے تھے، سكھوں نے ان سب كوشهيد كرڈ الا اور قصبے كوآگ لگادى۔ شيخ محمد استاق بھى انہيں ميں شامل تھے۔ رحمہ اللّٰد تعالىٰ۔

گیار ہواں باب:

ارباب بهرام خال

سے جہکال کے رئیس تھے جو پشاور کے قریب ایک مشہور مقام ہے اور خلیل خیل قبیلے میں سے تھے۔ اہل وعیال کے ساتھ سید صاحب کے خبر جانے سے پیشتر آپ کے پاس کہ ہوئے۔ اسباب ہتھیار، گھوڑے جو پچھ پاس تھا آپ کی خدمت میں بہطور نذرانہ پیش کردیا، یہاں تک کہ المیہ کے بعض فیمتی پار ہے بھی گھر ندر کھے۔ سید صاحب نے دو گھوڑے اور دو کواریں رکھ لیس، باتی ہر چیز واپس کردی اور فرمایا کہ جھیار دغیرہ اپنے ساتھیوں میں بانے و تبحے۔ ایک کوار بہطور تمرک اینے یاس سے دی۔

اژدر

انہیں دوگھوڑوں میں سے ایک کانام اڑور تھاجوسیدصاحب نے اپی سواری کے لیے رکھ لیا تھا۔ پھولڑہ پر یورش کے سلسلے میں سیداجم علی رائے بر بلوی کو امیر لشکر بناکر بھیجاتو سواری کیلئے انہیں اڑور گھوڑا دے دیا۔ پھولڑہ کی جنگ میں سکھاسے پکڑکر لے چلیتو محمد خال خیر آبادی نے پکار کر کہا: بھائیو! سیامیر المونین کی سواری کا گھوڑا ہے، اسے دمنین کی سواری کا گھوڑا ہے، اسے دمنین کے سواری کا گھوڑا ہے، اسے دمنین کے باس گروہ پر حملہ کردیا جس کے باس اڑور تھا اور تھوڑی دیر میں اسے چھڑالیا۔ سکھوں نے دوبارہ حملہ کیا، اس میں اڑور بھی مارا گیااور حمد خال بھی شہید ہوگئے۔

كارنام

غرض ارباب موصوف سیدصاحب سے وابنتگی کے بعد ایک لمحے کیلئے بھی الگ نہ ہوئے اور اکثر معرکوں میں شریک رہے۔ پٹا ور کے درانی سرداروں نے ہندوستان سے آنے والے مجاہدین کے قافلوں کو کنڈوہ میں روک دیا تھا تو سیدصاحب نے ملاقطب الدین ننگر ہاری کے علاوہ ارباب موصوف کو بھیجا تھا کہ قافلوں کوساتھ لے آئیں۔ان کے پاوی میں اتفاق سے جھالے نکل آئے اور جانہ سکے۔اپ آدمیوں کو بھیج دیا۔ ارباب محترم کی مزید سرگرمیوں کا اجمالی مرتع ذیل میں درج ہے:

ا۔ قیام خمر کے دوران میں اتمان زئی اور پشاور میں پیش قدمی کی تجویز ہوئی تھی تو سیدصا حب نے نمیر کی سمت کے قبیلوں کو بھی امداد پرآ مادہ کرنا چا ہاتھا۔ اس سلسلے میں بعض ہندوستانی مجاہدوں کے علاوہ ارباب بہرام خان اور ان کے بھائی ارباب جمعہ خان کو بھی بھیجا تھا۔

۲۔ پنجار میں ارباب موصوف اوران کے متعلقین شہتوت کے باغ میں رہتے تھے
 جوآبادی سے ایک تیر کے فاصلے پر جنوب مغرب میں واقع تھا۔

س۔ انگ پر بورش کیلئے جو تشکر بھیجا گیا تھااس کے سالار ارباب بہرام خال ہی مقرر ہوئے تھے۔ مقرر ہوئے تھے۔

۴۔ تنگی پرشبخون میں بھی ارباب موصوف شریک تھے۔

۵_ کوہ کنیر زی (نزوعشرہ) کی جنگ میں مجاہدین کے سالار تھے۔

۲۔ قیام پنجتار کے دوران سید صاحب کوعلاقے کے دورے کا مشورہ ارباب موصوف ہی نے دیا تھا۔

ے۔ پشاور پر پیش قدمی میں بھی ارباب موصوف اوران کے بھائی جمعہ خال شامل

تھے، چنانچہ پشاور میں ارباب کوسرائے گور کھتری کے دروازہ کلاں میں تھہرایا گیا تھا، جس کے اندر حویلی میں سیدصا حب تھہرے تھے۔ارباب جمعہ خال کا بلی دروازہ میں تھہرا تھا۔

بشاورا ورهجرت ثانيه

۸۔ جن اصحاب نے سلطان محمد خال درانی کے ساتھ مصالحت اور پشاوری حوالگی سے اختلاف کیا تھا، ان میں ارباب بہرام خال بھی شامل تھے۔ چنا نچہ انہوں نے کسی فرریعے سے عرض کرایا کہ بیعلاقہ کسی کو دینا ہی ہے تو مجھے عنایت فرما کیں۔ میں اس کی حفاظت کروں گا اور چار بزار سپاہی ملازم رکھ کر حضرت کے ہمر کاب کروں گا۔ ان کی شخواہ وغیرہ کا سارا ہو جھ میرے ذہے ہوگا۔ سیدصا حب نے بیان کرفر مایا کہ ہم اور ارباب میں کوئی مغایرت نہیں۔ علاقے کو ارباب کے حوالے کرنے کا مطلب بیہ ہوگا کہ ہم نے ابنا وضعہ بحال رکھا۔ ارباب نے ہمارام تقصد نہیں سمجھا۔

9۔ سیدصاحب نے ہجرتِ ٹانیہ کا فیصلہ کیا توار باب نے اپنے تمام متعلقین کو اجازت دے دی کہ آپ لوگ جا ہیں تو چلے جا کمیں، میں تو حضرت کے ساتھ رہوں گا۔ ان میں سے بھی کسی نے علیحدگی گوارانہ کی۔

۱۰۔ سیدصاحب راج دواری میں مقیم ہوئے تو ارباب کوشارکول میں اقامت کا حکم دیدیا۔ جب سیدصاحب نے بچوں سے بالاکوٹ جانے کا فیصلہ کیا تو ارباب نے بھی معیت کی درخواست کی۔اس دقت سے وہ آخری دم تک سیدصاحب کے ساتھ رہے۔

بالأكوث

سکھوں کالشکر بسیاں، جابہ وغیرہ ہوتا ہوااس مقام پر پہنچا جسے آج کل شہیدگلی کہتے ہیں تو میر زااحمد بیگ کے دستے سے مقابلہ ہو گیا۔میر زانے کمک کیلئے درخواست بھیجی تو جن اصحاب کو جانے کا تھم ملاان میں ارباب بہرام خاں بھی تھے۔ جب میر زااحمہ بیگ سے معلوم ہوا کہ اب مٹی کوٹ میں سکھوں سے مقابلہ نہیں ہوسکتا ،اس لئے کہ بہاڑ پر بہنج جانے کے بعد وہ بیسیوں پگڑنڈ یوں سے نیچ اتر سکتے ہیں اور ہم ہر پگڑنڈی پر ان کا مقابلہ نہیں کر سکتے ہواں وقت ارباب نے یہ تجویز پیش کی کہ سکھوں کی نشکرگاہ پر حملہ کرنا مناسب ہوگا۔ سید صاحب نے فرمایا کہ ہم نے وریا کا بل تڑواد یا ہے اور ہم دریا سے ماراتر کرمشر تی کنارے پر نہیں جا سکتے ، جہال سکھ شکرگاہ ہے۔ ارباب نے عرض کیا، پلی راتوں رات تیار ہوسکتا ہے۔ سید صاحب نے فرمایا: اس بات کوچھوڑ ہے جو بچھ ہونے والا میں ہورہے گا۔ جال شار ارباب نے آگشت شہادت سے اپنی گردن کی طرف اشارہ کرتے ہوئے عرض کیا:

''ایں سر در راو خدا تعالی حاضراست'' قرجمه : میسر خدا تعالی کی راه میں قربانی کے لئے حاضر ہے۔

شهادت

سیدصاحب سکصوں پر پورش کیلئے متجد بالا ہے متجد زیریں میں آئے۔ وہاں سے میدان میں نکلے تو ارباب بہرام خال ساتھ تھے۔ پھر معلوم نہ ہوسکا کدارباب نے کہاں شہادت پائی۔ ہم صرف بیجائے ہیں کدارباب کی قبر بالاکوٹ کے ثال مشرق میں ست ہے نالے کے پارشاہ اسلعیل کے مرقد ہے ملی ہوئی تھی۔ اس بنا پر قیاس بیہ ہے کدارباب اورشاہ صاحب مٹی کوٹ کے دامن سے لڑتے لڑتے پیچھے ہٹتے ہوئے اس مقام پر پہنچ کر شہید ہوئے ، جہال ان کی قبریں ہیں۔

انتقال ميت

واقعہ بالاکوٹ سے چھ مہینے بعدار باب شہید کے بھتیج اور داماد محمد خال نے اپنے ہم قو موں سے مشورہ کرکے فیصلہ کیا کہ ارباب کی میت بالاکوٹ سے تہکا ل منتقل کرلیں۔ بعض لوگوں نے کہا بھی کہ اب اس مرحوم کی ہڈیاں کھود کرلانے سے کیا حاصل ہوگا؟ محمد خال نے جواب دیا، میرے چھانے خلوص نیت سے سید بادشاہ کا ساتھ دیا تھا۔ اپنا پورا مال واسباب راو خدا میں لٹادیا۔ آخر جان بھی دے دی۔ مجھے یفتین ہے کہ ان کی لاش قبر میں سلامت ہوگی۔

غرض محمد خال نے ایک صندوق بنوایا اور چالیس آدمیوں کے ساتھ بالاکوٹ گیا۔ قبر کھودی گئی تو میت بالکل محفوظ تھی۔ نداس کا کوئی حصہ بگڑا تھا، نہ بد بو پیدا ہوئی تھی۔ صرف باؤل کے ناخنوں میں خفیف ساتغیر معلوم ہوتا تھا۔ میت کو صندوق میں رکھ کر تبکال لائے۔ پوری قوم نے انتہائی احترام سے اسے از سرنو دفن کیا۔ ارباب شہید کا بیمرقد مہمکال کی جنوبی ست کے قبرستان میں راستے کے قریب واقع ہے۔ مرقد بالکل سادہ ہے، کیکن عام قبرول کے مقابلے میں خاصا بلند ہے، بچہ بچہ جانتا ہے کہ بدار باب شہید کی قبر ہے اورا کھڑلوگ جاتے آتے فاتحہ بڑھتے ہیں۔

اولاو

ارباب بہرام خال کے پانچ بیٹے تھے اور ایک بیٹی، جو ان کے بیٹیج محمد خال کے نکاح میں خوان کے بیٹیج محمد خال کے نکاح میں تھے۔ سرحد کے اکابر نکاح میں تھی۔ارباب کی شہادت کے وقت بیٹوں میں سے دو کم من تھے۔ سرحد کے اکابر مخلصین میں سے قاضی سیدمحمد حبان اور سیدا کبرشاہ سھانوی کے سواکوئی فردار باب بہرام خال کے یائے کانہ تھا۔

شان اخلاص

ارباب شہید حددر جو مخلص، نیک دل اور صاف گوتھے۔سید صاحب کی مجلس شوریٰ میں بھی عموماً شریک رہے۔ایک مرجبہ سوال بیدا ہوا کہ جہاد کا آغاز کس مقام ہے ہو۔اس موقع پر مخلف سرحدی خوانین بھی موجود تھے۔ارباب نے بے تکلف کہا ہم سب غرض مند ہیں۔ میں پشاور سے نکلا ہوں۔ میرا دل جاہتا ہے کہ جلد سے جلد بیٹا ورفتے ہوجائے۔ مجمد خاں جعد ارا تک سے نکلا ، لہذا وہ اٹک کا خواہاں ہے۔ ناصر خاں کو پکھلی کی آرز و ہے۔

بہتر یہ ہے کہ ہم سب خاموش رہیں اور فیصلہ ہندوستانی بھائیوں پر چھوڑ دیا جائے۔ جن کی

رائے ذاتی خواہش یا طبعی رجحان سے بالکل پاک ہوگی۔ وہ جس جگہ کی تجویز کریں ، اس

أيكسبق آموز واقعه

سیدصاحب کوار باب سے بڑی محبت تھی الیکن ایک موقع پرصاف گوئی میں تال نہ ہوا۔ غالباً ہجرت ثانیہ میں سیدصاحب کی اہلیہ کیلئے پائلی کا انظام کیا گیا، اس لئے کہ وہ غاص حالت میں تھیں۔ ارباب کے اہل خانہ کو بیامر مساوات کے خلاف نظر آیا۔ سید صاحب کواطلاع ہوئی تو فرمایا: ارباب سے کہدد ہجئے کہ میں آپ کومومن سجھتا ہوں اور مومنوں کی خوشا نہ یا خاطر داری لازم نہیں ، کیوں کہ وہ جہاد میں میراساتھ نہ چھوڑیں گے، البتہ منافقوں کی دلجوئی کرسکتا ہوں تا کہ وہ ایمان پر کیے ہوجا کیں۔ میری اہلیہ حالت خاص میں ہے، ورنہ اس کیلئے بھی گھوڑ ہے ہی کی سواری کا انتظام کیا جاتا۔ ارباب کے اہلی خانہ میں ہے، ورنہ اس کیلئے بھی گھوڑ ہے ہی کی سواری کا انتظام کیا جاتا۔ ارباب کے اہلی خانہ میں ہے۔ کسی کوایساعذر ہوتو ضرور پاکلی کا انتظام کردیا جائے گا۔

بارہواں باب:

رسالدارعبدالحبيدخال

رسالدارعبدالحميد خال ٹو تک ميں ممتازعهد _ پر مامور تھے۔وفت كے عام خوش حال لوگول كى طرح ان كى عادتيں بھى بگرى گئى تھيں ۔اوباش رفيقول كى صحبت ميں فسق وفحوران كاشيوة خاص بن گيا تھا۔سيدصاحب بهسلسله سفر جمرت ٹو تک ہے روانہ ہوئے اور جھلانہ بنچ تو عبدالحميد خال اوران كر فيق بھى بجابدين كاس قافل كا تماشد وكيھنے كيلئے راستے بر كھڑے ہوگئے۔سيدصاحب كى نظرعبدالحميد خال پر پڑى تومسكرا كر فرمايا: خال جيو! آپ بھى بيعت كر ليجئے عبدالحميد خال اوران كے دفت اس درجه متاثر ہوئے كہ فورانبيعت كر لي اوراس لحمد سے ان كى زندگى كا پورانقث بدل گيا۔ قديم بم نشينوں نے گراہ كرنے كى ہم چندكوش كى ،كيكن عبدالحميد خال راوج تن پر جے رہے، اور ملازمت جھوڑ كرسيدصاحب كى خدمت ميں تينينے كا پخته ارادہ كرليا۔ چنانچه ايک قافلے كے ساتھ سرحد كرسيدصاحب كى خدمت ميں تينينے كا پخته ارادہ كرليا۔ چنانچه ايک قافلے كے ساتھ سرحد خال ،شتم خال ،شتم خال ، شتم خال ،شتم خال ، شتم رہ سے کے ساتھ اور ان کے کہ خور اسيدصاحب کيلئے بھي جاتھ ، جس كيلئے در ايں ذير الدولہ ولى عبد ثو تك نے انہيں كے ساتھ ايک گھوڑ اسيدصاحب كيلئے بھي جاتھ ان جس كيلئے در ايں ان اور شي تار کرايا تھا۔

عهده رسالداري

تمام لڑائیوں میں شریک رہے جنگ زیدہ کے بعد سیدصاحب نے ارادہ فرمایا کہ رسالے کی مستقل کمان کیلئے کسی کورسالدار بنادیں۔سیداحمعلی نے حزہ علی خال ساکن

لوہاری کا نام پیش کیا۔ مولانا شاہ اسلعیل نے عرض کیا کہ اس منصب کیلئے عبدالحمید خال بہت موز دس ہیں۔ ارباب بہرام خال نے شاہ اسلعیل کی تائید کرتے ہوئے کہا کہ عبدالحمید خال فن سیاہ گری میں ہوشیار، تجربہ کار اور بہادر ہیں۔ انہیں کو بیہ منصب ملنا جائے۔ سیدصاحب نے فرمایا کہ بہی تجویز بہتر معلوم ہوتی ہے۔

اگلے روز سید صاحب نے شاہ آسلیل، ارباب بہرام خال، سید احمد علی، شخ عبدائکیم، شخ ولی محمدادر بعض دوسرے اکابر کوجع کرکے آخری فیصلہ فرمایا۔ پھرعبدالحمید کو بلاکر کہا: خان بھائی! ہم کئی روز ہے کسی کورسالدار مقرر کرنا چاہیے تھے، سوہم نے آپ کو بیعبدہ دیا۔ آپ ان بھائیوں کوسواری اورسپہ گری کی تعلیم دیتے رہیں۔ عبدالحمید خال نے عرض کیا: حضرت! بیس فرما نبردار ہوں، کیکن میرا مزاج فرا تندہ اور بیام راختیاری نہیں کہ چھوڑ دوں۔ شاید بھائیوں کومیری افسری گرال گذر ہے۔ بیکام خدا کے واسطے ہاور نو ابوں رئیسوں کی جی فوج کانہیں۔ سیدصاحب نے سرایا شفقت بن کرفر مایا: خان بھائی! اس کا اندیشہ نہ کریں ہم دعاء کریں گے۔ امید ہے اللہ تعالیٰ آپ کے مزاج کی تیزی کو

وعاء

غرض آپ نے دست مبارک سے اپنا عمامہ عبدالحمید خال کے سر پر باندھا اور فر مایا کہ دوشا لے اور رومال میں سے جو پہند ہولے لیجئے۔خان نے رومال لے لیا۔سید صاحب نے سنہری قبضے کی ایک سروہی عبدالحمید خال کے گلے میں ڈال دی جونواب امیر خال والی ٹو تھے کی ایک سروہی عبدالحمید خال کے گلے میں ڈال دی جونواب امیر خال والی ٹو تھے والی جو تھے ور نے دی محل والی ٹو تھے والی جو تھے ور نے دی محلی ۔ اس کا پر تلا ساہری تھا۔ایک تلوار اور گھوڑ ابھی دیا۔ پھر برہند سرہوکر دعاء کی۔ رسالدار نے ایک اشرفی اور پانچ رو بے نذر کے طور پر پیش کیے اور معاً معجد میں جاکر

شکرانے کے دونفل پڑھے۔ بلاشہ عبدالحمید خال کا مزاج بڑا تیز تھا۔سیداحمد علی بھی ان کے محاسن کے معترف تھے۔صرف یہ کہتے تھے کہ ان کا مزاج تیز ہے اور بات بات پر ناخوش ہوجاتے ہیں،لیکن تمام راوی متفق ہیں کہ رسالدار مقرر ہونے کے بعد عبدالحمید خال حلم، بردباری اور سلامت مزاج کا پیکر بن گئے تھے۔

جنگ امب

جب سید صاحب نے پکھلی کے رؤسا وخوانین کی طلب پراس طرف پیش قدمی کا ارادہ کیا تو ایک شکر اینے بھا نجے سید احمالی کی سرکردگی میں بھیجے دیا تھا، جو یابندہ خال کی مخالفت کے باعث ستھانہ میں تھبر گیا تھا۔رسالدارعبدالحمید خاں کو اس لشکر میں نایب سالار بنایا تھا۔ پایندہ خال سے جنگ کی صورت پیش آگئی تو سیدصاحب نے مولانا شاہ استعیل کوسالا راعظم بنادیا تھا۔وہ خود فروسہ میں مقیم ہوگئے تتھے اور پچھ جیش انہوں نے جابجاد وسرے مقامات برمتعین کردیے تھے۔ پھر حملے کا ایک نہایت عمد ہ منصوبہ بنا کرتمام حبیثوں کو پیش قدمی کے وقت اور پورش کے مقامات کی نسبت مفصل ہدایات دے دی تھیں۔ یا بندہ خاں نے جب ویکھا کہ غازیوں کی پورش کے مقابلے میں کامیانی کی کوئی صورت نہیں تو شاہ اسلعیل کے سامنے کی تجویز پیش کردی اور انہوں نے تمام جیثوں کو بیش قدمی ہےروک دیا۔خودیا بندہ خال خفیہ خفیہ پیش قدمی کی تیاری کرتارہا۔سیداحمعلی این نشکر کے ساتھ ستھانہ سے روانہ ہو چکے تھے کہ شاہ اسلیل کا امتناعی تھم مل گیا، وہ وہیں ے اوٹ بڑے بلیکن وہ الی جگد تھے، جہاں سے پایندہ خال کی فوج کی نقل وحر کت صاف صاف نظراً رہی تھی۔

عبدالحمید خال نے کہا کہ سیداحم علی صاحب! پایندہ خال دھوکا دے رہا ہے۔ آپ واپس نہ ہوں اور آگے بردھیں۔انہوں نے فرمایا کہ میں سالار اعظم کے حکم سے مجبور ہوں۔اس اثناء میں پایندہ خال کی فوج نے کوہ کئیر ڈی کے غازیوں پرحملہ کردیا اور گولیاں چلنے لگیں عبدالحمید خال نے بھر کہا کہ سیداحم علی الرائی شروع ہے۔ بہتریہ ہے کہ آپ چلیں ورنہ مجھے جانے دیں ۔سیداحم علی نے انہیں بھی روک دیا۔اس اثناء میں لڑائی کی خبرآ کپنجی اور عبدالحمید خال کی رائے ورست ثابت ہوئی۔

انتظام عشر

انظام عشر کے سلسلے میں عبدالحمید خان قاضی سید حبان کے ساتھ تھے۔اس کے علاوہ بھی بیمو مار یہات کا دورہ کرتے رہتے تھے۔اپ تھوڑ ہے تھوڑ ہے تھوڑ ہے سوار جا بجامتعین کرر کھے تھے، لیکن طریقہ یہ تھا کہ آپ کسی سابی کو گاؤں کے اندر نہ جانے ویتے تھے۔ سب کو حکم تھا کہ جس چیز کی ضرورت ہو، باہر تھہر کرمنگوالیں۔ایک دفعہ ایک مجاہد سے غلطی سرز دہوگئ تو رسالدار نے اسے بخت سزادی۔ایک مرتبہ پابٹی میں دوسواروں نے ایک مخص کے کھیت سے چارا کا ان لیا، جس کی باری نہتی۔رسالدار تک یہ بات پہنچی تو اس درجہ خفا ہوئے کہ ایک سوار کے کند ھے برائی تلوار ماری۔

جنك مايار

مایار کی جنگ میں انہیں تکم ملاتھا کہ رسالے کے ساتھ ایک خاص مقام پر تھہرے
رہیں اور امیر الموشین کے تکم کے بغیر حملہ نہ کریں۔ جنگ نازک صورت اختیار کرئی اور
نظر بہ ظاہر سید صاحب دشمنوں میں گھر گئے تو ایک سوار نے یہ سمجھ کر حملہ کردیا کہ سید
صاحب کا بچانا ہر مصلحت پر مقدم ہے۔ رسالدار نے سمجھا کہ حملے کا تکم آگیا ہے۔ انہوں
نے بھی ہلّہ بول دیا۔ ان کے پاس دو گھوڑے تھے، جن پر باری باری سوار ہوتے تھے۔
جنگ مایار کے دن سمند کی باری تھی۔ جس طرف باگ اٹھاتے ویٹمن کی صفیں چیر کر رکھ
دیتے۔ تین جارم تبہ درانی لشکر میں گھے اور تلواریں مارتے ہوئے پارٹکل گئے۔ ان محملوں میں خود بھی زخموں سے چور ہوگئے۔ آخر گھوڑے سے گریڑے۔ جسم ذرا فربہ تھا۔

زرہ کی کڑیاں گوشت میں گئس گئیں۔راوی کا بیان ہے کہ جنگ کے بعد انہیں میدان سے اٹھا کرلائے تو جس کی نظر محبوب رسالدار پر پڑتی ہے اختیار اشک بار ہوجاتا۔خود رسالدار بالکل صابر وشا کر تھے۔ایک بھی مرتبہ تکلیف کا کوئی کلمہ زبان پرنہ آیا۔وفات کے متعلق اختلاف ہے۔ایک بیان ہے کہ تورو پہنچ کروفات پائی،دوسرا بیان ہے کہ تورو سے انہیں پنجتار لے گئے تھے،وہیں جاں بحق ہوئے۔

شان انتظام

راویوں نے بیان کیا ہے کہ ان کا گھوڑا ہروقت ساز دسامان سے لیس رہتا تھا تا کہ ضرورت کے موقع پراوائے فرائف میں ایک لیحے کی بھی تا خیر نہ ہو۔ انتظام کی بید کیفیت تھی کہ کسی شخص کو کسی معاطم میں دخل دینے کی مجال نتھی اور کسی کی سفارش نہ سفتے تھے۔

ان کے بعد حز علی خال رسالدار مقرر ہوئے۔ وہ بڑے عابد وزاہد اور صاحب تا ثیر تھے۔ سیاہ گری اور نیز ہ بازی میں بے نظیر مانے جاتے تھے۔ حز وعلی خال جج میں بھی ساتھ سے۔ انہیں کی بیروایت ہے کہ سید صاحب کے باس قیام کلکتہ کے دوران میں بے انداز ہشرین آتی تھی اور اس میں اکثر بتا شے ہوتے تھے۔ سید صاحب کو ایک آدھ بتاشہ چھونا میں بڑتا تھا۔ چھوتے بیکھتے زبان مبارک پرآ بلے پڑ گئے تھے۔

ابل وعيال

کے معلوم نہ ہوسکا کہ رسالدار عبدالحمید خال کے متعلقین میں سے کون کون موجود تھے۔ سید صاحب کے ایک مکتوب سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کے اہل وعیال سرونج میں تھے۔ ایک مکتوب میں نواب وزیرالدولہ کو لکھتے ہیں کہ اخلاص نشان عبدالحمید خال خدمت دین میں مستعدی ہے معروف ہیں۔ ان کے متعلقین آپ کے زیرسا بید ہجے ہیں۔ امید ہے کہ ان کی پرورش پرخاص تو جہ مبذول رکھیں گے۔

تيرجوال باب:

سيدمحم على رام بوري

معلوم نہیں ،سیدمجرعلی نے کس زمانے میں بیعت کی ،البتہ بیمعلوم ہے کہ دہ مجاہدین کا قافلہ لے کر ابتدائی دور ہی میں سرحد بینج گئے تھے۔جس زمانے میں سیدمجبوب علی دہلوی کی مراجعت کے باعث قافلوں کی آمدرک گئی تھی ،اس زمانے میں جن اصحاب کو بہ غرض دعوت و تبلیغ ہند دستان بھیجا گیا ،ان میں سیدمجھ علی بھی تھے۔

وقائع كابيان

"وقائع" میں ان کے ارسال کی کیفیت بول بیان ہو کی ہے:

"مونوی محرطی رام پوری کو حضرت علیہ الرحمۃ نے فرمایا کہتم طرف حیدرآبادوکھن کے جاؤ۔ انہوں نے عذر کیا کہ جھے کو نداس قدر علم ہے کہ کسی عالم سے مباحثہ یا مناظرہ کروں اور نہ یہ سلیقہ ہے کہ کو گول کے انبوہ میں وعظ دور کس کہوں۔ مجھے کو تو آپ کسی کا م کو و ہیں جیجیں کہ وہ کام کر کے چلاآ دُن۔ آپ نے فرمایا کہ خیر، جس بات کا عذر کرتے ہو، اللہ تعالیٰ سے امید ہے کہ وہ عذر دور کردے۔ پھر آپ نے اپنا کرتا اور پا جامہ اور تاج (ٹولی) ان کو پہنایا۔ چار پائی آ دی ان کے ہمراہ کیے۔ ان میں ایک تیم خاں رام پوری تصاور دوسرے عند اللہ کہ انہیں کے رفیقوں میں سے عنایت اللہ خاں تالی والے اور تیسرے عبداللہ کہ انہیں کے رفیقوں میں سے تصاور باتی کے نام یا دنہیں اور فرمایا کہ یہاں سے سندھ کو جانا۔ وہاں پیرکو ف میں بی بی صاحب سے طح ہوئے کراچی بندر کو جانا۔ وہاں سے مشتی پر سوار ہوکر میں بی بی صاحب سے طح ہوئے کراچی بندر کو جانا۔ وہاں سے مشتی پر سوار ہوکر

ممنی میں اتر نا پھروہاں سے حیدرآ بادکو جانا۔(۱)

حيدرآ باد

سید محمطی نے حیدرآباد کا قصد کیا تو وہاں مخالف بھی تھ اور موافق بھی مولوی حیدر اکھنوی دیوان چندولال کے پیشکار تھے،انہوں نے سیدمحرعلی کی آمد کو دیوان کے سامنے نہایت برے رنگ میں پیش کیا۔ کہا کہ وہ سیداحمہ کے خلیفہ ہیں، جوانگریزوں سے لڑتے ہیں۔ چندولال بولا کہ پھر تو انہیں قید کرنا جا ہے۔ سیدمجمع علی بیش آنے والی آفات سے بالكل بے برواتھاور جا ہے تھے كەاپنے مرشد كائكم بوراكرين خواہ كوئى صورت پيش آئے۔ قاری عبداللہ سیر صاحب اور سیدمحمر علی کے معتقدین میں سے تھے۔اس وقت حیدرآ بادیں دستورتھا کہ باہر سے معززین آتے توسرکاری طرف سے ان کی سواری کے لئے گھوڑے، ہاتھی اور یا کلیاں ملتیں اور حسین شاہ ولی کی درگاہ سے انہیں شہر میں لاتے۔ قارى عبدالله نيسيد محمل كيلئ يبي انتظام كرناجا بالمولوى عبيد الحن بنكالي شاه عبدالعزيز كے شاگرد كمپنى كے وكيل تھے۔ان كى وساطت سے درخواست كى۔انہوں نے چندولال ے کہا کہ سید محمطی بن علی فرخ آبادی کے خویش ہیں،ان کا اعز از ہونا جا ہے۔ چندولال نے کہا:این علی میر مے محن ہیں ،سید محمد علی کااعز از ضرور ہو گااور میں خود بھی ان کی ملا قات کا آرز ومند ہوں _

غرض سید محمد علی کو بڑے اعرزاز سے شہر میں لائے۔ آئییں چندولال سے ملنا پسند نہ تھا،کیکن حالات کی وجہ سے مجبور تھے، ملاقات ہوئی تو چندولال نے اڑھائی سورو پے ماہانہ وظیفے مقرر کردیا اوردو ہزار کی رقم کیک مشت مہمانداری کیلئے دی۔سید محمد علی کی دعوت تبلیغ سے حیدر آباد میں سنت کا احیاء ہوا۔ مبارز الدولہ اور بڑے بڑے امرااس دور میں

⁽۱) "وقائع"ص: ۵۰۸،۵۰۰_

صراط متنقیم پرقائم ہوئے۔ پھرمولوی صاحب کو مدراس جانے کا تھم ہوااور مولوی ولایت علی حیدرآبادآ گئے۔

اس زمانے میں چندولال کے ساتھ تعلق رکھنے والے منیر الملک سے نہ ملتے تھے۔
سید محمطی نے فرمایا کہ مجھ پر حیف ہے ہندو سے ملوں اور مسلمان سے نہ ملوں، چنانچہ ایک
دوست کی وساطت سے ملاقات کا انتظام کیا، ان کے ہاں موت وغیرہ کے تذکر ہے نہ
ہوتے تھے۔سید محمطی نے احوالی آخرت کے متعلق ایساد عظفر مایا کہ سب سننے والوں کے
دل دال صحنے۔

مدراس

سید محرعلی حسب الحکم حیدر آباد سے نکانو کرنول ، کڈیاارو گیرنیاور ہوتے ہوئے محرم ۱۲۲۵ھ (جولائی ۱۸۲۹ھ (جولائی ۱۸۲۹ھ) میں مدراس پنچ جس کا پرانانام چینا پٹن تھا اور اسے عام لوگ پٹن بھی کہتے تھے۔سید محرعلی نے ملا بحرالعلوم کے فرزند مولوی عبدالرب کے مدرسے میں ڈیرے ڈالے اور کتاب وسنت کی اشاعت شروع کی۔ آپ کے وعظ سے ہزاروں لوگ را و راست پر آئے۔ ان میں سے خاص طور پر قابل ذکر نواب خان عالم خال بہا در تہور جنگ ہیں، جو مدراس کے معزز رؤسامیں سے تھے اور ان کی صاحبز ادی نواب ارکائی کی بیگمتی۔ نواب موصوف نے بیعت کرتے ہی راوسنت اختیار کرلی اور اپنے گھر کی وہ تمام جیزیں نؤواڈ الیس جوشر لیعت کی روسے ناجائز تھیں۔

تبلیغ کے نتائج

خودنواب خان عالم نے سید محرعلی کی تبلیغ کے اثر ات بول بیان کیے جیں: ا۔ شراب، سیندھی ، گانجا پینے والے فاسق اور نرسو(۱) کو بو جنے والے عوام وخواص بنج وقتہ نماز پڑھنے گگہ۔

(١) ايك بندود يوتا شي سلمان بحي يوجة تعد

۲ مردول کےعلاوہ بعض عور تیں بھی تبجد گزار ہوگئیں۔
سر تمام غیر شرق اعمال ورسوم کا خاتمہ ہوگیا۔ (۱)
دی مہینے کی تبلیغ کے میر کر شے دیکے کرخالف بھی جوش بیں آگئے اور انہوں نے اعتراضات شروع کردیے۔ سید محمد علی کا طریقہ میر تھا کہ فضول بحثوں اور مناظروں میں نہ الجھتے ، اپنے اصل مقصد سے کام رکھتے اور اصلاح عقائد واعمال پرزورد ہے۔

مدراس كا دوسراسفر

سیدصاحب کی شہادت کے بعدسید محموملی رام پور چلے گئے۔ ۱۲۵ھ میں جج کے ارادے سے کلکتہ مہنچے تو مدراس والوں نے بے در بے درخواسیں بھیجیں کہ یہاں تھہرتے ہوئے جائے بلکنواب ارکاٹ کی والدہ نے ایک خاص آ دمی کلکتندرواند کردیا کے سید حمطی کو ہمارے جہاز'' دریادولت'' برسوار کر کے لائے۔ان کی اولین غرض بیقی کہ سید محمطی صاحب سے ایج بیٹے کیلئے اولا د کی دعا ئیں کرائیں ۔سیدموصوف مدراس بینچ کریملے متیال پیٹ میں تھبرے وہاں ان کیلئے بڑی حویلی خالی کرادی گئی تھی۔ پھرنواب ارکاٹ کی والده نے جعفرعلی خاں خانساہاں کو بھیج کرسیدصا حب کواینے ہاں بلایااورسید صبغتہ اللّٰہ شاہ کی حویلی میں اتارا۔سیدموصوف کی دعاء سے خدانے نواب ارکاٹ کواولا دعطا کی۔ اسموقع برمخالفوں نے شدید ہنگاہے بیا کیے اور برمکن کوشش کی کہ سیدمجمعلی کی دل آزاری اور اذیت رسانی میں کوئی کسر رہ نہ جائے۔ مخالفوں میں جمال فرنگی محلّی ،مولوی اللمي اور ارتضاعلي خال پيش بيش تتے .. زيادہ تر بحثيں شاہ اسلحيل كى كتاب' تقوية الایمان' اور رسول الله(صلی الله علیه وسلم) کی شفاعت کے متعلق ہوتی رہیں۔ ایک موقع پرسید محمعلی کوز ہر دینے کی کوشش بھی کی گئی تھی الیکن آپ اور آپ کے متعلقین خدا

⁽۱) تعبيه الضالين_

کے فضل سے محفوظ رہے

خان عالم خال كي استقامت

نواب خان عالم خال بہادر پر بھی دار ہوئے۔ چنا نچینواب سے کہہ کرا کئی تخواہ بند کرادی گئی، جسکی مقدار گیارہ سورو بیہ ماہانہ تھی۔ان کی صاحبز اوی (بیگم نواب ارکاٹ) کو بھی بہت تک کیا گیا کہ کسی طرح دہ غیر شرعی مراسم اختیار کر لیے جا کیں، جو عام طور پر اس زمانے میں دائج تھے۔اس حق پرست خاتون کا نواب کو صرف ایک جواب تھا: '' میں آپ کی بوی ہوں اور آپ کے ہر فرمان کو مانے کیلئے ہمہ تن تیار ہوں ،لیکن قبراور آخرت کے معاملات سب کے الگ الگ ہیں۔ میں آپ کے فرمان سے کسی غیر شرعی امر کی مرتکب نہیں ہو سکتی۔''

سيد برظلم وجور

سید محمطی نے بار ہا اعلان کیا کہ میر اعقیدہ ادر عمل وہی ہے جوجمہور اہل سنت کا ہے اور جو پی کے خطاف سنت ہے اسے غلط سمجھتا ہوں، خواہ وہ کسی کی طرف سے ہو، کیکن مخالفوں نے انہیں چین نہ لینے دیا۔ سید موصوف کے ایک نیاز مند نے اس ابتلا کی ایک تاریخ کمی جوذیل میں درج ہے۔

بر محمد علی جفائے پٹن رفت چوں جورِ شام بر حسنین است تاریخ ایں بلائے عظیم یاد مظلوی امام حسین ا

سید محمد علی نے اس کے بعد حج کیا۔ پھراحیائے دین کے کام میں لگے رہے۔ ۱۲۵۸ھ (۱۸۴۲ء) میں وفات یائی۔

چودهوال باب:

مياں جی محی الدین چشتی

یہ سیدصاحب کے خلص ارادت مند تھے۔ان کا ایک قابل ذکر واقعہ یہ ہے کہ آخیں شاہ بخارا کے پاس دعوتِ جہاد کی غرض سے بھیجا گیا۔ جب سفارت کی تجویز پختہ ہوگئ تو سیدصاحب نے فرمایا کہ کوئی موزوں آ دمی تجویز کیا جائے۔شاہ اسلمیل نے میاں جی چشتی کا نام تجویز کیا۔سیدصاحب نے آخیس تیاری کا حکم دیتے ہوئے فرمایا کہ نوآ دمی ساتھ لے جا کیں، چنانچہ آخوں نے مندرجہ ذیل آ دمی تجویز کیے: شخ محب الله ساکن کھذا شکار پور (ضلع مظفر گر) بضیرالدین،رجیم بخش، اسلمیل خال، ہمت خال، فتح یاب خال، عکیم عبدالحکیم دہلوی جو علیم جی اونٹنی والے مشہور تھے۔دوآ دمی قندھاری تھے۔

سیدصاحب نے انھیں کی قلمی قرآن مجید دیے کدراستے کے رؤسا کو دیتے جائیں۔
ان میں سے ایک قرآن مجید شاہ بخارا کیلئے تھا۔ متعد و اعلام نا ہے دیے۔ میاں جی صاحب اس لمبسفر سے جنگ زیدہ کے تین روز بعد واپس آئے۔ سفر کی کیفیت ذیل میں ورج ہے، جومیاں جی صاحب کے برادر نسبتی شخ محب اللہ سے معلوم ہوئی۔ شخ صاحب سیدصاحب کی شہادت کے بعد ٹونک میں آ بسے سے اور وہاں انھوں نے دکان کھول کی تھی۔

میاں جی صاحب نے خرچ کیلئے نقد رو بہی بھی ساتھ لے لیا تھا، کیکن واقف کار لوگوں نے انھیں مشورہ دیا کہ بھن حصوں میں سکے کا رواح ہی نہیں اور جنس کے بدلے جنس لی جاتی ہے، چنانچے انھوں نے ایس چیزوں کی خاصی مقدار ساتھ لے لی، جن کی طلب رائے کے لوگوں کو رہتی تھی ، مثلاً ہلدی ، سونھہ نمک ، مو ئیاں ، سوتی کیڑا۔

وہ باجوڑ ہوتے ہوئے چڑ ال گے اور شاہِ چڑ ال سے ملاقات کی۔سیدصاحب کا
ایک کمتوب انھیں دیا۔اس نے قیام وطعام کا اچھا بند وبست کر دیا۔وہاں میاں جی
صاحب کے آدمیوں نے اپنی چیزیں فروخت کیں،مثلاً ایک ایک سوئی کی قیمت پچیس
تمیں سیب یانا شپا تیاں ٹل جاتی تھیں۔سونھ اور ہلدی کی ایک ایک گرہ انگور کے پانچ پانچ
خوشے دے کرخریدی جاتی تھی۔ کپڑے کا تھان جو بارہ تیرہ آنے کوخریدا گیا تھا،اس کے
بدلے پشمینے کا نہایت عمدہ چوغہ ٹل جاتا تھا۔ حکومت کا کاروبار بہت سادہ تھا۔ وہاں
مشعلیں بھی ناپیدھیں ۔لوگ چیز کی کٹریاں جلا کر مشعلوں کا کام لیتے تھے۔

چترال سے بدخشاں کی سرحد تک رہبروں کا انتظام شاہ چترال نے کر دیا۔پھریہ قافلہ فیف آباد پہنچا۔وہاں کے حاکم سے میاں جی نے قلع میں ملاقات کی۔اس نے بھی قل فلے کوعزت سے تھبرایا اور مہمانداری کا انتظام کر دیا۔ پانچ دن فیض آباد میں گزار کر قدزروانہ ہوئے ، جہاں کا حاکم محمد مراد بیک تھا۔ (۱)

وہاں بھی قافلے کی خوب آؤ بھگت ہوئی۔ عام لوگوں کی زبان ترکی تھی۔ شہر کے لوگ فاری اور ترکی دونوں ہولئے تھے۔ میاں جی نے محد مراد بیک کوبھی آیک قرآن اور ایک اعلام نامہ دیا۔ اس نے ایک درباری کوقا فلے کی مہمانداری کا تھم دیدیا۔ ایک مہینہ وہاں تھہرے رہے۔ اس اثناء میں مراد بیگ سے ٹی ملاقا تیں ہوئیں۔ وہاں بلنگ پرسونے کا وستور نہ تھا۔ عام لوگ فرش پر قالین بچھا کرسوتے تھے۔ نیر مسلموں کو تھم تھا کہ مسلمان مانے آجائے تو گھوڑے سے اتر پڑیں۔ شلواریا سفید پگڑی نہ باندھیں۔ صرف ایک ہندو آتما رام ان یا بندیوں سے آزاد تھا۔ وہ پشاور کا باشندہ تھا اور اس نے ایک نہایت

⁽¹⁾ موہن لال وہلوی عرف حسن جان نے اپنے سفرنا سے میں مراد بیک کا حلید یوں بیان کیا ہے: قد جھوٹا،جسم دبلا پیل، استحصیں بہت چھوٹی اور اندر کو دھنسی ہوئی، ڈاڑھی کے چند بال صرف ٹھوڑی پر، رخم وانصاف سے ناآشنا، معمولی جرموں پرخت مزائیں دیتا۔

نازک موقع پر مراد بیک کیلئے رسد کا انظام کر دیا تھا،مراد بیک نے اس کی خواہش کے مطابق تمام پابندیاں اٹھادیں اوراس کواینے عام کاروبار کا مختار بنادیا۔

قندز کی ایک خصوصیت بیربتائی گئی که ہفتے میں دوبارایک تھلی جگہ بازارلگا تھا، جس میں شام تک خرید وفروخت جاری رہتی تھی۔دوکا ندار بلکی چیز تو گھر اٹھا لے جاتے تھے، باقی سب چیزیں میدان ہی میں چھوڑ جاتے اور کسی کا ذراسا بھی نقصان ندہوتا۔

میال جی صاحب نے اپنے چھساتھی قندز میں چھوڑے اور تین کوہمراہ لے کر بخارا پنچے۔شاہ بخارا نے عزت و تکریم سے اتارا۔ مہمانداری کا عمدہ انتظام کر دیا۔ ابتدا میں بڑی گرم جوثی سے ملتارہا، پھر ملاقات میں پہلی تی گرم جوثی باتی نہ رہی۔ معلوم ہوا کہ وہاں کے درباریوں نے غلط بیانی کے ذریعے سے شاہ کو بدخن کر دیا ہے۔ غلط بیانی بیتھی کہ سید صاحب جہاد کیلئے نہیں آئے بلکہ انگریزوں نے اپنا جال وسط ایشیاء میں پھیلا نے کی غرض سے آئیس بھیجا ہے، لہذاان کی امداد نہ کرنی چاہئے۔

میاں جی چشتی پانچ مہینے وہاں کھہرے رہے۔ جب دیکھا کہ مزید قیام بالکل فضول ہے تو واپسی کا فیصلہ کرلیا۔ شاہ نے افسی ایک ترکی گھوڑا، تین یا ہو، تین تھان کتان کے اور پچاس اشرفیاں دیں۔ چنا نچہ وہ ایک قافلہ کے ساتھ قندز پہنچے وہاں سے بدخشاں آئے، جہال حکیم عبدا تکیم نے وفات پائی۔ پھر چر ال، سوات اور بنیر ہوتے ہوئے پنجتار پہنچ۔ اس سفر میں تقریباً دوسال صرف ہوئے۔

میاں بی صاحب کا ذکر جنگ مایار میں بھی آیا ہے، جس میں ان کی ایڑی پر ایسا سخت زخم لگا تھا کہ چلنے سے معذور ہوگئے تھے۔ جنگ بالاکوٹ میں شریک نہ تھے غالبًامعذوری کے باعث انہیں وہیں چھوڑ دیا تھاجہاں بی بی صاحب مقیم تھیں۔

يندر موال باب:

نواب وزبرالدوليه

آپ امیر الدوله امیر الملک نواب محمد امیر خال بهادر شمشیر جنگ والی تو تک کے فرزندار جمند تھے۔ ۲۷ جمادی الانرئی ۱۲۵ ھ (۱۳۱ داکو بر۱۸۳۷ء) کومندنشین ہوئے۔ اکبر شاہ ثانی مغل شہنشاہ ہندکی طرف سے وزیرالدولہ امیر الملک بہادر نصرت جنگ کا خطاب ولی عہدی کے زمانے ہی میں عطا ہو چکا تھا۔ باپ بیٹا دونوں سیدصا حب کے مخلص ادادت مند تھے۔ بیٹے نے باقاعدہ بیعت کر کے منصب خلافت عاصل کیا تھا۔ ایک نیاز مند نے کھوا ہے:

امیرالمونین را نائب خاص کی مجسم ذات او از صدق و اخلاص و زیرالدوله آل ذوالفیض و الجود کی بین در کمتیش "بوالفیض" موجود زید است کی سرّ احمدی در سینه اوست چود و دیگر کریم اردیده باشم کی به ایزد دیگر که بگریده باشم (۱) نواب وزیرالدوله نے کم وبیش تمین سال عدل وداد سے حکومت کی سارمحرم الحرام الحرام (۸ارجون ۱۸۲۱ه) کونماز ظهر کے وقت نظر باغ کی کوشی مین انتقال کیا۔

روزانه زندگی

ان کی زندگی اسلامیت کا نمایت پاکیزهنمونه تھی۔ تبجد اور ظهر کے سواتمام نمازوں (۱) کیاعظمت ہے کہ میں نے نواب جسیاد دسرائیس دیکھا۔ اگریہ بات جموئی ہوتہ جھے شرک کا بحرم سجمو۔ کیلے گری ہو یاسردی پیدل مجد میں جاتے ، بارش میں بھی یہ پروگرام بدستورقائم رہتا۔
مستغیث راستے میں بل جاتا تو ساتھ لے آتے اوراس کا بیان سفتے روزانہ مشاغل کی
کیفیت بیتی جبح کی نمازم مجد میں اواکرتے اورادوو ظائف کا سلسلہ طلوع کے بعد تک
جاری رہتا۔ نماز اشراق کے بعد تھوڑی دیر کیلئے دیوان خانے میں جاتے۔ پھر بھی پالکی
میں بیٹھ کر اور بھی گھوڑے پر سوار ہوکر سیر کرتے۔ بعد ازاں فنون سپہ گری کے استاد
آ جاتے ۔ مثلا با تک، پٹا، پھینک، رہتم خانی علی مدد، مگدر، نیزہ ہازی، تیراندازی وغیرہ
اور تھوڑی دیر تک ان فنون کی مشق جاری رہتی ۔ مشق سے فارغ ہوکر خاصہ تناول فر ماتے
اور سپاہ کے متعلق رپور میں سفتے۔ دو پہر کے بعد قبلولہ کرتے ۔ ظہری نماز اداکر کے قرآن
رات کا کھانا بھی نماز مغرب کے بعد اور بھی نماز عشاء کے بعد کھاتے ۔ نماز عشاء کے بعد حافظ کریم اللہ سے قرآن سفتے ۔ پھرشاہنا مہ پڑھا جاتا۔

شانِ عقيدت

سیدصاحب سے عقیدت کے جو علی جوت نواب وزیرالدولہ نے پیش کیے، کم از کم امراء کی صف بیس اس کی مثالیں بہت کم ملیں گ۔ جہاد میں ہر مکن امداد کی ۔ سفر ججرت میں ٹو نک سے اجمیر تک سید صاحب کے ہمر کاب رہے۔ جب سنا کہ سرحد میں سید صاحب کوامام جہاو بنالیا گیا ہے تو نواب مرحوم نے معا بیعت نامہ سیدصاحب کی خدمت میں جیجے دیا اور عرض کیا کہ تھم ہوتو وہاں حاضر ہوجاؤں ۔ سیدصاحب نے روک دیا کہ تھوڑی ویرا نظار کیجئے۔ شہاوت کے بعد سیدصاحب کے اہل وعیال اور متعلقین کو باصرار تو تک میں بلوالیا اور سیدصاحب کی اہلیہ کی پائی ایک میل کے فاصلے سے اپنے کند سے پر اٹھا کر لائے۔ تمام متعلقین کیلئے وظیفے مقرر کیے ۔ سید صاحب کی بری صاحبزادی سیدہ افراک کا سیدہ کے بری صاحبزادی سیدہ

سائرہ کیلئے گیارہ ہزار کی جا گیرمقرر فرمائی۔ جماعت مجاہدین سے جتنے اصحاب ٹونک پہنچے ان سب کیلئے موزوں عہدے تجویز فرمادیے۔ جن اصحاب نے عہدے قبول نہ کے ،ان کیلئے وظیفے مقرر کردیے۔ جماعت مجاہدین کیلئے ایک الگ محلّہ آباد کردیا، جو اَب تک ''محلّہ قافلہ'' کے نام سے مشہور ہے۔

سیرصاحب کے حالات

اس ہے بھی قابل ستائش کارنامہ یہ ہے کہ جماعت مجاہدین میں سے جتنے اصحاب
اپ اپنے اپنے وطنوں میں واپس آگئے تھے، پے در پے قاصد بھیج کر انہیں ٹونک بلوایا اوراس
کام پر مامور کر دیا کہ سید صاحب کے متعلق تمام متند حالات جمع ہوجا کیں، چنانچے سید صاحب کے بوٹ بھا نجے سید محمد علی سے ''مخزنِ احمدی' مرتب کرائی، جوسفر جج کے افتدام تک سید صاحب کے حالات میں ایک متند کتاب ہے۔ یہ کتاب ایک مرتبہ طبع مفید عام آگرہ میں چھپ بھی گئی تھی۔ سید جعفر علی نقوی نے ''منظورۃ السعداء فی احوال مفید عام آگرہ میں چھپ بھی گئی تھی۔ سید جعفر علی نقوی نے ''منظورۃ السعداء فی احوال الغزاۃ والشہد اء' فاری میں مرتب کردی، جو کم وہیش بارہ سوسفحات پر مشتمل ہے۔ علاوہ بریں مختف کوجو حالات معلوم بریں مختف کوجو حالات معلوم ہوتے ، وہ بطور روایت بیان کرتا اور بیروایت نقل کر لی جاتی ہی کواس روایت کے کی حصے سے اختلاف ہوتا تو اس کا اختلاف الگ بطور روایت لکھ لیا جاتا۔ سید صاحب کے حصے سے اختلاف ہوتا تو اس کا اختلاف الگ بطور روایت لکھ لیا جاتا۔ سید صاحب کے حالات کے متحلق متندروایات کا بینہایت بیش بہاؤ خیرہ ہے۔

خدمت حق

سیدصاحب کی شہادت سے پچھ مدت بعد مولوی سیدنصیرالدین دہلوی نے احیاءِ تحریک جہاد کی کوشش کی تھی اور مولوی صاحب موصوف بھی سیدصاحب کی طرح مجاہدین کی ایک جماعت کے بعد دہلی سے سندھ کڑنے مسئے ۔واہ پچھ مدت سندھ میں رہے۔ پھر امیر دوست محمد خال کی حمایت میں انگریزی فوج سے جنگ کی، جس نے شاہ شجاع کو تخت
کابل پر بشمانے کیلئے پیش قدمی کی تھی۔ بعد از ال مولوی صاحب ستھانہ پہنچ عے اور
جماعت مجاہدین کی قیادت سنجال لی۔ نواب وزیرالدولہ نے ان کی امداد میں بھی کوئی
دقتہ سعی اٹھانہ رکھا تھا۔

وصايا

نواب وزیرالدولہ کے فرزندار جمند یمین الدولہ وزیرالملک نواب محمطی خال بہادر صولت جنگ بھی اس بہادر صولت جنگ بھی اس رنگے ہوئے تھے۔ یہی وجتھی کہ انگریزوں نے انہیں تین سال بعد مسند حکومت سے اتار کر بنارس بھیج ویا، اگر چہ اس عزل کے وجوہ بظاہر کچھاور بتائے گئے۔ نواب وزیرالدولہ بڑے جیدعالم تھے، اس کا اندازہ مان کی ضخیم کتاب "وصایا الوزیرعلی طریق البشیر والنذیر' سے ہوسکتا ہے۔

اس کتاب میں سیدصاحب اور جماعت مجاہدین کے بعض دوسرے اکابر کے متعلق بہت کہ حکا یتیں درج کی ہیں جو کسی دوسری کتاب میں نہیں بل سکتیں۔ اگر چہ ملک کے سیاسی حالات نے انہیں اور بعض دوسرے مخلصین کو بے بس کردیا تھا، کیکن دلی جذبات بعض اوقات ہے اختیار زبان پر آجاتے تھے۔'' وصایا'' میں ایک مقام پر لکھا ہے کہ میرے والد (نواب امیر خال) اور انگریزوں کے درمیان صلح کی گفتگو ہور ہی تھی تو سید صاحب نے پیشتر بتادیا تھا کہ فلاں فلاں علاقے نواب کو ملیں گے، چنانچہ وہی علاقے ماحب کے بیشتر بتادیا تھا کہ فلاں فلاں علاقے نواب کو ملیں گے، چنانچہ وہی علاقے کے اس حکایت میں لکھتے ہیں:

''در ہنگاہے کہ انگریز کفرانگیز وشرک ریز، یابار خدایا بہ خدائی تو کہ سر ویالش ریزریز، آبین برپدرم لشکر کشی نمود۔(۱) الخ

^{(1) &}quot;وصايا" حصد دوم ص: ١٣٩ـ

پکراتاع

بہرحال نواب وزیرالدولہ بڑے ہی بلند پایہ بزرگ تھے۔سید محم علی نے ایک حکایت کے سلط میں چند شعر لکھے ہیں، جن میں نواب کے اخلاق کی تصویر سینج کرر کھ دی ہے۔ فرماتے ہیں: ے۔ فرماتے ہیں:

زین دوسه اییات که بنوشته ام هی مرده ده احمدیان گشته ام خاصه به نواب طائک آب هی بر فلکِ شرع نبی آفاب مخمع بدی زو شده افروخته هی فرمن بدعت شد ازو سوخت سنت احمد شده زو متقیم هی بدعت ازو شد به جنم مقیم سایه او تا به دم نفخ صور هی یارب ازین خاک ندسازی تودور

مخلف بیانات ہے معلوم ہوتا ہے کہ نواب معدوح بہت کثیر الدعاء تھے۔ ہرکام کے آغاز وانجام پر دعاء کرتے بعض اوقات دربار میں دعاء کی ضرورت پیش آجاتی، خود اٹھے ''دوگانہ''ادا کر کے دعاء کرتے یا قبلہ رخ کھڑے ہوکر مصروف دعاء ہوجاتے ،اس موقع پر درباریوں کوتا کیدھی کہ تو اعددربار کے مطابق کوئی جگہ سے ندا تھے اور جہاں بیٹھا ہے، بیٹھار ہے۔

سولہواں باب:

سيدقطب على اورسيد جعفرعلى

مجھوامیر ضلع بستی (بوبی) وطن ، متوسط در بے کے زمیندار تھے۔ شیخ محر اسحاق گور کھپوری کے بیان کے مطابق علم وفضل اور زہد وتقوی میں ان کا بایہ بلند تھا۔ سید صاحب نے شیخ اسحاق کو خلافت دین جابی تو انہوں نے قلت علم کے عذر کی بنا پر سید قطب علی ہی کا نام لیا تھا۔ اس دریائے فیض نے بے تکلف فرمایا کے سید موصوف کو بھی ئے آؤ۔

قطب علی سترہ آدمیوں کو لے کرسید صاحب کے پاس اس زمانے میں تکمیشریف پہنچ جب آپ جج سے دالیں آئے تھے۔اس قافلے میں ان کے جھوٹے بیٹے سید حسن علی میں مال تھے۔ بوے بیٹے سید جعفر علی، صاحب '' منظورۃ المعداء''اس وقت اکھنؤ میں تعلیم پارہے تھے، وہ علالت کے باعث ساتھ نہ جاسکے۔سید قطب علی بہت کبیر السن تھے۔ رائے بریلی سے ایک کوس کے فاصلے پر زحمت سفر کے باعث بیار بڑگئے۔ تکمیہ شریف پہنچ تو ان کی مہمان داری سید صاحب کے بھتے سید محمد یعقوب کے سپر د ہوئی۔ شریف پہنچ تو ان کی مہمان داری سید صاحب نے مواا ناعبد الحق سے ضلافت کی سند تکھوادی۔

سيدصاحب كىشهادت كاغم

قصد ہجرت کی شہرت ہوئی توسید قطب علی بھی معیت کیلئے تیار ہو گئے۔سید صاحب نے ضعفی کے پیش نظر انہیں روک دیا اور فر مایا کہ دعاء کرتے رہیے اور ہمارے بلاوے کا انتظار کیجئے۔اقتال امر میں وہ رک گئے۔سید صاحب کی شہادت کی خبرس کر بہت روئے۔مولوی جعفر علی نقوی کا بیان ہے کہ بار بار فرماتے تھے:کاش میر ابیٹا (سید جعفر علی) مرجا تا اور سیدصاحب زندہ رہتے۔ نیز فرماتے تھے کہ سیدصاحب کے ہاتھوں غلبہُ اسلام دیکھنے کی آرزوتھی ،اب میں زندہ نہیں رہنا جا ہتا۔ مولوی سید جعفر علی کے بیان کے مطابق انہوں نے فرمایا:

" تمنا بود كه الله تعالى از دست حضرت امير المومنين كفار تكونسار دا ازي ديار پاک كرده شوكت واسلام معائد نمايد - چول جناب ممدوح دردنيانه ماندند، ماهم اگرمرديم چنم است - "

ترجمه: آرزوهی کاللدتعالی حفرت امیرالمونین کے ہاتھوں اس سرزمین کوکا فروں سے پاک کرے اور اسلام کا غلبدد کھائے۔ امیرالمونین زندہ ندرے، مجھے بھی موت آجائے تو کیاغم ہے۔

وفات

غالبًا ۱۲۴۸ھ (۱۸۳۳ء) میں وفات پائی۔ آخری وفت میں متعلقین کو جو وسیتیں کیں، ان میں سے چند ریہ ہیں:

ا يوحيد برقائم رمواورسنت كااتباع بهي ندچهورو -

ہیرے بعد کسی بدعت کا ارتکاب نہ ہونے پائے ، ورنہ قیامت کے
 دن تم ہے مواخذہ کروں گا۔

سے میرے مرنے پر نہ نوحہ کیا جائے ، نہ سوم یا کوئی دوسری رسم منائی

جائے۔

سيدجعفرعلى

مولوی سید قطب علی کے فرزندا کبر تھے۔ ۱۲۱ھ میں بمقام مجھوا میر پیدا ہوئے۔ ابتدائی تعلیم اپنے وطن میں پائی کھھنؤ جا کرعلوم کی شکیل کی۔ والد ماجداور چھوٹا بھائی سید حسن علی تکمیشریف جا کر بیعت کر چکے تھے۔سید جعفرعلی بوجہ علالت نہ جا سکے۔ پجھ مدت بعد سیدصاحب بغرض جہادرائے ہر پلی سے سرحد چلے محئے اور سید جعفرعلی کوشر ف لقاء بھی حاصل نہ ہوا۔

باب اور بھائی کی محبت میں ان پہھی سید صاحب کارنگ چڑھ گیا۔ اس کے بعد دونوں بھائیوں میں سبقت بالخیر کیلئے کشاکش شروع ہوگئی۔ والدین کبیرالس تھ، دوبھائیوں کے سوا گھر میں کوئی نہ تھا جوان کی خبر گیری کرتا۔ بڑے کا اصرار تھا کہ چھوٹا گھر پرخبر گیری کی کہ اسرار تھا کہ بڑے کو پرخبر گیری کیلئے موجود رہے اور میں جہاد کیلئے جاؤں۔ چھوٹا بار بار کہتا تھا کہ بڑے کو والدین کی خدمت میں رہنا چاہے اور مجھے جہاد کیلئے جانے کی اجازت، دی جائے۔ آخر چھوٹے بھائی خوض سے بوڑھی والدہ کے سامنے پیش کردیا۔ چھوٹے بھائی نے بید معاملہ آخری فیصلے کی غرض سے بوڑھی والدہ کے سامنے پیش کردیا۔ اس خدادوست خاتون نے کہا جو جانا چاہے اسے روکانہیں جاسکتا، جونہ جائے وہ گناہ گار ہوگا۔ آخری فیصلہ کرو، ہم اپنی عاقبت کیوں خراب کریں۔

تطعى فيصله

اس اثناء ہیں سید جعفر علی کو ایک مقد ہے کے سلسلے میں گور کھپور جانا پڑا۔ وہاں سے
لوٹے تو ان کے استاد مولوی حید رعلی کا خط آیا پڑا تھا کہ فقیر محمد خاں رسالدار کور دروافض
میں بعض رسائل و کتب کی تھیج کیلئے ایک آ دمی کی ضرورت ہے۔ بین خدمت قبول کرلو لیکن
سید جعفر علی سید صاحب کی خدمت میں پہنچنے کا عزم صمیم کر چکے تھے، اس لئے مولوی
حید رعلی کو معذرت لگو بھیجی پھر منت ساجت سے چھوٹے بھائی کو خدمت والدین کے لئے
حید رعلی کو معذرت لگو بہت تھا، کیکن نقلہ
مغمرے رہنے پر راضی کرلیا اور خود جانے کیلئے تیار ہوگئے ۔ گھر میں غلہ بہت تھا، کیکن نقلہ
روپے زیادہ نہ تھے۔

ا کی شادی ہو چکی تھی۔ گویا والدین کے علاوہ عیالداری کی زنچیر بھی اسکے پاؤں میں پڑچکی تھی بلیکن سلطانِ فرض کے تھم کی بجا آوری میں انہوں نے علائق کے تمام رشتوں ے بے تکلف انقطاع اختیار کرلیا۔ بھائی کے سواکسی کوان کے حقیقی ارادے کاعلم نہ تھا۔

رواتگی

مورکھپور میں مقد ہے کی پیروی کیلئے انھیں وقا فو قاجانا پڑتا تھا، دل میں طے کرایا کہ وہیں سے منزل مقصود کی طرف روانہ ہوجا کیں گے۔ گھر میں صرف ایک گھوڑا تھا، ای پرحسب ضرورت والد یا دونوں بھائی سوار ہوتے تھے، چنا نچہ بظا ہر مقد ہے کی پیروی کے لئے گورکھپور روانہ ہوئے، گھوڑے کی دکھے بھال کیلئے ایک ملازم کوساتھ لے لیا، رخصت ہوتے وقت والد ماجد سے عرض کیا کہ' دعاء فرما ہے اللہ تعالی مجھے فتح ونصرت سے والی لائے''۔ انھوں نے سجھا کہ مقد ہے میں کامیابی کیلئے دعا کے طلب گار ہیں، چنا نچہ انھوں نے دعاء کی۔ یوں صاحب عزم بیٹا والدین اور گھر بار سے رخصت ہوا اور اس منزل دشوار میں اس نے قدم رکھا جہاں سے زندہ آنے کی امید موہوم تھی، بھائی چھوکوں تک گیا، اپنی بندوق پیش کی، سید جعفر علی نے کہا اسے اپنے پاس رکھو، مجھے خدا اور دید ہے گا، بھائی نے بندوق پیش کی، سید جعفر علی نے کہا اسے اپنے پاس رکھو، مجھے خدا اور دید ہے گا، بھائی نے دولت میں جدا ہور ہے ہیں تو دنیا کی دولت میں جدا ہور ہے ہیں تو دنیا کی دولت میں خدا ہور ہے ہیں تو دنیا کی دولت میں جدا ہور ہے ہیں تو دنیا کی دولت میں حدا ہور ہے ہیں تو دنیا کی دولت میں حدا ہور ہے ہیں تو دنیا کی دولت میں خدا میں خدمت میں کوئی دقیقہ سعی اٹھانہ رکھنا۔

سید جعفرعلی نے اپنے بعض ہم مشرب دوستوں کو پہلے سے اطلاع دے رکھی تھی اور فیصلہ یہ ہوا تھا کہ تمام دوست مقررہ تاریخ پر ایک خاص جگہ جمع ہوجا کیں۔سید جعفرعلی کا بھائی چلا گیا تو ان کے ایک دوست شیخ داراب مل گئے اور دوسرے دوستوں کے انتظار میں دونوں نے استحصفر شروع کیا۔

راوحق میں پہلاقدم

عجیب بات بیہ ہے کہ انسان راوخدامیں قدم اٹھا تا ہے تو اکثر ابتدای میں امتحان کی

سختیاں پیش آ جاتی ہیں، بیغالبًا قدرت کی طرف سے تربیت کا ساز وسامان ہوتا ہے۔ سید جعفر علی گھر سے نکلے تھے تو برسات کا موسم تھا، دریا اور ندی نالے طغیائی پر تھے، اس وجہ سے مروروعور بخت مشکل تھا، طرفہ ہید کہ سفر کی پہلی ہی رات آ شوب چٹم کا عارضہ شروع ہوگیا اور اتنا شدید درو ہوا کہ رات بحرایک لیمے کیلئے سونہ سکے۔ رات موضع میر سمج میں گئے میں گزاری جہج اٹھے تو گھوڑ انو کرکودے کروائیس کردیا، تا کہ والداور بھائی کو تکلیف نہ ہو، خود گور کھیور پہنچ گئے۔

دعوت وايثار

اتفاق سے ای زمانے میں انگریزوں نے ایک رسالے کو چھ مہینے کی تخو اہ انعام میں دے کر تو ژدیا تھا اور اس کے سوار تو کری سے فارغ ہوکر گور کھپور میں جمع تھے۔ ان میں سے بعض سید جعفر علی کے دوست تھے۔ سید موصوف نے معاً انھیں راوح ت کی دعوت دی اور کہا کہ تم لوگ دنیا کی نوکری ہے الگ ہوگئے ہو، آ واب گھوڑے اور ہتھیار لے کراللہ کی راہ میں جہاد کریں۔

ان میں سے نجیب خال نام ایک شخص کے پاس چار گھوڑ سے ،اس نے ایک گھوڑ ا فی سبیل اللہ سید جعفر علی کے حوالے کر دیا ، دو گھوڑ ہے بچ کران کی رقم ضروری مصارف کے لئے گھر میں دیدی ، چوتھا گھوڑ ااپنی سواری کیلئے رکھ لیا اور بولا کہ چند ضروری کام کر کے میں بھی روانہ ہو جاؤں گا ،اگر آپ پہلے پنچے تو سید صاحب کومیر اسلام پہنچا دینا ،اگر میں میں کم پنچا تو آپ کا سلام پہنچا دوں گا۔

۔ سید جعفرعلی نے اپنی نچھ چیزیں پانچ روپے میں فروخت کیں،ایک اور مخص رفافت کے لئے تیار ہو گیا،لیکن بولامبرے پاس سواری نہیں اور پیدل چل نہیں سکتا،سید جعفرعلی نے نجیب خاں کا دیا ہوا گھوڑ ااس کے حوالے کر دیا۔

ستر ہواں باب:

سيدجعفرعلى اورسفركي صعوبتين

raa

غازى يوراور جون يور

ا يك جيموني سي كشتى مين درياعبور كرك كو يال بور پنچي، جهان تمام دوستون كوجمع مونا تھا اور پانچ روز و ہاں تھہرے رہے، پھر دریائے گھا گراہے یار اتر کرمبارک بور ہوتے ہوئے محمد آبادم و گئے، وہاں سے قریب ہی سید جعفر علی کے خالوتھا نیداری کے عہدے بر مامور تھے، انھیں خبر نہ ہونے دی کہ مبادار کاوٹ پیدا کریں۔ بہادر سنج اور قاسم آباد کے رائے غازی پور پینچ کرشخ فرزندعلی کی مجد میں مقیم ہو گئے جوسید صاحب کے خلیفہ تھے۔ شیخ صاحب انھیں دیکھ کر بہت خوش ہوئے ، دو ہفتے اپنے پاس تھہرائے رکھا، روانگی کے وقت ایک سورویے نقد اور ایک یابو پیش کیا، نیز چوده آ دمیوں کیلئے ہتھیاروں کا انتظام فرمادیا، شخ صاحب کے بیٹے شخ ام علی پہلے سے سیدصاحب کے ساتھ تھے،ان کے لئے كيرر، بانات كى ايك جا دراورايك خط ويا ـ

غازی بور سے بھیتری اور کراکت کے رائے جو نپور پنچے۔شہرے باہر تھانیدارنے روک لیااور یو چھا کہ تھیار نگا کر جارہے ہو، ضامن کے بغیر جانے نہ دوں گا۔سید جعفرعلی نے کہا کہ شہر میں جا کر شیخ کرامت علی کی ضانت دیدیں گے۔ شیخ کا نام من کرتھا نیدار نے اجازت دیدی۔ وہ شخ کرامت علی کی معجد میں مھمرے۔ شخ نے موضع منڈیا ہوسے ایک لونٹ منگوا کر قافلہ مجاہدین کی نذر کر دیا ، وہاں دو تین اور غازی مل گئے ۔اس اثناء میں سید

جعفرعلی کے والد کو اطلاع مل چکی تھی کہ ان کا بیٹا گورکھور نہیں گیا، بلکہ جہاد کیلئے سید صاحب کے پاس جارہا ہے۔وہ بعض دوسرے عزیزوں کو ساتھ لے کر پیچھے نکل پڑے اور جو نبور میں ان سے آلے۔اصرار کیا کہ داپس چلو، پھر ہم سب مع قبائل سیدصا حب کے پاس جانے کیلئے تیار ہوجا کیں گے،لیکن سید جعفرعلی نے بیچو ہزنہ مانی اور کہا کہ مع قبائل اس وقت جانا مناسب ہوگا جب امیر المونین مع قبائل طلب فرما کیں گے۔غرض سیدصا حب موصوف نے منت ساجت سے والد اور دوسرے عزیزوں کو راضی کر کے سیدصا حب موصوف نے منت ساجت سے والد اور دوسرے عزیزوں کو راضی کر کے واپس بھیجے دیا۔

يشخ غلام على اللهآبادي

جون پورے بیقا فلہ مجھلی شہراور موہوتا ہوا مہروڑ اپہنچا جوشخ غلام علی اللہ آبادی کا وطن تھا۔ شخخ نے معمول کے مطابق خاطر داری میں کوئی کسرا تھاندر کھی۔ رخصت کے وقت مجاہدین کی خدمت میں مختلف فتم کے ہتھیا رمثلاً تکواریں، کثاریں اور ڈھالیں، ان کے علاوہ جاجم، ویکیچے، طباق، پیالے وغیرہ پیش کیے۔ نفذر قم بھی دی ہوگی جس کی مقدار معلوم نہ ہوگئی۔ شخ صاحب ان دنوں بخت پریشانیوں میں جتلا تھے۔ مہاراجہ بنارس نے معلوم نہ ہوگئی۔ شخص صاحب ان دنوں تحت پریشانیوں میں جتلا تھے۔ مہاراجہ بنارس نے ان پرگرانفذر قم بطور تاوان ڈال دی تھی اور ان کا بڑالڑ کا اس عہد کے نوجوان امیروں کی طرح آزاداندروش اختیار کرچکا تھا۔

منتنى ،كان بوراورقنوح

مہروڑات بیلوگ مینی بہنچ، جہاں امجد خال سے ملاقات ہوئی۔ وہ مستودات کے قافی کو ٹو نک پہنچا کر واپس آئے تھے۔ سید صاحب کے عزیز سید محمد خلا ہر بھی تکییشریف سے امجد خال کی ملاقات کیلئے آئے ہوئے تھے۔خان نے اپنایا بومجاہدین کی خدمت میں

پیش کردیا۔ پالان شتر کی درئ کیلئے ایک دن گتنی میں گزار کریدلوگ کڑا اور فتح پور ہوتے ہوئے کا سامان ہوئے کا ان پور میں وارد ہوئے۔ وہاں چنگی کے دومسلمان کارکنوں نے قافلے کا سامان روک لیا۔ ایک ہندو کارکن مصری لال نے جوسید جعفر علی کے چچا سید احمد علی کا دوست تھا، سامان چھڑا اا۔

کان پورٹیں یہ قافلہ چارروزمقیم رہا۔ سید جعفر علی اس مخف کو ساتھ لے لیتے تھے جو جہاد کیلئے آ مادگی ظاہر کرتا تھا۔ کان پورٹیں اللی بخش نام کا ایک مخف ساتھ ہوگیا۔ اس نے اہل قافلہ کو بڑی پریشانیوں میں مبتلا کیا۔ یہ لوگ قنوج پہنچ کر سید اولا دھن سے سلے ، جو اس ذمانے میں سرحدسے واپس آئے تھے۔ میراحم علی رئیس قنوج نے سیدصاحب کے لئے ایک نہایت عمدہ آلوارسید جعفر علی کے حوالے کی۔ ان سے الہی بخش کے حالات بوچھے تو جواب ملاکہ شخص مضد ہے اور ضرور کوئی فتنہ بریا کرے گا۔

سید جعفرعلی نیک طبعی کے باعث گھوڑااس کے حوالے کر پچے تھے۔ سردی کا موسم شروع ہوگیاتھا،اس لئے قنوج میں مولوی صاحب نے اپنے ساتھیوں کیلئے کاف بنوائے ۔ قنوج سے میں پوری ہوتے ہوئے محمود تنج پہنچے۔ سید جعفرعلی نے لکھا ہے کہ بہت سے ساتھی بیمار ہوگئے تھے اور ان میں سے بعض ساتھ نہ چل سکتے تھے۔ ایک بیمار کو قنوج میں چھوڑا، دوسر کو یا بو پرسوار کر کے میں پوری پہنچایا۔ جن بیماروں کوساتھ لے لیا تھاوہ بھی زیادہ دور چلنے سے معذور تھے۔ سید جعفرعلی نے ایک محف کو یہ پیغام دے کر میں پوری بھیج دیا کہ وہاں کے بیمار کی بخوبی دکھی ہوال کی جائے۔ خود یا بو لے کر لوٹے کہ قنوج میمار کوسوار کرالا کیں ۔ میں اس موقع پر الہی بخش نے آنکھیں پھیرلیں اور بولا: تہمارے ساتھی بہت برے ہیں۔ میں الگ ہوتا ہوں ۔ میری آرزوتھی کہ ایک ہزار کا تا گھارتے ان لوگوں کے ساتھ گھوڑے، اونٹ اور قیتی اسلحہ ہوتے ، لیکن تہمیں منظور خبیں ۔ سید جعفرعلی کے رفیقوں میں سے منصور خال بہت قوی تھا، اس نے کہا کہا کہا گہار چہ

بیار ہوں، لیکن اسے پکڑلوں تو ہڈیاں تو ڑ ڈالوں۔سیدصاحب نے ہاتھا پائی سے روک دیا، لیکن رفیقوں نے کہددیا ہے ہماراساتھی نہیں،خواہ نخواہ ہمیں ایذا پہنچا تاہے۔

غرض سیدصاحب رفیقوں کی بیاری کے باعث آہتہ آہتہ چلے۔ الہی بخش گھوڑا دوڑا تاہوا آ گے نکل گیااورمحود مجنح کی مسجد میں جااترا۔ اس نے لوگوں کو بتایا کہ میں قافلہ مجاہدین کاسالار ہوں۔ پیچھے ایک مولوی آرہا ہے، اسکے ساتھی بیار ہیں۔ انہیں مسجد میں نہ تھہرنے ویتا۔ چنانچہ سید جعفر علی بیاروں کے ساتھ محمود سنج پہنچے تو لوگوں نے مسجد میں اتر نے سے روک ویا اور انہیں چھآنے یومہ کرائے پرسرائے میں جمرے لینے پڑے۔

آزمایش درآ زمایش

سید جعفر علی کا گھوڑ ااور میراحم علی رئیس تنوح کی دی ہوئی تلوار اللی بخش کے پاس
مقی۔اب مولوی صاحب نے تلوار ہا تگی تو اس نے جھگڑا شروع کردیا۔ آخر میں پھر بولا
کہ میں تمہارے ساتھ نہیں جاتا۔ میں چاہتا تھا کہ کم از کم ایک ہزار جوانوں کا قافلہ تیار
ہوجائے۔سب کے پاس فیمتی ہتھیار، گھوڑے اور اونٹ ہوں الیکن تمہیں یہ منظور نہیں تو
میں کیا کرسکتا ہوں۔ جھے کوئی ہتھیار دے دوتو چلا جاؤں۔دو تکواری تھیں۔ان میں سے
ایک اس کے حوالے کردی۔وہ بھری ہوئی بندوق کا منہ سید جعفر کی طرف کر کے لڑنے کے
لئے تیار ہوگیا۔ بودی مشکل سے یہ مصیبت ختم ہوئی۔

ساتھیوں کی بیاری کم پریشانی کا باعث ندھی میمود تنج پہنچ کررکن الدین کو سرسام ہوگیا۔سید جعفرعلی رات دن اسکی خدمت کرتے تھے،ایک رات وہ اچا تک اٹھ کر باہر نگل گیا۔ بہتیرا تلاش کیا، کچھ پتانہ چلا۔ بعد میں معلوم ہوا کہ ایک کنوئیں میں جاں بحق ہوگیا۔ میسکیٹ ہوتے ہوئے تھیکم پور بہنچ تو وہاں کے رئیس داؤ دخال نے دوگھوڑے اور میسکیٹ ہوتے ہوئے تھیکم پور بہنچ تو وہاں کے رئیس داؤ دخال سے حیاتو خورجہ کے قریب ایک ویرانے میں تھہرے جہال مجداور کنوال تھا۔اشیائے خورونی کیلئے آدی بازار بھیجا تو وہاں کا ایک زمیندار دوست خال آگیا اور پورے قافلے کو ساتھ لے گیا۔ بوی تواضع سے چیش آیا، وہاں سے چند منزل طے کر کے دبلی پنچے۔

قيام د ہلی

دبلی میں خاصی در کھرے ہے۔ شاہ محداسی اور شاہ محد بعقوب سے ملاقات کی تو معلوم ہوا کہ ایک قاصد جنگ زیدہ میں سیدصاحب کی کامیابی گخرلایا ہے۔ قافلے کے پاس نقدرو پے کم تھے، اسلئے دویا بوفروخت کے۔ ان کی قیمت سے کچھر ابینیں بنوالیں۔ وہاں ایک جوان نے آکر کہا کہ میں سیٹھ کا بیٹا ہوں اور شاہ اسحاق کے ہاتھ پرمسلمان ہوکر جہاد کسلئے جانا چاہتا ہوں۔ سید جعفر علی نے آسکی خوب خاطر داری کی۔ اپنی وُلائی اوڑ ہے جہاد کسلئے جانا چاہتا ہوں۔ سید جعفر علی نے آسکی خوب خاطر داری کی۔ اپنی وُلائی اوڑ ہے۔ کسلئے اے دیدی۔ وہ دلائی کیکر بھاگ گیا اور اسے نیج کر چیے جوئے میں ہارو ہے۔ وہلی سے نوروز بیک نام ایک شخص کو پندرہ رو بے پر رہبری کسلئے ساتھ لے لیا۔ وہاں سے سونی بت، پانی بت اور انبالہ کا راستہ اختیار کیا۔ سونی بت میں ایک شخص بندوق، بموار اور پچھ سامان لے کر بھاگ گیا۔ سردھنہ میں وہ پکڑا گیا۔ چوری ٹابت ہوگئی ہیکن مال نہ ملا۔

انباله

انبالہ میں سید جعفر علی نے وہاں کے ایک رئیس شمس الدین سے ملاقات کی تاکہ محفوظ راستے کے بندوبست میں مددل سکے مولوی صاحب نے اگر کی وگلا اور سبز دستار پہن رکھی تھی۔ کر میں تلوارلئک رہی تھی ۔ شمس الدین شطرنج کھیل رہا تھا۔ مولوی صاحب کی ظاہری وضع و کیھر کسمجھا کہ کوئی اُن پڑھ آ دمی ہے۔ مولوی صاحب نے کہا کہ شطرنج جا ترنبیس ۔ شمس الدین نے جواب ویا کہ امام شافعی کے زدیک جائز ہے:

مولوی صاحب: چاروں ائمہ کے نزدیک ناجائز ہے۔ امام ثنافتی نے پہلے جواز کا فتو کی دیا تھا، پھراس سے رجوع کیا۔ مشمس الدین: تم حنی ہویا شافعی؟

مولوی صاحب : آپ کواس سے کیا غرض؟ مسئلے کی مجع صورت میں نے عرض

تشمس الدين: مير عد مكان سي نكل جاؤ .

مولوی صاحب: بہترایس نے تو خرخوای سے ایک شری بات بتائی تھی۔

غرض مولوی صاحب لوٹ گئے۔ دوسرے روز مسجد میں دوبارہ ملاقات ہوئی اور سش الدین مولوی صاحب لوٹ گئے۔ دوسرے روز مسجد میں دوبارہ ملاقات ہوئی اور شش الدین مولوی صاحب کے ایک ساتھی منصور خال کی طرف متوجہ ہوا، جو بہت وجیہ تھا۔ اس نے کہا کہ مولوی صاحب سے بات سیجئے۔ اس وقت مشس الدین نے اپنے سابقہ طرزِ عمل پر معذرت کی اور غور ومشورہ کے بعد تجویز کیا کہ پٹیالہ، مالیر کوئلہ، مگراؤں اور ممدوث کا راستہ اختیار کیا جائے۔ چنانچہ مولوی صاحب نے اپنے قافلے کے ساتھ یہی راستہ اختیار کیا۔

اتھار ہواں باب:

يثياله يصسرحد

بثيالهاورممدوث

ریاست بٹیالہ کے ایک گاؤں بیں قافلے کے ایک آدمی نے بندوق سے مورشکار
کیا۔گاؤں کے لوگ لاٹھیاں لے کرنگل آئے اور بڑا ہنگامہ بیا ہوا۔اہل قافلہ کوعلم نہ تھا کہ
ریاست کے حدود میں مور کاشکار ممنوع ہے۔ بڑی مشکل سے بیہ مصیبت ختم ہوئی۔
محدوث پہنچ تو وہاں نواب قطب الدین اس زمانے میں رئیس تھا۔اس کے بھائی شس
الدین کی معرفت درخواست کی گئی کہ دریائے سلج سے پارا ترنے کا بندوبست کرد ہجئے۔
تیسر سے روز نواب سے ملاقات ہوئی تو اس نے صاف جواب دے دیا اور بولا کہ اس
طرح میں سکھوں کی سرکار میں بدنام ہوجاؤں گا۔نا چارسید جعفر علی نے محدوث سے
بہاول پورکا قصد کرلیا۔راستے میں تبارک اللہ نام ایک بزرگ سے ملاقات ہوئی جورئیس
مدوث سے ناراض ہوکرریاست بہاول پورکے حدود میں جا بہنا تھا۔

بہاول بور

بہاول پور میں مولانا عبدالی کے ایک شاگر دمولانا محمد کامل تھے، جنہیں اس بناپر ہندستانیوں سے ملاقات کی ممانعت کردی گئی تھی کہ حیات انبیاء کے مسئلے پروہ عام بہاول پوری علاء سے مختلف الرائے تھے اور کہتے تھے کہ انبیاء اور علاء یقینا عنداللہ زندہ ہیں، لیکن ان کیلئے حیات و نیا ثابت کرنا محال ہے۔ سید جعفرعلی کو اتفاقیہ ان سے ملاقات کا موقع مل گیا۔ نیز ان کے بیٹے محمد اکمل سے

ملاقات کی۔ انہیں کے مشورے سے بیقرار پایا کہ احمد پورشرقیہ ہوتے ہوئے تو نہ جاتا

چاہیے۔ احمد پورشرقیہ میں امین شاہ اور احمد شاہ سے بھی ملاقات کی تاکید کی۔ سید جعفرعلی

نے لکھا ہے کہ بہاول پور میں ہر جگہ گیار ہویں شریف اور دوسرے محد ثات کا دور دورہ

قمار کیکن تمام پڑھے لکھے آ دمی محمد کامل کا نام احر ام سے لیتے تھے۔ بہاول پور سے تین

مزل پرنور پور میں ایک صاحب سے ملاقات ہوئی جنکی داڑھی اور مونچھیں وزیر ریاست

نے اس وجہ سے منڈ وادی تھیں کہ وہ اتباع سنت پرزور دیتے تھے۔

ونسه

غرض قافلے نے بھکر پہنچ کر دریاعبور کیا۔ ڈیرہ غازی خاں میں شیخ نورعلی جون پوری سے ملاقات ہوئی۔ وہاں سے براہ بادیہ تو نسہ پہنچ ادر دفت کے عظیم المرتبت شیخ خواجہ سلیمان تو نسوی سے ملاقات کی۔سید جعفرعلی لکھتے ہیں :

خواجہ صاحب فرش پر بیٹھے تھے۔ چاروں طرف لوگوں نے حلقہ باندھ رکھا تھا۔ میں نے حلقہ باندھ کار رہبر کے ذریعے ہے آگے پہنچا دیکھا تھا۔ میں نے عرض کیا کہ کہ اراوہ ٹھیک نہیں۔ راستہ خطرناک ہے ہمکھوں کی فوج کے آدی چھانے مارر ہے ہیں اورائے ہاتھوں ہلاکت میں پڑنامنع ہے۔

خواجه سليمان يع كفتكو

ساتھ بی فرمایا: لَا تُلْقُوا بِآبِدِبْکُم اِلَی التَّهُلُکَةِ ۔ مِس فِرض کیا کہاس آیت کامضمون میں خوب بھتا ہوں۔ بیداہِ خدا میں خرچ کرنے کے متعلق آئی ہے۔ اس پروہ خاموش ہوگئے۔ میں نے اجیر کی درخواست کی توخواجہ صاحب نے فرمایا: اجیر کی درخواست کی توخواجہ صاحب نے فرمایا: اجیر نایاب ہے۔ لوگ پریشان حال ہیں۔ دشنوں کے ہاتھ سے نے نہیں

کتے۔ نہ آمے جانے کی صورت ہے، نہ پیچھے بٹنے کی اور نہ تھرنے میں محفوظ رہنے کی کوئی امید ہے۔ رہنے کی کوئی امید ہے۔ سید جعفر علی: آپ کیا کریں مے؟ خواجہ صاحب: میں پہاڑوں میں چلا جاؤں گا۔ سید جعفر علی: ہمیں بھی ساتھ لے لیجئے۔

> خواجہ صاحب: بلوچ تنہیں مارڈالیں گے۔ سید جعفر علی: جنگل کاراستہ بتادیجئے۔

خواجه صاحب: جنگل میں پانی نه ملے گااور ہلاک ہوجاؤ گے۔

پھرفر مایا: بہتر ہہ ہے کہ بہاول خاں رئیس بہاول بور کی نوکری کراو۔راستہ صاف ہوجائے گاتو آئے چلے جانا۔ساتھیوں میں سے نوروز بیگ اس کیلئے تیار ہوگیا، کین سید جعفر علی نے صاف صاف عرض کردیا کہ ہم لوگ نوکری کیلئے نہیں، جہاد فی سبیل اللہ کے لئے آئے ہیں۔ہمیں راستہ بتاد یجئے اور رہبردے دیجئے۔ہم رات کے وقت نگل جا کیں گے۔فرمایا:اس کا انظام نہیں ہوسکتا۔

رہبراورسامانِ سفر

مایوی کے بعد سید جعفر علی نے بطور خود آگے بڑھنے کا فیصلہ کرلیا۔ تو نسہ سے باخی کوس آگے موضع کسرانی میں پنچے تو ایک سید سے ملا قات ہوئی۔ وہ قافلے کواپی مسجد میں لے گیا۔ خاطر تواضع کی ، پھر دو بلوچوں کو لا یا۔ اپنی ڈاڑھی ان کے ہاتھ میں دے کرسید جعفر علی کی طرف اشارہ کرتے ہوئے بولا: یہ سید ہے، اسے اور اس کے ساتھیوں کو بحفاظت منزلِ مقصود پر پہنچانے کا حلف اٹھاؤ گویا اس سید کی مہر بانی سے قدم آگے بڑھانے کا انتظام ہوا۔ رہبروں کا انتظام ہوگیا تو سفر کی تیاری شروع کردی۔ قافلے میں روز انہ سولہ سیر آٹا فرج ہوتا تھا۔ سید جعفر علی نے بیس سیر آٹا خرید نے کیلئے رقم آدی کے حوالے کردی۔ اس لیے کہ دویلوج رہبروں کے اضافے کے باعث خرج ہو ھا گیا تھا۔ وہاں اتفاقیہ نزاع کی صورت پیدا ہوگئی اور پانچ سیر سے زیادہ آٹا نیل سکا۔ سید جعفر علی زادراہ سے بالکل بے پرداہ ہو کر چلنے کیلئے تیار ہوگئے۔ ایک گھوڑے اور ایک یابو پر سامان رکھا، ایک گھوڑ اور ساتھ تھا۔ کھتے ہیں: میں نے نیت کرلی تھی کہ ساتھوں میں سے جو تھک جائے گا اسے سوار کرادوں گا۔ خود پیدل چلوں گا۔

كمال همت وعزييت

ابراوح ت کے ان مسافروں کی حالت کا تصور کیجئے۔کھانے پینے کوکوئی چیز ساتھ نہیں ،منزل نہایت کھن ،راستہ کو ہتائی یاصحرائی ، جہاں دور دورتک کھانے پینے کو پکھنہ ماتا تھا۔ ہر وقت سکصوں کے حملے کا خطرہ تھا، جن کے جیش گھائں چارے کیلئے مسلسل ان حصوں میں گردش کرتے رہتے تھے۔ سید جعفر علی بار بارا پنے ساتھیوں سے کہتے کہ بھائیو! ہمت کرو۔ہم انیس آ دمی ہیں اور سلح ہیں۔ سکھوں سے فر بھیٹر ہوجائے گی تو آئیس مارکر گھوڑے اور اونٹ لے لیس کے پھر دودو منزلیں ایک ایک دن میں طے کر کے امر المونین کے یاس بھنے جائیں گے۔

سفرى صعوبتيں

چلے تو مطلع ابر آلود تھا۔ ٹھنڈی ہوا چلنے گئی۔ظہر،عصرادرمغرب کی نمازیں راستے میں ادا کیس۔ پھر بادل جھٹ گئے۔ اور چاندنکل آیا۔ ایک جگہ بیریوں کے درخت تھے۔ وہاں سے کے ہوئے بیر چنے۔ بھی کھا لیے اور پچھساتھ لے۔ رات باتی ہی تھی کہ ایک گاؤں میں پنچ، جے کھ جلا کر راکھ بنا چکے تھے۔ مجد کے حن میں ایک ہے آب حوض ایک گاؤں میں پنچ، جے کھ جلا کر راکھ بنا چکے تھے۔ مجد کے حن میں ایک بے آب حوض

پر ظهر ہے۔ تیم سے منع کی نماز اوا کی۔ رہبروں نے اِدھراُ دھر پھر کر دو تین گڈریوں سے تھوڑ اسا پانی لیا، کھا تا تیار کیا اور کھا کر تھوڑی دیر کیلئے سو گئے۔ اسی دوران میں بارش شروع ہوا تھا، وہ ساتھ لے لیا، اور مزید بارہ کوس کی مسافت طے کر کے ظہر کے وقت ایک دریا پر پہنچے۔ (۱)

وہاں سے رہبرایک بہاڑی راستہ بتا کروایس چلے گئے۔ مجاہدین نے کچھ منزل طے کرلی توراستے کا نشان گم ہوگیا۔ایک جگد دیکھا کہ کوئی شخص جانور جرار ہاہے۔راستہ پوچھنے کیلئے اس کی طرف پلٹے تو وہ اس خیال سے رپوڑ چھوڑ کر بھاگ گیا کہ بیاٹیرے ہیں۔ پھرایک گائے کے پیچھے چھے روانہ ہوئے اورایک آبادی میں پہنچے۔

اس سلیلے میں سید جعفرعلی نے اپ سفرنا ہے میں جن مقامات کاؤکرکیا ہے، یہ ہیں:
او جھ کوہی ، مروت ، چوڈواں (۲) ، درہ بند، لونی ، کوظد مریز خال ، میسیٰ خیل ، کالا باغ۔
او جھ کوہی ، مروت ، چوڈواں (۲) ، درہ بند، لونی ، کوظد مریز خال ، میسیٰ خیل ، کالا باغ۔
او جھ کوہی سے سولہ سیر آٹا ، بارہ سیر دانہ اور گھاس خرید نی جا ہی ، وہاں کے ملا نے گھاس مہیّا کردی اور کھانا بھی کھلایا ، نیز نصیحت کی کہ آگے رہز ن ملیں گے ، ان سے کہنا کہ ہم سید ہیں ۔ چنا نچورا سے میں کئی جگہ مشتبہ آ دمیوں سے سابقہ پڑا۔ ایک رات چوڈواں میں بسر کی ۔ درہ بند میں ایک ملا نے بڑی تواضع کی۔ اس مقام اور کوئلہ مریز خال کے درمیان کی ۔ درہ بند میں ایک ملا نے بڑی تواضع کی۔ اس مقام اور کوئلہ مریز خال کے درمیان لونی کے علاوہ دومنزلوں کا ذکر آیا ہے ۔ لونی سے جو رہبر ساتھ لیا تھا ، اس کا نام الوبکر صد بی تھا۔ اس سے اگلے دومقاموں کے رہبروں کے نام بالتر تیب عمر خطاب اورعثان غنی تھے میسیٰ خیل کے رئیس احمد خال نے بڑی خاطر تواضع کی۔ ایک رات راستہ میں گذار کرکالا باغ پہنچ گئے ، جہاں کا نواب اللہ یارخال سکھوں کی تابعیت تبول کر چکا تھا۔

⁽۱) تونسہ ہے ڈیرہ استعمل خان اور اس کے بعد عینی خیل کی طرف جا کیں تو چھوٹی بڑی کئی ندیاں ہیں جو کو ہستان سلیمان سے نکل کردریا ہے سندھ میں ملتی ہیں۔جس دریا کا ذکر ہے اس سے مراد غالبًا '' دہوآ'' ہے۔ اس سے آ کے بڑا دریالوئی ہے جو ڈیرہ استعمال خال کے قریب ہے۔

⁽۲) چوڈ وال سے مراد غالباً چھنڈ وال ہے جوکو وسلیمان کے نزدیک ہے۔

مبیں وں اور اصحاب ملے، جوسید صاحب کے پاس جارہے تھے۔وزیر خال پانی ہی، علام رسول خال ملتانی ،مولا بخش کولہ اندازٹو تک،احمد خال قاصد علیم الدین برگالی، (برادرزادہ مولوی الم مالدین) نیزیا کج اور اصحاب تھے۔

سیدجعفرعلی اور وزیرخال یانی یتی نے نواب سے ملاقات کی تا کہ کسی ا چھے رہبر کا

منزل مقصود

بندوبست ہو جائے۔اس کی مجلس میں سکھوں کی کثرت تھی۔ لہذا ہے مد عابیان کے بغیر لوٹ آئے۔ تخلیے میں ملاقات کر کے رہبر کا انظام کرایا۔اس نے ایک دوکوں چل کر اجرت ما تھی۔ وہ برقدم پر شرپیدا کرتا تھا،اس لئے اجرت دیکراے واپس کر دیا۔ اجرت ما تھی۔ وہ مزلوں کے نام معلوم ہو سکے ہیں۔ایک ٹولہ جہاں سید جعفر علی نے دوگھوڑوں کے نعل بندھوائے تھے، دوسرااستر غی۔لنڈے دریا کوعور کر کے انتیاس آ دمیوں کا بیقا فلہ ہر رمضان المبارک ۱۲۳۵ھ (۱۳ مارچ ۱۸۳۰ء) کو پنجتار پہنجا۔ سیدصا حب اس زمانے میں بنجتار آئے ہوئے تھے۔ان کے بھا نج سیداحم علی سی کام کے سلط میں پنجتار آئے ہوئے تھے۔ان سے ملاقات کی۔ ایک روز وہاں تھم ہرے،ایک رات گندف میں گزاری، ۱۲ رمضان کو عصر کے وقت ستھانہ پہنچے۔سید اکبر شاہ نے تھم را نا گذف میں گزاری، ۱۲ رمضان کو عصر کے وقت ستھانہ پہنچے۔سید اکبر شاہ نے تھم را نا طفا

سیدصاحب کوآمد کی اطلاع پہلے ٹی چکی تھی اور دومرتبہ استقبال کی غرض سے باہر
آکر واپس چلے گئے تھے۔ایک آ دمی بھا گا بھا گا راستے میں ملا کہ جلد بندوق سرکروتا کہ
آمد کا حال معلوم ہوجائے۔سیدصاحب اڑ در پرسوار ہوکر پچاس سواڑوں کے ساتھ آم
کے درخت تک آئے۔ بہ آ واز بلندالسلام علیم کہا، پھرمجاہدین کو دوصفیں بنالینے کا تھم دیا اور
فر مایا کہ جب میں کہوں بھم اللہ اللہ اکبر،سب بندوقیں سرکریں۔سیدجعفرعلی کے قافلے

عبداللطیف اورمولا نامظهرعلی ہے بھی نہ ملے اورسید ھے امب گئے۔

ے کہا کہ آہتہ آئیں۔خود تیز چلے محتے اس لئے کہ افطار کا وقت قریب تھا، راستے میں افطار کا سامان آگیا، وال مونگ میں نمک مرچ ڈال کرلائے۔افطار کے بعد جلد از جلد مسید میں بہنچ کرسید صاحب کی امامت میں نماز اوا کی۔

ذكروموعظت

یہ حالات میں نے اس خیال سے تغییا بیان کے کہ سیدصا حب کی شانِ مردم گری
کا ایک حد تک اندازہ ہوجائے۔ سیدجعفر علی نے سیدصا حب کود کھا نہ تھا اور براہِ راست
ان سے بیعت بھی نہ کی تھی۔ صرف اپنے والد اور بھائی کے واسطے سے کسب فیض کیا تھا،
لیکن غور فر مائے کہ اس بالواسط فیض نے بھی انھیں عزیمت کا کیسا مجیب و فریب پیکر بنا
دیا۔ ذرا تصور کیجئے کہ کہاں گور کھیور ہے اور کہاں پنجتار، راستہ سراسر صعوبوں سے
لیریز، قدم قدم پرندیاں اور دریا یا صحرا اور بہاڑ ہواریاں مفتود، ہر جگہ جان کا خطرہ، اکثر
مقامات پرلوگ غیر ہمدر دجو معاون بنے کے بجائے مزاح ہوتے رہے۔ اور بہلوگ نوکری
یا تجارت کیلئے نہ نکلے تھے کہ شدا کہ وصعب کی برواشت تحصیل زرکا ایک لاز مہمی جاتی
وہ راحت بھری زندگیاں چھوڑ کرا یک بلنداسلای نصب العین کی تحمیل اور تو اب اخروی کی
تحصیل کیلئے نکلے تھے۔ آج کتے مسلمان ہیں جوان کی طرح خدا کی راہ میں صرف خدا کی
خوشنودی کیلئے ایسے چند دن بھی بسر کرسیس، جسے سید جعفر علی اور ان کے ساتھوں نے کم

كاروبار جهاد

سید جعفر علی نقوی تقریبا ایک سال مصروف جہادر ہے۔ پھر بالا کوٹ کا واقعہ پیش آگیا۔ ان کی تحریر بہت المچھی تھی ،اس لئے انھیں منٹی خانے میں لے لیا گیا تھا لینی وہ کاروبار جہاد کے علاوہ منٹی گری کا کام بھی انجام دیتے تھے۔اس سلسلے میں بعض واقعات

صاف طور برقابل ذكرين مثلًا:

ا- ایک موقع پرشخ بلند بخت دیوبندی کوایک معتمدعلیا آدمی کی ضرورت پڑی جے
پابندہ خال تنولی کی زنبورکیں لانے کیلئے بھیجنا تھا۔ دہ شخ محمد اتحق گور کھیوری کی تلاش میں
آئے جودن بھر پھر تے پھراتے واپس آکر سو گئے تھے۔ سید جعفر علی خوداس کام کے لئے
تیار ہو گئے۔ را توں رات المب سے چھتر بائی پنچے۔ عبور دریا کے بعد اس مقام پر گئے
جہال زنبورکیس پڑی تھیں۔ چارسلامت مل گئیں، پانچویں ایک گاؤں میں زیر مرمت
تقی۔ سید جعفر علی نے پانچوں بحفاظت اونٹوں پر بارکرائیں اورسکھوں کی چوکی کے پاس
سے گذرتے ہوئے انھیں لے آئے۔ اگر چہ مشقت کے باعث بخار آگیا تھا، لیکن جب
تک زنبورکیس منزلی مقصود پرنہ پہنچالیں ایک لیے کے لئے بھی آرام نہ کیا۔

7- وہ شاہ استعمل کے ساتھ بچوں سے بالاکوٹ جارہے تھے۔ برف باری کا زمانہ تھا۔ پہاڑ کی چڑھائی پرسردی کے باعث بہس ہو گئے۔ اپنے ہتھیار اور دوسری ضروری چیزیں ایک فخص کے حوالے کر دیں کہ میں مرجاؤں تو یہ چیزیں بیت المال میں دے دینا۔ پھرایک گوجر سے کہا کہ میری دستار لے لواور کسی طرح جھے گاؤں پہنچا دو۔ صرف دستار کی چیش ش اس لئے کی کہ جوسامان وہ گھر سے لائے تھاس میں سے صرف دستار رہ گئے تھی، باتی کپڑے بیت المال کے تھے اور ان کی شانِ انقاء اس امرکی روا دار نہ تھی کہ بیت المال کے عماور نے میں کودیں۔

غرض انھیں چار پائی پر ڈال کر گاؤں پنچایا گیا اور کئی روز کے بعدوہ چلنے پھرنے کے قابل ہوئے۔ بالاکوٹ کے میدان میں وہ سیدصاحب سے قریب تھے۔ جب افواہ پھیلی کدسید صاحب کو گوجر پہاڑوں میں لے گئے ہیں تو دوسر بے جہاہدین کے ساتھ سید جعفر علی بھی پہاڑ پر چلے گئے۔ پھر ناصر خال بھٹ گرامی کی معتب میں شملنگ پنچے جہاں سیدصاحب کی اہلیا در دوسری مستورات تھیں۔

انیسوال باب:

سفرمراجعت

قصدم اجعت

جب سیدصاحب کی شہادت میں کوئی شبہ نہ رہاتو وطن واپس آنے کا فیصلہ کرلیا۔اس وقت تک شیخ ولی محمر پھلتی جماعت میں سب سے بڑھ کرمعززاور بزرگ مانے جاتے تھے اور انھیں با قاعدہ امیر بنا لیا گیا تھا۔ بیٹک جماعت کے نزدیک وہی امیری کے اہل تھے۔سیدجعفرعلی ان کی خدمت میں ہنچے اور عرض کیا کہ آپ کو ہمیشہ شفیق اور بزرگ بھائی سمجھا،ابگھر جانا چاہتا ہوں۔اگر بچھنقد ہوتو رائے کے خرچ کے لئے عنایت فرما کیں۔ نفذ نہ ہوتو میرے اچھے ہتھیار لے لیں اور ناقص ہتھیار دیدیں تا کہ میں ضرورت پیش آنے برانہیں بچ کرزادِ راہ کا انتظام کرلوں۔ شیخ ولی محمد نے بچھ ہتھیار دیدیے۔ان کے علاوہ سیدجعفرعلی نے شخ کی اجازت ہے ایک قلمدان ، ایک قینجی ، چندخطوط جن پرسید صاحب کی مہریں اور دستخط تھے اور شاہ آملعیل کی چندتحریرات لے لیں ۔ ۲۷ رذی المجبہ ۱۲۳۷ه (۸رجون ۱۸۳۱ء) کوروانه هوئے۔اس وقت سید صاحب کی شہادت پر ایک مہینہ اور تین دن گذر چکے تھے اور سید جعفرعلی صاحب کوسرحد پہنچے ہوئے سواسال ہو چکا تھا۔مجاہدین میں سے رجب خال خان بوری، حاجی سکندرسا کن مئواور چنداصحاب ہمراہ تھے۔سب نے شیخ ولی محمد اور دوسرے اصحاب ہے سوئے ادب وغیرہ کی تقصیریں معانب

سفر

راستے میں سید جعفرعلی کا قلمدان چرایا گیا۔اس میں سیدصاحب کے خطوط اور شاہ آملیمل کی تحریریں بھی گئیں۔سید جعفرعلی نے ہر چنداعلان کیا کہ قلمدان معاف کرتا ہوں، تحریریں واپس دے دی جائیں،لیکن کچھ نہ بنا۔ حاجی سکندر کی سپر ایک جگہ نورو پے میں کجی تھی، وہ بھی کوئی چرالے گیا۔

مدّ اخیل میں سیدغلام خال اور فتّو خال کے پاس تھبرے۔انہیں کے آدمیوں نے چنگ کے داستے ستھانہ پہنچایا۔اس سفر میں میرزا خال اخوندزادہ اور اخوند محتشم سے بھی ملاقات کی۔

ستفانہ میں سید اکبرشاہ نے بہت مدارات فرمائی۔ ہر وقت ساتھ رکھتے تھے اور گھرجانے کی اجازت نددیتے تھے۔ سیدا کبرشاہ کے ایک عزیز نے اجازت لے دی۔ وہاں سے خان زمان خال کے پاس کنگر پہنچے۔ وہ بھی اصرار کررہے تھے کہ ملازمت کرلو۔ جینے روپے کہوگھر بھیج دیتا ہوں۔ سواری کے لئے گھوڑا دوں گا اور آپ کی خدمت الگ کروں گا۔ سید جعفر علی نے معذرت کی۔خان پور، راولپنڈی اور رہتاس ہوتے ہوئے کھاریاں (ضلع مجرات) پہنچے، وہاں بخار آگیا، جس نے اتنی شدت اختیار کر لی کہرسام ہوگیا۔ گاؤں کے رئیس نے بڑے اہتمام سے علاج کرایا۔ تندرست ہوئے تو لا ہور اور امر تسر ہوتے ہوئے جالندھر پہنچے۔خود فرماتے ہیں کہ سکھ حکومت میں مسلمانوں کی حالت بہت خراب تھی، یہاں تک کہا قامت کی طرح اذان '' بخفض صوت' ویتے کی حالت بہت خراب تھی، یہاں تک کہا قامت کی طرح اذان '' بخفض صوت' ویتے تھے کہ اللہ تو اللہ جلداس ملک سے باہر لیجائے۔

ایک عجیب دا قعه

سید جعفرعلی نے جالندھر کا ایک عجیب واقعدلکھا ہے۔ کہتے ہیں :میں جس مسجد

میں تھہرا ہوا تھا، وہاں سوگیا۔ای حالت میں ایک فخص میرے پاؤں دائے لگا۔ میں جاگا تو اس نے بے تو قف کچھ روپے چیش کے۔میرے استفسار پر بتایا کہ میں صنعت جانتا ہوں، بال بچ میں نہیں۔جو کچھ کما تا ہوں، اس میں سے کھائی کرخاصی رقم فی رہتی ہے وہ مسافروں کی خدمت میں صرف کرتا ہوں۔

لدهيانه

جالندهر سے تھلور پنچ اور دریائے تتلج کوعبور کیا۔اس حصہ ملک کی امتیازی خصوصیت سید جعفرعلی نے بیکھی ہے کہ وہاں اذان اورگاؤکشی بخوبی ہوتی تھی۔لدھیانہ پنج کرشاہ شجاع کی معبد میں قیام کیا۔لکھتے ہیں کہ حافظ عبداللطیف نیوتوی بھی مجھ سے پہلے ای معبد میں تھلرے نتے۔امام مجد مجاہدین کی تلفیر کرتا تھا،اس سے لڑکر حافظ صاحب دیلی چلے گئے۔میری صورت دکھ کرامام نے برابھلا کہنا شروع کیا۔ میں چپ بیٹھارہا۔ دوسرے روز احمد خاں سے ملاقات ہوئی، جے مولوی سید جمع کی رام پوری نے تحقیق احوال کو دسرے روز احمد خاں سے ملاقات ہوئی، جے مولوی سید جمع کی رام پوری نے تحقیق احوال شیاع کے وزیر ملاکثور سے ملاقات ہوئی۔اس نے کہا کہ نمک حرام جمارے ملک پرقابض شیاع کے وزیر ملاکثور سے ملاقات ہوئی۔اس نے کہا کہ نمک حرام جمارے ملک پرقابض ہیں۔ساتھ ہوجاؤ اور ہماراحت دلاؤ۔سید جعفرعلی نے جواب دیا کہ ہم خدا کے جنگ کرنے گئے تھے،کسی بادشاہ یا دعویدارشاہی کے حق کے لئے نہیں۔امیر المونین کاحق کسی نے نہ چھینا تھا۔ملاشکور نے جواب دیا کہ بیتو اُرفع واَعلیٰ مرتبہ ہے،لین حقدار کاحق دلا تا تہمی نیکی کاکام ہے۔

پھرزمان شاہ کا وکیل جمال الدین آکر ساتھ لے گیا۔ایک حویلی میں تھہرایا اور شاہ کی طرف ہے کھانا مقرر کردیا۔شاہ سے ملاقات ہوئی تو بڑی عزت سے پیش آیا۔اس سے پاس ایک علیم موجود تھا۔ پوچھا! بیام آ دمی ہیں؟ جواب اثبات میں ملنے پر کھڑے ہوکرمصافی کیااور برابر بھایا۔ پھرکہا کہ جب امیر المونین نے نمک جراموں کو پیٹاور واپس
کردیا تو ہمیں بہت دکھ ہوا۔ ہم جانتے تھے کہ جن منافقوں نے ہم سے وفانہ کی وہ
امیر المونین سے کیاد فاکریں گے؟ ہماراوکیل بھی نہ تھا، جوامیر المونین کو ہماری یا ددلاتا۔
غرض زمان شاہ نے سید جعفر علی کو سات روز اپنے پاس تھہرائے رکھا۔ ایک روز
طعامِ خاص بھیجا جس کے ساتھ تم تم کے آم تھے۔ جو تحق کھا تالایا تھا، اس نے کہا کہ شاہ
کے طعامِ خاص کی تعظیم کے لئے اٹھے۔ سید جعفر علی نے جواب دیا کہ میں آپ کی تعظیم
کرتا ہوں اور میکا فی ہے۔ طعام کی تعظیم اس کے سوا پھی نہیں کہ ضائع نہ ہو۔

ربلی

لدھیانہ سے سید جعفر علی انبالہ، کرنال، پانی بت ہوتے ہوئے دہلی پہنچے۔راستے میں مجمد سعید خال رسالدار کنج پوری سے ملاقات ہوئی، جو سکھوں کے پاس ملازم تھا اور ملازمت جھوڑ کر سید صاحب کی خدمت میں پہنچنا چاہتا تھا۔اس کے ساتھ بیس سوار اور بیادہ تھے۔سید صاحب کی خدمت میں کہنچنا چاہتا تھا۔اس کے ساتھ بیس سوار اور بیادہ تھے۔سید صاحب کے حالات س کران کی صحت پریقین نہ کیا اور سمجھا کہ سید جعفر علی وہاں سے بھاگ آئے ہیں۔انہوں نے جواب دیا کہ آپ نے بچھے معلوم تھا، بتادیا۔آپ میر ابیان صحیح نہیں سمجھتے تو خود چھان بین فرما لیجئے۔

دبلی پہنچ کر مجد نہر میں تھہرے جوال ہوری دروازے کے قریب تھی۔اگر چہرات کا وقت تھا، کیکن لوگوں نے بہچان لیا۔وہ بہت افسوس کرتے ہتھ۔ایک دوسرے سے کہتے سے کہ میخض پانچ گھوڑے،ایک ادنٹ اور قافلہ لے کر گیا تھا۔اب اس حال میں واپس آیا ہے۔کھانا کھلایا،خود بخو و نئے کپڑے بنوادیے۔مولانا سید جمعلی ان دنوں اکبرآبادی مسجد میں تھہرے ہوئے تتھے۔معلوم ہوا تو آ دمی بھیج کر بلوایا۔تمام حالات سنے،لیکن شہادت کی تصدیق نہ کی۔ چودہ روز و بلی میں مقیم رہے۔شاہ اسحاق، شاہ یعقوب اور

دوسرے اکا برسے بھی ملاقاتیں ہوئیں۔ سید جعفر علی سے پیشتر مولوی امام الدین اور حافظ عبداللطیف پہنچ چکے تھے اور وہ بے تکلف شاہ اسلمیل کی شہادت کا واقعہ بیان کرر ہے تھے۔ شاہ اسحاق، شاہ یعقوب اور دوسرے متعلقین کے نزدیک بیہ بات متحسن نہ تھی۔ ایک روز شاہ اساعیل کی ہمشیر نے سید جعفر علی، حافظ عبداللطیف، مولوی امام الدین کو جمع کیا اور فرمایا:

''وہ میرے بھائی تھے۔اس انہائی قریبی رشتے کے علاوہ انہوں نے بھی پرایسے احسان کیے جو کم بھائیوں نے بہنوں پر کیے ہوں گے۔ میری حالت بیہ ہے کہ اگر مرجاؤں تو اسحاق اور لیقوب کے سوا دفن کرنے والا بھی کوئی نہیں۔اگر ہمارے بھائی نے شہاوت پائی تو ہم اپنے پروردگارے راضی ہیں۔ جزع فزع نہیں کرتے۔جانتے ہیں کہ وہ بڑوں کے طریقوں پر چلے۔ پھر مجھ سے پوچھا کہ آپ نے ہمارے بھائی کوشہید ہوتے و یکھا؟ میں نے نئی میں جواب دیا تو بی بی رقیہ نے فرمایا: بہتر بہی ہے کہ آپ شہاوت کی خبر بیان نہ کویں ،ایک ہے کہ اگریں،اظہار میں دوقباحین ہیں،ایک ہے کہ لوگ طعنے دیتے ہیں، دوسرے بیا کہ یہاں جانشنی اور دستار بندی کامعا ملہ شروع ہوجائے گا۔''

لكصنؤ اوروطن

دیلی سے سید جعفر علی مولانا سید محمر علی کے ہمراہ روانہ ہوئے۔ تھیکم پور بہون ج اور نیوت میں ہیں بھی تفہر ہے۔ لکھنو بہنے کر جو ہری محلے کی مجد میں قیام کیا۔ وہاں اپنے استاد مولوی حیدرعلی ،سید ابوالقاسم بن سید احمر علی شہید (خواہر زادۂ سید صاحب) اور سید محمر سید ہوں کے ہمیں۔ ان سب کو واقعۂ شہادت کی تفصیلات سنا کیں مولوی حیدرعلی سید صاحب کی شہادت کی تفصیلات سنا کیں مولوی حیدرعلی سید صاحب کی شہادت کی تفصیلات سنا کیں۔ مولوی حیدرعلی سید صاحب کی شہادت کی تفصیلات سنا کیں۔ مولوی حیدرعلی سید صاحب کی شہادت کا لیقین ہوا۔

لکھنؤے سے بید جعفر علی فیض آباد گئے اور شاہ ٹاٹ کی مسجد میں قیام کیا۔ وہیں اُن کے ماموں استقبال کے لئے آگئے ۔ گور کھپور میں ان کے بھائی اور دوسرے عزیزوں نے استقبال کیا۔ وہاں سے اپنے وطن مجھوامیر پہنچ۔

دوقابل قدرخدمتين

جنگ بالاکوٹ سے واپسی کے بعد سید صاحب جعفر علی کی دوخد تنیں خاص طور پر قابل ذکر ہیں: اول ہید کہ آپ نے اپنیستی سے چومیل کے فاصلے پر کرھی ہیں'' ہدایت السلمین' کے نام سے دینی درسگاہ قائم کی جو اُب تک جاری ہے۔ دوسر نے نواب وزیرالدولہ والی ٹونک اور آپ کے صاحبر اور نواب محمیلی خال کی فرمائش پر سید صاحب اور جماعت مجاہدین کے حالات میں ایک مفصل کتاب برزبان فاری کھی جس کا ایک نام'' منظور قالسعد اونی احوال الغزا قوالشہد او' اور دوسرا'' تاریخ احمد' ' ہے۔ اس میں ابتدائی حالات سیدصاحب کے نیاز مندول سے حاصل کردہ معلومات پر جنی ہیں۔ جنگوں کے متعلق کچھ حالات انہوں نے متعد ذرائع سے سے، باقی ان کے چشم دید جنگوں کے متعلق کچھ حالات انہوں نے متعد ذرائع سے سے، باقی ان کے چشم دید جنگوں کے متعلق کچھ حالات انہوں نے متعد ذرائع سے سے، باقی ان کے چشم دید جنگوں کے متعلق کے حالات انہوں نے متعد ذرائع سے سے، باقی ان کے چشم دید جنگوں کے متعلق کے حالات انہوں نے متعد ذرائع سے سے، باقی ان کے چشم دید حاصل کردہ معلومات سے لیریز ہے، افسوس کہ اب تک مجھپ رکھی۔

وفات

سید جعفر علی صاحب نے رمضان المبارک ۱۲۸۸ھ (نومبر ۱۵۸۱ء) میں وفات پائی۔تاریخ پیدائش ۱۲۱۸ھ حصے۔ ستر برس کی عمر ہوئی۔وفات سے پیشتر ایک خواب و یکھا تھا کہ ایک آراستہ مقام ہے،وہاں شاہ عبدالعزیز،سید احمد شہید،شاہ آملعیل اور پچھ دوسرے اصحاب کرسیوں پر بیٹھے ہیں۔ایک کری خالی ہے۔کسی نے پوچھا کہ یہ کس کے لئے ہے؟ جواب ملا، جعفر علی کے لئے۔ اولا دیش صرف ایک صاحبز اور کھی، ٹی ٹی زینب۔ ان کے کوئی اولا و نہ ہوئی،

چھوٹے بھائی سیدحسن علی کے صاحبزادے محمدز کریا کی اولا دمیں سے سیدمحمد مصطفیٰ ،سیدمحمد احمداور سیدمحمد صالح ۱۹۴۱ء تک زندہ رہے۔

''منظوره'' کی ترتیب

منظورة السعداء کی ترتیب کا حال خودسید جعفر علی نے بول بیان کیا ہے کہ ایک دوست مولانا جمال الدین مدارالمہام بھو پال کا ایک رسالہ میرے پاس لائے، جوسید صاحب کے حالات میں تھا اور کہا کہ اس کی روایتیں و کھے کر درست کر دیجئے۔اسے دیکھا تو عبارت خوبتھی ،لیکن مطالب میں غلطیاں تھیں ،اس لئے کہ حالات لوگوں سے من کر لکھے تھے۔نواب وزیرالدولہ نے ٹونک سے کئی قاصد میرے پاس بھیج ، حالال کہ میرا وطن ٹونک سے ایک مہینے کی مسافت پرتھا۔ آخر میں ٹونک گیا، وہاں اور لوگ بھی تھے، جنہوں نے سیدصا حب کودیکھا تھا۔سیدصا حب کے خاص رفیقوں میں سے اکثر شربت شہادت کی بیعے تھے۔ بعض کا پیانہ کھیات طبعی طور پر پر بہو چکا تھا۔خطرہ تھا کہ ثقات کی فات کے بعد حالات لکھنے والا کوئی نہ ہوگا ،لہذا جلد سے جلد جو بچھ سی کو یا د ہے ، تاممبند کردینا چاہے۔ میں نے وہی حالات کھے جوخودود کھے یاسیدصا حب کی زبان سے سے یا شاہ اسلمیل اور دوسرے معتمد علیہ بزرگوں نے حکایتا میرے سامنے بیان کے۔

ببيسوال باب:

الله دادخال پُتنی

الله دادخال کا خاندان اس زمانے میں ممتاز حیثیت پرفائز تھا، جب ہندستان میں فوجی نظام جا گیرداری کاعام رواج تھا۔ان کا سلسلۂ نسب یہ ہے:الله دادخال بن محم سید خال بن پرول خال۔ پرول خال کے بڑے بھائی نواب کرامت خال کو بھی فوجی جا گیر ملی ہوئی تھی اور وہ فتح پور ہسو ہ میں رہتے تھے۔ان کی امارت کا اندازہ اس امر سے ہوسکتا ہے کہ جس خاتون سے نکاح کیا اس کا پورا مہر پانچ لاکھ پانسو پانچ اشر فی نفتدادا کیا۔وہ شجاع الدولہ دائی اور دھ سے وابستہ تھے،کین صرف اس حد تک کہ ضرورت پیش آنے پر شجاع الدولہ دائی اور دھ سے وابستہ تھے،کین صرف اس حد تک کہ ضرورت پیش آنے پر لڑائی کیلئے انہیں مع فوج طلب کر لیا جائے، ویسے میل جول میں اٹی حیثیت برابر کی تھی۔

مفسدول کی شکست

افغالیا یکواران کی کمریس بانده دی گئی اور وہ اپنی فوج کے ساتھ بندیل کھنڈین کے گئے۔
سرکشوں کو شکست فاش دی۔ ایک بندیلا ان کے کیمپ میں تھس آیا۔ کرامت خاں نے
اس کے سر پر تلوار ماری اور وہ دو ککڑ ہے ہو کر گر پڑا۔ حالاں کہ اس نے پگڑی کے پنچے سر
پرلو ہے کے دوتین تو ہے باندھ رکھے تھے۔ اس سے کرامت خال کی شہزوری کا اندازہ
ہوسکتا ہے۔

شهإدت

وہ فتح کے شادیانے بجاتے ہوئے واپس آرہے بتھے کہ چند بندیلوں نے جو گھات
میں چھے ہوئے تھے، ایک دم قرابینیں چلادیں۔ گولیوں سے کرامت خاں کا سینہ چھلنی
ہو گیا اور وہ گر پڑے۔ ان کا وفا دار گھوڑا سریٹ دوڑ پڑا۔ فتح پور میں نواب کی ڈیوڑھی پر
جینچتے ہی رکا، گرا اور ختم ہو گیا۔ نواب کی والدہ زندہ تھیں، انہیں تشویش ہوئی کہ خداجانے
میرے بیٹے کا کیا حال ہوا۔ پکار کر کہد دیا کہ اگر وہ میدانِ جنگ سے بھاگا ہے تو دودھ بھی
میرے بیٹے کا کیا حال ہوا۔ پکار کر کہد دیا کہ اگر وہ میدانِ جنگ سے بھاگا ہے تو دودھ بھی
نہ بخشوں گی۔ دوسرے دن خبر ملی کہ نواب کو دھو کے سے شہید کر ڈالا گیا۔ ایسے جوانم و
بیٹے کی شہادت سے جورنج انہیں بہنچا ہوگا، اس کا اندازہ کون کرسکتا ہے، لیکن اس شکرانے
میں دونقل پڑھے کہ جیٹے نے مردائگی کا حق ادا کیا۔ چنا نچہان کی میت فتح پور لاکر ڈن کی
میں دونقل پڑھے کہ جیٹے نے مردائگی کا حق ادا کیا۔ چنا نچہان کی میت فتح پور لاکر ڈن ک

يرُول اور محرسيد

کرامت خال کے جھوٹے بھائی پرُول خال اور ان کے بیٹے محمرسیدخال کے تعصیلی حالات معلوم ندہو سکے نکیکن کرامت خال کے حالات سے ظاہر ہے کہ وہ بھی مردان رزم و پیکار بی ہول گے۔ پرول خال کے بچتے اللہ دادخال کی والدہ شیر زبان خال کی بیٹی محصی اور ان کا نام صاحب زبانیہ بیٹیم یازبانیہ بی بی تھا۔ بیوبی شیر زبان خال ہیں،جن

کے دادامجم شہاب خال نے نواب سعادت علی خال دائی اور دھ کے زمانے میں قصبہ گوتی (گائے کی چراگاہ) آباد کیا تھا۔ سیدصاحب کے داقعہ نگارات کتنہ لکھتے رہے۔اللہ داد خال کی نھیال میں نہ بہیت کا بیعالم تھا کہ خلاف شرع کوئی بات ہونے نہ پاتی تھی۔ جامع مسجد کے چاروں طرف جو محلے ہیں ان میں اب تک شادی کے موقع پر بھی گانا بجانا نہیں ہوتا اور آس پاس سے باجا بجاتے ہوئے گذرنا ممنوع ہے۔

الثددادخال

الله داد خال کی دوشادیاں ہوئیں۔ پہلی شہر فتح پور میں سید خال مسوانی رئیس کی صاحبز ادی ہے۔ بیخا تون رسوم و بدعات میں ڈوبی ہوئی تھیں اور الله داد خال کے بار بار روکنے پر بھی انہیں چھوڑنے پر آمادہ نہ ہوئیں، لہذا خان موصوف نے مجبورا ان سے قطع تعلق کرلیا۔ دوسرا نکاح آصف زمان خال (بن شیر زمان خال رئیس گوتی) کی صاحبز ادی عائشہ بی بی سے کیا۔ جن سے خدانے آئییں دو بیٹے اور دویٹیاں دیں۔ بیٹوں میں سے بڑے محمد الله عال خال میں میں اور دویٹیاں دیں۔ بیٹوں میں سے بڑے محمد الله داد خال کی سرال کے تعلقات گوتی سے زیادہ لکھنو سے تھے اور ان کے تیوں برادرانِ نبتی احمد علی خال، اشرف علی خال اور داحد علی خال بہ سلسلہ ملاز مت لکھنو بی میں رہتے تھے، لہذا الله داد خال بھی یا تو لکھنو میں مقیم رہتے یا اپنے پیر دمرشد کے وطن بی میں رہتے تھے، لہذا الله داد خال بھی یا تو لکھنو میں مقیم رہتے یا اپنے پیر دمرشد کے وطن رائے بریلی آ جائے۔

تنظيم مجامدين

یہ معلوم نہ ہوسکا کہ وہ جہاد ہیں شریک ہوئے یانہیں ، اتنامعلوم ہے کہ انھوں نے اپنی کل جائداد مجاہدین کے لئے وقف کر دی تھی۔ صرف سسرالی ترکے کا ایک مکان اور ایک باغ جو گوتی سے مصل شیر گڑھ میں تھا، باتی رکھا تھا۔ قیاس یہ ہے کہ وہ سیدصا حب

ک شہادت کے بعد جماعت مجاہدین کوازسر نے نومنظم کرنا چاہتے تھے۔غدر سے پیشتر ان کا انقال ہو گیا۔ قبر کا کچھ ہانہیں کہ کہاں ہے۔خیال سے ہے کدانقال کسی سفر میں ہوا جو سنظیم مجاہدین کے سلسلے میں اختیار کیا گیا تھا۔

محمر بوسف خال

ان کے فرزندا کبرمجمر آملعیل خاں کی ولا دت اس سال ہوئی جس سال سیداحمہ نے بالاکوٹ میں شہادت پائی۔ ان کے چھوٹے بھائی محمد یوسف خاں عمو ماافغانستان آیا جایا کرتے تھے۔ بیسفر فقیرانہ بھیس میں ہوتے تھے۔ اسی وضع میں متعدد جج کیے۔ بیعت بھی لیتے تھے۔ ان کے پاس ایک خاروار تکوار بھی رہتی تھی۔ اولا وکوئی نہ چھوڑی۔ ابتدا میں ان کا نکاح خالہ زاد بہن ہے ہوا تھا، وہ فوت ہو گئیں تو پھر نکاح نہ کیا۔ قیاس ہے کہ ان کا تعلق سرحد آزاد کے مجاہدین سے تھا اور اس سلسلے میں وہ سفر کیا کرتے تھے۔

محمدالتلعيل خال

محر آسلعیل خال کی عمر ۱۸۵ء کے ہٹا ہے کے وقت پچنیں چھبیں سال کی ہوگ۔
وہ اور ھے کی شاہی فوج میں ملازم تھے۔ ۱۸۵۵ء کے ہٹگانے میں انگریزوں کے خلاف
نمایاں حصہ لیا۔اللہ آباد میں شاہ محب اللہ کے خاندان کے ایک بزرگ شاہ احمہ اللہ فاروتی
تھے۔ان کے ہاتھ پر ہا قاعدہ جہاد کی بیعت کی تھی۔کا نپور، اکھنو اور دوسرے مقامات پر
مجاہدین انقلاب نے سر غندر ہے۔ان کی سرگرمیوں کے فصل حالات معلوم نہ ہو سکے۔
تحریک کی ناکامی کے بعد گرفتاریاں اور سزائیں شروع ہو گئیں۔ محمہ آسلیل خال بچنے
بیاتے آگرہ پنچے اور مولوی سیدفریدالدین کٹروی کے پاس تھم ہرے، جوعدالت عالیہ کے
مشہور وکیل تھے۔ پھر دہلی چلے گئے اور نواب فیض اللہ خال رئیس پہاسو (صلع علی گڑھ) یا
عکیم اجمل خال مرحوم کے والد ماجد حکیم محمود خال کی وساطت سے الور میں پولیس کے

حالات غدر

الل خاندنے محمد المعیل خال سے ۱۸۵۷ء کے ہنگاہے کے متعلق جو ہا تیں سنیں، ان سے تحریک کی بے نظمی صاف صاف آشکارا ہوتی تھی مثلاً:

ا- قلعہ اللہ آباد کا خزانہ لٹاتو سپاہیوں کی بے صبری کا بیر حال تھا کہ جو صندوق ٹوشا، سب ای پر پل پڑتے اور کش کمش میں تلوارین نکل آئیں، حالاں کہ بہت ہے صندوق محفوظ پڑے تھے۔ ان کی طرف کی کی توجہ نہ ہوتی تھی۔

۲- وہ کہا کرتے تھے کہ ہنگا ہے میں حصہ لینے والوں کی حیثیت ایک غیر منظم بھیڑ کی تھی ۔ کہیں سے کوئی افواہ اڑتی تو لوگ سراہیمہ وار بھا گئے لگتے ۔ پھر سر داروں میں سخت رقابت تھی ۔ ہرسر دار کی کوشش بیتھی کہ دوسر ہے کوگرا کرخود آگے بڑھ جائے فصوصاً پور بیوں کی بدلگامی حدسے بڑھی ہوئی تھی ۔ ابتدائی دور کی معمولی وقتی کا میابیوں نے ان میں اس درجہ غرور پیدا کر دیا تھا کہ کہتے تھے" جہ کے موڑ پر چنی رکھ دیے ، وہی بادساہ ہوجائے گا)۔ ہوجے "(جس کے مربع وتار کھ دیں گے ، وہی بادشاہ ہوجائے گا)۔

ايميليا كك

محد اسلحیل خال کان پورے ایک اگریز خاتون کوبھی لے آئے تھے۔اس کا نام ایمیلیا کک (EMILIA COOK) تھا۔ا سے مسلمان کرکے نکاح کرلیا۔انگریزی تسلط بحال ہوگیا تو وہ خاتون ہر چند کہتی رہی کہ چارتہ ہیں خاصی جائداد دنوادوں گی لیکن محمہ اسلحیل خال تیار نہ ہوئے۔خاتون کو کھنویا کان پور بھیج دیا۔ بعدازاں انگریزوں نے محمہ اسلمعیل خال کا پتالگانے کیلئے بہت بختی کی ،گروہ جانچکے تھے اوران کا سراغ کسی کو زمل رکا_معلوم نہیں تلاش کے لئے بیٹک ودواس غرض سے کی گئی تھی کہ انہیں جا گیردی جائے یاسزاد بی منظورتھی۔

محمداجمل خال

محمد المعیل خاں کے تین میٹے ہوئے: احمد یعقوب خال مجمد اجمل خال اور احمد الله خال ۔ احمد الله خال اور احمد الله خال ۔ احمد الله خال تعلیم پاکر خال میں گزار دی ۔ احمد الله خال تعلیم پاکر سرکاری ملازمت میں داخل ہو گئے ۔

محداجمل خاںنے ایف-اے تک سائنس کی تعلیم یائی مسیح الملک حکیم اجمل خاں مرحوم سے محمد اسلعیل خال کی گہری دوتی ہوگئی تھی، انہیں کے نام بر فرزند کا نام اجمل رکھا۔ انہیں کے مشورے سے سائنس کی تعلیم ولائی تا کہ طب اور ڈاکٹری سیکھ سکے جحمہ آ بلعیل خاں کے انتقال کے بعد سائنس کوچھوڑ کرعلی گڑھ کالج سے ڈ گری لی اور فلفے میں ایم-اے،ساتھ ساتھ قانون کا امتحان دینے کی تیاریاں شروع کردیں۔ای زمانے میں ترک موالات کی تحریک شروع ہوگئی اور محمد اجمل خاں نے ضلع کی خلافت اور کا گمرس کا کام سنبیال نیا۔ چند سال بعد عربی کا ایم -اے کرلیا اور ایل ایل بی کا امتحان دے کر وکالت شروع کردی۔پھر پچھ مدت اللہ آبادیو نیورٹی میں عربی کے لکچرارر ہے۔1979ء من' زنن' کے نام سے انگریزی کا ایک ہفت روز واخبار الله آباد سے جاری کیا۔ ١٩٣١ء میں آزادی کی تحریب شروع ہوئی ،اس میں شامل ہوگئے ۔19۳۵ء میں تجاز گئے۔واپس آ کر اللہ آباد میں قلسطین کانفرنس کی بنیاد ڈالی۔پھر ایک اہم تصنیف''نزولِ قرآن كريم"ك نام سے شائع كى _ ١٩٣٤ء ميں حضرت مولانا ابوالكلام آزاد نے انہيں اپنا یرائیویٹ سکریٹری بنالیا،اب تک انہیں کے ساتھ ہیں۔

تصانيف

خان محمداجمل خال نے اور کتابیں بھی تھنیف کیں۔ مثلاً سیاسیت، پس منظر اسلام اور سیرت نبوی صلی اللہ علیہ وسلم پر دس جلدیں مرتب کیں۔ بنیادی ہندوستانی پر تقریباً پچاس مضامین اور رسالے شائع کئے، جن کی مجموعی مقدار ایک ہزار صفحات ہے کم نہ ہوگی۔ متوسط در ہے کی ایک سیرت اردوزبان میں مرتب کی، جوقر آن کریم پر ہنی ہے۔ بیٹ ان کا ترجمہ مختلف زبانوں میں کرانا چاہتے ہیں، بیشائع ہوچکی ہے، اب ایک طرف اس کا ترجمہ مختلف زبانوں میں کرانا چاہتے ہیں، دوسری طرف قدرے میسوط سیرت مرتب کر بچکے ہیں، جوجیب چکی ہے۔ پہلی کتاب کی طرح یہ بھی قرآن کریم ہی پر بین ہے۔

اكيسوان باب:

محمة مقيم عبدالوباب ،نوراحمه

ميال محد مقيم رام بوري

یہ میاں کریم اللہ کے بھائی تھے، جونواب احماعی خال والی رام پور کی جانب سے
نیابت کے عہدے پر مامور تھے۔ بیعت امامت جہاد کے بعد سید صاحب نے دعوت
نامے ہندوستان بھیجتو جواصحاب سب سے پہلے مجاہدین کے قافلے لے کر سرحد پہنچ ،ان
میں میاں محم مقیم بھی تھے، جو چالیس بچاس غازیوں کے ساتھ گئے تھے۔ وہ تمام جوان،
شجاع اور حد درجہ پر بیز گار تھے۔ نقد رو پے کے علاوہ قرامیوں کی بھی خاصی بڑی تعداد
ساتھ لے گئے تھے۔

پکھلی میں جہاد

خوانین پکھلی کی وعوت پرسید صاحب نے غازیوں کی ایک جماعت ہزارہ میں سیجنے کا فیصلہ کیا تو میاں مجرمقیم نے سبقت بالخیر کرتے ہوئے عرض کیا کہ برا قافلہ ضرور کی ساز وسامان سے لیس ہے۔ تمام مجاہدین آ زمودہ کار ہیں اور اس مہم پر ہمیں ضرور بھیجا جائے ۔ سید صاحب نے ان کی ورخواست منظور کرلی۔ چالیس بچاس غازی میاں مقیم کے قافلے کے تھے۔ تقریباً ایک سو غازی دوسری جماعتوں سے نتخب کیے بمولا نا شاہ اسلیل کوان کا سالار بنایا۔ مولوی خیرالدین شیرکوئی اور ملاشاہ سید چیر منگی کوان کے نائب ومشیر مقرد کردیا۔

ارسلان خان کی معیت

مولانا شاہ اسلمعیل یکھلی (ضلع بزارہ) میں پنچ تو انہیں محسوس ہوا کہ یہاں جہاد کا اقدام قبل از وقت ہوا ہے، البذاوہ تنظیمات میں مصروف ہوگئے۔ میاں مقیم جوش شجاعت میں جنگ کیلئے مصطرب تھے۔ مولانا شاہ اسلمیل ضروری منظیمات کے بغیر آغاز جنگ کوخلاف مصلحت سجھتے تھے۔ اس اثناء میں خان اگرور کے بھائی ارسلان خال نے اعلان کردیا کہ میں سکھوں سے لڑنے کیلئے جارہا ہوں۔ جن لوگوں کو جہاد کا شوق ہو، میر سے ساتھ ہوجا نیں ،ان سب کا خرج میں برواشت کروں گا۔ میاں محمد تھی اوران کے ساتھی ساتھ ہوجا نیں ،ان سب کا خرج میں برواشت کروں گا۔ میاں محمد تھی اوران کے ساتھی معاقتیار ہوگئے اور مولانا سے اجازت ما گی۔ اگر چہاجازت مطابق مصلحت نتھی ،لین سید صاحب نے روائل کے وقت میاں محمد شیم کی دلداری کی تاکید فرمادی تھی ،اس لئے مولانا کے اجازت و حدی اور بیارسلان خال کے ساتھ روانہ ہوگئے۔

جنك ڈمگلہ

جب مولانا کومعلوم ہوا کہ ڈمگلہ میں سکھوں کی فوج جمع ہورہی ہے تو خور بھی آگے بڑھ کرھنگیاری کے قریب پہنچ گئے ہو ڈمگلہ سے نین میل پر درہ بھوگڑ منگ کے سامنے ایک مشہور مقام ہے۔ وہاں سے میاں محم مقیم کو ایک سومجابدین کا سالار بنا کر ڈمگلہ پر شبخون مارنے کا تھم دے دیا۔ چودہ پندرہ سوملی آ دمی ان کے ساتھ ہوگئے مولوی شبخون مارنے کا تھم دے دیا۔ چودہ پندرہ سوملی آ دمی ان کے ساتھ ہوگئے مولوی فیرالدین شیرکوئی کومیاں مقیم کا مشیر دنائب بنادیا۔ گولی بارود کے علادہ بارود بھرے مول کے مولوی کو نین کودے دیے۔ آئیس وقت کے "بینڈ کرینیڈ" مجھنا چاہے۔ چول کہ سکھ لشکر نے اپنی قیام گاہ کے اردگرد خار بندی کررکھی تھی ،اسلنے مجاہدین نے کچھ چار یا تا کہ خار بندی سے کا کر بہولت اندر بہنے سکے سے ایک ماریدی سے کا کر بہولت اندر بہنے سکے سے جار یا تیاں بھی ساتھ لے لیس تا کہ خار بندی سے اگا کر بہولت اندر بہنے سکیں۔

میان مقیم کی دلا وری

تین میل کی مسافت میں بہت ہے مکی آ دی ادھراُدھر چھپ گئے ادر میاں مقیم کے ساتھ وں کی سے اپنے ساتھ وں کی سے اپنے ساتھ وں کی استے وہ اپنے ساتھ وں کی تھے۔ اپنے ساتھ وں کا قلت بقداد ہے بے پرواہوکر انہوں نے جملہ کیا۔ پہلے بارود بھر نے لاکٹرگاہ میں پھیکے بھر چار پائیاں خار بندی ہے لگادی گئیں۔ قابل ذکر امریہ ہے کہ جو شخص سب سے پہلے لاکٹرگاہ میں پہنچا وہ مجابدین کا بہادر سالا رحمہ مقیم تھا۔ میاں نے پورے زور سے نعر وہ تکمیر لگا اس نے بھر قرابین سے جابدین پہلے ان پر لگا یہ راویوں کا بیان ہے کہ سکھ فول غول بن کرئی جگہ جمع ہو مجے تھے۔ بھابدین پہلے ان پر فل بھیکتے ، پھر قرابینیں چلاتے ہوئے حملہ کرتے۔ ''منظورہ'' میں مرقوم ہے کہ مقیم اور ان کے ساتھ یوں نے جو انمر دی کے وہ جو ہر دکھائے کہ رستم واسفند یار کی داستانیں فراموش ہو گئیں۔ وہ لوگ اس طرح سکھوں کے بچوم میں گھتے تھے، جیے کوئی کبڈی کھیلتا فراموش ہو گئیں۔ وہ لوگ اس طرح سکھوں کے بچوم میں گھتے تھے، جیے کوئی کبڈی کھیلتا ہے۔ تین چار ہلوں میں سکھوں کو خار بندی سے باہرنکال دیا۔

جب شکھوں پرواضح ہوا کے جملہ آور تعداد میں کم ہیں تو انہوں نے دوبارہ استھے ہوکر مقابلے کی شانی۔ مولوی خیرالدین نے بید حالت دیکھی تو مشورہ دیا کہ اب بابرنگل چلو۔ مولوی صاحب ایک جماعت لیکر سکھوں کا مقابلہ کرنے گئے۔ باتی مجاہدین کو مراجعت کا حکم دیدیا۔ پھر خود بھی آہتہ آہتہ چھچے ہٹتے ہوئے نکل گئے۔ اس معرے میں سکھ مقتولین کی تعداد تین سو کے قریب تھی۔ غازیوں میں سے دو سخت زخمی ہوئے اور شہادت یائی۔ چیسات کے ملکے زخم گئے۔ خود میاں محر مقیم کی ٹانگ پر بھی تکوار کا ایک زخم تھا۔

مراجعت اوروفات

ہزارہ سے واپسی کے بعد میاں صاحب کے بھائی کریم اللہ کے مرنے کی اطلاع گ پنجی اور غالباان کے متعلقین اورخوونواب احماعلی خال کی طرف سے معروض پیش ہوا کیے میاں محمقیم کو واپس بھیج دیا جائے۔ وہ جانے کیلئے تیار نہتے۔ سیدصاحب نے حکم انہیں واپس بھیجا۔ رام پور میں وہ او نچے عہدے پر مامور ہو گئے تھے۔ ایک ریاستی کی سرکشی کے انسداد کیلئے پاکلی میں بیٹھ کر گئے۔ ادھر سے اچا تک گولیوں کی بوچھار آئی۔میاں محمر مقیم بری طرح زخی ہوگئے اور پچھ دیر بعد وفات یائی۔

طريقهمكربيه

نواب وزیرالدولہ نے ''وصایا'' میں لکھا ہے کہ ایک مرتبہ عطاء اللہ نے جو تھیم غلام حسین نائب والی رام پور کے بڑے بھائی تھے، نیز میاں محمقیم نے سیدصا حب سے بدادب پوچھا کہ آپ چشق، قادری، نقشبندی اور مجددی طریقوں میں بیعت کے بعد طریقہ محمد میں بیعت لیتے ہیں، اس کی حقیقت ہمیں معلوم نہ ہو تکی سیدصا حب نے اس کا جواب بطریق اجمال بیدیا: چشتی اور قادری طریقوں کے اشغال کی تعلیم اس طریق پردی جاتی ہے کہ ذکر جم کرواور ضرب اس طرح لگا ؤ طریقہ نقشبند میہ مجدد میری تلقین اس طرح کی جاتی ہے کہ ذکر جم کرواور ضرب اس طرح لگا ؤ وطریقہ نقلب ہے، میدلطیفہ روح، میدلطیفہ مراب پردی جاتی ہے کہ ذکر خفی کرو، چر سمجھایا جاتا ہے کہ بیدلطیفہ کاب ہے، میدلطیفہ روح، میدلطیفہ مراب پردی جاتی ہے۔ ان طریقوں کی نبیت میدلطیفہ مراب پردی اللہ علیہ وسلم سے باطنی ہے۔ طریقہ محمد بیہ کے اشغال یوں سکھائے جاتے ہیں:

'' کھانااس نیت سے کھایا جائے ،لباس اس نیت سے پہنا جائے ، نکاح اس نیت سے کیا جائے ، نکاح اس نیت سے کیا جائے ، نکاح سے کی جائے ، تجارت اس نیت سے اور نوکری اس نیت سے ۔اس طریقے کی نسبت حضرت محمد رسول الله صلی الله علیہ وسلم سے بہطور ظاہر شریعت ہے۔'(۱)

(۱) وصایا حصد دوم ص:۳۳،۲۳ مراویہ ہے کہ سب کچھ خدا کے لئے کیاجائے ۔ کھانے سے مقصود جم بیل آوت کی بھائی موادیہ ہوکہ بھائی ہوتا کدوین کی خد بات احسن طریق پرائیام یا کمی ۔ لباس سے مقصود جم کی تفاظت ہو۔ لکا سے مقصود یہ ہوکہ انسان لغوش سے محفوظ رہے ۔ کھیتی باڑی ، تجارت یا نوکری کی غرض یہ ہوکہ انسان کمائی کر کے متعلقین کے حقوق اداکرے اور جو قم بھائی کا موں میں مرف کرے۔

گویا ہر عمل کا مقصد رضائے باری تعالی ہو، اس کے سوا کچھ نہ ہو، اور جو کا م بھی کیا جائے شریعت کے مطابق کیا جائے۔

مولوي عبدالو ماب

شاہ یقین اللہ کے فرزند، بڑے کیم المز اج، نیک کردار، برد باراور پر ہیزگار بزرگ سے ۔ پنجتار بیں سیدصا حب نے انھیں رسد کی تقسیم پر مامور فرمادیا تھا'' قاسم غلہ' ان کے نام کا جزوین گیا تھا۔ مختلف عوارض کے باعث بہت لاغراور نحیف ہو گئے تھے۔ اس لئے تقسیم غلہ کی خدمت میں عذر کیا۔ سیدصا حب نے فرمایا: ہم دعاء کریں گے کہ اللہ تعالی آپ کو صحت عطافر مائے۔ چنانچہ خدا کے تھم سے آپ کے عارضے بھی جاتے رہ اور جسم کی حالت بھی بہتر ہوگئی۔

حفظ قرآن اور حسن تقسيم

مولوی صاحب کوحفظ قرآن کا بہت شوق تھا۔ کی مرتبہ سیدصاحب سے عرض کیا کہ
دعاء فرمائے ، اللہ تعالی حفظ کی توفیق عطا کرے اور میں ایک بارتر اور کی میں پورا قرآن
آ پکو سناؤں۔ کیفیت بیتھی کہ غلہ تقسیم فرماتے دفت آ ہستہ آ ہستہ قرآن مجید پڑھتے
جاتے۔ ایک ایک وفت میں میں ہیں پچیس پچیس مجامہ رسدے لئے آ جاتے اور سب کو
باری باری مقررہ پیانے کے مطابق دیتے جاتے۔ طریقہ یہ افتدیار کرلیا تھا کہ بڑا ہو
یا چھوٹا، افسر ہویا سیاہی ، جس تر تیب سے لوگ آتے تھے، ای تر تیب سے سب کورسد
دیتے تھے۔ تقد م و تا تحرید ہونے پاتا۔

عفووحكم

ا یک روز مولوی امام علی عظیم آبادی رسد لینے کیلئے آئے۔وہ نووارد تھے اور مولوی

صاحب کے طریق تقتیم سے انہیں آگائی نہ تھی۔اصرار کیا کہ پہلے مجھے رسد دیجئے۔
مولوی صاحب نے تل سے فرمایا کہ بھائی رسد باری سے ملے گ۔وہ توی الجہ اورجسیم
آدمی تھے۔ غصے میں آگئے اور مولوی صاحب کو دھکا دیکر آئے کے انبار پر گرادیا۔مولوی
صاحب تمام غازیوں میں بہت ہی معزز ومحترم مانے جاتے تھے۔قندھاری غازیوں نے یہ
کیفیت دیکھی تو مولوی امام علی کو مارنے کیلئے تیار ہوگئے۔مولوی عبدالوہاب نے انہیں روک
دیااور کہا کہ امام علی میرا بھائی ہے،دھکادیا تو مجھے دیا،آپ لوگ کیوں جوش میں آگئے؟

ہوتے ہوتے ہوتے یہ بات سیدصاحب تک پنجی۔ آپ نے مولوی عبدالوہاب کو بلاکر تفصیل پوچی۔ موصوف نے عرض کیا: امام علی نیک بخت آدمی ہیں۔ رسد لینے آئے شعہ، باری ان کی ختی ۔ انہوں نے عجلت کی اور مجھے دھکا لگ گیا۔ کوئی خاص بات نہیں ہوئی۔ غازیوں نے مولوی صاحب کے عفو وقل کی بیدداستان مولوی امام علی کو سنائی تو وہ بہت پشیمان ہوئے۔ خود سید صاحب کی خدمت میں حاضر ہوکر اپنی زیادتی کا صاف صاف اقرار کیا۔ ساتھ ہی کہا کہ مولوی صاحب سے میرا جرم محاف کراد ہجئے۔ سچی اسلامی اخوت کے بیددلکشا مناظر جماعت مجاہدین میں عام تھے۔ انہیں سے سیدصاحب کی شانِ تربیت کا اندازہ ہوسکتا ہے۔

جب سیدصاحب پنجتار سے ہجرت کر کے راج دواری پنچے تو مولوی عبدالو ہاب نے رمضان شریف کی تراوی میں قرآن سیدصاحب کو سنایا اوراس طرح ان کی دیرینه آرز و پوری ہوئی۔۲۴۲رذی قعدہ ۲۴۲۱ھ کوسید صاحب کے ساتھ جنگ بالا کوٹ میں شہید ہوئے۔

رضائے باری تعالی

مولوی سیدجعفرعلی نقوی نے تیام امب کا ایک واقعہ لکھا ہے جو سننے کے قابل

ہے۔ایک روزسیدصاحب نے فرمایا کہ دل دیوانے ہوتے ہیں۔ مجھے بہشت کی بھی خواہش نہیں ، مجھے بہشت کی بھی خواہش نہیں ، محض اللہ کی رضا پر نظر ہے۔ شاہ اسلعیل نے بیس کرکہا کہ بیہ بڑا او نچا مرتبہ ہے، لیکن بہشت سے ہر وائی کا ذکر زبان پر نہ لائیں ،اس لئے کہ بہشت سے مراد حق اور دوزخ ہے مراد باطل ہے۔مومن کے لئے حق سے بے پر وائی مناسب نہیں۔

سیدصاحب: جب خداراضی ہوگا تو بندے کوخود بہشت میں بھیج گا،اصل اس کی رضا ہے، بہشت رضا کی ایک شاخ ہے۔

شاه یقین الله

مولوی عبدالو ہاب کے والد ما جدشاہ یقین الله سیدصاحب کے خلص مریداور خلیفہ تھے۔ مجموعہ مکا تیب میں ایک خط بھی ان کے نام ملتا ہے، جس میں جنگ شید و، دور ہُ بنیر وسوات اور اہل سرحد کے اتفاق کا ذکر ہے۔ اس میں شاہ یقین اللہ کوان الفاظ سے مخاطب کیا گیا ہے:

''بخدمت فیف در جت سجاد و نشین ارشاد و تلقین ، رہنمائے ارباب صدق ویقین ، یادگار اسلاف کرام ، تذکار اولیائے عظام ہمقبول بارگاہ الله ، مخد وی وکمری شاہ یقین الله مداللہ ظلال ہدایہ علی رؤس المستقیدین الی یوم الدین ۔'' ان الفاظ سے اندازہ ہوسکتا ہے کہ سید صاحب کی نظروں میں شاہ یقین اللہ کا رہبہ کتنا اونچا تھا۔ ایک روایت ہے معلوم ہوتا ہے کہ ایک مرتبہ میاں دین محمد نے سید صاحب کے حکم سے پچیس روپے کی رقم شاہ صاحب کی خدمت میں پیش کی تھی۔ مکن ہے اس تتم کی اور رقبیں بھی دی گئی ہوں۔

مولوی نوراحر نگرامی

مولوی صاحب مجاہدین کے شکر اور سید صاحب کے عقیدت مندوں میں ''مؤرخ اسلام' کے لقب سے مشہور تھے۔ ابتدائی سے آپ کے ساتھ رہے اور سب سے پہلے آپ کے حالات لکھنے کا الترام کرلیا تھا۔ جو کچھ سنتے ،سید صاحب سے اس کی تقیدیت کرالیتے۔سید جعفر علی نقوی لکھتے ہیں کہ مولوی صاحب نے تمام واقعات سید صاحب کو سنا کران کی تھیج کر کی تھی۔ یہ کہ اب ور رانِ جہاد میں ان کے پاس تھی۔ افسوس کہ اس کا مختل نام باتی رہ گیا اور کتاب کا سراغ اب تک نیل سکا۔

شهادت

مولوی صاحب جہاد میں سیدصاحب کے ہمراہ تھے۔ بیہ معلوم نہ ہوسکا کہ کن کن جنگوں میں انہوں نے حصہ لیا۔ جنگ بالا کوٹ میں ان کی شرکت ثابت ہے۔ مجمدامیر خال قصوری کہتے ہیں کہ جنگ شروع ہو چکی تھی اور میں شالی کے کھیتوں سے آ کے بڑھ کرایک بیخر کی آڑ میں کھڑ ابندوق چلار ہا تھا۔ مجھ سے تھوڑ نے فاصلے پر مولوی نوراحمد تھے۔ ایک گولی ان کے بازو پر آئی اور بولے: بھائی! میں تو معذور ہو گیا۔ میری چیزوں میں سے جو درکار ہولیلو، میں نے گولیاں لے لیس وہ پلٹ کر پیچھے کو چلے۔ اس حالت میں ایک اور گولی اور وہ ذمین پر بیٹھ گئے۔ پھر معلوم نہ ہور کا کہ اس جاگہ شہید ہوئے یا کسی اور جگہ۔ شہادت اس بنا پر بیٹھی ہے کہ جنگ بالاکوٹ کے بعد کسی نے مولوی صاحب کو زندہ شہادت اس بنا پر بیٹھی ہے کہ جنگ بالاکوٹ کے بعد کسی نے مولوی صاحب کو زندہ شہادت اس بنا پر بیٹھی ہے کہ جنگ بالاکوٹ کے بعد کسی نے مولوی صاحب کو زندہ شہادت اس بنا پر بیٹھی ہے کہ جنگ بالاکوٹ کے بعد کسی نے مولوی صاحب کو زندہ شہادت اس بنا پر بیٹھی ہے کہ جنگ بالاکوٹ کے بعد کسی نے مولوی صاحب کو زندہ شہادت اس بنا پر بیٹھی ہے کہ جنگ بالاکوٹ کے بعد کسی نے مولوی صاحب کو زندہ بھو کے بعد بالاکوٹ کے بعد کسی نے مولوی صاحب کو زندہ بھو کے بعد بالاکوٹ کے بعد کسی کے بعد بالاکوٹ کی تھی اور مجاہدین کی تمام

چیزیں جل گئی تھیں،اس لئے اغلب ہے کہ مولوی نوراحمہ کی مرتبہ سیرت بھی نذر آتش ہوگئ ہو۔ میں نے اس کتاب کی تلاش میں کوئی دقیقۂ سعی اٹھاندر کھا،لیکن کسی نے اس کے وجود کی تقعد بی نہ کی۔

جب سیدصا حب نواب امیر خال کے شکر میں تضوقوا کے رفیقول میں سیدظہوراحمد میں اور اسلام کی اور احمد میں اور احمد میں اور اسیدعبدالرزاق گرامی کے نام بھی آئے ہیں جمکن ہے بید حضرات مولوی نوراحمد میں اور خاسلام کے عزیزوں میں ہے ہوں، مجھ پر حقیقت حال مکشف نہ ہوگی۔

بائيسوال باب:

محمدی، با قرعلی محمد حسین ،قمرالدین

منثى محرى انصارى

منتی محمدی انصاری جنہیں بعض اوقات بردوانی بھی لکھتے ہیں،سید صاحب کے میر منتی ہے۔ ان کاوطن راج محل سے بارہ کوئ کے اصلے پرتھا۔ سی معلوم نہ ہوسکا۔
میر منتی صاحب نے اس زمانے ہیں بمقام میر ٹھ بیعت کی تھی جب سیدصاحب بیر ٹھ سہار نپور مظفر نگر دغیرہ کے دور سے پر نکلے تھے۔ اس وقت منتی صاحب کی عمر انیس بیس مال سے زیادہ نہ ہوگی، اس لئے کہ دوران جہاد جن لوگوں نے انہیں دیکھا، ان کی عمر مسلل سے زیادہ نہ ہوگی، اس لئے کہ دوران جہاد جن لوگوں نے انہیں دیکھا، ان کی عمر سیر چھیں جھیں سال کی بتائی۔ عالبًا ای وقت سے سیدصاحب کی معیت اختیار کرلی۔ سفر جج سید میں سیدصاحب کے ساتھ دائے بریلی سے روانہ ہوئے۔ رائے کل پہنچ کرفشی صاحب سید میں سیدصاحب کو باصرارا ہے وطن لے گئے اور فشی صاحب کے اکثر اقر بانے وہاں سیدصاحب کی بیعت کی ، مثلا ان کے والد منثی شاہ محمد بنٹی روئی الدین، ختی مند معلوم نہ ہوسکا) بنٹی فضل الرحن اور ختی عزیز الرحمٰن (یہ فشی صاحب کے ماموں سے کا اور لوگ بھی سیدصاحب کی صحبت سے فیض یاب ہوئے ۔ مثنی شاہ محمد جج کے ماموں سے) اور لوگ بھی سیدصاحب کی صحبت سے فیض یاب ہوئے ۔ مثنی شاہ محمد جج کے ماموں سے) اور لوگ بھی سیدصاحب کی صحبت سے فیض یاب ہوئے ۔ مثنی شاہ محمد جج کے ماموں سے) اور لوگ بھی سیدصاحب کی صحبت سے فیض یاب ہوئے ۔ مثنی شاہ محمد جج کے ماموں سے) اور لوگ بھی سیدصاحب کی صحبت سے فیض یاب ہوئے ۔ مثنی شاہ محمد جج کے ماموں سے) اور لوگ بھی سیدصاحب کی صحبت سے فیض یاب ہوئے ۔ مثنی شاہ محمد جج کے ماموں سے) اور لوگ بھی سیدصاحب کی صحبت سے فیض یاب ہوئے ۔ مثنی شاہ محمد جے کے ساتھ گئے۔

ابل وعيال

واليسى مين مرشدآ بادسي مشى صاحب كوطن جانے كائتكم ديا۔ ساتھ بى فرمايا كەنكاح

کر لیجے۔اس ہے بھی ظاہر ہوتا ہے کہ اس وقت منٹی صاحب کاعفوانِ شباب تھا۔ چنانچہ انہوں نے نکاح کیا اور خدانے ایک بیٹا دیا، جس کانام بچی رکھا۔خود فرماتے تھے: بچے کی محبت اس طرح دل میں پیوست ہوگئ کہ بیبھی امتحانِ الیم بن گیا۔ تاہم کوئی شئے منٹی صاحب کو خدمت جن سے روک نہ کی۔ `

ہجرت

جب ہجرت کی خبر ملی تو منشی صاحب ہوی بچے اور اقربا کوچھوڑ کر رائے ہریلی پہنچے گئے اور سیدصاحب کے ساتھ ہجرت کا شرف حاصل کیا۔ ان کے ماموں منشی فضل الرحنٰن بھی ساتھ تھے۔سیدصاحب منشی محمدی کوعمو ماً ' انصاری بھائی' ' کہہ کر پکارتے تھے۔ تمام اہل فشکر انہیں ' بھائی صاحب' ' کہتے تھے۔

انتظام دفتر

یہ بتایا جا چکا ہے کہ منٹی صاحب کو تحریر پر غیر معمولی قدرت حاصل تھی۔ اندھیرے میں بھی بے تکلف لکھتے ہمین نہ سطر شیڑھی ہوتی ، نہ الفاظ ایک دوسرے سے ہیوست ہوتے۔ انہوں نے مختلف امور کے لئے الگ الگ بستے بنا لئے تھے۔ یہ بستے ایک بڑے صندوق میں رہتے ۔ جس بستے کی ضرورت پر تی بھا فظوں سے کہد کرصندوق میں سے نکلوا لیتے ۔ ہر مہینے کے آغاز میں روز نامچے کی جدولیں تیار کرا لیتے ۔ اس روز نامچے میں تمام حالات تفصیل سے کھوا لیتے ۔ سید جعفر علی نفتوی جہاد کے لئے سرحد پنچے اور منٹی خانے سے وابستہ ہو گئو خبروں کی تبییض کا کام آنہیں سے لیا جاتا۔

خاص نشانات

سیدصاحب نے اپنی مہرشاہ استعیل کے حوالے کردی تھی۔شاہ صاحب بیرمبرمھی

سیمی مولوی محمد سن (رام پور منهاران) اور منشی محمدی انصاری کو دیدیتے تھے۔ منثی صاحب ہر مکتوب پر ایک اصطلاحی نشان بنادیتے۔ جس پر بینشان ہوتا، ای پر مہر لگائی جاتی کی کاغذ کے گوشے میں دستخط ''حضور'' لکھ دیتے کسی کے گوشے میں ''مولانا''۔ مضور'' کا مطلب بیہوتا کہ محتوب یا فرمان براور است سیدصا حب کی طرف سے ہے۔ لفظ ''مولانا''کا مطلب بیہوتا کہ شاہ اسلعیل کی وساطت سے بیفرمان جاری ہورہا ہے۔

شهادت

ان کے ماموں منٹی فضل الرحلٰ نے جنگ مایار میں تورواور مایار کے درمیان شہادت پائی، چنانچدان کی میت تورو میں دفن ہوئی۔خود منٹی صاحب کی شہادت ہالا کوٹ میں سید صاحب کی شہادت گاہ کے قریب ہوئی۔ انہیں غالبًا اس تنج شہیدان میں دفن کیا گیا جو قصبہ بالا کوٹ کے منے سے قریب ہے۔

اخلاق وعادات

راویوں نے لکھا ہے کہ شی صاحب برے مخلص ،سیدصاحب کے کمال کے معتقداور آپ کے نزدیک نہایت معتبر ومعزز تھے۔اخلاص کا بیعالم تھا کہ دورانِ جہاد میں بھی کی معالمے کے متعلق سیدصاحب سے خفیف سے اختلاف کا موقع نہ آیا۔سیدصاحب کی طرف سے جو فیصلہ یا فرمان صادر ہوا،اس کی درتی کے بددل معتقد تھے۔شہادت کے وقت عرمیں برس سے کم تھی۔

باقرعلى عظيمآ بادى

بیمولانا ولایت علی عظیم آبادی کے ہم جداور پچیرے بھائی تھے بھرؤ نسب یوں ہے: باقرعلی بن مولوی وارث علی ہے: باقرعلی بن مولوی وارث علی

کے دوسرے بیٹے مولوی فتح علی تھے جومولانا ولایت علی اور مولانا عنایت علی کے والد تھے مولوی بشارت علی کی شادی حضرت شاہ محرمعز ساکن محلّه تمو ہید کی صاحبز ادی مساق نسجیب سے ہوئی تھی ۔ جوانی بیس ان کا انقال ہو گیا۔ صرف دو بیٹے اورا یک بیٹی یادگار حجوزی۔ یہ بیچ کم من تھے۔ مولوی فتح علی ہی نے ان کی پرورش کی۔

شان ارادت

سید صاحب حج سے مراجعت پر پٹنہ میں تھہرے تو خاندان اور شہر کے دوسرے افراد کے ساتھ مولوی باقر علی نے بھی بیعت کر لی۔ اس وقت سولہ سترہ سال کی عمرہ وگ ۔ شادی نہ ہو گی تھی اور عیالداری کا کوئی جنجال نہ تھا۔ اس لئے اسی وقت سے مرشد کی رکاب بگڑ کی اور ساتھ نہ چھوڑا۔ بیان کیا جاتا ہے کہ ایک موقع پر نگے پاؤل سید صاحب کے گوڑ کی اور ساتھ ساتھ جارہے تھے، راستے میں کھنے کا کا نتا چھے گیا۔ شدید تکلیف کے باوجود یہ ایک لمیے کیلئے بھی نہ رہے اور برابر ساتھ رہے۔ منزل پر پہنچ کر کا نتا انکوایا۔

نائب تقنيم رسد

جب سیدصاحب جہاد کیلئے نکلے تو مولوی با قرعلی مہلی جماعت میں شریک ہوئے۔ اس دفت مولوی محمد یوسف پھلتی سیدصاحب کی طرف سے تمام انتظامات کے فقیل تھے۔ انہیں کے پاس روپیے جمع ہوتا تھا، وہی جماعت مجاہدین کیلئے ساراسامان خریدتے تھے۔ مولوی با قرعلی کوسیدصاحب نے رسد کی تقسیم کے لئے ان کا نائب بناویا تھا۔

راوحق كأيبلاشهيد

اکوڑ ہیں سکھوں کے شکر پڑجنون مارنے کیلئے جوایک سوچھتیں عازی منتف ہوئے تھے،ان میں مولوی باقر علی بھی شامل تھے۔ان کا شرف یہ ہے کہ سکھوں کی طرف سے جو پہلی گولی مجاہدین کی طرف آئی وہ مولوی باقر علی کے لگی۔ زخم کاری تھا، وہ بیٹھ گئے اور بولے: بھائیو! میرا کام تمام ہوا۔ اب مجھ سے ہتھیار لے و۔ یہ اللہ کا مال ہے۔ یہ کہتے ہی جال بحق ہوگئے۔ گویا جماعت مجاہدین میں سے وہ راوحت کے پہلے شہید تھے۔ ان کے بال بحق ہوگئے۔ گویا جماعت مجاہدین میں سے وہ راوحت کے پہلے شہید تھے۔ ان کے بال دو پستول تھے، ایک تلوار اور ایک بندوق ۔ پستولوں میں سے ایک کانام بسم اللہ تھا اور دوسرے کا عبد اللہ ۔ غازیوں نے پستول تو سنجال لئے ، تلوار اور بندوق و ہیں رہ گئیں۔ شہاوت کے وقت صرف اٹھارہ انہیں سال کی عرقی ۔

شاه محمحسين عظيم آبادي

ان کے بزرگوں میں سے پہلے پہل میر معز الدین دیورہ میں آکر آباد ہوئے اور پائی بزار بیگھ نے بنا آہیں معاش کیلئے عطا ہوئی۔ ان کی پانچویں پشت میں شخ شاہ محمد ایک مشہور بزرگ ہے۔ ان کے بیٹے شاہ عبدالعلی اور پوتے شاہ ابوسعید نے بھی آبائی مقام ہی میں سکونت جاری رکھی۔ ابوسعید کے فرزندشاہ ابوالبرکات محمد فائض پہلے پہل پٹنہ میں آئے اور وہ مقام سکونت کیلئے پہند کیا، جہاں بعد میں محلّہ تمو ہیں آباد ہوا۔ انہوں نے ایک غیر آباد جگہ او پخی فیکری پر ایک جمرہ بنالیا تھا۔ بعد از ان ان کی بزرگ کے پیش نظر بادشاہ کی طرف سے خاصی زمین وے وی گئی۔ شاہ محمد حسین آنہیں کی اولاد میں سے تھے۔ نب طرف سے خاصی زمین وے وی گئی۔ شاہ محمد حسین آنہیں کی اولاد میں سے تھے۔ نب نامہ بول ہے: شاہ محمد حسین آنہیں کی اولاد میں بن شاہ ابوالخیر محمد نبین شاہ ابوالجرکات محمد فائفن۔

دعوت وتبليغ

شاہ محمد حسین ۱۲۰ سے ۱۲۰ سے ۱۲۰ میں پیدا ہوئے۔ تعلیم اپنے چھا شاہ محمد کریم سے پائی۔ ابتداء بی سے صوم وصلوٰ ق کے پابند اور طہارت وتقویٰ کے شیفتہ تھے۔ سید صاحب حج سے واپس آئے تو بیعت کی۔ اسکے بعد پورا وقت کتاب وسنت کی دعوت میں صرف ہونے لگا،ان کے عقیدت مندوں کا دائرہ بہت پھیلا ہوا تھا۔مظفر پور،در بھنگہ، چھیلا ہوا تھا۔مظفر پور،در بھنگہ، چھیرہ، گیا، بہار،مونگیر، بھاگل پوروغیرہ کے اطراف میں مسلسل دورے فرماتے رہتے۔ ان کے ارشادات کی برکت سے لاکھوں آ دمی کتاب وسنت کے یابند بن گئے۔

توسيع مسجداورجج

ان کی خاندانی مجد جھوٹی تھی ،جس میں ایک سوآ دی بھکل نماز ادا کر سکتے تھے۔ شاہ محر حسین نے مجد کوا تناوسیج کردیا کہ اس میں تبین ہزار آ دمی بے تکلف نماز پڑھ سکتے تھے۔ جمد اورعیدین کی نماز وں کیلئے پاس کے ایک میدان میں انتظام کیا جاتا۔ وعظ بہت ساوہ ہوتا تھا، اسلئے عوام بھی اس سے مستفید ہوتے ۔ رات کے وقت زنانے میں وعظ فرماتے اور ان میں دورنز دیک کی مستورات شریک ہوتیں ۔ سب کیلئے کھانے پینے کا انتظام فرماتے ۔ ان میں دورنز دیک کی مستورات شریک ہوتیں ۔ سب کیلئے کھانے پینے کا انتظام فرماتے ۔ جہاد کے لئے ساتھ نہ گئے ۔ غالبًا سیدصاحب نے خود انہیں روک دیا تھا اور دعوت وارشاد کا کام ان کے ذمے لگا دیا تھا۔ ۲۲ – ۲۱ کا ھر (۲۷ – ۱۸۳۵ء) میں جج کیلئے گئے ۔ اس سفر میں دو ہرس صرف ہوئے ۔ دوران 'فندر' میں پٹنے کے کشنرٹیلر نے انہیں نیز مولا تا اس سفر میں دو ہرس صرف ہوئے ۔ دوران 'فندر' میں پٹنے کے کشنرٹیلر نے انہیں نیز مولا تا احمد اللہ ، مولا نا واعظ الحق وغیرہ کو بعض شبہات کی بناء پرنظر بند کردیا تھا۔ تقریباً تین مہینے اس ابتلا میں گذر ہے۔

سواری وسپهگری

فن سپہ گری میں پورا دخل تھا۔ گھوڑے کی سواری میں مشاق تھے۔ آخری عمر تک گھوڑے کے سواکوئی سواری استعال ندی۔ ہمیشہ شریر گھوڑ اخرید لیتے اور اسے سدھار کر فروخت کردیتے۔ شعر بھی کہتے تھے۔ ہاشی تخلص تھا۔ قدمیا ند، رنگ بہت گورا، نہایت خوب صورت اور وجیہ تھے۔

وفات

۸رر جب ۱۳۷۷ھ(۳۱رجنوری ۱۸۷۰ء) کو جعرات کے دن وفات پائی۔ عکیم مولوی اسداللہ نے تاریخ وفات کہی:

رفت به یوم الخیس و زقدم پاک و صاف زیب سرری ارم شاه محمد حسین! آپ کی اہلیہ بی بی نصرت نے تقریباً ایک سوسال کی عمر پا کرانتقال کیا۔ مولوی محمد یوسف جعفری نے تاریخ وفات کہی:

چوجده ماجده ام بی بی نصرت هی جداگشته ز ما زیر زیس رفت یخ تاریخ رحلت فکر کروم هی ندا آمد به فرووس بریس رفت یخ تاریخ رحلت فکر کروم

اولاو

شاہ محد حسین کے ایک بیٹا اور چھ بٹیمیاں تھیں۔ بیٹے کے کوئی اولا دندتھی۔ بیٹیوں میں سے ایک نے بچپن میں وفات پائی۔ باقی پانچ میں سے چار کے نکاح ان بزرگوں سے موئے جوسیدصا حب کی تحریک جہاد میں سرگرمی سے شریک رہے۔ مثلاً:

ا۔مولا نااحمداللہ: بہلسلہ اعانت مجاہدین جس دوام کی سزایائی اور جزائر انڈمان میں فوت ہوئے۔ بڑی صاحبز ادی ان کے نکاح میں تھی۔

۲ مولانا یکی علی: بغرض جهادسرحدین بھی رہے۔پھر بٹاعت مجاہدین کیلئے دعوت و تنظیم میں مشغول ہو گئے ۔گرفار ہوئے ادر بھانی کی سزا پائی جے عمر قید میں بدل دیا میا۔ جزائرا نڈمان ہی میں فوت ہوئے۔دوسری صاحبزادی ان کے نکاح میں تقی۔ سے مولوی فیاض علی: مولا ناولایت علی کے ساتھ جہاد میں شریک رہے۔ تیسری صاحبز ادی ان کے نکاح میں تھی۔

ہم مولوی اکبرعلی: مولانا ولایت علی کے ساتھ مجاہدین میں شریک رہے۔ پھر وطن میں بہ عارضہ بہنہ وبائی انتقال کیا۔ جو صاحبز ادی ان کے نکاح میں تھی ان کا نکاح ان مولانا عنایت علی سے ہوا جو مولانا ولایت علی کے بعد امیر المومنین ہوئے اور انگریزوں سے لڑتے ہوئے چنئی (سرحد آزاد) میں وفات پائی۔

ان حفرات کے مفصل حالات کتاب کی آئندہ جلد میں بیان ہو نکے ،انشاءاللہ تعالیٰ۔

قمرالدين حسين

شجرہ سب یہ ہے: قمر الدین حسین بن رکن الدین حسین بن رفیع الدین حسین ان بن رفیع الدین حسین نائب ناظم بہار۔ رفیع الدین اوران کے والدروح الدین حسین مخل باوشاہوں کی طرف سے بہار کے نائب ناظم رہے، اس لئے وہاں کے اکا برامراء میں شارہوتے تھے۔ رفیع الدین حسین قر الدین حسین کے دادا مولانا ولایت علی کے نانا تھے۔ یہ بہار کا دوسرا بڑا خاندان تھا، جس مے قرالدین حسین کوقرابت قریبہ حاصل تھی۔

بيعت ورفاقت

ان کی شادی مولوی اللی بخش کی صاحبزادی جمیلة النساء سے ہوئی تھی۔مولوی صاحب موصوف بھی عظیم آباد کے رؤ سامیں محسوب تھے۔قرالدین حسین نے اس زمانے میں سیدصاحب سے بیعت کی جب آپ حج سے واپس آتے ہوئے عظیم آباد تھر سے سے۔ اس وقت سے رفاقت اختیار کرلی۔ بیعت امامت جہاد کے بعد سید صاحب نے بلاوا بھیجا تو قافلہ لے کر سرحد بنجے۔

(جماعت بحامرين)

شهادت

سیدصاحب نے مولوی مظهر علی عظیم آبادی کو پیثاور میں قاضی مقرر کر دیا تو انہوں نے جن اصحاب کواہیے ساتھ رکھا اُن میں سے ایک قمرالدین حسین تھے ممکن ہے مولوی صاحب نے انہیں ہم وطنی کی بنابر چناہو ممکن ہے قمرالدین حسین مولوی صاحب کی جماعت میں شریک موں۔ بہر حال مدمولوی صاحب کے ساتھ رہے اور بتایا جاتا ہے کہ انہیں کے ساتھ شہید ہوئے۔اولا دکوئی نہ تھی۔ان کی بیوہ کا نکاح ٹانی مولانا ولایت علی ے ہوگیا۔ صاحب در المنتور نے لکھا ہے کہ بہار و بنگال میں بیوہ کا یہ پہلا نکاح ثانی تھا۔

تيئيسوال باب:

احدالله، خيراً بادي گھرانا، عبدالمجيدخال

احمدالله ناگ بوری

مولا ناعبدالی کے چچیرے بھائی تھے۔ بعض نے علاقی بھائی لکھاہے، کین اس کی تھد نین کسی ذریعے سے نہ ہو کی جیب امریہ ہے کہا تنے قر بی رشتے کے باوجود دونوں بھائیوں میں ظاہری ملا قات کبھی نہ ہوئی تھی۔ مولا نا عبدالی سرحد چلے آئے تو مولوی احمداللہ نے زیارت کا پختہ ارادہ کر کے کمر ہمت باندھ لی اور ٹو تک ہوتے ہوئے سرحد پنتے۔ چندآ دی بھی ساتھ تھے۔ اس وقت سیدصا حب خمر میں تھے، مولوی احمداللہ کے خمر آنے سے صرف تین چار دن پیشتر مولا نا عبدالی نے وفات پائی۔ بیجا نکنا خبر مولوی احمد اللہ کے احمد اللہ کو درگی میں ملی۔ ان کے رہ فی وقات کا اندازہ کون کرسکتا ہے۔ صرف بھائی کے اشتیاتی دیدار میں اتنا لمباا ورکھن سفراختیار کیا لیکن شوق پورانہ ہو۔ کا۔

كمالات

خبر پہنچ کرسید صاحب سے ملاقات ہوئی تو معا بیعت کر لی اور رفیقانِ خاص بیل شامل ہو گئے علم وتقویٰ میں ان کا پایہ بہت بلند تھا۔ تیرا ندازی، چا بک سواری اور کشتی کے فنون میں استاد کامل شے۔ جانوروں کے علاج میں بھی یدطولی حاصل تھا۔ وعوست اساء کے بھی ماہر مانے جاتے تھے۔ ایک موقع پرکوئی شخص سیدصا حب کی خدمت میں تماضر ہوا آور عرض کیا کہ میرے ایک عزیز کو آسیب کا عارضہ ہے۔ مہر بانی فرماکرکوئی تد ہیر کیجئے۔ سیدصاحب نے مولوی احمد اللہ کو بھیجتا جاہا۔ انہوں نے عذر کیا کہ اس میں گوشت ترک کرنے کے علاوہ بعض اور پابندیاں بھی ہیں۔سیدصاحب نے بوچھا آپ پڑھتے کیا ہیں؟ عرض کیا وہی اساء جو قرآن مجید میں آئے ہیں۔ پوچھا کوئی اور چیز تو نہیں؟ عرض کیا نہیں۔سیدصاحب نے فرمایا کہ بے تکلف جائے۔

مختلف خدمات

سیدصاحب نے مولوی صاحب کوایک جماعت کا سالار بنادیا تھا۔ مختلف فنون میں با کمال ہونے کے باعث وہ غازیوں کی تربیت بھی فر مایا کرتے تھے۔ سیدصاحب کی اہم مجالس شور کی میں بطور رکن شریک ہوتے تھے۔ پنجتارے ثمال میں کوئی میل ڈیڑھ میل پر قاسم خیل ایک گاؤں ہے، مولوی احمد اللہ نے وہاں گولے ڈھالنے کا ایک کارخانہ بنایا تھا۔ مولوی خیرالدین شیر کوئی بھی اس کام میں شریک تھے۔ ایک موقع پرسیدصاحب نے مرکز سے باہر جاتے وقت انتظام ان کے حوالے کردیا تھا۔

بالاكوث

مولوی سید جعفر علی نقوی کے بیان سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ خود نیز شخ محمد اسحاق گور کھپوری، حافظ مصطفیٰ کا ندھلوی جیسے لوگ مولوی احمد اللّہ کی جماعت میں شریک تھے۔ چنا نچہ مولوی صاحب نے جنگ بالا کوٹ سے ایک رات پیشتر اپنی پوری جماعت کو دعوت طعام دی۔ مولوی جعفر علی سے کہا کہ میں امیر المونین کے ساتھ رہوں گا، جنگ میں جماعت کی قیادت آپ سیجئے گا۔ نقوی نے عذر کیا کہ جمھے افسری کا تجربہ نہیں۔ حافظ مصطفیٰ کو یہ منصب سونب د بیجئے۔

> مولوی احد اللہ: عافظ مصطفیٰ بھی میرے ساتھ ہوں گے۔ نقوی: توشیخ اسحاق کوامیر بناد ہیجئے۔

مولوی احمد الله: وه ذراجو شیار دی بین اورامارت کیلیمتین آدمی کی ضرورت ہے۔ نقوی: پیرمین حسن خال بناری کا نام پیش کرتا ہوں۔

مولوی احد الله: بھائی ! کیا آپ طے کر بچکے ہیں کدمیر اتھم ندہ نیں گے؟ نقوی: میں معافی مانگراہوں محض اپنی ناتجر بہ کاری اور ناتوانی آپ پر واضح کرر ہاتھا۔

مولوی صاحب یہ الفاظ من کرمسکرائے اور جماعت کو تھم دیا کہ میدانِ جنگ میں تمام بھائی سید جعفر علی نفتوی کے احکام کی تعیل کریں۔

یدامریقنی ہے کہ مولوی صاحب جنگ بالاکوٹ میں ضلعت شہادت سے سرفراز ہوئے۔شہادت کی تفصیل معلوم نہ ہوسکی۔

نيزهبازي

مولوی اجر اللہ اگر چہ تمام فنون حرب میں طاق سے اور نیزہ بازی میں بھی کمال ماصل تھا لیکن ایک مرتبہ مثل میں سیدصاحب سے مقابلے کا موقع آن پڑا تو معلوم ہوا کہ نیزہ بازی میں مزید تعلیم کی ضرورت ہے۔ نواب وزیرالدولہ نے ایک نہایت عمدہ محمور اسیدصاحب کیلئے بھیجا تھا، آپ نے وہ مولوی احمد اللہ کودیدیا کہ اسے سدھا ئیں۔ چندروز کے بعداس پرسواری کی تو معلوم ہوا کہ بہت اچھا ہے۔ آپ کی عادت شریف یہ محمی کہ کوئی شخص کسی فن کا ماہر ہوتا تو اس فن میں اپنی مہارت اس کے سامنے ظاہر نہ کرتے ،لیکن سواری کرتے ہوئے مولوی احمد اللہ سے فرمایا کہ آپ نیزہ بازی کے ماہر کرنے ،لیکن سواری کرتے ہوئے مولوی احمد اللہ سے فرمایا کہ آپ نیزہ بازی کے ماہر الوگ تماشا و کیھنے کیلئے جمع ہوگئے۔ لئووالے ڈنڈے لیے بہتے ہوئے کے سیدصاحب نے مولوی صاحب سے فرمایا کہ وہر میں ورانے نہ ہے کہ کر سرت شروع کی ۔سیدصاحب نے مولوی صاحب سے فرمایا کہ وہر میں ورانے نہ سیجئے ،لیکن جب تک کسرت جاری رہی ،مولوی صاحب بھی پہلو میں بھی وہر میں ورانے نہ سیجئے ،لیکن جب تک کسرت جاری رہی ،مولوی صاحب بھی پہلو میں بھی

شانے میں اور بھی گردن میں ضربیں کھاتے رہے۔ بہت ہوشیاری کرتے لیکن نیج نہ سکتے۔ آخر مولوی صاحب نے کہا کہ میں نے نیزہ بازی بڑے ماہراستاد سے بیکھی ہے، لیکن جو بیج آج دیکھے ہیں وہ تو خواب وخیال میں بھی نہ تھے۔ چنانچے سید صاحب سے درخواست کی کہ یہ بیج سکھادیں۔ بعد ازاں سید صاحب دوسرے تیسرے دن مولوی صاحب کو نیزہ بازی کے خاص بیج سکھاتے اور بیسلسلہ کوئی دومہینے تک قائم رہا۔ (۱)

خيرآ بادى مجامد

الیی مثالیں بہت کم ملتی ہیں کہ کمی خاندان کے تمام افراد نے بیک وقت جہاد فی سبیل اللہ کے لئے قدم اٹھا یا ہو۔سیدصا حب کے دفیقوں میں سے خیر آباد کا ایک گھرانا اس لحاظ سے خاص طور پر قابل ذکر ہے۔ یہ چھ بھائی تھے۔ تمام نے سید صاحب سے بیعت کی اور تمام ساتھ جانے کے لئے ہمتن تیار ہو گئے ،ان کے والد بھی جہاد میں شریک بیعت کی اور تمام میں درج ہے:

ا۔ گوہرخاں

چھ بھائیوں میں یہ سب سے بڑے تھے۔سیدصاحب نے جب وطن چھوڑ کر جہاد کے لئے سرحد پہنچنے کا ارادہ کرلیا تو تکمیشریفہ سے بایں غرض خیر آباد آئے کہ اہل وعیال کو لے کرروانہ ہوں۔انفاق سے اس اثناء میں وفات پائی۔ چوں کہ جہاد کے لئے ہجرت کی پختہ نیت کیے بیٹھے تھے،اس لئے پوری تواب کے ستحق تھہرے۔

۲۔ امام خال

بیختلف جنگوں میں شریک رہے۔سیدصاحب پایندہ خال سے ملنے کے لئے عشرہ

⁽١) تفعيلات كي لئي طاحظه مو 'وقالع احمري' .

گئے تھے تو شاہ آسمتیل نے احتیاطا مجاہدین کی ایک جماعت کو مقام ملاقات سے قریب ایک پوشیدہ جگہ بٹھادیا۔ اس جماعت میں امام خال اور ان کے بھائی محمہ خال اور ابراہیم خال بھی شریک تھے۔ جب سردار پایندہ خال نے مجاہدین کا راستہ روک کر جنگ کی صورت پیدا کر دی تو اس کے ساتھ کئی لڑائیاں پیش آئیں، جن میں سے کوہ کنیر ڈی کی جنگ خاص طور پر قابل ذکر ہے۔ عشرہ (نزدامب) کے سامنے کنیر ڈی ایک برج نماشیلا ہے۔ مجاہدین کا ایک جیش ارباب بہرام خال جہکالی کی سرکردگی میں اس فیلے پر جا بیشا تھا۔ سردار پایندہ خال نے سکے کا فریب دے کر مجاہدین کی جنگ سرگرمیوں کو معطل کرادیا اور اس اثناء میں اچا نک کوہ کنیر ڈی پر جملہ کردیا۔ شخ بلند بخت دیو بندی بمولوی خیر الدین شیرکوئی اور امام خال خیر آبادی مجاہدین میں متاز مانے جاتے تھے، شیوں کوہ کنیر ڈی کے جیش کے ساتھ تھے۔

پابندہ خال کے نشکر نے اس پہاڑ پر بیک وقت دوجانب سے حملہ کیا۔اگر چہاس کے آدمیوں کو بھی سخت نقصان پہنچا ،کین پہلی ہی بار میں چھ غازی شہید ہوگئے۔اس اثناء میں سید دلا ورعلی کے گولی گئی۔وہ گر سے تو پاس کے غازیوں نے ان کے ہاتھ بکڑ لئے۔ میں سید دلا ورعلی کے گولی گئی۔وہ گر سے تو پاس کے غازیوں نے ان کے ہاتھ بکڑ لئے۔ پابندہ خال کے آدمی انہیں ٹانگوں سے بکڑ کر نیچ کھینچنے لگے۔امام خال نے اپنے مور بے سے ذرا آگے بڑھ کر ہندو ق سرکی۔مغا ایک گولی ان کی کنیٹی میں گئی اور آٹا فا ناشہادت پائی۔(۱)

س۔ محمدخاں

بیمخلف جنگوں میں شریک رہے۔ ہزارہ میں سکھوں کے خلاف اقد امات کا فیصلہ ہوا اور سید احمد علی (خواہر زاد و سید صاحب) کو سید سالا ربنا کر بھیجا گیا تو محمد خال بھی اس لشکر (۱) فلانھی کے ازائے کیلئے پیومش کردینا ضروری ہے کہ خیر آباد کے ایک امام خال اکوزہ میں شہید ہوئے تھے، وہ ان کے علاوہ تھے۔ میں شریک تھے۔ سکھوں نے بھولڑہ میں غازیوں پر تملہ کیا اور تھمسان کا رن پڑا تو سکھ
ایک موقع پراڑ درنام ایک گھوڑے کو پکڑ کرلے گئے جوار باب بہرام خال نے بطور تذرانہ
سیدصاحب کی خدمت میں پیش کیا تھا اوران کی خاص سواری کا گھوڑ اسمجھا جاتا تھا۔ سید
احمد علی کو غازیوں کے نشکر کا سالار بتایا تو سیدصاحب نے اپنی بعض دوسری چیزوں کی
طرح گھوڑ ابھی انہیں دے دیا تھا۔

محمد خال نے جب دیکھا کہ سکھ اڑ درکو لئے جارہے ہیں تو پکار کر کہا: بھا ئیو! بیامیر المونین کی سواری کا گھوڑا ہے۔اسے دشن کے قبضے میں نہ جانے دو۔ یہ کہتے ہی بکل کی طرح تنہا سکھوں پر جاگرے۔ کچھ اور غازی بھی ان کے ساتھ ہوگئے اور اڑ در کو چھڑا لائے۔ سکھوں نے دوبارہ حملہ کردیا۔ غازی تعداد میں بہت کم تھے، چنا نچہ گھوڑا بھی مارا گیا اور بعض غازیوں کے ساتھ محمد خال بھی شہید کردیے گئے۔ پھولڑہ کے گئے شہیداں میں فن ہوئے۔

س_ ابراہیم خال

یہ جنگ بالاکوٹ کے بعد کی سال شخ ولی محمد پھلتی کے ساتھ رہے۔ پھر عالبًا انہیں کے ساتھ ٹو نک آ گئے اور وہیں اقامت اختیار کرلی۔ نواب وزیرالدولہ مرحوم والی ٹو نک کی والدہ ماجدہ حج کے لئے گئیں توابراہیم خال بھی ساتھ تھے۔اس سفر میں وفات ہوئی۔

احمدخال اورارادت خال

پانچویں بھائی احمد خال اور چھٹے بھائی ارادت خال دورانِ جہاد میں طبعی موت مرے۔ غور فرما ہے کہ ان چھ بھائیوں کی زندگی اور موت کس درجہ قابل رشک تھی۔ان کے والد جن کا نام معلوم نہیں، جہاد میں برابرشر یک رہے۔ایک روایت ہے معلوم ہوتا ہے کہ وہ بالاکوٹ کی جنگ میں شہید ہوئے۔

عبدالمجيدخان آفريدي

یہ جہان آباد (رائے بریلی) کے باشندے تھے۔مجاہدین کی اس جماعت میں شریک ہوکر سرحد بہنیے جوسیدصاحب کے ساتھ می تھی اور جسے مجاہدین کا ہراول سمجھنا جا ہے۔ وہاں سب ہے پہلی جنگ اکوڑہ میں پیش آئی، جہاں بدھ شکھ سکھوں کا بھاری لشکر لئے بیٹھاتھا۔جس کی تعدادسات ہزار سے دس ہزار تک بتائی جاتی تھی۔سیدصاحب نوشہرہ میں مقیم تھے۔اس سے مقصود نوشہرہ شہر یا برانا نوشہرہ ہے جو دریائے لنڈے کے مشرقی کنارے پرواقع ہے۔نوشہرہ چھاؤنی مقصور نہیں جومغربی کنارے پر ہاور جہاں ربلوے اٹنیشن ہے۔ چوں کے سکھوں کالشکر بہت برا اتھا،اس لئے شبخون مارنے کا فیصلہ کیا گیا۔اس غرض کیلئے ہندوستانی غازیوں میں ہے ایک سوچھتیں قوی اور توانا آدمی منتخب کیے گئے۔سات آٹھ سوسر حدی غازی ساتھ ہو گئے۔ چوں کہ جانے آنے میں بندرہ سولہ میل کا فاصلہ طے کرنالا زم تھا،اس لئے آئبیں لوگوں کومنتخب کیا گیا جو بے تکلف فاصلہ طے کریکتے تھے۔عبدالحجید خال ان دنول بخار میں مبتلار ہنے کے باعث بہت کمزور ہوگئے تھے،اس لئے ان کا نام اس فہرست میں شامل نہ کیا گیا۔

نیکی میں سبقت

انہیں جب بیر کیفیت معلوم ہوئی تو بیتا بہ ہوکرسیدصا حب کی خدمت میں پہنچے اور عرض کیا:

حفرت! میں کچھ ایسا بیار تو ہوں نہیں کہ چلنے کی طاقت نہ ہو، اور بیہ پہلامعر کہ ہے،جس میں جہاد فی سبیل اللّٰہ کی بنیاد رکھی جائے گی۔میرانام ضرور شامل فر مالیجئے تا کہ سبقت کی فضیلت سےمحروم نہ رہ جاؤں۔ عبدالمجیدخاں کی بیتابی د کی کرسیدصاحب نے ان کی درخواست قبول کرلی اور دعاء فر مائی کہ اللہ تعالیٰ ہمت میں برکت دے۔

شهادت

جنگ اکوڑہ کی تفصیلات بیان کرنے کا بیموقع نہیں، کیکن بیبتادینا چاہیے کے عبدالمجید خال نے خاصی کزوری کے باوجود جنگ میں انتہائی مردائل دکھائی۔ چودہ آ دمی ان کے ہاتھ سے قتل ہوئے۔ چران کی تلوار ٹوٹ گئی۔ مولوی خیرالدین ولایتی کے پاس دو تکوارین تھیں، انہوں نے معا ایک تلوار عبدالمجید خال کے حوالے کردی۔ اس سے بھی کئی و شمنول کوموت کے گھاٹ اتارا۔ منظورہ کے الفاظ ہیں:

ازآن ہم چند کس را کشتند ۔

پھرخود بھی جامِ شہادت نوش کرے "عِنْدَ رَبِّهِمْ يُوْزَقُونَ" كانعام يافة گروه بيس شامل ہوگئے۔

چوبيسوال باب:

شنراده گدری، انورشاه، اکبرخال

شنراده گدڑی

بیت امامت جہاد کے بعد جو تحلصین سیدصاحب کی خدمت میں پہنچ ، ان میں سے ایک صاحب گدڑی شنرادہ کے لقب سے مشہور تھے۔ وقائع میں انہیں ' جلیل القدر پیرزادہ'' بنایا گیا ہے۔ سیدمحمہ خال دارنی نے اپنے ایک مکتوب میں انہیں ' صاحبزادہ گدڑی'' لکھا ہے۔ موصوف نے بیعت کی تو کہا: میں خالصۂ لوجہ اللہ حاضر ہوا ہوں۔ آج کے بعد آپ کا ساتھ چھوڑ کر کہیں نہ جاؤں گا۔ انشاء اللہ تعالیٰ۔

درانی سردار سے ملاقات اور مشوروں کیلئے آئے تو سیدصاحب بھی ہنڈ سے پانسو
آدمیوں کے ساتھ نوشہرہ پہنچے۔ ساتھیوں میں فتح خال رئیس پنجتار، اشرف خال رئیس زیدہ
اور خاد سے خال رئیس ہنڈ کے علاوہ شنرادہ گدڑی بھی شامل تھے۔ سیدصاحب ہنڈوالیس
چلے گئے، لیکن گدڑی شنرادہ کوسردار یار محمد خال نے روک لیا۔ اس سے ظاہر ہے کہ شنراوہ
درانی سرداروں کے نزدیک بہت ہی معزز ومحترم تھا۔

شهادت

وہ شیدو کی جنگ میں شریک ہوا، جس میں کم وہیں ایک لاکھ آ دی سیدصاحب کے زریعلم جمع تھے اور نظر بظاہر یقین تھا کہ غازیوں کی یہ کثیر التحداد فوج سکھوں کوشکست فاش دے کرا فک پر پیش قدمی کر ہے گی اور تطہیر پنجاب کا کام احسن طریق پر شروع ہوجائے

گا، کین یار محمد خال کی خیانت وغداری کے باعث بیرخش گوارامید پوری نہ ہو کی۔ وہ عین کامیا لی کی حالت میں اپنی فوج لے کرمیدان سے بھاگ گیا۔ اس کے بھائی بھی ساتھ ہی فرار ہو گئے۔ یہ حالت دیکھ کر عام سرحدی خوانین کے پائے ثبات میں بھی لغزش پیدا ہوگئی۔ صرف چند مخلص خوانین ، ہندوستانی غازی اور شنر اوہ گدڑی چٹان کی طرح اپنی جگہ جے رہے۔

شنرادہ گدڑی کا مور چہشیددگاؤں میں تھا، وہ اپنا جیش کے کرسکھ شکرگاہ کے قریب
پہنچا اور خار بندی سے گذر کر اندر داخل ہوگیا۔ پیچے فرار کا نقشہ دیکھا تو جیران رہ گیا۔
حالت جنگ میں معلوم نہ ہوسکتا تھا کہ کیا صورت پیش آئی۔ سکسوں نے اس پر ہجوم کیا تو
قدم بہقدم پیچھے ہنے لگا۔ پہلے اپنے گاؤں والے مور پے پر پہنچا۔ سکسوں کا ہجوم بہت
بڑھ گیا تو اور پیچھے ہے کرقبرستان میں مور چہ قائم کرلیا۔ و ہیں خونِ شہادت میں تیرتا ہوا
مالک جھتی کے دربار میں ہیج گیا۔

منظوره كابيان

یادہوگا، ڈیڑھددمہینے پیشترسیدصاحب کی بیعت کرتے ہوئے عہد کیاتھا کہ آپ کو چھوڑ کر کہیں نہ جاؤں گا۔شید و کے میدان میں اس صادق العہد نے اپنے پیان پرخونِ شہادت سے مہر لگادی۔''منظورہ'' کا بیان ہے کہ رستمانہ شجاعت سے کام لیتے ہوئے بہت سے دشمنوں کوموت کے گھاٹ اتارا۔ اپنی جماعت کے ساتھ جو استقامت میں سیسہ پلائی ہوئی دیوار کی حیثیت رکھتی تھی، قدم جماکر دادِ شجاعت دی اور جنت لے کر جان جاں آفریں کے حوالے کی۔

پرانا شیدوموجود ہ آبادی ہے تھوڑے فاصلے پر دریا کے عین کنارے واقع تھا۔ طغیانی میں وہ منہدم ہوگیا،اب صرف کھنڈر ہاتی ہیں۔وہیں شنرادہ گدڑی کی قبر ہے۔ شیدو کے تمام لوگ اس غیور عابد کے نام سے داقف ہیں اور اسے خاص احترام کی نظروں سے دیکھتے ہیں۔

سيدانورشاه

سیدانورشاہ امرتسر کے سادات کرام میں سے تھے۔ سناجا تا ہے کہ رنجیت سکھے در بار میں بھی انہیں احترام کا درجہ خاص حاصل تھا۔ سکھ امراء اور عوام بھی ان کی بہت عزیت کرتے تھے۔ سکھوں کے کسی ذہبی پیشوا کا ایک عزیز اُن کے پاس آتا جا تا تھا۔ اس نے مسلمان ہونے کی خواہش ظاہر کی۔ سیدانورشاہ نے بہتکلف اسے کلمہ پڑھایا۔ اس وجہ سے تمام سکھ ان کے دخمن بن گئے۔ نومسلم کے رشتہ داروں نے ہنگامہ بپاکردیا۔ معمورة السعداء سے معلوم ہوتا ہے کہ کسی نے سید انور شاہ کی ناک کا ن دی۔ دمنظورة السعداء سے معلوم ہوتا ہے کہ کسی نے سید انور شاہ کی ناک کا ن دی۔ دمنظورة سید سکھورة المعداء سے معلوم ہوتا ہے کہ کسی نے سید انور شاہ کی تاک کا ن دی۔ واقعے کے بعد سکھ کومت نے آئیس گھر ہی میں نظر بند کردیا اور وہ اس مصیبت سے نجات یا کر سکھ کومت کے خلاف جہاد آرائی کی تدبیر ہی سوچنے گئے۔

بلاوا

سید صاحب تکیشریفہ میں جہاد کی تیاریاں کررہے تھے تو ہندوستان کے گوشے
گوشے سے ان تمام افراد کے متعلق اطلاعیں حاصل کرنے کا انتظام کررکھا تھا، جن سے
جہاد میں امداد کی امید ہوسکتی تھی۔ اس سلسلے میں سیدانورشاہ کے حالات بھی معلوم ہوگئے۔
قرینہ یہ ہے کہ سید صاحب نے ان سے ربط وعلاقہ بھی پیدا کرلیا تھا۔ چنانچ دراہ ہجرت
میں قدم رکھا تو فتح پورسے حاجی یوسف کشمیری کو امر تسرروانہ فرمادیا کہ سیدانورشاہ کو ہرمکن
تد ہیرسے ساتھ لے کرسندھ بینے جائے۔

أبجرت

حاجی یوسف امرتسر پنجاتو سیدانورشاہ کے نکلنے کا ایک خداسان سامان ہوگیا۔ جوسکھ افسران کی گرانی پر ہامور تھا، وہ کسی بات پر ناراض ہوکر نگرانی کا کام چھوڑ بیٹھا۔ دوسرا آدمی اس کی جگہ مقرر نہ ہوا تھا۔ سید انور شاہ نے فرصت کو غنیمت سمجھا۔ اپنے پندرہ خادموں کو تین گھوڑ ہے اور بار برداری کے ادن دے کرالگ الگ خفیہ خفیہ بھیج دیا۔ پھر خود چپ چاپ نکلے اور بہاول پور کی سرحد میں داخل ہو گئے، وہاں ان کی ملاقات سید دین محمد قد معاری سے ہوئی، جنہیں سیدصا حب نے جہاد کا دعوت نامہ دیکر نواب بہاول فال کے پاس بھیجا تھا۔ سیدصا حب نے پہلے شکار پور میں ان کا انتظار کیا۔ پھرا کبرخال کو دس غازیوں کے ساتھ سیدانورشاہ کے استقبال کے لئے شکار پور میں چھوڑ ااور خود جاگن دس غازیوں کے ساتھ سیدانورشاہ کے استقبال کے لئے شکار پور میں چھوڑ ااور خود جاگن دین غازیوں کے ساتھ سیدانورشاہ صا حب سے ملحق ہوئے۔ مجمد یوسف راستے میں کسی بات پر خوار شاہ ہوگیا تھا۔

جنگ بازار

سید انور شاہ بڑے عقیل ونہیم اور تجربہ کار محف تھے۔اس لئے مشوروں میں برابر شریک رہے ہوں۔ گئی سید شریک رہے ہوں گے۔ کیکن ان کی سرگرمیوں کی تفصیلات کہیں نہیں ملتیں۔ جن دنوں سید صاحب بنٹر میں تھم رے ہوئے تھے، ملکی لوگوں نے بطور خود حضر و پر شبخون مارا تھا۔وہ مال غنیمت لے کرواپس آرہے تھے کہ سکھوں نے حملہ کردیا۔ان کے بچاؤ کیلئے سیدصاحب کو بھی نکلنا پڑا۔ چنا نچہ آپ نے سیدانور شاہ کو بچاس ساٹھ آ دمیوں کے ساتھ دریا کے پار بھیجے دیا تا کہ جملہ آوروں کا مقابلہ کریں۔

سیدانورشاہ نے کشتی کے ذریعے ہے دریاعبور کیااور مناسب مقام پرمور ہے بناکر لڑنے گئے۔ آخر سکھ بھاگ نکلے۔ ہنڈ کی طرف سے کشتیاں بھیج دی تئیں۔ تمام لوگ ان میں سوار ہوکر آگئے۔ سید انور شاہ صبح کے دفت مکتے تھے۔ تمام ساتھیوں کو اپنے سامنے کشتیوں میں سوار کراکے سب کے بعد خود سوار ہوئے اور مغرب کے دفت ہنڈ پہنچے۔

مراجعت

اس واقعے کے بعد سیدانور شاہ کاذکر کہیں نہیں آیا۔ معلوم ہوتا ہے کہ وہ واپس آگئے سے۔اس کے لئے انہوں نے کیا تدبیر کی ،اس کا پچھ علم نہیں۔سید صاحب کی شہادت کے بعد جو غازی مسافروں کے بھیس میں واپس آئے،ان میں سے بعض کے بیانات میں مرقوم ہے کہ امرتسر میں سیدانور شاہ نے ان کی تواضع میں کوئی دقیقہ سعی اٹھاندر کھا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ باطمینان اپنے وطن میں مقیم ہوگئے تھے۔

أكبرخال

رائے بریلی وطن، فنون جنگ میں مشاق تھا۔ خبر میں عازیوں سے قواعد اور نشانہ
بازی کی مش کرانے کا تھم جاری ہوا تھا تو اکبر خال ان لوگوں میں شریک تھا جو مختلف فنونِ
جنگ سکھانے کے ذمہ دار مخبر اے گئے تھے۔ بلیح آباد کے ایک عازی رسول خال نے
اپنے نوعر جینیج کو تربیت کی غرض سے اکبر خال کے حوالے کردیا تھا۔ وہال مختلف لوگ سید
صاحب کیلئے مٹھا کیاں بطور نذرانہ لاتے۔ بیچ نے ان میں سے دولڈ واجازت کے بغیر
ما الے۔ اکبر خال نے تادیبا ایک تھیٹر مارا۔ رسول خال نے یہ واقعہ سنا تو محاجوث میں
آئی اور اکبر خال کو بہت تخت ست کہا۔ سید صاحب کو یہ حالات معلوم ہوئے تو رسول
خال کو بلا کر خاطر داری سے پاس بٹھایا، مزاج ہو چھا، پھر شفقت بھرے انداز میں کہا ہم
خال کو بلا کر خاطر داری سے پاس بٹھایا، مزاج ہو چھا، پھر شفقت بھرے انداز میں کہا ہم
خال کو بلا کر خاطر داری نے آپ کے بینیج کو وھول ماری ہوآپ کو اس کا بڑا رہے ہوا۔ یہ
بات آپ کو نہ چا ہے۔ انہوں نے آپ کے بینیج کو دھول ماری ہوآپ کو اس کا بڑا رہے ہوا۔ یہ
بات آپ کو نہ چا ہے۔ انہوں نے اپنالڑ کا سمجھ کر تعلیما ماراہ وگا۔

رسول خاں کا غصہ تو پہلے ہی فروہو چکا تھا۔ سیدصاحب کا ارشادین کرع ِنْ کیا کہ

ا كبرخال مير ، بعائى بي، بعينيجكو ماراتو خوب كيا_

أكوژه اور بازار

نئ دستار د ہے دی۔

اکبرخال اکوڑہ کی جنگ میں شریک تھا اور اس میں تکوارکا ایک زخم کھایا تھا، ای نے کابدین کو میہ کہ کر جنگ سے دوکا تھا کہ آخری فیصلہ ای میدان میں نہ ہوگا۔ اب واپس چلو انشاہ اللہ پھرلایں گے۔ سید صاحب نے اسے ایک دستار عنایت کر دکھی تھی۔ جب سید صاحب ہنڈ کے قریب موضع بازار میں تھہرے ہوئے تھے اور ملکی لوگوں نے حضر و پر چھایا مارا تھا تو سکھوں کے جوابی حملے نے ملکیوں کے لئے شدید خطرہ بیدا کردیا تھا۔ اس موقع پر سیدصاحب نے اپنے عازیوں کو دفاع کا تھی ویا۔ بعض لوگ کشتیوں پر سوار ہوکر دریا عبور کرے دو سرے کنارے پر بینی محکے تاکہ سکھوں سے دست بدست جنگ کریں۔ عبور کرے دو سرے کنارے پر بینی محکے تاکہ سکھوں سے دست بدست جنگ کریں۔ ایس خوال میں ایک ملکی بہادر مشکیزہ بغل میں ایک ملکی بہادر مشکیزہ بغل میں دباکر دریا میں کو دیڑا۔ اکبرخال نے اس کی شان سبقت د کھے کر سید صاحب کی عطاکی دباکر دریا میں کو دیڑا۔ اکبرخال نے اس کی شان سبقت د کھے کر سید صاحب کی عطاکی ہوئی دستاراس عازی کے سر پر دکھ دی اور کہا کہ آج اس دستار کا مستحق آپ سے بوھ کر

مجاہدین کی جماعتیں چھوٹی چھوٹی کلڑیوں میں تقسیم تھیں۔ان کلڑیوں کو اصطلاح میں بیلہ کہتے تھے اور ان کے افسر بہیلہ دار کہلاتے تھے۔ا کبرخاں بھی بہیلہ دار تھا۔ بعد کے پورے حالات معلوم نہ ہو سکے صرف اتنا معلوم ہوسکا کہ قیامِ خمر کے زمانے میں جاہدین نے فرجی مثق شروع کی تھی تو چھاتی بندوتوں اور قرابینوں والے جاہدین کی تگرانی ورتعلیم اکبرخاں کے ذیے تھی۔

کوئی نہیں اور اس کا پٹکالے کرایئے سر پر لپیٹ لیا۔سیدصاحب نے بعد میں اکبرخاں کو

پجيسوال باب:

الله بخش، امير الله، كالے خال

الله بخش مورائين

سید صاحب نے جب پہلی مرتبہ کان پور کا دورہ کیا تو چار سجیلے اور کڑیل جوان بیعت کی غرض سے اتکی خدمت میں حاضر ہوئے۔ آپ نے دیکھتے ہی فرمایا، ایسے جوان تو ہمارے کام کے ہیں، یہ پیرزادے کیا کام دیں ہے؟ ان میں سے ایک کا نام اللہ بخش خاں تھا، دوسرے کاشمشیر خال، تیسرے کا شیخ رمضان، چو تصحام ہربان خال - یہ چاروں آپس میں گہرے دوست تھے۔ اکٹھے مرید ہوئے۔ پھر سید صاحب کا ساتھ نہ چھوڑا۔

سیرصاحب کی بیعت

سید صاحب مجاہدین کی بہلی جماعت کو لے کر نکلے تو چاروں ساتھ تھے۔ مہر بان خاں سے سید صاحب نے فرمایا تھا کہ آپ سے اللہ تعالی ایک کام لے گا، آپ کے ان بھائیوں سے دوسرا کام لے گا۔ چنا نچہ مہر بان خال کوسید صاحب نے اپنی از واج کے ساتھ پہرے داری کے لئے مقرر کر دیا۔ ان کا وقت سندھ میں بسر ہوا۔ وہاں سے از واج ٹو تک آئیں تو وہ بھی ساتھ آئے۔ ۲۲ کا اھ تک جب'' وقائع احمدی'' کی تر تیب جاری تھی، وہ زندہ تھے۔

ساقة الحيش <u>ڪ</u>امير

سیدصاحب نے جب مجاہدین کومخلف جماعتوں میں تقلیم کیاتو ہر جماعت کے لئے

ایک ایک امیر مقرر فرمادیا۔ سافتہ الحیش کے امیر اللہ بخش مقرر ہوئے۔ بیل کے سامان کی گاڑیوں اور چھکڑوں کے سامات کی گاڑیوں اور چھکڑوں کے ساتھ چلتے تھے۔ بمیشہ سب سے پہلے روانہ ہوتے اور سب سے آخر میں منزل پر پہنچتے۔ ان کے دوست لیمن شمشیر خاں اور چھنح رمضان بھی انہیں کی جماعت میں شامل تھے۔

پہلے جنگی جیش کے سالا راعظم

اکوڑہ میں سکموں پرشبخون کا فیصلہ ہوا تو اللہ بخش خاں کوغازیوں کے لشکر کا سالار مقرر فرمایا۔ یہ نہایت درجہ قابل رشک شرف تھا جواس مجاہد کے جھے میں آیا کہ اس سرز مین میں اسلام کی فرمانروائی بحال کرنے کے لئے مجاہدات کا جوسلسلہ شروع ہوا، اس میں پہلے معرکے کی سرعسکری کا تاج اس کے سر پررکھا گیا۔

سیدصاحب نے فیصلہ فرماتے ہی اللہ بخش خال کوتھم دے دیا کہ آپ دریا کے مغربی
کنارے پر چلے جائیں۔ غازی چھوٹے چھوٹے گروہوں میں آپ کے پاس پہنچ جائیں
گے۔عشاء کے وقت تک تمام مجاہدین پہنچ گئے تو اللہ بخش خال پھر چندر فیقوں کے ساتھ
کشتی میں سوار ہوکر سیدصاحب سے رفعتی ملاقات کے لئے گئے۔ آپ نے معمول کے مطابق بر ہند سر ہوکرانتہائی بجز والحاح سے دعاء کی۔

شهادت

شبخون غیرمعمولی طور پرکامیاب رہا۔ اللہ بخش خاں آہت آہت پیچھے ہٹنے گئے تاکہ ساتھیوں کو لے کرنشکر گاہ سے نکل جا کیں۔ راستے میں شخ بھدانی اور علی حسن خاں ایک جگہ کھڑے بندوقیں چلار ہے تھے۔ انہوں نے جوش تہور میں اللہ بخش خاں کو مخاطب کر کے کہا کہ امیر الموشین نے آپ کو جمارا سردار بنا کر بھیجا ہے۔ دشمن کے مقابلے میں پیچھے کہا کہ امیر الموشین نے آپ کو جمارا سردار بنا کر بھیجا ہے۔ دشمن کے مقابلے میں چیھے کیوں ہٹتے جارہے ہیں؟ یہ آواز ہ جنگی مصلحوں کے بھی خلاف تھا اور اسے شبخون کے

مفہوم سے بھی کوئی مناسبت نہتھی۔اللہ بخش فال کو گوارا نہ ہوا کہ جس جیش کا سردار بنا کر انہیں بھیجا گیا تھا،اس کے چھوٹے سے حصے کو بھی چیچے چھوڑ کرنگل جا تیں۔ چنانچہ انہوں نے مراجعت کا خیال چھوڑ کر باقاعدہ جنگ شروع کردی اور اپنی جماعت سے پچاس ساٹھ گنالشکر کو مارتے مارتے بہت پیچھے ہٹا دیا۔اس حالت میں خود بھی شہید ہو گئے اور ان کے دوجگری دوست شمشیرخال اور شخ رمضان بھی ضلعت شہادت سے سرفراز ہوئے۔

بيرخال

الله بخش خال کی شہادت کے بعدان کے بیش کے سرعکر پیرخال بنائے گئے جواللہ بخش خال کے بھائی تھے۔ یہ برابرسید صاحب کے ساتھ رہے اور نہایت اہم خدمات انجام دیں۔ اہل سمہ کی سازش کے وقت یہ سیل میں مقیم تھے۔ تھم پہنچنے پر کھبل سے بنجتار روانہ ہوئے تھوڑی ہی دیر ہیں بیدرد سازشیوں نے ان کا محاصرہ کرلیا اور مجد کو آگ دیا دو ان کا محاصرہ کرلیا اور مجد کو آگ دیا دیا سے آگ دیا دو ان پر ہر طرف سے تیروں ، نیز وں اور تکواروں کی ہارش ہونے گئی۔ ان میں سے دو پہلے اس مکان میں چلے تیروں ، نیز وں اور تکواروں کی ہارش ہونے گئی۔ ان میں سے دو پہلے اس مکان میں چلے میں بیرخاں بھی جھے ، جس میں غلے کا گودام تھا۔ ہاتی میں سے آٹھ بچے اور سب شہید ہوگئے۔ انہی میں بیرخاں بھی تھے۔ راویوں نے لکھا ہے کہ وہ سپہرکری کے فن میں بڑے ہی چست و حالاک تھے۔

ن امیرالله

شخ صاحب تھانہ بھون کے باشندے تھے اور بڑے شجاع ودلیر۔ پہلی جماعت میں شریک ہوکر سرحد پنچے۔ پڑھے لکھے نہ تھے الیکن ضرورت کے وقت وعظ بھی کر لیتے تھے۔ جب مولوی محبوب علی صاحب دہلوی کی وجہ ہے جماعت میں افترات کا فتنہ پیدا ہوا اور مولوی صاحب نے مختلف غازیوں سے یہ کہنا شروع کیا کہ گھروا پس چلوہ تم پرا قرباکے

بھی حقوق ہیں، یہاں رہ کران کے اتلاف کا دبال اپنی گردن پر ندلو، تو پیٹنے امیر اللہ تھا نوی نے سید صاحب سے درخواست کی کہ میں بھی اس موقع پر ایک تقریر کرنا چاہتا ہوں ۔سید صاحب نے اجازت دیدی ۔ انہوں نے منبر پر کھڑ ہے ہوکر فر مایا:

"دمسلمانو! بیمقام جہاد ہے۔ جومسلمان اعلاء کلمۃ الحق کی نیت ہے اس طرف قدم افغائے اس کا ہرقدم جنت کی طرف ہوگا، جو یہاں نے جائے اس کا ہرقدم جہنم کی جانب ہوگا۔ مولوی محبوب علی صاحب اس طرف آئے تورو بہ جنت تھے، اب سنتا ہوں وہ واپس جارہے ہیں۔ جو ایکے ساتھ جائے گا وہ روبددوز خے ہوگا۔ اس دعوے کی دلیلیں آپ مولوی صاحبان سے س لیں'۔

بيثي كوخط

ایک مرتبہ فرمایا کہ بیں اپنے بیٹے کو خط لکھنا چاہتا ہوں ہیکن منٹی ایسا ہونا چاہیے جو میرا مدعا موز وں الفاظ میں پیش کر سکے اور عبارت آ رائی نہ کرے۔ چنا نچے مولوی جعفر علی نفتوی نے خط لکھا۔ مضمون بیتھا کہ فلاں باغ بی ڈالواس کی قیمت میں ہے آ دھی رقم اپنی والدہ کے حوالے کردوتا کہ اسے کھانے ، پینے کی تکلیف نہ ہو۔ باقی رقم کیکر یہاں آ جاؤ۔ اگر تھم کی تعمیل میں تسائل ہوا تو لشکر اسلام کی آ مد کے وقت تم سے خت مواخذہ ہوگا: آ جاؤ۔ اگر تھم کی تعمیل میں تسائل ہوا تو لشکر اسلام بحول اللہ وقونہ آنچے سزائے ایس امر وقت رسیدن لشکر اسلام بحول اللہ وقونہ آنچے سزائے ایس تحلف برائے شاخوا ہد بود در آس ہرگز ہرگز فروگز اشت ورعایت نہ خواہد میں تہر است درتا ہے۔ انہوں میں تباعل ہوم جزاعلاہ واست۔ "

ترجمہ: اس تھم کی خلاف درزی ہوئی تو نشکر اسلام کے پہنچنے پراس کی جوسز اہوگی، وہ نہ چھوڑی جائے گی، نہاس میں کمی کی جائے گی، قیامت کے دن جوسز اسلے گی وہ اس کے علاوہ ہے۔

ماياراور بالأكوث

تمام جنگوں میں شریب رہے، لیکن اتفاق کی بات ہے کہ کی بھی معرے میں انہیں کوئی گزندنہ پنچا، اس لئے بھیشہ کہتے رہتے تھے: یہاں آئے تو کیا حاصل، ابھی تک تکسیر بھی نہیں پھوٹی۔ جنگ مایار میں ان کی ران اور وایاں باز و بہت بری طرح زخی ہوئے۔ فتح کے بعد تورو پنچ کر ان کی مرہم پئی ہونے گئی تو نور بخش جراح نے مزاحا کہا: شخ صاحب آپ بھیشہ کہتے رہتے تھے کہ ابھی تک تکسیر بھی نہیں پھوٹی، بتا ہے اب پھوٹی کہ نہیں؟ فرمایا: اللہ تعالی قبول کرے۔ شخ صاحب بالاکوٹ کی جنگ میں شہید ہوئے۔ شہادت کی کیفیت معلوم نہ ہوگی۔

کالےخال شس آبادی

یہ مس آباد مئو کے باشدے اور نہایت مخلص عازی سے۔ متعدد لڑائیوں میں شریک رہے۔ چھتر ہائی کے ماصرے کے دوران میں ایک مرتبہ عازیوں نے قلعے پرحملہ کیا اور سیر ھیاں لگا کر دیوار پر چڑھنے گئے تو اتفاق سے جس سیرھی کے قریب کالے خال سیے ، دہ چھوٹی نکلی اوراس پر جوعازی سب سے پہلے چڑھا تھا، اس کا قد بھی جھوٹا تھا، لہذا اس کا ہاتھ دیوار کی منڈ برتک نہ بھی سیا اور حملہ ناکام رہا۔ کالے خال لبے قد کے آدی سے انہیں خیال ہوا کہ اگر میں پہلے چڑھتا تو ہاتھ بڑھا کر منڈ بریکڑ لیتا۔ میرے چڑھ جانے انہیں خیال ہوا کہ اگر میں پہلے چڑھتا تو ہاتھ بڑھا کر منڈ بریکڑ لیتا۔ میرے چڑھ جانے کے بعد دوسرے عازیوں کے لئے بھی چڑھنے کی صورت نکل آتی اور پورش ناکام ماتھیوں نے بہت مجھایا، سیدصاحب نے بھی تھیجت فرمائی، لیکن کالے خال پر پچھا ٹر نہ ساتھیوں نے بہت مجھایا، سیدصاحب نے بھی تھیجت فرمائی، لیکن کالے خال پر پچھا ٹر نہ ہوا۔ لا ہور پنچ تو ان کا ایک دیر پیند دوست تل گیا۔ اس نے حالات میں کہا کہ ہم لوگ تو میں حاصوب کی خدمت میں جنچنے کے لئے دعا کیں ما تگ درہے ہیں، تم بڑے کم نصیب ہو

کہ آئیں چھوڑ کر چلے آئے۔ کالے خال پر اس کا ایسااٹر ہوا کہ ایک یا بوخرید لیا اور وہیں ہے لوٹ گئے۔

شهادت

سیدصاحب امب سے پنجتار آگئے تھے کہ کا لے خاں دوبارہ پنیچ۔ جاتے ہی عرض کیا یا بومیر کے کسی بھائی کو دے دیجئے ، کیوں کہ میں اس کے لئے گھاس وغیرہ کے انتظام کی ذمہ داری نہیں اٹھاسکتا اور ساراوقت آپ ہی کی خدمت میں گزارنا چاہتا ہوں۔سید صاحب نے فرمایا: مضا نقہ نہیں۔ جنگ ہوئی تو آپ کو گھوڑ ادوں گا۔

مایار کی جنگ میں سیدصاحب نے عبداللہ والیا کا گھوڑا کا لے خال کود ہے دیا۔ خان نے رکاب میں پاؤل رکھاتو کہا، خرورت کے وقت اپنا سردشمن کی توپ کے منہ میں دے دول گا۔ جنگ کے دن غازی تورو سے نکل کر چھلیانی کوعور کر کے مایار کی طرف بر ھے تو کا لیے خال گھوڑ ہے پر سوار سب ہے آگے تھے۔ درانی توپوں کے گولے ہے بہ ہے آرہے تھے۔ درانی توپوں کے گولے ہے بہ پ آرہ ہے خال قہ میدانی تھا۔ چھنے یا مور چہ بنانے کی کوئی صورت نہمی ۔اس اثناء میں ایک گولہ آیا اور بہا درغازی کے پہلو ایک گولہ آیا اور بہا درغازی کے پہلو میں لگا۔ ان کے مہلک زخم آیا۔ سید صاحب نے فرمایا کہ انہیں اٹھا کر مایار گاؤں میں بہنچادیا جائے۔ چنانچہ تیار دارانہیں مجد کے جمرے میں لے گئے۔

گولہ لگنے کے وقت ہی ہے ان پرنزع کی کیفیت طاری تھی۔ چپ چاپ لیٹے تھے

ہولتے تو صرف پو چھتے: بھا ئیوالڑائی کا کیا حال ہے؟ درانیوں کے پہلے اور دوسرے حملے

کے دوران میں انہیں بتایا گیا کہ جنگ جاری ہے اور فریقین ایک دوسرے سے تعظم گھا

ہیں۔ وہ س کرآ ہستہ آ ہستہ اللہ اللہ کہتے رہے۔ جب درانی شکست کھا کرمیدان چھوڑ گئے

تو تیمار داروں نے بتایا، بھائی کا لے خاں! اللہ تعالیٰ نے حضرت کو فتحیاب کیا۔ بشارت

سنتے ہی کا لے خال نے کہا: الحمد لللہ ساتھ ہی دم نکل گیا۔ کتنی قابل رشک زندگی تھی، جس میں آخری سانس تک زبان پر خدا کا ذکر تھا۔ دل میں اس کے سواکوئی آرز و نہتھی کہ راوحق کے خازی فتح یا کیں۔ کتنی قابل رشک موت تھی کہ دم رضائے خدامیں پوراہوا۔

سيرصاحب كى شانِ تربيت

راویوں نے بیان کیا ہے کہ شروع میں شوڑی منڈاتے تھے۔سیدصاحب نے بھی نہ ڈوکا اور عادت شریفہ یکی تھی کہ بار بارٹو کئے نہ تھے۔ جزئیات میں حسنِ تربیت سے لوگوں کو پابند شریعت بناتے تھے۔ایک روز کا لے خال نے شوڑی منڈ الی۔اتفاق سے سیدصاحب آگئے اور شعوڑی دست مبارک سے پکڑ کرفر مایا: خان بھائی! آپی شعوڑی کیا چکنی میدصاحب آگئے اور شعوڑی دست مبارک سے پکڑ کرفر مایا: خان بھائی! آپی شعوری کیا چکنی ہے۔کالے خال چپ رہے۔معمول کے مطابق آٹھویں دن جام خط بنانے کیلئے آیا تو اسے لوٹادیا کہ میری شعوری کو حضرت کا ہاتھ لگ چکا ہے، اب تیرا ہاتھ نہ لگنا جا ہے۔

چھبیسواں باب:

حسن علی ،احمه بیگ ،نور دادخان

يشخ حسنعلى كأخاندان

شخ حسن علی کا وطن کیا تھا، جو جہان آباد (بوپی) سے تین کوس پر ہے۔ یہ پڑھے
لکھے نہ تھے، کین طبیعت میں دین داری کا خاص جو ہر درخشاں تھا۔ نواب وزیرالدولہ نے
لکھا ہے کہ ایک مرتبہ کسی بے عمل عالم سے نماز پنج گانہ کی کیفیت سی اور اس کے پابند
ہوگئے۔ بعد از ال اس عالم کو بھی پابند نماز بنادیا۔ شرک و بدعات کے ردمیں بہت سرگرم
تھے۔ لوگوں نے ان کی سرگری کو کیفیت جنون پر محمول کیا اور زنجیریں پہنادیں۔ سید
صاحب ایک مرتبہ دورہ کرتے ہوئے ان کے ہاں پنچے تو ان کی حالت کا شہرہ من کرد کیمنے
کے لئے گئے۔ شیخ حسن علی نے بیعت کی اور روبدعات میں شمشیر بر ہند بن گئے۔

حج اور ہجرت

سیدصا حب ج کے سفر پر نکلے تو شخ حسن ان کے استقبال کے لئے معنہ بینج گئے اور اپنے ساتھ گاؤں لے گئے۔ اس مقام پرسید صاحب تین روز تفہرے رہے۔ اس اثناء میں مہمان داری کا پورا انتظام شخ حسن علی نے کیا۔ پھر اپنے پانچ بھائیوں اور کنے کی مستورات کو لے کر جج کیلئے ساتھ ہوگئے۔ بھائیوں کے نام یہ ہیں: شخ عبدالعزیز، شخ عبدالعزیز، شخ عبدالحرین، شخ عبدالحرین، شخ عبدالحمداور حاجی پیرمحمد۔ ایک بینیج کا ذکر آتا ہے، جس کا عبدالقادر تھا۔ یہ معلوم نہ ہوسکا کہ دہ کس کے فرزند تھے۔ شخ صاحب کی ایک بینی تھی جو نام عبدالقادر تھا۔ یہ معلوم نہ ہوسکا کہ دہ کس کے فرزند تھے۔ شخ صاحب کی ایک بینی تھی جو

سفر ج میں بہ مقام میر زاپور بہ عارضہ ہیف فوت ہوئی۔ تج سے واپسی کے بعد سید صاحب ہی کے ساتھ ہی رہے۔ ساتھ ہی ہجرت کر کے سرحد گئے۔ سید صاحب ان سے عمو ما فائل انتظامات کا کام لیتے تھے۔ دو بھائی حاجی بیر محمد اور شخ عبد الصمد سید صاحب کے اہل خانہ کے ساتھ سندھ میں رہے اور وہیں فوت ہوئے ، باقی سید صاحب کے ساتھ جہاد میں شریک رہے۔ شخ حسن علی او تمان زئی پر شبخون میں شریک تھے۔ رات کے وقت راستہ بھول جانے کے باعث مجابدین کو سخت تکلیفوں سے سابقہ پڑا تھا۔ پانی نہ ملا اور بعض غازی حددرجہ پر بینان ہوگئے۔ بڑی مشکل سے پانی پر بہنچے۔ اس سفر میں شخ حسن علی کا جہ دیر تک نہ ملا اور رسید صاحب نے سوار تلاش کیلئے جمیعے۔ اس طرح میہ ملے اور بخیر وعافیت لئکر میں واپس آئے۔

سازش کی خبریں

جس زمانے میں سلطان محمہ خال درانی بعض دوسرے خوانین کے ساتھ مجاہدین کے قبل کی سازش میں مصروف تھا، شخ حسن علی اوران کا پورا خاندان سیدصاحب کے حکم سے دکھاڑا میں مقیم تھاجو پنجتار کے قریب ایک پہاڑی مقام ہے۔ وہاں سیدصاحب کے شہید بھانج سیدا حمیلی کے صاحبز او سیدموی عرف حسن تنی بیار تھے اور سیدصاحب کی اہلیہ بھی وہیں مقیم تھیں۔ سازش کی ابتدائی خبر شیخ حسن علی کو دکھاڑا کی محبد کے امام سید معلوم ہوئی تھی اور شیخ نے اپنے بھائی کے ہاتھ یہ پیغام بھیج ویا تھا، لیکن سید صاحب نے فرمایا کہ بیخبر حمعلوم نہیں ہوتی۔ شیخ حسن علی نے سیداصغر کے اصرار پر صاحب نے فرمایا کہ بیخبر حمیح معلوم نہیں ہوتی۔ شیخ حسن علی نے سیداصغر کے اصرار پر دوبارہ پیغام بھیجا، لیکن سید صاحب نے فرمایا کہ بیخبر سید صاحب کے اس میں ہوتی۔ شیخ حسن علی نے سیداصغر کے اصرار پر دوبارہ پیغام بھیجا، لیکن سید صاحب کو صحت کا لیقین نہ آیا۔

سیدصاحب راج دواری سے پچوں گئے توشیخ حسن علی اوران کے خاندان کو بعض دوسرے اصحاب کے ساتھ فی فی صاحبہ اور دیگر خوا تین کی حفاظت کیلئے جیموڑ دیا تھا۔ واقعۂ بالاکوٹ کے بعدشیخ حسن علی نے ہندوستان واپس آنے سے انکار کردیا اور کہا کہ ہم تو اپنے اللہ سے عہد کر چکے ہیں، اپنی عمر جہاد میں صرف کریں گے۔ کابل وقندھار اور سندھ دعرب میں امام کی تلاش کریں گے جب ملے گاتو فرض بجالا کیں گے۔

ٹو نک میں سکونت

چندسال انہوں نے سرحد میں گزار ہے، پھرٹونک آرہے۔ دو بھائی بھی ساتھ تھے۔
نواب وزیرالدولہ نے معقول وظیفہ مقرر کرنا چاہا، بیداضی نہ ہوئے، اپنی اقل ضروریات کا
حساب لگایا اور فرمایا کہ بیتھوڑی ہی قم مل جائے تو گزارہ ہوتارہے گا۔علماء سے پوچھ کر
رسول النّد صلی اللّٰہ علیہ وسلم کے جمرے کے مطابق آیک مکان بنوالیا تھا، اس پرقانع رہے۔
اس میں ایک بانس باہر نکلا ہوا تھا۔ اتفاق سے ایک مرتبہ وہ بانس ان کی آ تکھ میں تھس گیا
اور ڈھیلے کو گزند پہنچا۔ لوگوں نے علاج کے لئے کہا، بولے جس نے بیرحال کیا ہے وہی
اچھا بھی کردے گا۔ چنا نچے علاج کے بغیر ہی ان کی آ تکھ بالکل اچھی ہوگئی۔

اخلاق وعادات

نواب وزیرالدولہ سے ملاقات ہوتی تو ہمیشہ کہتے ، وزیر محد! (یویوں) میں عدل کیا کرو۔ایک مرتبہ آپ کے بھائی نے کہا کہ اگریزوں نے ہراس شخص کی جا کداد بحال کرنے کا اعلان کیا ہے، جو ثبوت پیش کرسکے۔ ہمارے پاس ثبوت کے کاغذات ہیں، کیوں بنہ اُنہیں پیش کر کے اپنی زمینیں لے لیں؟ بولے کاغذات میرے پاس لاؤ۔وہ لائے گئے تو انہیں اٹھا کرچو لیج میں ڈال دیا۔ساتھ ہی کہا کہ جن چیز وں کو خدا کے لئے چھوڑا تھا،انہیں اٹھا کرچو لیج میں ڈال دیا۔ساتھ ہی کہا کہ جن چیز وں کو خدا کے لئے چھوڑا تھا،انہیں اب کیالیس۔سالن یا وال پکواتے تو اس میں پانی بہت ڈلواتے تا کہ پڑوسیوں اور ضرورت مندوں کی پچھے خدمت کرسکیس۔ایک مرتبہ کھا نا سامنے آیا تو دیکھا کہ دال ذرا گاڑھی ہے۔ بوچھا: کیا بات ہوئی؟ بیوی نے کہا کہ آپ کیلئے الگ نکال لی سے۔ بولے بیتو چارآ دمیوں کیلئے کافی ہوگئی ہے،ساتھ ہی بہت سایانی اس میں ڈال دیا۔

شان ایثار

جہاد کی نیت سے ہمیشہ اونٹ پالتے تھے۔لوگ اپنے کاموں کیلئے مانگ لے جاتے۔اگر چہ بڑھے لکھے نہ تھے،لیکن شاہ اسلمعیل سے قرآن کا درس من کر بہت کھ یاد کرلیا تھا اور ٹونک میں خود ترجہ قرآن کا درس دیتے تھے۔وہیں وفات پائی۔تاریخ وفات معلوم نہیں۔ بھائی بھی ٹونک ہی میں جاں بحق ہوئے۔ بجرت کیلئے نکلتے وفت گھر کا مال ومتاع فروخت کردیا تھا، جورو پیملاوہ سیدصاحب کی نذر کردیا۔بعدازاں بھی جس مجاہد کوضرورت مندیا تے، اپنی بساط کے مطابق کچھ نفتددے دیتے۔

ميرزااحمربيك

وقائع احمدی میں بتایا گیا ہے کہ میر زااحمد بیک کااصل وطن بڑھانہ تھا،کیکن لڑکپین ہی میں پنجاب چلے آئے تھے،اس لئے'' پنجا بی''مشہور ہوئے۔

مولوی محبوب علی دہلوی کی مراجعت کے باعث ہندوستان سے قافلوں کی آ مدرک گئی تھی تو اخوندعصمت اللہ اخوندگل ، قاضی سید محمد (حسن پوری) اور سید احمد علی رائے سید صاحب تخواہ دار فوج رکھ لیس منٹی خواجہ محمد (حسن پوری) اور سید احمد علی رائے بریلوی نے بہتجو پر سیدصاحب کی خدمت میں پیش کی ۔ آپ نے اخوند ظہور اللہ ساکن جہا تگیرہ سے فرمایا کہ وطن جا کیں اور دواڑ ھائی سوآ دمی بھرتی کرلیں ، چنا نچہ انہوں نے جہا تگیرہ جا کر بھرتی شروع کردی ۔ بعض روایتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ تخواہ فی کس چار رویے تھی اور بعض بیانات میں پانچ رو بے بتائی گئی ہے۔ سید صاحب کی خدمت میں اطلاع بھیجی گئی تو آپ نے فرمایا کہ اخوند صاحب تمام آ دمیوں کو لے کرکاٹ لنگ بہنچ اطلاع بھیجی گئی تو آپ نے فرمایا کہ اخوند صاحب تمام آ دمیوں کو لے کرکاٹ لنگ بہنچ جا کیں ، وہاں ان کے واجبات اداکر دیے جا کیں گئے۔

میاں دین محمد ہندوستان ہے واپس آئے تو انہوں نے اس تجویز ہے اختلاف کرتے ہوئے عرض کیا کہ ابھی کوئی علاقہ قبضے میں نہیں آیا،ان لوگوں کو تخواہ کہاں ہے دی جائیگی؟ نیز جتناروپیاب تک انکاواجب الا داء موچکا ہے، اس میں ہندوستانی مجاہدین سات آٹھ مہینے گزار سکتے تھے۔ چنانچ غورومشورہ کے بعد قرار پایا کہ تخواہ دار فوجیوں کی تخواہ اداکر دی جائے ادرانہیں جواب دیدیا جائے۔سیدصا حب نے شٹی خواجہ محمد اور منٹی محمد کی کو تکم دیدیا کہ پوری تخواہ اداکر کے آدمیوں سے کہوکہ ہماری بات من کرجائیں۔

دعوت وارشاد

وہ لوگ سیدصاحب کی خدمت میں پنچے تو آپ نے ان کے روبروفضائلِ جہاد پر ایک پر ٹما ثیر تقریر فرمائی۔ارشا دہوا کہ جولوگ نوکر ہوکر جہاد کرتے ہیں اور ان میں سے کوئی ماراجا تاہے تو وہ بھی شہید ہوتا ہے مگر کم درجے کا۔خالصاً لوجہ اللہ جہاد کرنے والوں کے درجہ شہادت کوکوئی نہیں پنچتا۔

ہمارے بھائی گھروں کے کھاتے پیتے اور خوش حال تھے۔ کی بیش قرار نوکریاں ترک کر کے آئے بہت قرار نوکریاں ترک کر کے آئے بہت خواگیر، زراعت یا تجارت جھوڑی ۔ اللہ کے واسطے ہمارے ساتھ رہبتے اور فقر و فاقہ سہتے ہیں ۔ خوش و فرم ، راضی بدر ضااور صابر بہ قضا ہیں ۔ ای طور پرآپ صاحبان بھی رہیں ۔ جو بچھ ہمارے لوگ کھا کیں پہنیں آپ بھی کھا کیں پہنیں ۔ جب اللہ تعالی اپنے فضل و کرم ہے ہم کو بچھاور کی طور کی فراغت دے گا، ہم آپ لوگوں کو سوااس کے بچھاور بھی دیں گے اور وہ آپ کونو کری ہے زیادہ پڑے گا، گراس کا اقر ار سوااس کے بچھاور بھی دیں گے اور وہ آپ کونو کری ہے زیادہ پڑے گا، گراس کا اقر ار شہیں کرتے کہ کل کوکوئی دعویٰ کرے۔ (1)

احمر بيك كى سبقت

یہ سنتے ہی میرز ااحمد بیک بولے میں حاضر ہوں ادر آپ کے ساتھ رہوں گا،تمیں چالیس لوگ ادر بھی تیار ہوگئے، باقی چند روز کے بعد اپنے گھروں کو چلے گئے۔ اس

⁽¹⁾ وقائع احدى۔

جماعت کے امیر میرز ااحمد بیک ہی مقرر ہوئے۔

انہی میں سے ایک جماعت نے ہنڈ میں سلطان محمد خاں درانی کا مقابلہ کیا تھا۔ پھر ایک فرنگی نے انہیں بہ عزت باہر نکالنے کے وعدے برلز ائی ختم کرائی۔سلطان محمد خال نے عہد شکنی کی ادرانہیں قید کرلیا۔ چارسدہ میں ایک مکان کونقب لگا کروہ باہر نظے اور آزاد ہوکر سیدصاحب کی خدمت میں پہنچ گئے۔

ميرزا كىشہادت

میر زااحمد بیگ تمام لڑائیوں میں شریک رہے۔ جنگ بالاکوٹ میں وہ اس مقام پر متعین تھے، جہاں سے بالاکوٹ کا پرانا پہاڑی راستہ نکلتا تھا۔ سوئے اتفاق ہے بہکھوں نے بہی راستہ اختیار کیا اور سب سے پہلے میر زااحمد بیگ ہی کی فوج سے پر بھیڑ ہوئی۔ میر زااحمد بڑی مردا گل سے لڑے اور سیدصا حب کو خبر بھی بھیجے دی لیکن کمک پہنچنے سے پیشتر سکھ فوج کے سے لیٹ سے میر زاکی چھوٹی ہی جماعت کو پیچھے ہٹاتے ہٹاتے مٹی کوٹ کے ٹیلے سر پہنچا دیا۔ اس میر زاکے بچھ ساتھی پہلے ناکے پر شہید ہوئے اور غالبًا وہیں فن ہوئے۔ اس مقام کو آج کل شہیدگی کہتے ہیں۔

اس کے بعد میرزا کو بالاکوٹ بلایا گیا۔وہ خود اور ان کے بقیة السیف ساتھیوں میں سے عالبًا اکثر بالاکوٹ ہی میں شہید ہوئے۔میرز اصاحب کی شہادت کی کیفیت یوں بیان کی گئی ہے:

جب میدان جنگ میں بیافواہ شہور ہوئی کہ سیدصاحب کا پہھ پہنیں چان تو میرزاصاحب سر پیٹے ہوئے دیوانہ وار میدان میں پھرنے گے،اس حالت میں خلعت شہادت سے سرفراز ہوئے۔

نوردادخال

بدرائے بریلی کا باشندہ تھااور وہاں کے زمینداروں میں شار ہوتا تھا۔اس کی بیعت

کا واقعہ بڑا عجیب ہے۔ سیدصاحب راجپوتانہ اور دہلی میں کئی سال گزار کروطن پنیچ تو جو عزیز اُن کے جھے کی جائداد سے فائدہ اٹھار ہے تھے، انہوں نے بہ طبیب خاطرا ہے جھے کی زمینیں اور باغات ایک سال کیلئے سیدصاحب کے حوالے کردیے تاکہ ان کاحق ادا ہوجائے۔ سید صاحب نے خربوزے کا شت کرائے۔ انفاق سے لوہائی پور (رائے بریلی) کے ایک بڑھان پیرداد خال کی گائے باڑے میں گھس آئی۔ ٹکہ ہانوں نے گائے کو باڑے میں گھس آئی۔ ٹکہ ہانوں نے گائے کو باڑے میں گھس آئی۔ ٹکہ ہانوں نے گائے کو باڑے سے ہا مک کر باہرنکال دیا اور اتنا ہمگایا کہ اس میں چلنے کی سکت نہ دہی۔

پیردادخال نے بیدواقعہ سناتواس درجہ جوش میں آگیا کہ سیدصاحب کے پاس بھنے کرشکایت کی۔اس کالہجدا تنادرشت تھا کہ نیاز مند بخت غصے میں آگئے، تاہم سیدصاحب پیکر حکم ہے رہے اور فرمایا: نگہبانوں نے بہت براکیا۔ میں انہیں منع کردوں گا۔ بھائی صاحب! خفگی چھوڑ ہے۔گائے کوکوئی نقصان پہنچا تو اس سے بہتر گائے معاوضے میں دوں گا۔

واقعه بيعت

پیردادخان کا غصہ فرونہ ہوا۔ سیدصاحب کے پاس ایک نورس آم اور ایک خربوزہ آیا ہوا تھا۔ آپ نے خربوزہ بیرداد خان کو دینا چاہا، اس نے غصے میں انکارکردیا۔ سید عبدالرحمٰن (خواہرزادہُ سیدصاحب) کہتے ہیں، میں کوئی چیز لانے کیلئے گھر گیا ہوا تھا۔ والیس آیا تو دیکھا کہ غلام رسول خان جوسیدصاحب کے گھوڑوں کی خبر گیری کرتا تھا، رورہا ہے۔ میں نے پوچھا کیا ہوا؟ اس نے ساراقصہ سایا اور بولا کہ مجھے سیرداد خان کی خت کلامی برداشت نہ ہوگئی اور اسے تنبید کرنے کیلئے آگے بڑھا۔ حضرت نے مجھے جھڑک کر چھے ہٹادیا۔

رائے ہر ملی کے ایک صاحب شیخ امان اللہ بھی سیدصاحب کے پاس بیٹھے تھے۔وہ کبیرالسن ہونے کی وجہ سے بہت محتر م مانے جاتے تھے۔انہوں نے بھی نرمی سے بیرداد خاں کو سمجھایا لیکن اس کی روش نہ بدلی۔ خاندان کے آدمیوں میں سے سید علم البدی اور سید مجھیں سید مجھیں اللہ بن یہ حالات و کیھ کر غصے میں آگئے اور بولے کہ ہم پیرداد خال سے سمجھیں گے۔ سید صاحب نے فرمایا: چپ رہے اور پھھ نہ کہیے۔ ایسا نہ ہو کہ پیرداد خال جعداور جماعت چھوڑ دے۔ سید عبدالرحمٰن آئے تو پیرداد خال جاچکا تھا۔ وہ جوش میں بولے کہ پیرداد خال ہے ادبی کر کے سلامت چلا گیا، میں ہوتا تو دیکھا۔ سید صاحب نے فرمایا: تو بچے کیا معلوم؟ ایسا نہ ہو کہ تیری کسی حرکت کے باعث پیرداد خال کا جمعہ اور جماعت فوت ہوجائے۔

سیدصاحب کلیشریفدے روزاندانی ہمشیر کی ملاقات کیلئے شہر جایا کرتے تھے۔
دوسرے دن گئے تو ہمشیر ہے ملنے کے بعد پیرداد خال کے دردازے پر جا کھڑے
ہوئے۔ وہ سید صاحب کو و کیھتے ہی زنانے میں چلا گیا۔ آپ گھوڑے سے اتر کر
دروازے پر بیٹھ گئے اور فر مایا: خال صاحب! آج تو خطا معاف کرائے بغیر دائیں نہ
جاؤں گا۔ اس اثناء میں چند آ دمی جمع ہوگئے۔وہ پیرداد خال کو ملامت کرتے ہوئے سید
صاحب کے پاس لائے۔ آپ نے معافقہ کیا اور کہا: خال صاحب! خطا معاف کرد بیجئے
آپ کی گائے مرجاتی تو اس سے بہتر گائے خدمت میں چیش کردیتا۔

شهادت

پیرداد خال کا معاملہ ختم ہوگیا۔اس کے بھائی نورداد خال نے سیدصاحب کاطلم واکسار اور پیرداد خال کا مجاملہ کا حقیار واکسار اور پیرداد خال کا کبر دیکھا تو اسی وقت سے کہتے ہوئے بھائی سے علیحدگی اختیار کرلی: ایسے فرشتہ سیرت بزرگ ہے تکبر غضب الّٰہی کا موجب ہے۔اسی وقت سید صاحب سے بیعت کرلی۔ جہاد میں برابرساتھ رہا۔ بالاکوٹ کے معرکے میں داوشجاعت دے کرمر جہاشہادت پرفائز ہوا۔

ستائيسوان باب:

فيض على ،امجد على مصطفىٰ ،شاه سيد

ميرفيض على

میرصاحب گورکھپور کے رئیس اعظم ذورالفقارعلی خال کے فرزندار جمند تھے۔ سید
صاحب سے بیعت کے بعداپی زندگی خدمت دین کیلئے وقف کردی۔ آپ کے ساتھ
ہجرت کی۔ چونکہ عالم تھے،اس لئے مثنی خانے سے وابستہ ہوئے۔ دوران جہاد میں اتن
مشقتیں اٹھا کیں کہ وضع وہیئت بدل گئی۔ چنانچ سید جعفر علی نقوی جہاد کیلئے سرحد پہنچ اور
اسب میں میرفیض علی سے ملاقات ہوئی تو سابقہ معرفت کے باوجود آنہیں پہچان نہ سکے۔
ان کی جفائشی کا بیحال تھا کہ اسب میں فصل کا شے کے بعد مجاہدین غلد ڈھونے گئے تو میر
فیض علی نے زیادہ ہو جھ اٹھالیا اور انہیں بڑی تکلیف ہوئی۔ سیدصاحب نے تھم دے دیا
کہ جولوگ مثنی خانے سے وابستہ ہیں وہ غلہ نہ ڈھوئیں۔ میرفیض علی اس کے بعد بھی اپ
کہ جولوگ مثنی خانے سے وابستہ ہیں وہ غلہ نہ ڈھوئیں۔ میرفیض علی اس کے بعد بھی اپ
کہ جولوگ مثنی خانے سے وابستہ ہیں وہ غلہ نہ ڈھوئیں۔ میرفیض علی اس کے بعد بھی اپ

پھولڑہ پر بورش

شوال ۱۲۳۵ھ کے اواخریا ذی قعدہ کے اوائل میں پھولڑہ پر پورٹی کا فیصلہ ہوا تو سید احماعلی رائے بریلوی نشکر کے امیر مقرر ہوئے ۔ انہوں نے چاہا کہ سید جعفر علی نفق ی کو بطور خشی اپنے ساتھ لے جائیں جو نئے نئے سرحد پہنچے تھے۔ میر فیض علی کواس لئے ساتھ نہ لے جانا چا ہے تھے کہ پرانے خشی ہیں اور خط و کتابت کے طور طریقوں سے واقف ہونے کی بنا پر مرکز میں ان کی زیادہ ضرورت ہے۔ بید معاملہ سید صاحب کے پاس پہنچا تو انہوں نے سید جعفر علی نفتو کی اور میر فیض علی دونوں کو بلا کر بوچھا کہ کون لشکر کے ساتھ جانا پہنچاں ہے؟ دونوں نے عرض کیا: جسے تھم ہو۔ سید صاحب نے میر فیض علی سے فر مایا کہ آپ کا یہ بھائی کمی مسافت طے کر کے یہاں پہنچا ہے، تکان ابھی دور نہیں ہوئی۔ بہتر یہ سے کہ آپ طیے جائیں۔ انہوں نے عرض کیا: بدسروچشم۔

اس طرح میر فیض علی سیداحد علی کے ساتھ پھولڑہ گئے اور امیر لشکر سے پیشتر پہنچ کر دامن کوہ سے فاصلے پرمیدان میں ڈیرے ڈال دیے۔سیداحم علی نے پھولڑہ پہنچ کر فرمایا کہ میدان سے اٹھ کر دامن کوہ میں تغیر ناچاہے۔میر فیض علی نے جواب دیا کہ ہم جہال تخیرے ہیں، وہاں مور بچ بنا لئے ہیں۔اب اس جگہ کوچھوڑ نامناسب نہ ہوگا۔

شهادت

الزائی کی مفصل کیفیت''سیداحمدشہید''میں بیان ہوچکی ہے۔اس کا خلاصہ یہ ہے کہ سکھوں نے اچا تک سیح کی نماز کے وقت حملہ کیا۔ وہ سب سوار تھے۔ میدان میں اِدھر اُدھر بھر گئے ۔ مجاہد بن نے مختلف ٹولیوں میں بٹ کر ان کا پیچھا کیا۔ وہ ایک دم اکشے ہو گئے اور مجاہد بن متحدہ حیثیت میں ان کا مقابلہ نہ کر سکے۔ جا بجا شہید ہو گئے ۔ ان میں امیر لشکر اور بہت سے دوسرے اکا بربھی تھے۔ میرفیض علی نے بھی ای جنگ میں شہادت امیر لشکر اور بہت سے دوسرے اکا بربھی تھے۔ میرفیض علی نے بھی ای جنگ میں شہادت پائی اور پھولا ہ ہی کی خاک میں محوآ رام ہیں۔ وہ بہت بڑے دیس کے فرزند تھے اور کوئی دنیوی غرض انہیں سرحد نہ لے گئ تھی ۔ صرف ایک آرزوتھی کہ کلمہ حق بلند ہواوردین کی خدمت انجام یا ہے۔

امجدعكي

یہ غازی پور کے رئیں شخ فرزندعلی کے بیٹے تھے۔شخ صاحب سنر جج سے پیشتر بیعت کر پچکے تھے۔سنر جج میں ان کے مختار میرزامجی الدین بیگ نے غازی پور میں سید صاحب کے قافلے کے لئے قیام وطعام کا انتظام کیا۔ آگے بر ھے تو شخ موصوف کے فرزندمجمدامیر نے مہمال داری کا فرض انجام دیا، جو باڑا نام مقام میں مقیم تھا۔

سیدصاحب ہجرت کیلئے تیار ہوئے تو پیٹے فرزندعلی نقد کے علاوہ وردی کے بہت
سے کپڑے، دوخوب صورت گھوڑے اور چالیس خوب صورت قلمی قرآن لے کرآئے، وہ
ساتھ جانا چاہتے تھے، سیدصاحب نے روک دیا اور فر مایا کہ اپنے فرزند امجد علی کو چاہیں تو
بھیج دیں۔ شیخ نے جگر بند کا ہاتھ پکڑ کر سید صاحب کے حوالے کرتے ہوئے عرض
کیا، خادم عاضرے۔

مجروحيت

جنگ اکوڑہ سے مجاہدین کے جہاد کا آغاز ہوا۔ شخ امجد علی ان خوش نصیبوں میں سے متحے ، جنہیں اس جنگ اکوڑہ سے مجاہدین کے جہاد کا آغاز ہوا۔ شخ امجد علی اور جنگ شید و تک بسلسلة علاج نوشہرہ میں رہے۔ جنگ شید و میں اس لئے شریک ندہو سکے کہ یہ تندرست نہ تھے۔ مجردوسرے زخیوں کے ساتھ نوشہرہ سے جنگ کی (خدو خیل) پہنچ گئے۔ سید صاحب کے دور کہ سوات میں بھی ساتھ نہ تھے۔

زندهشهيد

جب پٹاور کے فیصلے کے لئے سیدصاحب نے خمر کومرکز بنایا تو شیخ ایجد علی بھی ساتھ تھے۔ جنگ اتمان زئی میں شریک ہوئے۔ عالم خاں رئیس اتمان زئی خودسید صاحب کو ساتھ لے گیا تھا۔ فتح قریب تھی تو عالم خال کی نیت میں فقر پیداہو گیا۔ سید صاحب کو وہاں سے واپس ہونا پڑا، تمام مور چول میں پیغام بھنے دیا گیا کہ جاہدین آ ہستہ ہت کردرختوں کے اس جھنڈ میں پینے جا کیں، جو اتمان ذکی سے نصف میل کے فاصلے پر تھا۔ سب واپس چلے گئے، صرف چند بجاہد مور چول میں رہ گئے، جن میں سے شخ امجد علی، حافظ رحیم بخش اللہ آبادی اور ایک ہندور فیق راجا رام (ساکن بیسواڑہ) بطور خاص قابل ذکر ہیں۔ انہیں خبر نہ ال سکی۔ صبح کے وقت یہ سی میں پنچ تو معلوم ہوا کہ مجاہدوں قابل ذکر ہیں۔ انہیں خبر نہ ال سکی۔ صبح کے وقت یہ سی میں پنچ تو معلوم ہوا کہ مجاہدوں میں سے کوئی بھی موجود نہیں، چنانچ یہ لوگ بعد میں سیدصا حب کے پاس پنچ۔ آپ نے میں سے کوئی بھی موجود نہیں، چنانچ یہ لوگ بعد میں سیدصا حب کے پاس پنچ۔ آپ نے شیخ امجد علی کو د کی کے کرمسکراتے ہوئے فرایا: شخ بھائی ہارے' زیرہ شہید'' ہیں۔ جس نے شہید نہ دو یکھا ہو آنہیں و کیھ لے۔ چنانچہ اس وقت سے شیخ امجد علی کو تمام مجاہدین' زندہ شہید'' کہنے گے۔

شهادت

بعد کے مجاہدات میں شریک رہے، اگر چہان کی تفصیل معلوم نہیں۔ بالا کوٹ میں سیدصا حب کے ساتھ شہادت پائی۔

حافظ مصطفيٰ

یہ مولوی اللی بخش کا ندھلوی کے پوتے اور شخ محراحسن کے صاحبز اوے تھے۔ مولوی اللی بخش صاحب نے شاہ عبدالعزیز سے تعلیم پائی تھی۔ آخری عمر میں سیدصاحب سے بیعت کی ، اس بیعت کے اثر ات بیان کرتے ہوئے فرمایا: پہلے ہم جو پچھ کرتے رہے تھے وہ ولیا تھا، اسے آٹا سیدصاحب ہی نے بنایا۔ مولا ناروم کی مثنوی کے تکسلے کے لئے جے عام طور پر ما تواں دفتر کہا جاتا ہے، مولوی صاحب موصوف بہت مشہور ہیں۔

شان استقامت

حافظ مصطفیٰ مولوی احمد الله ناگیوری کی جماعت میں شریک تھے۔ جب سیدصاحب نے امب سے شاہ اسلیمل کو اور چھتر بائی سے مولوی خیر الدین شیر کوئی کو اپنے پاس با لیا تو شاہ صاحب امب کا انظام شخ بلند بخت دیو بندی کے حوالے کر آئے تھے مولوی خیر الدین نے اپنی جگہ حافظ مصطفیٰ کو قلعہ دار بنادیا تھا۔ پایندہ خاں تنولی نے گڑھی کا محاصرہ کرلیا جو چالیس روز جاری رہا، کین وہ گڑھی نہ لے سکا۔ اس دوران میں حافظ محاصرہ کرلیا جو چالیس روز جاری رہا، کین وہ گڑھی نہ لے سکا۔ اس دوران میں حافظ صاحب کونوکری کالا لیے بھی دیا۔ انہوں نے جواب میں کہلا بھیجا:

''فرمال بردار حضرت امیرالمونین جستم بدول تکم آل جناب گڑھی را خالی نہ خواہم کرد۔مابرائے جہاد فی سبیل اللہ آبدہ ایم نہ برائے نوکری کے طالب مال ودولت باشدالبہ توکری بکند، ماطالب راہِ خداایم''(1)

تسوجمه: میں حضرت امیر المونین کا فرماں بردار ہوں۔ان کے حکم کے بغیر گڑھی خالی نہ کروں گا ہم خداکی راہ میں جہاد کیلئے آئے ہیں،نہ کہ نوکری کے لئے۔ جو محض مال ودولت کا طلب گار ہووہ بے شک نوکری کرے گا۔ہم خداکی راہ کے طلب گار ہیں۔

دانش وتدبر

پایندہ خال نے ایک تولی عورت کورشوت دے کرساتھ ملایا۔اس کا شوہر حافظ مصطفیٰ کے ماتحت جمعدار تھا۔اس طرح لشکر اسلام میں خلل پیدا کرنا چاہا لیکن بیرتد بیر کارگرنہ ہوسکی۔عبدالکریم نام ایک مخلص کو پوری کیفیت معلوم ہوگئی۔اس نے قبل از وقت حافظ صاحب کو آگاہ کردیا۔انہوں نے حسن تدبیر سے کام لیتے ہوئے اس جمعدار کی جگہ

⁽۱) منظوره

بدل دی،جس کے ذریعے ہے سازش کو کامیاب بنانامنظور تھا۔

شهادت

جب سیدصاحب نے ہجرت ٹانید کی تیاری کی تو سیدا کبرشاہ ستھانوی کو تھم بھیج دیا کہ خود جاکر اللہ میں اور ہمارے پاس بھیج ویں۔ کہ خود جاکر اللہ اور ہمارے پاس بھیج ویں۔ چنانچہ حافظ مصطفیٰ اور شخ بلند بخت برڈ ھیری میں سید صاحب کے پاس بہنچ۔حافظ صاحب نے بالاکوٹ میں سیدصاحب کے ساتھ شہادت پائی۔

ملاشاهسيد

یہ چیڑ منگ (ورہ نندھیاڑ) کے علاقے سے تھے۔ معلوم نہیں کب سیدصاحب کے
پاس آئے۔ان کا ذکر پہلے پہل شاہ اسلعیل کے ان مراسلوں میں آیا ہے جوضلع ہزارہ میں
عجابدین کی ابتدائی پیش قدمی کے وقت لکھے گئے۔ان مراسلوں سے معلوم ہوتا ہے کہ ملا
شاہ سید اور سیدمحمد مقیم رام بوری اس اقدام کے سلسلے میں شاہ اسلیل کے شریک کار
سے ماس لئے کہ مختلف مراسلے مینوں کی طرف سے لکھے گئے۔ایک مراسلے ہے معلوم ہوتا
ہے کہ شاہ آسمعیل سیدمحمد مقیم کو شکرگاہ میں چھوڑ کر طا آسمعیل اخوندزادہ اور ملاشاہ سید کے
ساتھ عبدالغفور خال والی اگرور کے باس گئے۔ای میں ندکور ہے:
ساتھ عبدالغفور خال والی اگرور کے باس گئے۔ای میں ندکور ہے:

''سیدشاه رابرائے دعوت مسلمین آن قرب وجوار که برادری عبدالغفور اند،لاکن تابع نیستند، فرستاده خود به معسکر مراجعت نمودم -ازیں روز تاایں روز که روز چہارم است کے از وشاں نه رسیده' (۱)

⁽آ) مكاتيب شاه آملعيل ص: ٢١٥ -

نہیں۔خود میں (شاہ استعمل) لشکر گاہ میں دالیں آگیا۔ آج تک چوتھا دن ہے،ان کی طرف ہے کوئی آ دی نہیں آیا۔

شهادت

ملا شاہ سید بورش ہنڈ میں شاہ اسلمیل کے ساتھ تھے۔ ہنڈ فتح ہو گیااور خادے خال رئیس ہنڈ کے اقربااس کے قل کی بناپرلوگوں کو برا پھنجة کرنے گئے۔ بیرحالت دیکھ کرشاہ صاحب نے ملاشاہ سید کوخط دے کر پنجتار بھیج دیا تا کہ سیدصاحب حقیقی حالات ہے آگاہ موجا كين -ساتھ بى پنجارے شاكنين طلب كرلين - بنجارے دوشالينين ١١رصفر ۱۲۴۵ه (۱۳ راگست ۱۸۲۹ء) کو خچرول پر لا د کر بھیج دی گئیں۔ دس یارہ مجاہدین بھی ساتھ تھے،جن میں ہے ایک کالے خال شاہین جی تھا اور دوسرے ملا شاہ سید۔انہوں نے رات شاہ منصور میں گزاری، جو ہنڈ سے جارکون ہے۔ خاد سے خال مقتول کے اقربا کو خبر مل گئا۔ وہ بچیس تمیں سوار لے کر ہنڈ سے آ دھ کوں پر گھات میں بیٹھ گئے اور اچا تک مجاہدین کی چھوٹی می جماعت پرہلّہ بول دیا۔ بارہ برس کے ایک اڑ کے نے دوڑ کر ہنڈ خبر پہنچائی دہاں سے مجاہدین موقع بر بہنچ۔اس سے پیشتر زیادہ تر مجاہدین شہید ہو چکے تھے۔ کالے خال سسک رہاتھا اس نے بتایا کہ شاہیوں کو بچانے کی کوئی صورت ندر ہی تو میں نے انہیں یاس کے کنوئیں میں ڈال دیا۔ پہلے بندوقیں چلتی رہیں، پھرتلواروں کی نوبت آئی۔ملاشاہ سید نے کئی آ دمیوں کو مارااور زخمی کر دیا۔ان پر ججوم ہوا تو وہ پیچھے ہٹتے ہٹتے کنوئیں میں جاگرے۔وشمنوں نے او پر سے دوتین پھر ڈال دیے۔ یوں اس نیک دل مجامد نے شہادت یائی۔شاہ صاحب نے ان کی میت کنو کیں سے نکلوائی، باقی شہداء کی متتول کے ساتھ چاریا ئیوں پرڈال کر ہنڈلائے اور وہیں انہیں سیر دخاک کر دیا۔

اٹھائیسواں باب:

امام الدين ،اولا دحسن ،غلام على

مولوى امام الدين برگالي

آپ موضع حاجی پورضلع سدارم (بگال) کے باشندہ تھے۔ شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی سے کسب علوم کیا۔ سید صاحب راجیوتا نہ سے دبلی پنچے تو بہت سے لوگ بیعت ہونے گئے۔ مولوی امام الدین بھی آپ کی مجلس میں بیٹھے اور با تیں کرتے ،کیکن بیعت کی طرف رغبت نہ ہوئی۔ کچھ مدت بعد سید صاحب ایک مرتبدرائے بر ملی سے کھنو گئے اور وہاں چند ماہ قیام کیا۔ اتفاق سے مولوی امام الدین بھی پہنچ گئے۔ سید صاحب بیعت لینے میں مصروف تھے۔ خدا جانے کیا بات ہوئی کہمولوی امام الدین بھی پہنچ گئے۔ سید صاحب بیعت بینے میں مصروف تھے۔ خدا جانے کیا بات ہوئی کہمولوی امام الدین مید کیفیت و کیھتے ہی بیعت کیلئے تیار ہو گئے اور کم وجیش تین روز آپ پر استغراق کی حالت طاری رہی۔ صرف بیعت کیلئے تیار ہو گئے اور کم وجیش تین روز آپ پر استغراق کی حالت طاری رہی۔ صرف نماز کے اوقات میں افاقہ ہوتا، اس وقت سید صاحب کا دامن تھام لیا۔ پھران کی شہادت تک ساتھ نہ چھوڑ ا۔ ان کا ذکر عمو ما تو جہ د سے کے سلسلے میں آتا ہے، بعنی سید صاحب سے جو بیعت بق بہ کرتا تھا، اسے تو جہ د سے کا تھم مولوی امام الدین صاحب کو ملتا تھا۔ مثلاً جو بیعت بق بہ کرتا تھا، اسے تو جہ د سے کا تھم مولوی امام الدین صاحب کو ملتا تھا۔ مثلاً جو بیعت بق بیس سید میر خال درانی کو۔

نواب وزیرالدولہ نے''وصایا'' میں لکھا ہے کہ مولوی صاحب نے''صراطِ متنقیم''
کی مرتبہ خودسید صاحب سے بڑھی۔ آپ عجیب وغریب حقائق بیان فرماتے۔مولوی
امام الدین نے تمام حقائق محفوظ کر لئے تھے اور اس کتاب کی شرح میں موصوف کو خاص
دستگاہ حاصل تھی۔

سفر تج میں دائے بریلی سے سید صاحب کے ساتھ نکلے تھے۔ کلکتہ پہنچ تو اجازت کے کروالدہ سے ملنے کے لئے وطن گئے۔ سید صاحب نے رمایا کہ انہیں بھی جج کے لئے ساتھ لے آنا۔ وہ تو نہ آئیں ،لیکن ان کے ساتھ نمیں چالیس آ دی زیارت اور بیعت کی غرض سے آ مجھ ۔ مخامیں یہ تبد باندھ کر دوش میں نہانے گئے تو لوگ آئیس پکڑ کر قاضی کے پاس لے کہ ان لوگوں میں کپڑ اباندھ کر نہانے کا دستور نہ تھا۔ آخر قاضی کو سخم دیتا پڑا کہ جب تک ہندوستانی حاجی مخامیں موجود ہوں کوئی عرب کپڑ اباندھے بغیر حوض میں نہائے۔

مراجعت

بالاكوث كے بعد مولوى صاحب وطن چلے آئے۔ پر ٹونک میں سكونت اختیار کرلی۔ نواب وزیرالدولہ نے 'صراطِ متنقیم' ان سے پڑھی۔ جس زمانے میں نواب موصوف اپنی اہم کتاب' وصایا' مرتب کررہ ہے تھے، مولوى صاحب زندہ تھے۔ نواب صاحب لکھتے ہیں کہ وہ مندِ ارشاد پر فائز ہیں اور بے شار خلقت ان کے خوانِ ہدایت سے مستفید ہور ہی ہے۔ بار ہاد یکھا کہ ذکر جمری تعلیم کے دقت جو نہی اللہ کا نام پاک ان کی زبان پر آتا، ظاہری ہوش وحواس کی قید سے نکل کر باطنی انوار میں ڈوب جاتے۔

آپ کے بھائی علیم الدین بھی جہاد میں شریک تھے اور بالاکوٹ کی جنگ میں شہیرہوئے۔

سيداولا دحسن قنوجى

آپ کا سلسلہ نسب امام علی نقی ہے ملتا ہے۔ اوج کے مشہور شخ سید جلال الدین گل سرخ بخاری اور حضرت مخدوم جہانیاں جہاں گشت بھی آپ کے اجداد میں سے تھے۔ آپ کے والدسیداولاعلی خال حیدرآباد میں امیر کبیر نواب تمس الامراء کی سرکارے وابستہ ہوگئے تھے اور ان سے دور کی عزیز داری بھی تھی۔ انہیں کی سفارش سے نظام علی خال والی دولت آصفیہ نے انور جنگ بہادر کا خطاب عطا کیا اور گولکنڈہ کا قلعہ دار بنادیا۔ پانچ لاکھ روپے سالانہ کی جا گیر ملی۔ ایک بزار سوار و پیادہ کے وہ سالار تھے۔ انہوں نے بہلا تکاح وطن میں کیا تھا، دوسرا حیدر آباد میں۔ نواب سکندر جاہ آصف ثالث کے عہد میں فوت ہوئے۔ حیدر آبادی بیگم سے کوئی اولا دنہ تھی۔ سیداولا دس پہلی بیگم کے بطن سے تھے۔

جهاداوردعوت وارشاد

١٢٠٠ه ميں پيدا ہوئے۔ ابتدائي تعليم وطن ميں يائي۔ لکھنو ميں مولوي محمد نور اور مرزاحس على محدث ہے بھی اکتساب علم کیا۔ بھر دہلی میں شاہ رفیع الدین ، شاہ عبدالقادر محدث اورشاه عبدالعزيز محدث سے حديث ، فقه تفيير اور دوسرے اسلامي علوم يڑھے۔ چند بشتوں سے ان کا خاندان شیعیت کا یابند جلاآتا تھا۔خود انہوں نے طریق اہل سنت اختیار کیا۔سیدصاحب سے بیعت کی اور جماعت مجاہدین میں شامل ہو گئے۔ان سابقین اولی میں شریک تھے جوسید صاحب کے ساتھ جہاد کیلئے گئے۔ کچھ مدت بعد سید صاحب نے انہیں دعوت وبلیغ کی غرض سے واپس بھیج دیا۔ان کی عمر عزیز کے باقی اوقات اس ياكم شغ من مرف بوئ فروسيد صاحب ايك كمتوب مين أنبيل لكهة مين: " آنچه ازمصروفیت خود در تبلیخ احکام رب العلمین ترقیم قلم اخلاص رقم نمودہ بودند۔ازیں جہت فرحت بسیار گردید۔ جزاکم اللہ خیرالجزاء ہر کیے ازمومنین مخلصین خصوصاً علائے اعلام ومشائخ ذوی الاحتر ام رالازم است که احكام حضرت جوادرابر بندگانِ و ئشائعُ وذ الْعَ كُروانند_(١) تسرجمه: آپ نے خدا کے حکموں کی تبلغ کے ملسلے میں اپنی مصروفیت کے متعلق جو بچھ لکھا،اس سے بہت خوثی حاصل ہوئی۔اللہ تعالی

(1) ميرت والاجابى حصدادل-

نیک جزادے۔ تمام محلصین مسلمانوں خصوصاً بزے بزے عالموں اور محرّ م پیروں کے لئے لازم ہے کہ خدا کے احکام اس کے بندوں میں پھیلا کیں۔

وفات

سیدصاحب کی شہادت سے سات سال بعد ۱۲۵۳ ہے (۱۸۲۸ء) میں وفات پائی اور تنوج میں فن ہوئے۔متعدد کتا ہیں کھیں۔ان کے دوفرزند سے:ایک سید احمد حسن عرقی جوعر ہی، فاری اور اردو کے بلند پاییشاعر سے انہیں میرزا غالب سے تلمذ حاصل تھا۔تمیں برس کی عمر میں جج کے لئے روانہ ہوئے۔ برودہ پہنچ کر خت بیار ہو گئے اور وہیں ۲۵ رنومبر ۱۸۲۰ء کووفات یائی۔

دوسرے فرزندسید صدیق حسن تھے،جنہوں نے بھوپال پہنچ کر بڑا عروج پایا۔ نواب شاہجہاں بیکم والیہ مجوپال سے ان کا عقد ہوانواب امیر الملک والا جاہ کا خطاب ملاعر لی ،فاری اور اردو میں اپنی دین علمی اور ادبی تصانیف کے باعث مشہور خواص و عوام ہیں۔

والدكے تركے كامعامله

سیداولادس برے بی نیک طبع اور خوش سیرت بزرگ تھے۔ کہاجا تا ہے کہ والد کی وفات کے بعد انہیں حیدرآ باد بلالیا گیا تھا، لیکن دہ نہ گئے اور والد کا ترکہ چھوڑ دیا۔ میرے نزدیک واقعے کی صورت سے ہے کہ حیدرآ باد کے نظام جا گیرداری میں بھی اسی طریقے پر عمل ہوتا تھا، جومغلوں کے زمانے میں رائج تھا۔ یعنی امراء کی وفات پر ان کا پورا مال و اسباب سرکاری خزانے میں وافل ہوجا تا تھا۔ البتہ اولا دکیلئے حسب استعداد ملازمت کا انتظام کردیا جاتا تھا۔ انور جنگ کے ساتھ بھی یہی صورت پیش آئی۔ سید اولا دحسن ملازمت کیلئے تیار نہ ہوئے ، البند انھیں حیدرآ بادے کھے ملنے کی امید نہ ہوسکی تھی۔ ملازمت کیلئے تیار نہ ہوئے ، البند انھیں حیدرآ بادیے کے مطنے کی امید نہ ہوسکی تھی۔

ایک غلط روایت

سیرت والا جاہی میں مرقوم ہے کہ سیدصاحب نے ایک موقع پر پدری میراث کے ترک کا سبب پوچھااور کہا کہ آج وہ روپیہ موجود ہوتا تو مسلمانوں کے کام آتا ۔ سیداولا د حسن نے جواب دیا کہ میرے والد شیعہ تھے۔معلونہیں ان کا مال میرے لئے حلال ہے یا حرام۔اگر حرام ہے تو اللہ تعالیٰ نے یا حرام۔اگر حلال ہے تو اللہ تعالیٰ نے اس کے وض مجھے علم کی دولت عطا کردی۔(۱)

ممکن ہے سید صاحب نے مزاعاً بھی ایسی بات ہی ہو، و سے مشتبہ اموال کے متعلق ان کا طریق عمل روز روثن کی طرح آشکارا ہے۔ انہوں نے اکسٹس بروک کی بیوی حیات النساء بیگم اور ایسے ہی کانپور کی ایک خاتون کے اموال بے تکلف ٹھکرادیے تھے۔ پھر وہ سید اولا دھن کے بدری ترکے کی نسبت ایسی کوئی بات کیوں کر فرما سکتے تھے؟ اس قسم کے بعض واقعات لوگوں نے ارادت مندوں کی حیثیت بلند کرنے کی غرض سے لکھ دیے اور بیانہ سوچا کہ خود بیروم شدکی حیثیت بران سے کیسی زو برقی ہے۔

شيخ غلام على الدآبادي

ان کااصل وطن مبرونڈہ (ضلع اللہ آباد) تھا، بہت بڑے امیر تھے۔وطن میں جو مکان بنوایا تھا وہ قلعے کی طرح مضبوط تھا اور اسے کوٹ گڑھی کہتے تھے۔اب وہ بالکل مسار ہو چکاہے۔

شیخ صاحب بالکل ابتدائی دور میں سیدصاحب سے وابستہ ہوگئے تھے،اسی وقت سے پوری زندگی اسلامی سائیے میں دھل گئی۔ان کے پاس بیبیوں سنہری اور روپہلی حقے تھے،سب تزواکر دریا میں بہادیے۔ایک راوی کابیان ہے کہ ایسامخلص بے ریا اور محت باصفا آج تک نبیس دیکھا۔

⁽۱) سيرت والأجائل حصداول ص: ٥٠ ـ

سيدصاحب سےعقيدت

تقی صاحب مہاراج بناری کی طرف ہے مملدار تھے۔سیدصاحب جج کے لئے نکلے تو اللہ آباد میں قیام وطعام کا پورا بندو بست شی صاحب ہی نے کیا۔سیدصاحب کو ایک کو تھری میں تھہرایا۔قافلے کے لئے مہاراج کی بارہ دری خالی کرائی۔ایک ایک وقت میں متعدد کھانے لاتے جن پر روزانہ کم از کم ایک بزاررو پینے جن جوتا۔ یہاس زمان کا خرج ہے، جب جنسیں ارزال تھیں۔ دومر تبرسیدصاحب سے ملے کیلئے آتے اور اپنے ساتھ کو تھرنہ کھی نذر ضرور لاتے۔ دوران قیام میں کم از کم بیس بزار روپے کی چیزیں اس طرح سیدصاحب کی خدمت میں پہنچا کیں۔ رخصت کے وقت ایک بڑا جیمہ اور بارہ چھوٹے شیحے بیش کیے۔سید صاحب کی خدمت میں پہنچا کیں۔ رخصت کے وقت ایک بڑا جوڑا جوڑا بر بتا، مردوں کو دو دو پیاجا ہے، دودو و پیاجا ہے، دودو و پیاجا ہے، دودو کی جوڑا جو بتا، مردوں کو دودو پیاجا ہے، دودو کرتے اور دودودو ویے دیے۔سب کوئی کس ایک روپیے،سیدصاحب کے اقربا کودی دس کرتے اور دودودو ویے دیے۔سب کوئی کس ایک روپیے،سیدصاحب کے اقربا کودی دس کرتے اور دولو کا کا کی خدمت میں بھی ان کی حیثیت کے مطابق نذریں پیش کرتے۔ رکھانے کے ساتھ ایک روز سیدصاحب کی ہویوں کو اسی اسی دیے دے گئے۔ ہرکھانے کے ساتھ ایک روز سیدصاحب کی ہویوں کو اسی اسی دیے دے گئے۔ ہرکھانے کے ساتھ ایک روز سیدصاحب کی ہویوں کو اسی اسی دیے دے گئے۔ ہرکھانے کے ساتھ ایک روز سیدصاحب کی ہویوں کو اسی اسی دیے دے گئے۔ ہرکھانے کے ساتھ

ایک روزسید صاحب کی ہو یول کو استی استی روپے دے گئے۔ ہر کھانے کے ساتھ ایک سوچالیس روپے نقلہ کو احرام کی چا دریں ویں، سید صاحب کی خدمت میں مشروع، کخواب، پشمینے ، نیزہ ڈھا کہ کی ملم مجمودی، بناری اطلس وغیرہ کے تقان پیش کیے۔ ان کے علاوہ ساڑھے چار ہزارروپے نقدادر کشمیری شال دی۔ دونہایت عمدہ مطلا قرآن مجید چیش کیے۔ ج سے واپسی پر بھی ای فداکاری سے حق خدمت اداکیا۔

خدمت

سيدصاحب جهاد كيلئ فكاتو شخ صاحب تتم تتم كاسلح، خيم، كيرٌون ك تقان،

کا عاص سیرصاحب کے لئے پوشاکیں اور نقدرو پیدا کے۔ ایک خیمہ سجد کی شکل
کا عاص سیرصاحب کیلئے تیار کرایا اور مع فرش نذر کیا۔ جب سنا کہ سیدصاحب راجوتا نہ
کے راستے جا کیں سے تو بیبیوں چھوٹے جھوٹے ڈولیج بنوائے اور ان کے لئے کمی کمی
رسیوں کا انظام کیا۔ بیسب چیزیں جماعت مجاہدین میں تقسیم کردیں۔ سیدصاحب فتح پور
پنچ تو شخ صاحب دوبارہ زیارت کے لئے آگئے اور پورے قافلے کی مہمان داری اپنے
ذمے لے لی۔ ہرسال سیدصاحب کے لئے تا محدہ پوشاکیس تیار کرا کے سرحد میسیج
رہتے تھے اور جو قافلہ سرحد جاتا تھا، اس کیلئے اسلحہ سواری یا دوسری ضروری چیزوں کا
سامان کردیتے تھے۔ چنا نچ سید جعفر علی نقوی ان سے ملتے ہوئے گئے تو شمشیر، کثار ، پر،
جاجم اورد کیچے، طباق ، پیالے دغیرہ انہیں دیے۔

شهادت

کو مدت کے بعد شخ صاحب مالی مشکلات کا شکار ہوگئے۔راجانے تاوان کی بھاری رقم ان کے ذیے ڈال دی۔اس سلسلے میں ان کی گڑھی پر ایک لاکھ روپیة قرض ہوگیا۔ان کا بردالز کا ان غیر مشروع مشاغل کا عادی ہوگیا تھا، جواُس عہد کے امراء کی اولا دمیں عام تھے،اس وجہ ہے شخ صاحب بہت دل گرفتہ رہتے تھے۔سیدصاحب کی شہادت کے بعد غالبًا راجا کے آدمیوں نے ان پر چڑھائی کردی۔اللہ آباد اور بنارس کے درمیان لڑائی ہوئی۔ای معر کے میں شخ صاحب نے شہادت پائی۔آپ کی میت ہاتھی پر واپس آئی ،گڑھی کے قریب فن ہوئے۔قبر خام ہے، نداس پرکوئی محارت ہے نا حاط۔ واپس آئی ،گڑھی کے قریب فن ہوئے۔قبر خام ہے، نداس پرکوئی محارت ہے نا حاط۔ آخری دور میں انتہائی سادگی افقیار کر کی تھی۔موٹے کپڑے کا لباس پہنتے، جھوٹی سی چار پائی پرسوتے ،جس پرکوئی بستر ندہوتا، تاکہ پاؤں ندیجھیلا سیس ،جلد آ کھی محل جائے اور رات کا زیادہ حصہ عبادت میں صرف ہو۔

انتيبواں باب:

مختلف اصحاب (۱)

نواب احمرعلی خاں

میدام پور کے فرمانروا تھے شجرہ نسب ہے ۔ نواب احمایی خال بن نواب محمایل خال بن نواب محمایل خال بن نواب فیض اللہ خال بن نواب علی محمد خال بانی ریاست رام پور نواب احمایل خال بہت کم سن تھے، جب ان کے والد نواب محمد علی خال مقتول ہوئے۔ ۲۸ رنومبر ۱۹ محاء سے احمایلی خال کی فرمانروائی کا آغاز ہوا، کمنی کے زمانے میں ان کے والد کے پچیر سے بھائی نواب محمد نفر اللہ خال تمام امور کے فیل رہے۔ ۲۲ رنومبر ۱۸۱اء سے نواب احمالی کو پورے اختیارات حاصل ہوئے۔ ۲۵ رجولائی ۱۸۴۰ء کو انہوں نے به عارضہ استقاوفات یائی۔

بيعت جهاد

نواب نے غالبًا ای زمانے میں سید صاحب سے ادادت کا علاقہ پیدا کیا تھا، جب
کہ آپ ستعل تحریک شروع کر چکے تھے اور دوآ بہ گنگا جمنا کا دورہ ختم کر کے وطن جاتے
ہوئے رام پور تھبرے تھے۔آپ سرحد چلے گئے تو نواب موصوف نے ۳ رذی الحجہ
۱۳۴۳ھ (۱۲ رجون ۱۸۲۸ء) کوایک مکتوب آپ کے نام بھبجا جس میں لکھا کہ میرے ول
میں ابتدائی سے خاندانِ رسالت کی محبت موجز ن ہے اور محبت وعقیدت کا بدعا لم ہے گویا
میر سے بدن کے جربال سے "انسا المصحب" کا دعویٰ فوارے کی طرح جوشاں ہے۔
ہر محرع ذبان پرد ہتا ہے:

من دوست دود مان آل رسول ا

آب كى ساتى محبت كون ندمو، جوآل رسول سے مونے كے علاوه:

" حامل خلافت وحامی شریعت و ماحی مراسم بدعت و آثار صلالت بستند چونکه جها د فی سبیل الله مشل صلو قوصیام بر کاف آنام این ملت از جمله فرائض موکد اسلام است به بناء علیه ورظهر الغیب مطابق سنت سید الرسلین علیه و آله الف الف صلو ق رب العلمین بردست مولوی حید رعلی صاحب که خلیف آنجناب است به آنخضرت بیعت بر جها دنمودم وخود را باین وسیله جمیله در زمرهٔ مجامدین فی سمیل الله داخل نمودم که دروقت مناسب به سروچشم حاضرم:

از دوست یک اشاره وز مابه سرودیدن وآنخضرت دعافر مانید که مالک حقیقی این عزیمت مارامیهانجام رساند' (1)

قسو جمعه: خلافت کے حال ، شریعت کے حامی نیز بدعت کے طورطریقوں اور گراہی کے نشانوں کو منانے والے ہیں۔ چوں کہ خدا کی راہ میں جہاد ، نماز اور روزے کی طرح لمت اسلامیہ کے تمام افراد پر پہنتہ فرض ہے ، البندا میں نے سید الرسلین (ان پر اور ان کی آل پر رب الخلمین کی طرف ہزار ہزار درود وسلام ہوں) کی سنت کے مطابق غائبانہ مولوی حید رعلی کے ہاتھ پر بیعت جہاد کر لی ہے جو آپ کے خلیفہ ہیں۔ اس و سلے سے ہیں تجاہدین فی سبیل اللہ کے گروہ میں شامل ہوگیا ہوں۔ مناسب وقت پر بہ سروچہم حاضر ہوجاؤں گا۔ دوست کی طرف سے اشارہ ہوتے ہی ہم سرکے بل دوڑیں ہوجاؤں گا۔ دوست کی طرف سے اشارہ ہوتے ہی ہم سرکے بل دوڑیں گے۔ آپ بھی وعافر ہائمیں کہ مالکہ جھتی ہمارے اس ادادے کو پورا کرے۔

قاضى احمدالله ميرتظى

قاضی احمداللّٰہ میرتھی اوران کے والد قاضی حیات بخش نے اس ز مانے میں بیعت

⁽۱) مكاتب شاه المعيل ص:۲۴۲.

کی تھی جب سیدصاحب نے گنگا و جمنا کے دوآ بے کا دورہ کیا تھا۔ دورے کے آغاز کی خبر مل چکی تھی۔ قاضی صاحب روزانہ بچاس آ دمیوں کے ساتھ استقبال کی غرض سے کئی میل باہر نکل جاتے اور انتظار کے بعد واپس چلے آتے۔ پانچویں روزسید صاحب تشریف فرماہوئے۔ سفر جج میں بھی مع والد شریک تھے اور انہیں اس جماعت کا امیر بنایا گیا تھا، جو عطیۃ الرحمٰن نامی جہاز پرسوارتھی اور ہے جماعت مرسٹھ آ دمیوں پر مشتمل تھی۔

قاضی صاحب اس زمانے میں سترمجام بن کے ساتھ سرحد پہنچے تھے، جب سید صاحب سوات کا دورہ کررہے تھے۔ رادیوں نے لکھا ہے: وہ بڑے عالم، پر ہیزگار، حافظ قرآن ادر حضرت کے کمال کے معتقد تھے۔لشکر میں جمعہ اور عیدین کی نمازیں وہی پڑھاتے تھے۔خطبہ بھی پڑھتے اور بھی بھی عام نمازیں بھی پڑھاتے۔ جنگ بالاکوٹ میں سیدصاحب کے ساتھ شہید ہوئے۔

سیداسلعیل رائے بریلوی

ان کا خاندان معلوم ند ہوسکا۔راوی کا بیان ہے کہسید موصوف:

"بڑے شجاع، طاقت ور، بہادر، حفرت کے نہایت معتقد صادق ، خلص بے ریا، جال نثار، محب سلامت کردار، خیر خواہ، فرمال بردار، وین دار، پر بیز گاری شل یگائے زماند۔ حضرت کے نزدیک بوے معزز دممتازادر بھرم دہمراز تھے۔"

سیدصاحب کے ساتھ ہجرت کر کے گئے۔ تمام معرکوں میں شریک رہے۔ ہماعت خاص میں شامل تھے۔ پنجتار میں سیدصاحب کی اقامت کیلئے جو برج مخصوص تھا، اسکے سامنے میدان تھا، جس میں سید اسلیمل رائے بر بلوی کا ڈیرہ تھا۔ اہل سمہ نے سازش کر کے مجاہدوں پر جا بجا قاتلانہ حملے کیے تھے تو مختلف جماعتوں کوخبر پہنچانے اور پنجتار لانے کا کام سیدموصوف بی کے میرد ہوا تھا۔ بالا کوٹ میں سیدصاحب کے ساتھ شہید ہوئے۔

صوفی نورمحربنگالی

بڑے مخلص، بے ریا، دیندار اور پر ہیزگار بزرگ تھے۔ جو پچھ ساتھ لائے، پوراکا پوراسیدصاحب کی خدمت میں بطور نذرانہ پیش کردیا۔ آپ نے پچھٹر چ کے لئے دے دیا۔ باقی بیت المال میں واخل کردیا۔ مزید حالات معلوم ندہو سکے۔

شيخ منورعلى قندوائي

یہ برے مخلص مجاہد تھے۔ گڑھی اسب کے جس مکان میں سید صاحب رہتے تھے،
اس کے سامنے شیشم کا ایک او نچا ورخت تھا۔ پاس کے والان میں مختلف اصحاب کے بستر
سے ان میں شخ منور علی بھی تھے کسی کے لئے جگہ مقرر نہ تھی ، جو جہاں جار پائی ڈال لیتا،
سور ہتا۔ ایک روز شخ صاحب کہیں باہر گئے ہوئے تھے، وہ جس جگہ روزانہ چار پائی بچھائے۔ تھے، اس جگہ کسی و وسرے بھائی نے بچھائی۔ شخ صاحب آئے تو فرمایا: یہ میری جگہ ہے۔ جواب ملا کہ جگہ مقرر تو ہے نہیں، میں نے چار پائی بچھائی آپ کسی دوسری جگہ انظام فرمالیں۔ شخ صاحب کے ول میں خدا جانے کیا سائی کہ اپنی جار پائی میں ایک دسا باندھا۔ اس کا ایک سرا پکڑ کر درخت پڑھ گئے اور تھنج کر چار پائی کو ایک بڑی شاخ پر باندھا۔ اس کا ایک سرا پکڑ کر درخت پڑھ گئے۔ اب تمام بھائی ان کی منت ساجت کرنے بیا اور رہے ہے باندھ کر اس پر لیٹ گئے۔ اب تمام بھائی ان کی منت ساجت کرنے میں بیش نے نہ بانے سیدصاحب با ہرتشریف لائے تو معاملہ ان کی خدمت بیس چیش کیا گیا۔ آپ نے بو چھا: شخ بھائی! چار پائی درخت پر کیوں بچھائی؟ انہوں نے میں چھٹے نیش کیا گیا۔ آپ نے بو چھا: شخ بھائی! چار پائی درخت پر کیوں بچھائی؟ انہوں نے مض کیا۔ حضرت! اب میرے لئے زمین پر جگہ نہیں رہی۔ آج آسان کی طرف پہلی منزل ہے۔ کل جو بچھ پیش آئے گاؤ کی کولوں گا۔

ین کرسب بافتیارہ س پڑے۔سیدصاحب نے فرمایا: شیخ بھائی! اتر آئے۔ آپ کیلئے زمین ہی پر جگہ نکل آئے گی۔ چنانچہ چار پائی ایک اچھی جگہ چھوادی۔مزید

حالات معلوم ندہو سکے۔

اخوند فيض محمه

یہ غالبًا سرحد ہی کے باشندے تھے،وطن کا صحیح علم نہ ہوسکا۔جب خواجہ خیل (سوات) میں سلیمان شاہ والی کچر ال (کاشکار) کے پاس سفیر جھینے کا فیصلہ کیا گیا تو اخوندصاحب ہی اس منصب کیلئے تجویز ہوئے۔

''وقالع'' کا بیان ہے کہ آپ نماز عشاء سے فارغ ہوئے تو خواجہ خیل کے مختلف لوگ آپ کے پاس آ کروالی چتر ال کی با تیں کرنے لگے اور عرض کیا کہ آپ اس ملک میں تشریف لے جاتے تو بہت اچھا ہوتا۔ آپ نے فرمایا کہ یہاں بھی جہاد موجود ہے۔ دعاء ہے کہ اللہ تعالیٰ اس ملک میں ہم سے اپنی رضا مندی کا کام لے، البتہ ہم وعوتِ جہاد اور ترغیب غزاکی غرض ہے چندلوگ و ہاں ضرور بھیجیں گے۔ (1)

چنانچہ دوسرے دن اپنے خاص آ دمیوں سے مشورے کے بعد اخوند فیف محرکواس کام کے لئے تجویز کیا۔ سلیمان شاہ کے لئے ایک قلمی قر آن مجید ، ایک جوڑی پستول اور ایک پیش قبض بہطور تخذ بھیجی۔

اخوندصاحب چند آدمیوں کے ساتھ چڑال گئے اور سید صاحب پنجتار پہنچ چکے تھے۔ جب بیہ واپس آئے، سلیمان شاہ نے بھی چند چیزیں بطور تھنہ بھیجیں۔ مثلاً ایک قرآن مجید خوش خط اور مطلا ، ایک پیش قبض نولا دی، شیر ماہی کے دستے کی جس کی تہنال اور مہنال نقر ئی تھی۔ تسمے کے بجائے اس میں کلا بنون اور ریشم کے گوند ھے ہوئے ڈورے تصاور دستے کے علقے میں کلا بنون اور ابریشم کا جھیاتھا۔ (۲)

اخوندصاحب اس کے بعد بھی دو تین مرتبہ چتر ال گئے اور آئے ۔مزید معلوم ہوا کہ ان کا اصل وطن غزنی شہریا آس پاس کا علاقہ تھا،اس لئے کہ بعض روایتوں میں انہیں

⁽¹⁾ وقائع ص: AAT: (۲) وقائع ص: AAT: (۱)

اخوندفیض محم غرزنوی تکھا ہے۔ نیز وہ واقعہ بالا کوٹ کے بعداس جماعت میں شامل تھے جو شخ ولی محمد کی سرکردگی میں اس غرض سے سوات گئی تھی کہ سید صاحب کی چرالی بی بی صاحبہ کوسندھ پہنچانے کی تدبیر کرے۔ جب کوئی صورت ندبن سکی توبیہ جماعت سوات سے بونیرلوٹ گئی۔ بعدازاں شخ ولی محمد کوفتح خال بنجتاری نے اپنے ہال بلالیا۔

امجدخال

سیستی (گوتی) کے باشند ہے تھے۔سیدصاحب نے آئییں ایک جیش کا امیر بنادیا تھا۔ غالبًا آپ کے ساتھ سرحد پنچے۔سوات کے دور ہیں شریک تھے۔درش خیل میں آئییں کے کہنے پر مولوی فتح علی ایک پیسے کا آٹا بننے کی دکان سے لینے گئے تو اس نے سوات کے اوزان کے مطابق سات سیر آٹا دیا جوٹو تک کے اوزان کے مطابق ساڑھے تین سیر ہوا۔ غالبً شنکیاری کی جنگ تک سرحد میں موجود تھے۔اس جنگ میں سید جعفر علی نقوی جہاد کے لئے روانہ ہوئے اور گئی پنچے،اس زمانے میں امجد خال تازہ تازہ سرحد سے آئے تھے۔

امام الدين جمبني والي

یہ سید صاحب کے خلص مرید اور بڑے دیندار بزرگ تھے۔ جب خیرالدین نے اکک پر حملے کی تجویز چش کی تھی تو سیدصاحب نے مولوی امام الدین ہی کودوآ دمیوں کے ساتھ بہ تبدیل لباس اٹک بھیجا تھا، تا کہ حالات کی چھان بین کرائیں۔ انہوں نے دس دن اٹک میں گزار کرتمام حالات دریافت کیے۔ انہیں کی رپورٹ پر ایک خاص جیش اٹک بھیجا گیا، جس کے حالات ''سید احمد شہید'' میں تفصیلا فدکور ہیں۔ مولوی صاحب موصوف نے بالاکوٹ میں شہادت یائی۔

حاجى زين العابدين

اس زمانے میں سیدصاحب سے ارادت پیداہوئی جب آپ نواب امیر خال کے لئکر میں سے اور حاجی العالم کی العالم کی العالم کی العالم کی سیامیوں میں شامل ہوئے۔ ابتدا میں لا ابالی سی نظر پڑی تو زندگی بسر کرتے تھے۔ ایک موقع پر سیدصاحب کی مجلس میں پنچے اور آپ کی نظر پڑی تو کا یا لجیٹ کئی۔ نواب وزیر الدولہ نے کیا خوب لکھا ہے:

روزان وشبال بهگر دِم دال می گرد 🍪 مردے گردی چوگر دِم دال گردی

ٹونک میں اقامت اختیار کرلی تھی۔ سید صاحب کی خاندانی دلق انہیں کے پاس
تھی۔ایک مرتبہ ٹونک سے باہر بیٹھے بیٹھے تج کا خیال آیا، وہیں سے روانہ ہو گئے۔ دلق
سید برکت علی بن سید محمود کے ہاتھ نواب وزیرالدولہ کے پاس بھیج دی کہ وہ اسے سید
صاحب کی اہلیہ محتر مدکے یہاں پہنچادیں۔ نواب نے وضوکیا اور دلق کا بھی اپنے سر پررکھ
کر پیدل سیدصاحب کی اہلیہ کے مکان پر پہنچ اور خودیہ گراں قدر تحفدان کی خدمت میں
جیش کیا۔ سیدہ اتی خوش ہو کیں کہ اپنے ہاتھ سے کھانا لیکا کرنواب صاحب کو کھلایا۔

سيدعبدالرؤف

یہ بابڑہ علاقہ سرحد کے باشندے تھے۔ابتدائی میں سیدصاحب سے وابستہ ہو گئے تھے۔ جنگ شیدو کے بعد چتنگئی کے سفر میں سیدصاحب کے ہمراہ رہے۔اتمان زئی کی جنگ میں بھی ساتھ تھے اور عالم خال رئیس اتمان زئی کی نیت بدل جانے کی پہلی اطلاع انہیں نے سیدصاحب کو پہنچائی تھی۔

ایک مرتبہ سیدصاحب کے پاس شکایت کی کہ شاہ آسلمیل مجھے گھر جانے کی اجازت نہیں دیتے۔شاہ صاحب نے فرمایا کہ دنیاداروں کے نوکر بھی بلا اذن نہیں جاتے، پھر

سب كي طرف خاطب جوكركها:

''کون کس کام کے لائق ہے،اس کا فیصلہ امام کے ہاتھ ہے۔جولوگ میرے ساتھ رہیں ہے،وہ مولوی ہوں یا ملا،ان سے جہاد کا کام لینے میں رعایت نہ کروں گا۔ جہادیس ملااورسیدکود دسروں سے آگے رہنا جا ہیے۔''

محرعرب اور فرج الثد

یے رب سے سیدصاحب کے ساتھ آئے تھے۔ بڑے خلص اور نہا ہے تھیدت مند تھے لشکر اسلام کا نشان فتح اللہ انہیں کے پاس رہتا تھا۔ پھر پینشان فرج اللہ کے حوالے ہوگیا۔والدہ نے یہ کہ کر فرج اللہ کوسیدصاحب کے حوالے کیا تھا کہ آپ کی زندگی تھیک کاموں میں گذرے گی۔اس نے اہل سمہ کی سازش قتل میں شہادت یائی۔

داراب اورغريب الثد

ید دونوں علاقہ گور کھیور کے تھے۔ شیخ داراب اسب میں سیدصاحب کے ساتھ تھے۔ مغرب کے بعد اندھیرا ہوگیا تو سید جعفر علی نفوی کی تلاش میں نکلے جو سیدصاحب کے پاس بالا خانے میں تھے۔ راتے میں ایک کو تھری کی چھت ٹوٹی ہوئی تھی ، انہیں خیال ندر ہا اور چلتے چلتے اس میں گر گئے۔ سیدصاحب نے گرنے کی آواز سی تو فوراً ہا ہرتشریف لائے اور بوچھا: بھائی! کون ہے۔ شیخ داراب نے اپنانام اور پتا بتادیا۔ پھر بوچھا: بھائی! چوٹ تو نہیں گئی ؟ شیخ نے عرض کیا آپ کی دعاء سے محفوظ رہا۔

غریب اللہ کا ذکر جنگ بالا کوٹ کے بعد آیا۔وہ یوں کہ سید جعفر علی نقوی کے بیان کے مطابق غریب اللہ کا ذکر جنگ بالا کوٹ کے بعد آیا۔وہ یوں کہ سید جعفر علی نقوی کے مطابق غریب اللہ نے مراجعت کا ارادہ کرلیا اور نقوی سے کہا کہ کوئی خط اپنے والدین کوسید صاحب کی شہادت کی مہلی خبر غریب اللہ ہی کے ذریعے سے ملی تھی۔ مہلی خبر غریب اللہ ہی کے ذریعے سے ملی تھی۔

تىسوال باب:

مختلف اصحاب (۲)

حاجي بهادرشاه خال

سیدصاحب کے قدیم مخلصین میں سے تھے۔ایک مرتبہ انہیں ہندوستان بھی بھیجا گیا تھا۔سکھول سے مصالحت کی گفتگو میں بیمولوی خیرالدین شیرکوئی کے رفیق تھے۔
انظام عشر کے بعد انہیں مخصیل کیلئے گڑھی امان زئی میں مقرر کردیا گیا تھا۔ جس زمانے میں اہل سمہ نے جاہدین کے آل کی سازش کمل کر لی تھی۔ حاجی بہادرشاہ خال سیدصاحب سے ملئے کیلئے پنجتار آئے ہوئے سے دہ گڑھی امان زئی واپس جاتے ہوئے اسلمعیلہ پنچاتو وہاں کے لوگوں نے بداصرار روک لیا۔وہ لوگ حاجی صاحب کے بڑے عقیدت کی بنچےتو وہاں کے لوگوں نے بداصرار روک لیا۔وہ لوگ حاجی صاحب کے بڑے عقیدت مند تھے۔ پر تکلف کھانا کھلایا۔عشاء کی نماز میں انہیں امام بنایا۔ جب وہ بہلی رکعت کے حدے میں گئتو موضع کے خان آسمیل نے توار سے ان کا سرقلم کرڈ اللا۔مولا نا مظہر علی اور ان کے ساتھیوں کی شہادت کے بعد اہل سمہ کے قاتلانہ حملوں کا آغاز حاجی بہادرشاہ اور ان کے ساتھیوں کی شہادت کے بعد اہل سمہ کے قاتلانہ حملوں کا آغاز حاجی بہادرشاہ خان بی سے ہوا۔

سدّم کے شہداء

گڑھی امان زئی علاقہ سدّم کی تخصیل پرحاجی بہادرشاہ خال کے علاوہ حاجی محمود خال بھی مقرر میں امان زئی علاقہ سدّم کی تخصیل پرحاجی میں مقیم تھے۔ بلوے کے آثار نمودار موں تھے مقرر میں اور بھائی کے شمول ہے ستر ہ پر پہنچ موٹ تو محمود خال اپنی جماعت کو لے کرجواُن کے میٹے اور بھائی کے شمول ہے ستر ہ پر پہنچ

چی تھی، باہرندی پر جاتھ ہرے۔ بہین خال رئیس سدم نے پاس جاکرا ہے انداز میں اظہارِ خیال کیا کہ جاہد ین فریب میں آگے۔ ان سے بداطا نف الحیل ہتھیا رلے گئے۔ پھر ایک دم ان پر ہلّہ بول دیا گیا۔ سید جعفر علی نقوی نے لکھا ہے کہ سب کو انتہائی برحی سے قتل کیا۔ بعض کو زمین پر گرا کر بھیڑ بکری کی طرح ذرج کر ڈالا۔ ان میں سے صرف دو بچ سے۔ شہداء میں سے مندرجہ ذیل کے سوائسی کا نام معلوم نہ ہوسکا:

حا جی محمود خال ،ان کا بیٹا پوسف خال ، بھائی عظیم اللہ خال ، دو بھیتیج بر ہان الدین اورعبدالوہاب، کریم بخش جراح ،استاد خدا بخش پھکیت ساکن مجھاؤں۔

قا بلغورامریہ ہے کہمحود خال اہل سدم کے ہم قوم تصان کے بھائی عظیم اللہ خال کوخودان کے خسرنے ذریح کیااوراپنی بٹی کو بیوہ بنادیا۔

شيوه كےشہداء

موضع شیوہ میں جومجاہدین مامور تھے،ان میں سیّدامیر علی بلوے کے ابتدائی آثار دکیھتے ہی گھوڑے پرسوار ہوکر پنجتار چلے گئے،اس کئے کہ ان کے پاس بیت المال کے پان پرمقدم پانچ ہزار روپ جمع تھاور بیت المال کے روپ کی تفاظت ان کے زد یک جان پرمقدم تھی۔حافظ عبدالعلی پھلتی انہیں گاؤں سے باہر پہنچا گئے اور خود یہ کہتے ہوئے واپس چلے کہ اس نازک وقت میں اپنے ساتھیوں کوچھوڑ کرنہیں جاسکتا۔ راتوں رات گاؤں کا محاصرہ کرلیا گیا۔ تمام مجاہدین میں سے صرف ایک شخ گلاب نیج کر پنجتار پنچے۔شہداء میں سے صرف حافظ عبداللہ، شخ ناصرالدین اور مولوی محمد رمضان کے نام معلوم ہو سکے۔حافظ عبدالعلی،حافظ عبداللہ، شخ ناصرالدین اور مولوی محمد رمضان کے نام معلوم ہو سکے۔حافظ عبدالعلی پھولڑہ کی جنگ میں بھی شریک شے۔وہاں سے سلامت معلوم ہو سکے۔حافظ عبدالعلی پھولڑہ کی جنگ میں بھی شریک شے۔وہاں سے سلامت امب پنچ تو خاص رفیقوں کی مجلس میں بار بار حسر سے کہا کرتے تھے کہ شہادت نصیب نہوئی۔کیا معلوم تھا کہ ان کی شہادت نے روں کے ہاتھ سے نہیں، اپنوں کے ہاتھوں سے نہیو کی محکوں کے ہاتھ سے نہیں، اپنوں کے ہاتھوں سے نہیو کی محکوں سے نہیو کی محکوں کیا معلوم تھا کہ ان کی شہادت نے مول سے نہیو کی کیا معلوم تھا کہ ان کی شہادت نے دول کے ہاتھ سے نہیں، اپنوں کے ہاتھوں سے نہیں، اپنوں کے ہاتھوں سے نہیں، اپنوں کے ہاتھوں سے نہیں۔کیا معلوم تھا کہ ان کی شہادت نے مول سے نہیں ،اپنوں کے ہاتھوں سے نہیں۔کیا معلوم تھا کہ ان کی شہادت نے دول سے نہیں ،اپنوں کے ہاتھوں سے نہیں۔کیا معلوم تھا کہ ان کی شہادت نے دول کے ہاتھ سے نہیں، اپنوں کے ہاتھوں سے نہیں۔

مقدرتھی۔

ترلا نڈی اورتر کئی کے شہداء

ترکی اور یاروسین کے شہداء میں سے محد حسین ،مولوی امیر الدین اور ریاست علی مولوی امیر الدین اور ریاست علی موہانی کے نام معلوم ہیں۔ ریاست علی نہایت خوش گلویتے اور جنگ کے موقع پر جہادید خوش آ ہنگی سے پڑھا کرتے تھے۔ ترلانڈی میں کم از کم پانچ ہزار سوار تھے۔ان میں سے صرف ایک لکھ میر خال سلامت نیچ۔

مینئی کےشہداء

مینئی میں میر حامد علی تھنجھانوی پن چکیوں کے انتظام پر مامور تھے۔ان کے ساتھ بیں پچیس آ دمی رہنے تھے۔وہ سید صاحب کا حکم پاتے ہی آٹا لے کر پنجتار چلے گئے۔ صرف تین آ دمیوں کو غلے کی حفاظت کے لئے چھوڑ گئے۔عین اس وقت پیر خال مورا میں پینیتیس مجاہدوں کے ساتھ کھتل سے مینئی پہنچ گئے۔ انہیں خطر سے کی اطلاع مل چکی تھی، کیل کمی منزل طے کر کے آئے تھے،اس لئے ستانے کی غرض سے تھم رکھے اور مسجد میں رات گزاری۔ دانوں رات مسجد کا محاصرہ کرلیا گیا۔ پینیتیس مجاہدوں میں دو غلے کے گودام میں پہنچ گئے تھے:ایک یوسف علی خال اور دوسر سے حبیب خال بھیر وال۔

جن مجاہدوں کومیر حامی خال چھوڑ گئے تھے ان میں ہے صرف دو کے نام معلوم بیں: ایک خدا بخش رام پوری، دوسرے داؤ دخال خور جوی _غرض بیچار (خدا بخش، داؤ د خال، پوسف علی خال اور حبیب خال) ایک ملاکی خیرخواہی کے باعث نج گئے ۔ مسجد کے تینتیس مجاہدوں میں ہے صرف آٹھ سلامت رہے، باتی سب نے مینی میں جام شہادت نوش کیا۔

سيد چراغ على شاه

یہ پٹیالہ کے باشد ہے تھے۔ اکر مہموں میں شریک رہے۔ اتمان زئی پہٹی قدی
کے دوران میں بیت المال کی بہت بری رقم بمقام ٹوئی ذن کردی گئی تھی۔ اتمان زئی سے
مراجعت پرجس جماعت کو بیر تم لانے کیلئے بھیجا گیا، ان میں سید جراغ علی شاہ بھی شامل شھے۔ گویا یہ معتمد علیہ بجا بدوں میں شار ہوتے تھے۔ یوم بالاکوٹ کی سے کوسکے فوج مٹی کوٹ کے ٹیلے پرنمودار بوئی تو اکثر مجاہدین کھانا کھا تھے۔ سید جراغ علی شاہ نے کھر چو لہے
پر چڑ ھار کھی تھی ۔ لفگیر بلاتے جاتے اور وقٹا فو قٹا نظر اٹھا کر سکھوں کو دیکھ لیتے۔ اچا تک
ان پر ایک خاص کیفیت طاری ہوگئی ۔ لفگیراٹھا کر دیگھی پر مارتے ہوئے کہا: بس اب حور
بی کے ہاتھ سے کھانا کھا کیں گے۔ پھر تیزی سے مٹی کوٹ کے ٹیلے کی طرف دوڑ
بیٹر ہے۔ یہ سب بچھ آٹا فا فا نہوا اور کی کو آئیں روکئے کا موقع ندیل ۔ کا ۔ تھوڑی دیر میں اتن
دور جا تھے تھے کہ آئیں روکنا بے سود معلوم ہوا۔ اس حالت میں گوئی گئی اور شہید ہوگے۔
یوم بالاکوٹ کے یہ پہلے شہید تھے۔

باقرعلى عظيم آبادى

یہ مولانا ولایت علی اور مولانا عنایت علی کے چیرے بھائی تھے۔ سفر بجرت کے دوران میں کھنیسر اور براڑی کے مقامات پرلوگ غلط نہی میں جماعت مجاہدین کو قزاقوں اور ربزنوں کا قافلہ بچھ بیٹھے اور مقابلے کے لئے تیار ہوگئے۔ دونوں جگہ سیدصاحب نے شخ باقر علی ہی کو تر جمان کے ساتھ بھیجا کہ لوگوں کی غلط نہی کو دور کر دیں۔ انہیں رسد کی تقسیم میں مولانا محمد یوسف پھلتی کا معاون بنادیا گیا تھا۔ اس لئے قاسم غلہ کے لقب سے مشہور تھے۔ جنگ اکوڑہ سے جہاد کا آغاز ہوا۔ مولوی باقر علی اس میں شریک تھے۔ سکھ لشکرگاہ سے جو پہلی گولی آئی وہ انہیں کے گی۔ زخم کاری تھا، بیٹھ گئے اور بولے بھائیو! میرا

کام تمام ہوا۔اب مجھ سے ہتھیار لے لو، یہ اللہ کا مال ہے۔ساتھ بی ان کی روح اعلیٰ علیہ علیہ بیل ہوں اسلی کی روح اعلیٰ علیتین میں پہنچ گئی۔سید صاحب کی جماعت کے وہ پہلے فرد تھے جنہیں خلعیت شہادت نصیب ہوا۔ان کے پاس ایک ملوارتھی اور دوپستول اور ایک بندوق پستولوں میں سے ایک کا نام عبداللہ رکھا تھا اور دوسرے کالبم اللہ۔

مولوي طالب على

یہ مولا تا ولایت علی عظیم آبادی کے چھوٹے بھائی تھے۔صرف اٹھارہ انیس برس کی عمرتھی۔سیدصاحب کے ساتھ سرحد پہنچے، جنگ شیدو کے بعد درم جگر وطحال میں مبتلا ہو کر بمقام چنگلئی فوت ہوئے۔

كريم بخش گھاٹم پوری

سیسیدصاحب کے ابتدائی رفیقوں میں سے تھے۔ ہجرت میں ساتھ تھے۔ سید حمید الدین کے ایک مکتوب سے معلوم ہوتا ہے کہ نواب امیر خال نے ٹو تک سے چھے چھڑے ہار برداری کے لئے سید صاحب کا بھی ہار برداری کے لئے سید صاحب کے ساتھ کردیئے تھے۔ ایک چھڑ اسید صاحب کا بھی تھا۔ اجمیر سے پالی پہنچ کر معلوم ہوا کہ چھڑ سے دیت میں کام نہ دیے تیس سے ، الہذا آئبیں والی کرنا پڑا۔ کریم بخش بی ان کے ساتھ ٹو تک والی آئے تھے اور سید حمید الدین نے والی کرنا پڑا۔ کریم بخش بی ان کے ساتھ ٹو تک والی آئے تھے اور سید حمید الدین نے ایک خطاس غرض سے آئبیں دے دیا تھا کہ اجمیر پہنچ کرؤاک میں ڈال دیں۔

یقین ہے کہ یہ چھڑ بڑو تک پہنچا کر جلدوا پس چلے گئے ہوں گے۔ جنگ مایار کے موقع پر یہ بھی تورہ میں تھے۔ اُدھراڑائی شروع ہوئی إدھرانہوں نے اپنے ساتھیوں کے لئے روٹیاں پکا کمیں اور کمر میں بائدھ کر میدان جنگ کی طرف چلے۔ راستے میں درانی سوارل گئے جولشکر اسلام کے سواروں سے اڑتے بھڑتے آرہے تھے۔ کریم بخش ان میں گھر گئے ،کسی نے کوار مار کرانہیں شہید کر ڈ الا۔

جنگ مایار میں جومجامدین تورو سے قریب شہید ہوئے تھے، ان سب کو تصبے کے شالی ومغربی کو نے میں ایک بوی قبر کھدوا کرونن کیا گیا تھا، انہیں میں کریم بخش بھی تھے۔

حافظ جانى وحافظ مانى

یددونوں پانی بت کے تھے، بڑے پر بیز گاراور مطبع وفر مانبردار، غالبًا اہل الشکران سے قرآن بھی پڑھا کرتے تھے۔سید حمیدالدین کے ایک مکتوب سے داضح ہوتا ہے کہ سید احمالی (خواہرزادہ سید صاحب) کے فرزند سید ابوالقاسم سفر ججرت میں انہیں تین پارے روزانہ سنایا کرتے تھے۔

قاضى علاءالدين بكھروي

بیمولانا عبدالحی کے شاگرداورونت کے متازعالم تھے۔سیدصاحب کے ایماء سے
اسلامی مسائل نظم کررہے تھے تا کہ عام خواندہ مسلمان انہیں برآسانی یاد کرلیا کریں۔اس
کے ابتدائی شعربیہ تھے:

کروں حمد اس ذات بے عیب کی ک صد اور غنی عالم الغیب کی جو مختاج برگز کسی کا نہیں ک اس کے ہیں مختاج سب جرکہیں

جتنا حصنظم كركيتے تھے، وہ شاہ اساعيل كوسناديا كرتے تھے تا كہ كوئى غلطى ياخاى حتى الامكان باقى ندر ہے۔ بالاكوث ميں شہادت يائى اور رسال كممل ند ہوسكا۔

مايار كے شہداء

جنگ مایار کے بعض متاز شہداء کے حالات الگ لکھے جانچے ہیں۔ باتی امحاب میں بعض کی کیفیت سے:

ا۔مولوی عبدالرحمٰن ساکن تورو: پیابتدای سے سیدصاحب کے ساتھ ہوگئے سفارت ومصالحت کے کام زیادہ ترانہیں سے لئے جاتے تھے۔ مایار میں ان کا سرتن سے الگ ہو چکا تھا۔

۲۔ شیخ عبدالحکیم پھلتی: ان کا سربھی تن سے الگ ہو گیا تھا۔ بوی مشکل سے ڈھونڈ کرلائے اوراسے تن سے ملا کر فن کیا۔

سو لعل محمد: وطن معلوم نہ ہوسکا۔ بیسید صاحب کے باور چی خانہ سے متعلق تھے۔ ٣- شخ عبدالرحمن رائے بریلوی: جنگ میں سخت زخی ہوئے بتورو لا کران کے زخم سے گئے۔ کچھ با تیں بھی کیں، یانی بھی پیا، بھر جاں بحق ہو گئے۔شہدائے مایار میں ہے یہی تھےجنہیں عنسل بھی دیا گیااور کفن بھی پہنایا گیا۔

کنیر ڈی کے شہداء

ان میں ہام خال کے حالات الگ تکھے جائیے ہیں۔ باتی شہداء کے نام یہ ہیں: (١) سيرظهورالله بنكالي - (٢) فيض الله بنكالي -

(۳) حاجی عبداللدرام پوری (۳) سیدمدوعلی ـ

(۵) سیددلا در علی: ان کے گولی لگی توبیر بر رفیقوں نے ہاتھ پکر لئے نیچے سے یا پندہ خاں تنولی کے آ دمی ان کے یاؤں پکڑ کر تھینچنے لگے۔امام خاں نے ذرا آ گے بڑھ کر بندوق سر کی توان کی کنیٹی میں گو لی لگی اور وہ بھی شہید ہو گئے۔

چھتر ہائی کے شہداء

چھتر بائی کی محافظ فوج کے سرعسکر شاہ استعیل شہید تھے۔ حافظ عبداللطیف نیوتنوی نے ایک مرتبہ بہطور خود مجاہدین سے کہددیا کہ نماز عصر کے بعد گڑھی پر حملہ ہوگا۔ مجاہدین سمجھے کہ شاہ صاحب کا تھم ہوگا، حالاں کہ وہ اس سے بالکل بے خبر تھے حملہ ناکام رہااور اس میں چند مجاہدین شہید ہوئے جن میں سے شخ علی محمد کے حالات الگ لکھے جا چکے میں۔ اخوند زعفران کے سِنگڑ ہے میں آگ لگ گئی اور جسم جگہ جگہ سے جل گیا۔ پچھ مجاہدین زخی بھی ہوئے ،مثلاً نہال خاں، ملاگلزار قندھاری، رحیم بخش بناری۔

سيدمردان على شاه

پیرضوی سید تھے۔جداعلی بے عہد فیروز تعلق مشہد سے ملتان آئے۔ پھر دہلی تھہر تے ہوئے جیس میں ہوئے جیسے میں ہوئے جیسے میں ہوئے جیسے میں ہوئے جیسے میں ہوئے ہے۔ کھنو میں سیدصا حب سے بیعت کی تھی اور با قاعدہ خلافت نامہ حاصل کیا۔ یہ بھی ان اصحاب میں سیدصا حب نے جہدی ہواد کے لئے مقرر فرما دیا تھا۔ گردونواح کے علاقے میں دورہ کر تے جھجر، ریواڑی، الوراور تجارہ کے مسلمان ان کے وعظ و تبلیغ سے بہت متاثر ہوئے۔ یہ جماعت مجاہدین کیلئے رقمیں اور آ دمی فراہم کرتے تھے۔ ریواڑی اور اطراف کے سیدوں، قاضوں اور دوسرے افراد نے ایک مرتبہ اجتماع منعقد کرکے فیصلہ کیا تھا کہ مسلمانوں میں جو غیر اسلامی سمیں رائح ہو چکی ہیں، انہیں حتمی طور پر ترک کردیا جائے۔ یہ سیدمردان علی شاہ بی کی تبلیغی کوششوں کا ایک کر شمہ تھا۔

سید مردان علی شاہ کے پاس ایک خاص بیاض تھی، جس میں سیدصاحب کا خلافت نامہ درج تھا، نیز ان کے سفر حج اور مجاہدانہ سر گرمیوں کی تفصیلات مرقوم تھیں۔ ۱۸۵۷ء کے ہنگاہے میں جمجر بری طرح تباہ ہوا، اس میں سیر بیاض بھی ضائع ہوگئی۔ سیدمردان علی شاہ کے فرزند ارجمند سید قاسم علی شاہ نے پھر محنت دکوشش سے بیاض تیار کر لی تھی۔ وہ سے ہنگامہ نقلِ وطن میں ضائع ہوگئی۔ سید قاسم علی شاہ کے نواسے سیدصاد ق علی شاہ وطن چھوڑنے پر مجبور ہوئے اور آج کل سندھ میں تقیم ہیں۔ (۱)

⁽۱) سیدمرادن علی شاہ کے متعلق بیرحالات مجھے پروفیسر محمد سلیم صاحب پیکچرار گورنمنٹ کالج میر پور خاص ہے معلوم مور کئیں۔

اكتيسوال باب:

مختلف اصحاب (۳)

مولوى محرحسن

مولوی صاحب موصوف رام پورمنهاران کے تھے۔ شاہ اساعیل شہیداورمفتی الیٰی بخش کا ندھلوی سے علم کی تکیل کی۔ (۱) بیان کیا جا تا ہے کدابتدا میں نازک طبع اور نفاست پند تھے، اگر چہ 'ارواح ٹلاش' میں ان کی نازک مزاتی کے علاج کا جوقصہ بیان کیا گیا ہے وہ کی لحاظ ہے بھی قابل قبول نہیں۔ ہم اتنا جانے ہیں کدوران جہاد میں انتہائی سادگی سے زندگی گزاری، یہاں تک کدا ہے لئے سونے کی بھی کوئی فاص جگہ مقرر نہ کی ۔ سید صاحب کی با تیں سننے کے شوق میں پاس جیٹھے رہتے ، نیندا آئی تو ہیں زمین پرسوجاتے۔ مولوی محبوب علی وہلوی قافلہ لے کر سرحد پنچ تو راستے کی تکلیفوں سے اس قدر پریشان ہوئے کہ واپسی کا قصد کر لیا اور مجاہدین سے بھی کہنا شردع کردیا کہ گھر واپس چلو اور اقرباکے جو حقوق تمہارے ذمے ہیں، انہیں اداکر و۔ دوسر سے مجاہدین کے علاوہ مولوی اور اقرباکے جو حقوق تمہارے ذمے ہیں، انہیں اداکر و۔ دوسر سے مجاہدین کے علاوہ مولوی

محمصن : حضرت أآب س دليل سعام ين ك قيام كونفوهم ات بين؟

محبوب علی: آخرمیاں س کا فرسے جنگ در پیش ہے؟

محرحسن نے بھی اس موقع برمولوی محبوب علی سے تفتگو کی تھی:

محمد حسن: جنگ کوفال کہتے اور اس کا موقع گاہے گاہے آتا ہے۔ جہادیہ ہے کہ اعلاء کلمۃ اللہ کیلئے سعی کی جائے۔ یہال سب لوگ اس کام میں مصروف ہیں، آپ ایکے

(۱) اروارح علاف

فعل کوعبث قرار دیتے ہیں؟ اگر کسی روز کا فروں سے مقابلہ پیش آ جائے اور آپ دہلی میں ہوں تو کونسی کرامت سے دور دراز کاراستہ طے کرتے ہوئے اس میں شریک ہو تکس ہے؟ مولوی محبوب علی بیدلیل من کر لا جواب ہو محتے۔

شهادت

نتح آمب کے بعد پابندہ خان تنولی ہے مصالحت کی تفتگوشر وع ہوگئی تو ایک مرتبہ شخ ولی محمد پھلتی اور مولوی خیر الدین شیر کوئی کے علاوہ مولوی محمد حسن کو بھی سید صاحب نے پابندہ خان کے پاس بھیجا تھا اور وہ سید صاحب کی مجلس شور کی کے بھی مستقل رکن تھے، بعنی تمام اہم مشور دن بیں شریک ہوتے تھے۔

سیداحرعلی رائے بر بلوی کوسالا راعلی بناکر پھولزہ جیجا گیا تو مولوی مجرحت کوان کا مشیر خاص مقرر کردیا گیا۔ بیاور دیم بخش جراح جنگ کے وقت پاس کھڑے تھے۔ جب سید احرعلی کی شہادت کاعلم ہوا تو ایک دم عمسان کے رن جس تھس گئے اور مردائل سے لڑتے ہوئے شہادت پائی۔ پھولڑہ ہی کے عمنے شہیداں میں سیداحرعلی اور دوسرے رفقاء کے ساتھ وفن ہوئے۔''منظورہ'' کا بیان ہے کہ شاہ اساعیل کے بعد لشکر اسلام میں بجز، حلم ، خاکساری اور قابلیت کے لحاظ ہے مولوی محرصن جیسا کوئی نہ تھا۔

ميرزاعبدالقدوس تشميرى

یہ جنگ پیولڑہ میں شریک تھے۔اگر چہ پیدل تھے،لیکن دیر تک سکھ سواروں کا مقابلہ کرتے رہے۔ جب کوئی سکھ سوار گھوڑا دوڑا تا ہوا ان کی طرف آتا تو دسترس میں آتے ہی بجل کی سرعت سے اس کے گھوڑے کی باگ پکڑ لیتے اور چشم زدن میں آلوار سے اس کا سراڑا دیتے کوئی سوار نیزہ تان کرآتا تو اس کا مقابلہ بھی خوب کرتے۔اگر نیزہ واکیں جانب ہوتا تو اس کے قریب پہنچے ہی ہے انجھل کر باکیں جانب ہوجاتے۔ نیزے کا رخ بائيں جانب ہوتا تو دائيں جانب چلے جاتے۔ پہلے نيزه كافيے پھرسوار كا سرقلم كرتے _كى سواروں كوموت كے كھاف اتارا، آخرخود بھى جامِ شہادت في كرزنده جاويد محروه ميں شامل ہو گئے۔

ميراحمعلى بہاري

بڑے خوش رواور سروقامت جوان تھے اور صدر جدد لیروجواں مرد ۔ تکوار اور بندوق
چلانے میں یکساں مہارتِ تامہ حاصل تھی ۔ بہت ہے سکھوں کوموت کے گھاٹ اتارا۔
آخر دشمن سواروں کے ایک گروہ نے انہیں نرنے میں لے لیا ۔ میرصاحب بولے: ذرا
کھیر جاؤ، میں بھاگ نہ جاؤں گا، مجھ پر گولی نہ چلاؤ اور میری شمشیر زنی ہے جو ہر دیکھ لو۔
پھر خاصی دیر تک تمام سواروں سے تنہا لڑتے رہے، جس پران کی تکوار پڑجاتی یا تو سرقلم
ہوجا تا یا باز وکٹ جا تا یا پاؤں اڑجا تا۔ آخر ایک سکھنے گولی مار کر انہیں شہید کردیا۔
امام خال سہسرای اور شیخ برکت اللہ بھی پھولڑ ہ ہی میں شہید ہوئے۔ آخر الذکر کے
سینتلڑ ہے میں آگ لگ گئی جس سے سار اجسم جل گیا، ای حالت میں انہیں شہید کیا گیا۔
سینتلڑ ہے میں آگ لگ گئی جس سے سار اجسم جل گیا، ای حالت میں انہیں شہید کیا گیا۔

شهيدانِ ڈمگله

ڈمگلہ کی جنگ میں صرف دو مجاہد ول کی شہادت کاعلم ہوسکا: ایک عبدالخالق محمد آبادی، دوسرے سیدلطف علی۔ بید دونوں سخت زخی ہوگئے تھے۔ مجاہدین نے واپس جانے سے پیشتر تمام زخیوں کو اٹھانے کا بندوبست کرلیا، لیکن ان دونوں نے کہدویا کہ ہمارے ہتھیار لے اوادرا ٹھانے کی تکلیف گوارانہ کرد۔ ہمیں اس میدان میں جان دیدیتا لپند ہے۔

قاضی مدنی

سیدصاحب کے خاص معتقدوں میں سے تھے۔ایک مرتبہ شاہ زمان ورانی کے

وکیل جمال الدین نے ایک کتے کے سرمیں تیر مارا، تیرا سکے سرمیں گھس گیا اور وہ پریشان حال اوھراُ دھر بھا گئے لگا۔سید صاحب بہت ناراض ہوئے کہ ایک بے ضرر جانور کوخواہ مخواہ اذیت پہنچائی۔قاضی مدنی کتے کے پیچھے بھا گے اور اس کے سرسے تیر نکال کردم لیا۔ لا ہوری قاضی صاحب ہی کا سائیس تھا، جے ایک مرتبہ عنایت اللہ نمال نے جو جماعت خاص کا آ دی تھا تھیٹر مارا اور مقدمہ قاضی حبان کے سامنے پیش ہوا۔ آخر قاضی حبان نے مارا کے منایت اللہ خال حبان نے مارا کوری نے عنایت اللہ خال کو معافی کردیا۔

ملااساعيل اخوندزاده

ملا صاحب اہل سرحد میں سے تھے۔ جب شاہ اساعیل کو ابتداء میں ہزارے بھیجا گیا تو یہ بھی شاہ صاحب کے ساتھ تھے۔ انہوں نے اپنے خطوں میں اخوندزادہ کے علم وفضل ، اخلاص وتقویٰ ، عقل و دانش ، حسن تدبیر اور اصابت ِرائے کی بار بارستائش فرمائی۔ ایک موقع پر ککھا:

'' ملا اساعیل اخوند زادہ نہایت ہوشیار ددیانت دار ہیں ادر مشاورت ومصالحت میں بختہ کار۔وہ ان اطراف (ہزارہ) کے تمام فضلا کے پیش کار ہیں اور جملہ خوانین کے معتدروین کے کام میں بجاں مصروف ہیں ادر تالیف وترغیب میں بددل مشغول''

ارباب فيض الله خال مهمند

یہ ہزارخانی (نزوپٹاور) کے رئیس تھے۔سلطان محمہ خال نے انہیں کے ذریعے سے سیدصاحب کے پاس مصالحت کا پیغام بھی بھیجا تھااور انہیں کے ذریعے سے سلح کی سینسٹلو پایئے تھیل پر پینچی تھی۔ارباب نے بات چیت کے دوران میں عرض کردیا تھا کہ اگر سلطان محرخاں اوراس کے بھائی مصالحت کے بعد بھی پرانی روش پرقائم رہیں سے کو بیں ان کا ساتھ چھوڑ کرسیدصاحب کی رفاقت اختیار کرلوں گا۔

سید صاحب کی طرف سے شاہ اساعیل نے دومرتبہ سلطان محمد خال سے ارباب کے وطن ہزار خانی ہی میں بات چیت کی۔ پھر سید صاحب سے سلطان محمد خال کی ملاقات قرار پاگئی تو جس طرح سید صاحب کے ساتھ شاہ صاحب اور ارباب بہرام خال اس ملاقات کیلئے گئے ،اسی طرح سلطان محمد خال کے ساتھ ارباب فیض اللہ خال اور مردان علی آئے۔ سید صاحب پشاور سے والی بنجتار جانے کیلئے تیار ہوئے تو ارباب فیض اللہ خال نے سید صاحب پشاور سے والی بنجتار جانے کیلئے تیار ہوئے تو ارباب فیض اللہ خال نے ہزار خانی میں یور کے لئکر کے لئے برا تکلف دعوت کا انتظام کیا۔

کے مدت بعدارباب کو یقین ہوگیا کہ سلطان محمہ خال کے طور طریقوں میں کوئی فرق نہیں آیا۔اغلب ہے انہیں اس سازش کے متعلق بھی سرسری اطلاعات بل چکی ہوں جو مجاہدین کے لئے بے خبرانہ آل کے متعلق کی جارہی تھی ، لہذا انہوں نے ایک مخلص دوست کی حیثیت میں مولانا مظہم علی قاضی پٹاور کو آگاہ کر دیا کہ ان لوگوں کی نیت میں فتور ہے اور یہ بغاوت کی تیاریوں میں گئے ہوئے ہیں۔ بہتر یہ ہوگا کہ آپ سیدصا حب کواطلاع وے کرمنا سب ہدایات حاصل کرلیں۔

سلطان محرخاں نے سازش کھمل ہوجانے کے بعد جہاں مولانا مظہر علی اوران کے رفیق کو خاک دخون میں تڑیا۔ وہاں ارباب فیض اللہ خاک کو کا کہ اس کے کہ است یقین تھا کہ ارباب بہر حال سید صاحب کا ساتھ دے گا۔

ناصرخال بعث گرامی

یہ بھٹ گرام (علاقہ نندھیاڑ) کے رئیس تھے۔ابتدائی دورہی میں سیدصاحب سے وابنگل پیدا کر کی تھی اور راو دفا پر برابرقائم رہے۔ بالاکوٹ میں سیدصاحب کے ساتھ تھے

اور جگ کے متعلق مختلف مشوروں میں شریک رہے۔ان کا مور چہست بنے کے کنارے شیخ ولی محرکی جماعت کے بائیں ہاتھ تھا۔اس جنگ میں ان کا ہاتھ دخمی ہوا۔ پھر جب میدان میں بیافواہ پھیلی کہ سید صاحب کو گوجرا تھا کر لے گئے ہیں، تو دوسرے مجاہدین کے ساتھ ریبھی روانہ ہوکر بالاکوٹ کے تقبی پہاڑ پر پنچے۔مجاہدین نے پہلی رات آئیس کے گاؤں میں گزاری تھی۔ یہ بعد ازاں بھی سید صاحب کے رفیقوں کی مدارات واعانت میں سرگرم رہے۔ جنگ بالاکوٹ سے دو تین سال بعد وفات پائی۔

اخوندسيدمير

بیعام طور پر ملاصاحب کوشاک نام سے مشہور ہیں، جو تحصیل صوابی ضلع مردان کا
ایک مشہور مقام ہے اور سید صاحب کے تلعی ارادت مند تھے۔ بیعت واقا متوشر بیت
کے بعد انہیں قریہ کوشاکا قاضی بنادیا گیا اور ۱۵ رشعبان ۱۲۳۳ ھے کو ان کے نام باقاعدہ
قضانامہ جاری ہوا۔ سید صاحب سے تعلق کی بنا پر ملا صاحب کونا گوں آلام ومصائب کے
ہوف بنے دایک موقع پر انہیں وہابیت سے متبم کیا گیا اور ان کی زندگی خطرے میں پر گئی،
لین وہ بہر حال صحیح اسلامی مسلک پر متنقیم رہے۔

اکابر ہند میں ہے دو ہزرگوں کو ملاصاحب ہے خاص تعلق پیدا ہوا: ایک مولانا غلام رسول صاحب قلعہ میہاں سنگھ والے، دوسرے مولانا سید عبداللہ غزنوی۔ مولانا غلام رسول خودا پنا واقعہ بیان فرماتے ہیں کہ میں پہلے اخوند صاحب سوات کے پاس پہنچا جو بڑے زاہد، عابداور متقی تھے، کیکن سنت سے واقف نہ تھے۔ واپسی پرتر بیلہ کے ایک نمبردار سے ملاصاحب کا ذکر سنا، وہاں پہنچتے ہی تسکین ہوگئ۔ میں نے سلسلہ بیعت دریافت کیا، فرمایا:

" بی بیت شده سید احد بر بلوی مرشد مولوی اساعیل صاحب شهید کا

بو<u>ل</u> _(1)

ان کے نرینداولا دنہ تھی حقیقی بھانجے صاحبزادہ عبداللطیف کوخانہ داماد بنالیا تھا۔ وہ بھی اجل فاضل ہے۔ افسوس کہ جوائی کی حالت میں انہیں شہید کرڈالا گیا۔ ان کے صاحبزادہ نواب سرعبدالقیوم صاحب ہے، صاحبزادہ نواب سرعبدالقیوم صاحب ہے، جنہوں نے جمارے ملک کی سیاست میں خاصی ناموری حاصل کی اور تعلیمی خدمات کے اعتبار سے بھی وہ 'صوبہ سرحد کے سرسید' کہلاتے ہے۔

خواجهمر

حسن پوران کاوطن تھا اور سید صاحب کے خاص ارات مندول میں ثار ہوتے تھے ہرا ہم موقع پر مشیروں یار فیقوں میں ان کا نام ضرور آتا ہے۔ جنگ بالا کوٹ کے وقت سید صاحب نے جہاں اپنے لئے خاص لباس نتخب فر مایا، وہاں ایک ارخالق، سفید پاجامہ، وستار اور پھاوری لنگی خواجہ محمد کو بھی وی کہ صبح یمی پہننا۔ اسی طرح ایک ارخالق، سفید پاجامہ اور دستار عکیم قمر الدین پھلتی کوعنایت فر مائی۔خواجہ محمد اور حکیم صاحب دونوں جنگ بالا کوٹ میں شہید ہوئے۔

مولوى عبدالحق نيوتنوى

ان کے والد بزرگوار شیخ فضل الله کا اصل وطن نیوته ضلع اناؤ تھا، کیکن انہوں نے بنارس میں مستقل سکونت اختیار کر لی تھی۔ اس وجہ سے مولوی عبد الحق دونوں نسبتوں سے مشہور ہوئے ۔ سیدصا حب کے ساتھ ابتدائی دور ہی میں وابستہ ہوگئے تھے۔ سفر حج میں ساتھ تھے۔ مزاج میں تیزی بہت تھی جاتے جاتے کلکتہ میں بعض آ دمیوں سے نہ ہی جھگڑا ہوگیا۔ جازی فضا اس زیانے میں اہل نجد کے لئے بڑی ناسازگارتھی۔کوئی شخص غیر شری

⁽۱) سوانح حیات مولا ناغلام رسول من: ۴۸،۱۸۰_

مراسم یا بدعات کے رد وابطال میں ذراسر گری دکھا تا توسمجھ لیاجا تا کہ نجدی یا وہائی ہے۔ چنا نچہ مولوی عبدالحق بھی مور دعمّاب ہے اوران پر مقدم قائم ہوگیا۔مولا ناعبدالحی نے صانت دیکر چھڑایا پھرخود ہی جواب دہی کی ،اس طرح مولوی عبدالحق رہا ہوئے۔ پھروہ مکہ معظمہ سے صنعا جلے گئے اور قاضی شوکانی سے صدیث کی سند لے کر ہندوستان آئے۔

حافظ عبداللطيف

یہ مولوی عبدالحق کے بھائی تھے۔ان کے مزاج میں بھی خاصی تیزی تھی۔قیام چار
سدہ کے دوران میں ایک شخص پکڑا آیا تھا جس پر جاسوں ہونے شبہتھا۔حافظ عبداللطیف
نے اسے قبل کردینے کی تجویز پٹی کی تھی،سید صاحب نے اسے چھوڑ دیا۔سرحد میں
''اسقاط' رائج تھا یعنی جب کوئی شخص فوت ہوجا تا تو اس کے وارث علاء کی مجلس بٹھاتے
اور اس کے گناہوں کی بخشائش کے لئے قرآن دیئے۔دستوریہ تھا کہ ایک عالم قرآن
ہاتھ میں لے کردوسرے کو دیتا، دوسرا تیسر کواسی طرح دور پوراکر کے قرآن پہلے عالم
کے پاس آجا تا سمجھاجا تا کہ بوں متوفی کے گناہ ساقط ہو گئے۔حافظ عبداللطیف بھی ایک
مرتبہ ایسی مجلس میں جا بیٹھے۔قرآن ان کے پاس آیا تو لے کر چل دیے،اگر چہان کا
مقصود یہ تھا کہ رسم اسقاط کی غیرشر کی حیثیت واضح ہوجائے ،لیکن طریقہ ایسا اختیار کیا جو
خواہ مؤاہدوسروں کے لئے رجمش کا باعث ہوا۔

چھتر ہائی کاواقعہ

فتح امب کے بعد مجاہدین نے چھتر بائی کا محاصرہ کرلیا تھا۔ شاہ اساعیل محاصرہ لشکر کے سالار تھے۔ ایک روز حافظ عبداللطیف نے مختلف مورچوں کو پھر پھر کرتا کید کردی کہ عصر کے بعد گڑھی پر جملہ ہوگا لہٰذا تیار رہو۔ شاہ صاحب اس سے بالکل بے خبر تھے۔ عہرین نے سمجھا کہ حافظ صاحب نے شاہ صاحب ہی کا پیغام پہنچایا ہوگا۔ چنانچے جملہ ہوا۔ جس میں حافظ صاحب خود بھی شریک تصاور ناکام رہا۔ چند مجاہدین نے شہادت کی لی۔ شاہ صاحب نے حافظ عبداللطیف کوسید صاحب کے پاس بھیج دیا اور آپ نے بہت ڈائٹا۔ بیدواقعہ بھی بدنجی نہیں ،صرف سوءِ تدبیر کا نتیجہ تھا۔

مراجعت

جنگ بالاكوٹ كے بعد حافظ صاحب واپس چلے گئے۔سيد جعفر على نفتوى نے لكھا ہے كہ مر تھى كى ايك مجد ميں تھہرے ہوئے تھے۔كى نے كہد ديا كہ يدسيد كے پاس سے بھاگ كرآئے ہيں۔بس يد سنتے ہى حافظ صاحب كوغصة "كيا۔ جھٹ منبر پر كھڑ ہے ہوكر وعظ كہنے گے اور فرمایا:

''جہادمحض ان او کول بی پر فرض نہ تھا جو اشکر اسلام بیں شامل ہوئے ، تمام مسلمانوں پر فرض تھا۔ پس وہ لوگ طاغی جیں جو جھے کریزہ (بھگوڑا) کہتے جیں۔ اگر وہ مجریوں میں سے تھے تو ادائے فرض میں متقاعد کیوں رہے؟ اگر فرض ادانہ کیا تو ان کی حیثیت یہودونصاری کی سی ہوادرا یسے لوگوں سے جھے کوئی غرض نہیں۔''

یین کرسب لوگ مدارات کے لئے بڑھے لیکن حافظ صاحب بیر کہتے ہی معجد ہے نکل گئے اور کسی کی مدارات قبول ندکی مزید حالات معلوم ندہو سکے۔

خصرخان قندهاري

یہ یقینا فندھاریا اس علاقے کے باشندے تھے۔سیدصاحب نے پہوں سے بالاکوٹ کا قصد فرمایا تو ضیاء الدین پھلتی اور خضر خال کو تھوڑے آ دمیوں کے ساتھ درہ کا موجود مجو گڑ منگ کی حفاظت کے لئے بھیج دیا۔مولوی نصیرالدین منگلوری پہلے سے وہاں موجود شھے۔خضر خال نے بڑے ادب سے عذر کیا کہ جنگ در پیش ہے،اس موقع پر حضرت کا

ساتھ نہیں چھوڑ سکتا۔اجازت دیجئے کہ میں ہمرکاب رہوں اور بھوگڑ منگ میں کسی و وسرے آدی کو بھو گر منگ میں کسی و وسرے آدی کو بھیج دیجئے۔سیدصاحب نے سمجھایا کہ جہاں بھی آپکور کھاجائےگا، آپ جہاد ہی کا فرض انجام دے رہے ہوں گے۔آخرا منٹال امر میں خضرخاں کو بھوگڑ منگ جانا پڑا۔

عبدالرحيم

ینومسلمنٹی محمدی انصاری کارفیق تھا۔ نشی صاحب نے اپنی بندوق اسے دے رکھی تھی،کیکن تا کید کروی تھی کہا گر جنگ چھڑ جائے تو بندو**ق فورا میرے یا**س پہنچادینا۔ ^{فاخ} ہنٹر کے بعدمحافظوں کی بورشوں کا سلسلہ جاری رہا۔ منشی صاحب ادرعبدالرجیم ہنڈہی میں تھے۔ایک روزعبدالرحیم اونٹ چرانے کیلئے باہر چلا گیا اور بندوق بھی ساتھ لے گیا۔اس ا ثناء میں ننیم کے ایک گروہ نے بورش کردی منتی صاحب بندوق کے انتظار میں بیٹھے رے۔عبدالرحیم جوش جیت میں خودشر یک جنگ ہوگیا۔سوء اتفاق سے بندوق کا جھماق تم ہوگیا۔ دوڑا دوڑا قلعہ میں آیا۔ منٹی صاحب بندوق اٹھا کرخود جانے گئے لیکن انہیں موزوں چقماق نەمل سکا_مجبورامستعمله چقماق کا فکژا اٹھا کر نگالیا_انہیں خیال تھا کہ بندوق خالی ہے۔عبدالرحیم نے بھی پچھ نہ بتایا ہنشی صاحب نے لبلی دبادی تا کہ چھماق کے کارآ مدہونے کا اندازہ کرلیاجائے۔اس کے جار کھڑے ہوگئے۔نشی صاحب نے ان میں سے بڑائکڑااٹھا کر دوبارہ لگایااور کہا کہ اگریہ آگ دے گیا تو فی الحال اس سے کام لوں گا۔عبدالرحیم جانتا تھا کہ بندوق بحری ہوئی ہے لیکن اس نے منٹی صاحب کی تو شیح کے بعد بھی کچھے نہ بتایا۔تقدیر کی بات منٹی صاحب نے کبلبی دبائی، بندوق چلی اور کولی عبدالرجم كے شانے كے ينچے كى مذى كوتو رقى موكى نكل كئى۔ دوسرے دن اى صدمے سے وہ نیک دل جال بحق ہوا۔ ۲۷ رصفر ۲۳۵اھ (۲۷ راگست ۱۸۷۵ء)۔ منثى صاحب كواس وافعد كابزاقلق تقاءعبدالرحيم سكرات مين بهي منثى صاحب

(جماعمُ

کوسلی دیتے ہوئے کہتار ہا: بھائی صاحب! رنج وغم ندکریں، آپ نے مجھے نہیں مارا کم کوکیا معلوم تھا کہ بندوق بھری ہوئی ہے؟ میں بتا ندسکا جو کچھ پیش آیاوہ تقذیری معاملہ تھا۔ است عدہ

حافظ الہی بخش یہ تیرہ چودہ برس کا لڑکا تھا جواپنے ماموں نور خاں کے ساتھ علاقہ سدم کے کسی

گاؤں میں تھہرا ہوا تھا۔ جب اہل سمہ نے بے خبری میں منتشر مجاہدین پر قاتلانہ حملے کے ، تو جس گاؤں میں نورخاں اور الہی بخش تھبرے ہوئے تھے وہاں کے لوگوں نے ان پر بھی تملہ کر دیا نورخاں شور وغل سن کر حالات دریافت کرنے کیلئے باہر نکلا۔ بھانجے سے تلواری مانگی ۔ دوسرے نے روک دیا کہ اسے نہ ماروہم اسے خلام بنا کیس نوعمرحافظ کے ۔ یوں حافظ الہی بخش کی جان بھی گئی۔ بچانے والا اسے اپنے گھر لے گیا اور بچوں کو قرآن پڑھانے برلگادیا۔ حافظ الہی بخش پشتو جانیا تھا، کیکن میدراز کسی پر ظاہر ہونے نہ قرآن پڑھانے برلگادیا۔ حافظ الہی بخش پشتو جانیا تھا، کیکن میدراز کسی پر ظاہر ہونے نہ قرآن پڑھانے برلگادیا۔

اس کے پاس ایک بالغ محف بھی قرآن پڑھنے کوآتا تھا۔اس کے اخلاص کا اندازہ کر کے ہمراز بنایا۔سیدصاحب کے پاس پہنچانے کیلئے پانچ روپے اجرت طے ہوئی۔ موقع پاکراس کی رہنمائی میں حصب جمیا کر نکلا،راج دواری میں سیدصاحب کے پاس پہنچ سیااورا پی اسیری کی کہانی سنائی۔

دیا۔اس اثناء میں سیدصاحب کے پاس پہنچنے کی تدبیریں سوچتار ہا۔

سرکازخم بدستور تھا۔نور بخش جراح نے زخم دیکھا تو کہا کہ پہلے معالج نے بدخواہی میں کوئی کسرا ٹھانہیں رکھی۔سرکی ہڈی کا ایک حصہ خراب ہوچکا ہے اور اسے کائے بغیرزخم اچھانہیں ہوسکتا۔ حافظ الی بخش نے صبر وسکون سے ہڈی کٹواکر پٹی بندھوائی۔مجاہدین نے جاہا کہ اسے اٹھا کر بستر پر پہنچادیں ،اس نے انکار کردیا اور کہا کہ میرے پاؤل زخمی نہیں ہوئے جو اٹھانے کی ضرورت ہو یھوڑی دیر بستر پر لیٹا رہا۔ پھرخود اٹھ کر ایک ڈیرے پر گیا۔ تمام مجاہدین سے ملا،سب اس کی جراُت اور خل شدائد پر جیران تھے۔

سيدعبداللدسيرام بورى

سیدعبداللہ کے والد ماحد کا نام سید بہادر علی شاہ تھا۔ معلوم نہیں انہوں نے کس زمانے میں سید صاحب سے ارادت کا رشتہ قائم کیا۔ اتنا معلوم ہے کہ آپ نے انہیں خلافت دے دی تھی۔ سیدعبداللہ نے سرام پورٹس ایک مطبع قائم کرلیا تھا، جس میں بہت می وین کتا ہیں چھپیں۔ سیدصاحب کے خواہر زاد سیدا حمطی سفر جج میں ساتھ ندآئے سے بلکہ بعد میں نکھنو سے ملکتہ بہنچ تھے، آتے وقت شاہ عبدالقادر محدث وہلوی کے ترجمہ قرآن کا ایک قلمی نسخ بھی ستر رو بے میں خرید لائے تھے۔ سیدصاحب نے بینسخ طباعت کی قرآن کا ایک قلمی نسخ بھی ستر رو بے میں خرید لائے تھے۔ سیدصاحب نے بینسخ طباعت کی غرض سے سیدعبداللہ کے حوالے کردیا تھا۔

يشخ عبداللطيف تاجر

یہ میرزا پور میں رہے تھے اور وقت کے بہت بڑے تاجر مانے جاتے تھے۔
سیدصاحب سفر جج کے لئے نکلے تو شخ عبداللطف نے چار ہزار روپ آپ کی خدمت میں پیش کیے اور خود بھی والدہ کوساتھ لے کر جج کے لئے تیار ہو گئے۔سیدصاحب کلکتہ میں خیش رے رہے۔ شخ عبداللطیف کی جہاز میں سوار ہوکر آپ سے پہلے مکہ معظمہ پہنچ گئے اور سیدصاحب کے ورود پر پہلے دن قافلے کی وعوت کی ۔ مدینہ منورہ کے سفر میں غالباسید صاحب کے ساتھ تھے۔ وہاں سردی زیادہ محسوس ہونے گئی تو شخ عبداللطیف نے کمبل خرید کرسیدصاحب کے تمام ہمراہیوں کے لئے گرم کپڑے سلوادیے تھے۔سفر مراجعت میں سیدصاحب کا قافلہ میرز اپور پہنچا تو شخ عبداللطیف پہلے واپس آ چکے تھے۔انہوں نے میں سیدصاحب کا قافلہ میرز اپور پہنچا تو شخ عبداللطیف پہلے واپس آ چکے تھے۔انہوں نے قافلے کی دعوت کی۔

منشى امين الدين احمه

یہ ایسٹ انڈیا سمپنی کے وکیل تھے۔مرکزی عدالت میں تمام مقدے ان کی وساطت سے پیش ہوتے تھے اور حق وکالت کی اتنی رقم بن جاتی تھی کہ ہر مہینے اختیام پر تمیں جالیس ہزار کی تھیلیاں ہاتھی پرلا دکران کے گھر پہنچی تھیں۔

سید صاحب کے ساتھ خط و کتابت کا سلسلہ جاری تھا۔ جب معلوم ہوا کہ آپ
بڑے قافلے کے ساتھ جج کیلئے آرہے ہیں تو منٹی صاحب نے ایک وسیع کوشی خرید لی جس
کے ساتھ باغ تھا اور اس میں تین تالاب تھے۔ مردانہ کمرے الگ تھے اور زنانہ الگ،
جگلی پہنچ کرسب سے پہلے سید صاحب کومع قافلہ اپنا مہمان بنالیا۔ آپ کے کلکتہ پہنچنے کے
دن پینس، ڈولیاں، بھیاں، کرانچیاں، ہوا دار وغیرہ سواری کیلئے اور چھڑے بار برداری
کیلئے لے کر کناروریا پر پہنچ ہوئے تھے۔ پھر دونوں وقت پورے قافلے کے لئے نہایت
پر تکلف کھانا پہنچاتے رہے۔ مثلاً ماہی پلاؤ، بکرے کا پلاؤ، قور ما، شیر مال، باقر خانیاں،
کئی قتم کے مربے اور کئی قتم کے میٹھے۔

پہلے ہی دن قافلے میں سے ضرورت مندوں کے لئے تین سورو پے کے جوتے اور
ایک ہزار کے کپڑ نے فرید دیے۔ قیام کلکتہ کے دوران میں قافلے کا فرچ منٹی صاحب ہی
نے برداشت کیا۔ رخصت کے وقت پانچ ہزار رو پے ، خوبصورت گھڑیاں ، رفیقوں کے
لئے جوتے اور کپڑ بیش کیے۔ پانچ ہزار یہ کہہ کر دیے کہ ممکن ہے بعض اوقات کی کو
کھانا مزاج کے مطابق نہ ملا ہواور اس نے پیسے فرچ کرکے بازار سے کھایا ہو۔ غرض
مرسری اندازے کے مطابق منٹی صاحب کا فرج چالیس پچاس ہزار سے کم نہ ہوا ہوگا۔
مرسری اندازے کے مطابق منٹی صاحب کا فرج چالیس پچاس ہزار سے کم نہ ہوا ہوگا۔
مرسری اندازے کے مطابق منٹی صاحب کا فرج چالیس پکاس ہزار سے کم نہ ہوا ہوگا۔
مرسری اندازے کے مطابق منٹی صاحب کا فرج چالیس پکاس ہزار سے کم نہ ہوا ہوگا۔

يشخ على جان

یدانا پور میں رہتے تھے۔اصل وطن ویکھا تھا۔اس زمانے میں سفر کا سب سے اچھا اور عمدہ ذریعہ کشتیاں تھیں اور ہزاروں لوگ کشتی بانی میں مصروف تھے۔ یُنٹنے علی جان ان کشتی بانوں کے چودھری تھے۔سیدصا حب جج کیلئے گئے تھے تو اس زمانے میں بھی شخ علی جان کے مہمان ہوئے تھے۔مراجعت میں بھی ان کے مکان پر تھبر ے۔ بہیں ایک مخص بدارادہ قبل آیا تھالیکن سیدصا حب کا چہرہ مبارک و یکھتے ہی ایسی کیفیت طاری ہوئی کہ یاؤں پر گرکرمعافی مانگ لی۔

سیدصاحب کے ساتھ ملاقات سے پیشتر شخ صاحب کی وضع قطع اس درجہ ہندوانہ مقی کہنام بنائے بغیرکوئی جان ہی نہ سکتا تھا کہ آ پ مسلمان ہیں۔سیدصاحب سرحد چلے گئے آئے علی جان نے گئے آئے علی جان نے محبت سے اپنے پاس تھہرایا۔ اپنی طرف سے چھ اشرفیاں اور عیال کی طرف سے چھ سورویے پیش کیے۔

میاں صاحب فرماتے ہیں کہ شخ صاحب کی حالت بالکل بدل چکی تھی۔ وہ سچے خدا پرست مسلمان بن چکے تھے۔ مسافروں کی امداد واعا بنت کا انہیں بہت خیال تھا۔ ضرورت مندوں کوان کی ضرورت کے مطابات پانے درو پے تک امداد دینے کے لئے مستعلم رہتے تھے۔ ایک باغ انہوں نے صرف اس غرض سے وقف کر دیا تھا کہ آتے جاتے مسافراس میں آرام سے تھم ہیں۔ قیام کے علاوہ ان کے طعام کا بھی بخو کی بندو بست ہوتا تھا۔ دورانِ جہاد میں اطراف بہار کے ارادت مندول کی اعانی رقوم شخ جان ہی کے باس جمع ہوتی تھیں۔

صددالدين قصاب

یہ بھی دانا پور بی کے تھے۔سید صاحب سے انتہائی اخلاص رکھتے تھے۔عام

مسلمانوں خصوصاً مسافروں کی خدمت میں ہر لحظ سرگرم رہتے تھے۔ سو پچاس آ دی ۔ روزاندان کے ہاں کھانا کھاتے۔اولا دندتھی۔عبدالرحیم نام ایک یتیم بچکو بیٹا بنالیا تھا۔ ایک وسیع باغ لگوادیا جس میں آم، نیبو، نارنگی اور جامن کے درخت تھے اور اسے صرف مسافروں کی مہمان داری کے لئے وقف کردیا۔عبدالرحیم کوتا کید کردی تھی کہ خود دونوں وقت مسافروں کے ساتھ کھانا کھائے۔

بابابهرام خال تنولي

بی علاقہ تول کے رؤسا میں سے تھے۔نوجوائی ہی میں سید صاحب سے وابسة ہوگئے تھے۔ جملہ انکساور جنگ ہند میں بھی شریک تھے۔ بالاکوٹ میں بھی ان کی شرکت مسلم ہے اور سید صاحب کی شہاوت کے متعلق ایک روایت ان کی بھی 'سید احمد شہید' میں درج ہوچی ہے۔واقعہ بالاکوٹ کے بعد بی قالباً کسی تحریک میں شریک نہ ہوئے۔ لمبی عمر پاکر 19۲۱ء میں فوت ہوئے۔ میرے عزیز دوست اور بھائی سید مبارک شاہ مرحوم شدنی بایاصاحب کے نواسے تھے۔سید عبد الجبار شاہ صاحب تھانوی نے ان کی بہت کی روایات محفوظ کر لی تھیں جوان کی کہا۔ سید عبد الجبار شاہ صاحب تھانوی نے ان کی بہت کی روایات محفوظ کر لی تھیں جوان کی کتاب ' عبر قلاولی الابصار' میں درج ہیں۔

محمودخال تكھنوى

بالاكوث كے شہداء ميں سے بعض اكابر كے حالات الگ لكھے جا چكے ہيں۔ اكثر كے متعلق اس كے سوال كھے جا ہے ہيں۔ اكثر ك متعلق اس كے سوال كھے منہ معلوم ہوسكا كہ انہوں نے شہادت پائى۔ جن اصحاب كے متعلق مخترى معلومات ملى كيس ان كا حال ذيل ميں درج ہے:

جب سکھ شکست کھا کر پہاڑ پر چڑھے اور مجاہدین نے ان کا تعاقب کیا تو تکوار دانتوں میں دبا کراورایک سکھ کی دونوں ٹائٹیں پکڑ کرینچے کھینچنے لگے۔سکھ کا ایک ساتھی او پر سکھنچے رہاتھا۔ آخر محمود خاں نے ایساز ور مارا کہ سکھ کو پنچے تھینچ لائے۔دونوں لوشتے پوشتے

نالے میں گرے اور ختم ہو گئے۔

مهربان خال

یہ بانگرمئو کے تھے۔میاں جم الدین نے ویکھا کہ زخموں سے نڈھال ہوکر چپت

پڑے ہیں۔آئکھیں کھولیں تو پانی ہا نگا۔میاں صاحب نے کہا کہ یہاں پانی کہاں سے
لاؤں۔ بولے اگر پانی نہیں لاسکتے تو میری گردن میں روپوں کی جمائل ہے اسے کھول کر
لے جاؤے میاں صاحب عجلت میں میکام بھی انجام نہ دے سکتے تھے۔مہر بان خال نے
آخر میکہا کہ آپ جلدنکل جا کیں، یہ میدان ہی میں جاں بحق ہوئے۔ پیرخاں مورا کیں
کی جماعت میں شامل تھے۔شہادت کے دقت جالیس سال کی عمر ہوگی۔

حسن خال بنارسی

یہ زخموں سے چور ہو گئے تو میدانِ جنگ سے آ ہستہ آ ہستہ بالا کوٹ پہنچ گئے ، وہاں پہنچتے ہی خون بہنے سے غنودگی طاری ہوگئی۔ایک سکھ نے ان کاتفنگچہ ا تارنا چاہا تو یہ ہوشیار ہو گئے ، لیٹے لیٹے تلوارا ٹھا کر سکھ کوتل کر دیا ، دوسرے سکھ نے آئییں شہید کرڈالا۔

باقى اصحاب

باقی شہداء کی کیفیت سے

ا۔ عبدالقادرعازی پوری کےسرمیں گولی گی۔

۲ غازی الدین جن کاوطن معلوم نه ہوسکا۔

س۔ اللہ بخش بانچتی نے تھمسان کے رن میں تھس کرشہادت پائی۔

س مولوی محمد قاسم یانی بتی کے چھوٹے بھائی محمد حسن۔

شادل خال شنج پوری

یہ سیدصاحب کے قدیم رفیقوں میں سے تھے۔ان اصحاب میں شامل تھے جو دہلی سے دوآ بے کا دورہ شروع ہونے کے وقت سیدصاحب کے ہمر کاب تھے۔ جنگ شید و میں سیدصاحب نر ہر کے باعث سخت بھار ہو گئے تو شاہ اساعیل نے انہیں ہاتھی پر سوار کرایا۔خود سیدصاحب نے فرمایا کہ جو سفید گھوڑا ہمیں ننج خال نے دیا ہے،اس پر شادل خال کے خود سیدصاحب نے فرمایا کہ جو سفید گھوڑا ہمیں ننج خال نے دیا ہے،اس پر شادل خال کے خود سیدصاد ہوں کے سوارول میں شامل رہے۔

سیدصاحب نے اپنے بھانجے سید حمید الدین کو ہندوستان بھیجا تو وہ شادل خاں کو بھی اپنے ساتھ لے آئے۔غالباً بیدو بارہ میدانِ جہاد میں نہ پہنچ سکے اور سید حمید الدین ہی کے ساتھ ٹونک میں رہے۔

فقيرمحمه خال آفريدي

شعروادب میں بہنام کے بجائے تناص یعنی کویا کی بناپرزیادہ مشہور ہیں۔ بیابتداء
میں نواب امیر خال کے رفیق تھے۔ وہیں سیدصاحب سے گہراتعلق پیدا ہوا۔ پھر یہ کھنو
میں ملازم ہوگئے اور بڑا عروج حاصل کیا۔ حسام الدولہ خطاب پایا۔ سلطنت اور دھ کے
متاز سالا رائن فوج میں سے تھے۔ سیدصاحب سے ان کی عقیدت مدت العرقائم رہی۔
معتد الدولہ آغامیر نے انہیں کی وساطت سے نصیر آباد کے معاطع میں سیدصاحب کے
طرز عمل کی جمایت کی تھی اور تکھنو بلایا تھا۔ رخصت کے وقت پانچ ہزار رو بے بہطور نذر
پیش کیے تھے جو سیدصاحب نے نقیر محمد خال ہی کے پاس چھوڑ دیے۔ آپ جج کے لئے
روانہ ہوئے تو سید احمد علی بیر قم لے کر کلکتہ پنچے۔ ان کی اولا دہیے آباد میں رہتی ہے۔ شبیر
روانہ ہوئے تو سید احمد علی بیر قم لے کر کلکتہ پنچے۔ ان کی اولا دہیے آباد میں رہتی ہے۔ شبیر

استاد بوسف آنهن گر

ان کے حالات کہیں ہے معلوم نہ ہو سکے۔روایوں میں ایک سے زیادہ مرتبان کا ذکر آیا ہے۔ میراخیال ہے کہ انہیں اسلح سازی میں فاصی مہارت حاصل تھی۔افلب ہے ان ہے بندوقوں اور آلواروں کی اصلاح ودرتی کا کام لیاجاتا ہو، یا بیا گنڈاسے بناتے ہوں، جوسیدصاحب کے نشکریوں کا ایک خاص ہتھیارتھا۔ بیہ بھی معلوم نہ ہوسکا کہ بیہ والیس ہوگئے یاسرحدہی میں فوت ہوئے۔

بتيسوال باب:

مختلف اصحاب (۴)

مولا ناحیدرعلی رام پوری

یہ مولا ناسید محمطی رام پوری کے بھائی تھے۔ دبلی میں پیدا ہوئے۔ تاریخ ولا دت معلوم نہ ہوسکی۔ ابتدائے عمر بی میں رام پور چلے گئے۔ خود عربیت میں مولا ناسید غلام جیلانی رام پوری ہمولا ناعبدالرحمٰن کو ہستانی اور شخ ستم علی رام پوری کے شاگر دیتھے۔ کھنو میں ملامبین سے تعلیم حاصل کی ، پھر دبلی میں شاہ رفیع الدین اور شاہ عبدالعزیز سے استفادہ کیا۔ نیز حکیم شریف خال صاحب سے طب پڑھی۔ '' تذکرہ علائے ہند' میں مرقوم ہے کہ علم طب میں انہیں میر طولی حاصل تھا۔ سید ابوائحن علی فرماتے ہیں کہ مرقوم ہے کہ علم طب میں انہیں میر طولی حاصل تھا۔ سید ابوائحن علی فرماتے ہیں کہ واقف ، تراک ، جامعیت معقول ومنقول ، کتاب وسنت اور اختلاف انکہ سے واقف ، تبحرعلمی میں سرآ مدروزگار اور علوم حکمیہ میں بحرف خارشے۔ (۱)

مولا ناسید غلام جیلانی کی صاحبز ادی سے شادی کی۔ کلکتہ بھی گئے۔ نواب احمالی خال فرمانروائے رام پور کے زمانے میں ٹو تک پہنچ گئے۔ نواب موصوف نے انہیں کے ہاتھ پر نیابتا بیعت جہاد کی تھی۔ اس سلسلے میں نواب کا مکتوب ان کے حالات میں درج ہو چکا ہے۔ نواب وزیرالدولہ نے رہے الاول ۱۲۲۰ھ (مارچ ۱۸۳۳ء) میں انہیں عہدہ دیوانی پر مامور فرمادیا۔ (۲) اس عہدے کے فرائض انجام دینے کے فلادہ درس بھی دیتے میں اور طبابت بھی کرتے تھے۔ ۱۱رزی الحج ۲۷۱ھ (۱۸راگت ۱۸۵۲ء) کوثو تک میں

(۲) "مديقة رابستان تونك"م ٣٠٠-

⁽١) "سيرت سيداحد شهيد" على دوم ص:٣٩٣-

وفات پائی۔(۱)سیدصاحب کے خلفائے خاص میں سے تھے۔'' تذکرہ علائے ہند''میں ان کی دوکتابوں کا ذکر ہے:

> ۱- "صیانت الناس عن وسوسة الخناس" بدزبان اردو-۲- "رساله رفع الیدین" بهزبان فاری - (۲)

> > مولا ناغلام جيلاني رام پوري

یہ وقت کے اکا برعلاء میں سے تھے۔ابتدائی میں سیدصاحب سے گہراتعلق پیدا ہوگیا تھا۔ حسن عقیدت کا بی عالم تھا کہ سیدصاحب رام پورسے روانہ ہونے لگے تو مولوی غلام جیلانی باوجود علم وفضل اور باوصف کبرس رکاب میں پیادہ پادوڑا کیے۔سیدصاحب نے منع فرمایا تو آپھیل تھم میں کھہر گئے اور روتے ہوئے ہولے :

''اے کاش! جوانی کی قوت ہوتی تو رکا بے عالی میں برابردوژ تارہتا۔''

سیدصاحب کے مجموعہ مکا تیب میں ان کے نام ایک خطبھی ہے، جو کرذی المجہ الملاح کے تام ایک خطبھی ہے، جو کرذی المجہ الملاح کا الملاح کا الملاح کے تام ایک نطبھا تھا کہ بہت سے خلص لوگ جہاد کے لئے تیار ہیں الیکن ان کے پاس سامانِ سفر موجود نہیں ۔سیدصاحب نے فرمایا کہ بیامر باعث جیرت ہے۔ تو کل اورایمان بالقدر کو مدار کار بنا کیں۔ تمام مومنوں میں نفیر عام کی صدابلند کریں اور وہ خدا پر بھروسا کرتے ہوئے چلے آئیں۔

مولوي كرامت على جون بوري

 معقول مولا نااحمہ اللہ چریا کوٹی سے حاصل کیے۔اٹھارہ سال کی عمر میں سید صاحب سے بیعت کی اور آپ نے مولوی صاحب کو دعوت وتبلیغ پر مقرر فرمادیا۔

پہلے جون پور میں تبلغ وین اور ردِ بدعات کا کام انجام دیتے رہے۔ پھر بنگال چلے گئے اور زندگی کے باتی ایام وہیں دعوت وتبلیغ میں بسر کیے۔ کم وہیش اکاون سال خدمت دین کا پیسلسلہ جاری رہا۔ جا بجا درس گاہیں قائم کیں۔ عموماً کشتی پرسفر کرتے تھے۔ اس میں بھی درس وقد رئیں برابر جاری رہتی۔ سرر بج الآخر ۱۲۹۰ھ (۱۳۱مر کی ۱۸۷۳ء) کو میں بھی درس وقد رئیں برابر جاری رہتی۔ سرار بج ان کے دوفر زند تھے: مولانا حافظ احمد اور رنگ پور میں وفات بائی۔ وہیں فن ہوئے۔ ان کے دوفر زند تھے: مولانا حافظ احمد اور مولانا حافظ عبدالا ول۔ دونوں علم وضل میں ممتاز مانے جاتے تھے۔ ان کا بھتیجا مولوی محمد محسن بھی وقت کا بہت بڑا عالم تھا۔ مولوی کرامت علی صاحب نے بے شار کتا ہیں لکھیں۔ چوالیس کتابوں کی فہرست' تذکرہ علمائے ہند' میں درج ہے۔

مولا ناعبدالقيوم برمهانوي

یہ مولانا عبدائی کے اکلوتے فرزند نے۔عبدطفلی میں سیدصا حب کیساتھ سرحد گئے۔
مولانا عبدائی نے خبر میں وفات پائی تو مولانا عبدالقیوم کو ان کے ماموں کے ساتھ
ہندوستان جیج دیا تا کہوالدہ ماجدہ کیلئے سلی کا سامان بن سکیں ۔مولانا عبدائی نے اسی زمانے
میں بیعت کرادی تھی جب سیدصا حب دوآ بے کا دورہ کرتے ہوئے بڑھانہ پنچ تھے۔
سرحد سے ہندوستان آکرشاہ محمد اسحاق اورشاہ محمد یعقوب سے علم حاصل کیا۔اس
کے بعد غالبًا مکم معظمہ چلے گئے۔شاہ محمد اسحاق کی صاحبز ادی سے ان کی شادی ہوئی۔
نواب سکندر جہاں بیگم والیہ کھو پال جج کیلئے مکم معظمہ سکیں تو مولانا کے زہدوتقوی کی اور علم فضل کو د کھے کر بھو پال تشریف لانے کی زحمت دی۔ آپ آئے اور خاصی مدت تک

ا نکارکردیا۔موصوفہ نے پیغام بھیجا کہ خودان سے ملاقات کیلئے آنا جا ہتی ہوں تو کہا: آپ پردہ نہیں کر تیں،اسلئے اجازت نہیں دے سکتا۔ برقعہ اوڑھ کرآئیں تو ملاقات کرسکتی ہیں۔ جس حد تک مجھے علم ہے،خرابی صحت کی بتا پر بڑھاند آگئے تھے اور یہیں 1799ھ (۱۸۸۲ء) میں فوت ہوئے غالبًا اڑسٹھ ممال کی عمریائی۔

مولوی خرم علی بلهوری

بلبورکان پورکے مفافات ہیں ہے ہے۔ مولوی صاحب موصوف نے لکھنو ہیں سیدصاحب موصوف نے لکھنو ہیں سیدصاحب سے بیعت کی تھی۔ اس کے بعد خدمت دین ہیں مشغول ہوگئے۔ مشہور ہے کہ سیدصاحب کے ساتھ جہاد کیلئے سرحد گئے تھے۔ وہاں سے واپس آ گئے۔ غالبًا سید صاحب نے آئہیں دعوت و بلغ کیلئے مقرر کر دیا۔ ر دیدعت اور احیا ہوست میں بہت سرگرم سے میں نواب ذوالفقار بہادر رئیس باندہ کے تھم سے ' در الحقار' شرح ' تنویرالابصار' کا ترجمہ شروع کیا۔ محرم اسمالہ ہیں کتاب الحج تک ترجمہ کھمل کر چکے تھے، اس سال وفات بائل۔ مولوی محمد احسن نانوتوی نے مولوی خرم علی صاحب کے وارثوں سے اس کتاب کا حق تالیف خرید لیا اور ' غایت الاوطار' کے نام سے اسے شائع کردیا۔ یہ ترجمہ ناتمام رہا۔

''مشارق الانوار'' کا بھی ترجمہ کیا۔''نصیحت اسلمین'' ان کی مشہور کتاب ہے۔ ''جہادیہ''منظوم ہے،جس میں جہاد کے فضائل بیان کیے جیں۔سیدصاحب کے شکر میں ''جہادیہ''جنگ کے وقت پڑھی جاتی تھی۔

مولوی سخاوت علی جون پوری

جون بور سے گیارہ میل جنوب میں منڈیا ہو نام ایک قصبہ ہے، جہال مولوی صاحب موصوف ۲۰۱۱ ھیں پیدا ہوئے۔ وقت کے مشاہیر علماء سے علم عاصل کیا۔ سید صاحب سے بیعت کی۔ساری عمر حسبۂ للٰدورس و تدریس میں گزار دی۔جون پورک جد شاہی میں ایک مدرسہ قرآنہ بھی قائم کیاتھا،جس نے بہ کشرت تھاظ پیدا کیے۔

نواب ذوالفقار بہادروالی بائدہ نے اپنے ہاں دوسوروپے ماہانہ پر بلالیا تھا۔ پکھ مدت بعدوالدہ کی بیری کاخیال کرتے ہوئے وطن واپس آگئے۔ آخر عمر میں بجرت کرکے مکہ معظمہ چلے گئے تھے۔ وہیں ۱۲رشوال ۱۳۵۳ھ (۲۰ مئی ۱۸۵۸ء) کو انتقال کیا اور جنت المعلّی میں فن ہوئے۔ ان کے دوفرزند پہلی شادی سے تھے اور دودوسری شادی سے مولا ناابو بکر تحد شیٹ مرحوم ناظم شعبۂ دینیات مسلم یو نیورٹی، مولوی سخاوت علی کے پوتے اور مولوی ابوالخیر کی کے صاحبزادے تھے۔ مولوی فتح علی جون پوری جو جہاد میں سیدصاحب کے ساتھ تھے، مولوی سخاوت علی کے اقر بامیں سے تھے۔

مولوى حبيب الثدقندهاري

افغانستان کے علاء میں یہ پہلے محض ہیں جن میں صدیث کا سیح ذوق پیدا ہوا ، اور ان سے بیذووق افغانستان میں پھیلا۔ موصوف نے اس زمانے میں سیدصاحب سے استفادہ کیا تھا، جب آپ بہسلسلہ ہجرت قدھار پنچے تھے۔ مولانا سیدعبداللہ غزنوی نے بھی مولوی صبیب اللہ قندھاری ہی سے مختلف مسائل حل کیے اور غالبًا آئییں کے ذریعے سے مولوی حبیب اللہ قندھاری ہی سے مختلف مسائل حل کیے اور غالبًا آئییں کے ذریعے سے دی تقویۃ الایمان ''کافاری ترجمہ مولانا عبداللہ کی نظر سے گذرا۔

مولا ناعبدالله علوى

بیمئوقائم سمنی ضلع فرخ آباد کے باشندے تھے۔ مت تک دیلی میں رہے۔ شاہ اساعیل شہید ہے علم حاصل کیا اور سیدصاحب کے ہاتھ پر جہاد کی بیعت کر لی تھی ۔ نظم ونثر میں ان کا پایہ بہت بلند تھا۔ مولوی ام بخش صهبائی انہیں کے شاگرد ہیں۔ طبابت میں بھی میں ان کا پایہ بہت بلند تھا۔ مولوی ام بخش صهبائی انہیں کے شاگرد ہیں۔ طبابت میں بھی میں اور شمس آبادی کے ہاں ملازم ہو گئے میں طولی حاصل تھا۔ آخر عمر میں نواب سید محمد علی خاں بہا در شمس آبادی کے ہاں ملازم ہو گئے

تھے۔وہیں ۱۲۲۲ھ بہ عارضہ تپ محرقہ وفات پائی۔(۱)اصلاً فاری کے شاعریتھ، بھی مجھی اردومیں بھی کہدلیتے تھے۔

عكيم مومن خال مومن

علیم غلام نی خال کے فرزند ہتے۔ ۱۲۱۵ھ (۱۰۸ء) میں پیدا ہوئے۔ شاہ عبدالقادر ے علیم غلام نی خال کے فرزند ہتے۔ ۱۲۱۵ھ (۱۰۸ء) میں پیدا ہوئے۔ شاہ عبدالقادر سے عربی کی کتابیں پڑھیں۔ والد اور پچا سے طب کی تعلیم پائی۔ نجوم میں کمال حاصل کیا البیکن شہرت کی بنیاد ان کی شاعری ہے۔ فارس کلام بھی بہت پختہ تھا۔ افسوس کہ فارس دیوان صرف ایک مرتبہ چھپا، اب نا پید ہے۔ اردوکلیات میں غزلیس ہقصیدے ہمتنویاں، رباعیاں اور قطعات سب بچھموجود ہے۔

سیدصاحب سے بیعت کی۔آپ کی مدح میں مومن نے جو کی کھ کہا، وہ اس کتاب میں دوسری جگہ درج ہوتا ہے۔اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ مومن کا دل سیدصاحب کے عشق ہے لبریز تھا۔ ۱۲۶۸ ھ (۱۸۵۴ء) میں وفات پائی۔مہدی بورہ میں شاہ ولی اللہ کے خاندانی مقبرے کے پاس فن ہوئے۔

ميال دين محمه

انہیں کے ذریعے سے سیدصاحب کی خدمت میں پہنچیں۔ آخری عمر میں لُو نک عظم غالباً وہیں وفات یائی۔نواب وزیرالدولہ نے ان کے لئے وظیفے مقرر کر دیا تھا۔

ميال جي نظام الدين چشتي

سیر بڑھانہ کے باشندے اور سید صاحب کے خاص رفیق تھے۔ زیادہ حالات معلوم نہ ہو سکے۔ جنگ بالا کوٹ سے ایک دن پہلے سید صاحب نے کنہار کا بل تڑوادیا تھا۔ اس موقع پر میال جی نظام الدین بھی موجود تھے۔ انہوں نے کہا کہ جب لڑائی کی نوبت آئی اور میں نے جناب الہی میں دعاء کی تو آگ کو نہ سکین پیدا ہوگئی، میں سجھ لیتا کہ انجام بخیر ہوگا۔ موجودہ جنگ کے سلسلے میں کئی مرتبہ مراقبہ بھی کیا اور دعاء بھی الیکن تسکین کی کوئی صورت نہ کئی۔ خداجانے کیا پیش آنے والا ہے۔

بیامریقین ہے کہ میاں جی نظام الدین چشتی بالا کوٹ میں شہید ہوئے۔جولوگ سید صاحب کے غائب ہوجانے کا عقیدہ رکھتے تھے،وہ کہتے تھے کہ میاں جی نظام الدین چشتی بھی ساتھ ہی غائب ہوئے اور ساتھ ہی فلاہر ہوں گے۔

شخ محرتق

بیانگریزی فوج میں گوشت کے تھیکیدار تھے اور اس زمانے میں سید صاحب سے
بیعت کی جب آپ نے نواب امیر خال سے الگ ہوکر جہاد کی مستقل تظیم کی تھی اور تبلیغ
واصلاحی دوروں کا آغاز ہوا تھا۔ بعد میں انہوں نے کمسریٹ کے تھیکے بھی لئے اور بہت
دولت پیدا کی۔ ۲۱ ردمبر ۱۸۵۵ء کو شخصا حب نے اپنی غیر منقولہ جا کداد کا ایک حصہ جس
کی قیمت کا اندازہ اس زمانے میں سوالا کھ سے کم نہ تھا، دینی اور خیری امور کے لئے وقف
کردیا تھا۔ اس جا کداد کا ایک حصہ انار کی لا ہور کی وہ تمارت بھی تھی جو سرائے محد شفیع کے
نام سے مشہور رہی اور اب عالی شان ہوٹل کی صورت میں منتقل ہوچکی ہے۔ محمد شفیع شیخ محمد

تقی کا بوا میٹا تھا۔وہ۱۸۲۴ء کے مقدمہ اعانت مجاہدین میں ماخوذ ہوا تھا،اس کے حالات کتاب کی آئندہ جلد میں بیان ہوں گے۔ شیخ محمد تقی نے ۱۸۱۸ کتوبر ۱۸۵۹ء کو وفات یائی۔ آپ سیدصا حب کے بڑے ہی مخلص ارادت مند تھے۔

متفرق اصحاب

بعض اصحاب کے حالات معلوم نہ ہو سکے ،سرسری کیفیت ذیل میں درج ہے: ا۔اخو ندظہور اللہ: جہا تگیر ہ صوبہ سرحد کے باشندے تھے۔ابتدا سے سید صاحب کے ساتھ رہے تنو اہ دارفوج انہیں نے بھرتی کی تھی۔

۲۔عبدالقیوم اور امانت علی: مجروحین اکوڑہ کی تیارداری کے لئے نوشہرہ میں تھہرے رہے۔

سے حیات خال اور برکت اللہ: پیدونوں واقعۂ حضرو کے بعد جنگ بازار میں شہید ہوئے۔

سم یشخ فیض الدین مجمد صالح اورمتا: شخ فیض الدین بنگال کے اور باتی دوسندھ کے تھے۔ یہ جنگ بازار میں مجروح ہوئے۔

۵ صابی عبدالله رام بوری: یه جهادیس ساتھ رہے واقعہ بالاکوٹ کے بعد ٹوک میں ساتھ رہے واقعہ بالاکوٹ کے بعد ٹوک میں چلے آئے تھے انھوں نے کہ انھوں نے کہ میں وفات پائی۔ نے ٹوک میں وفات پائی۔

خاتمه

یہ سیدصاحب کے ان رفیقوں کی سرسری سرگزشت تھی، جوان کی زندگی میں شہیدیا فوت ہوئے یاان کے ساتھ شہادت پائی، یا جنہوں نے سیدصاحب کے بعد تحریک کے کسی شعبے میں حصہ نہ لیا، ما بدرجہ آخر مجھ لیجئے کہ روایات و بیانات کا جو ذخیرہ ہمارے سامنے آیا،اس میں سیدصا حب کی شہادت کے بعدان کا کوئی ذکر موجود نہیں۔

ہم نے صرف ان مجاہدین کا ذکر کیا، جن کے متعلق کم یا زیادہ حالات معلوم ہوسکے۔ ممکن ہے بعض اہم اصحاب نظر انداز ہوگئے ہوں۔ مقصود استقصاء نہ تھا، بلکہ صرف یہ آرزوتھی کہ سید صاحب کی تربیت کے پچھنمونے سامنے آ جا کیس تا کہ اندازہ ہو سکے کہ اس پاک نفس وجود نے کہ جی جماعت تیار کردی تھی، جس کی مثال ہندوستان کی اسلامی تاریخ میں بہت ہی کم ملے گی۔

اب صرف ایک مرحلہ باقی رہ گیا اور وہ یہ کہ اس جماعت نے سید صاحب کی شہادت کے بعد ہندوستان کے اندراور باہراسلام واسلامیت کے احیاء کی خاطر کیسی کیسی قربانیاں پیش کیس، تو بیسر گزشت آپ اس کتاب کی آئندہ جلد میں ملاحظ فرما کیں گے جو اسلاء سے ۱۹۳۳ء تک کے حالات پر مشمل ہے۔

ضمیمه 🕦

جہادیہ (فارسی)

اردوکاجہادیہ "سیداحم شہید" میں مکتلا درج ہو چکا ہے۔ وہ مولا ناخرم علی
بہوری نے نظم کیا تھا اور بعض اصحاب اے میدان جنگ میں بدی غرض خوش
الحانی سے پڑھا کرتے تھے کہ جابدین کے دلوں میں اسلامی جہاد کا جوش تازہ ہو
اور وہ اس کے مقاصد وصدود سے آگاہ رہیں۔ ایک جہادیہ کی صاحب نے
فاری میں بھی نظم کردیا تھا۔ اس میں ناظم کا نام یا تخلص حسن بتایا گیا ہے۔ بعض
اصحاب کے نزویک میہ جہادیہ بھی مولوی خرم علی ہی کا ہے، لیکن انہوں نے حسن
تخلص بھی استعال نہ کیا۔ ممکن ہے، یہ جہادیہ اس بزرگ نے مرتب کیا ہوجس
نے ایک قصیدہ سفر جج سے مراجعت کے موقع پر پیش کیا تھا اور اس کے متخب
اشعار "سیداحم شہید" میں درج ہو بھے ہیں۔ بہر صال وہ جہادیہ بھی بطور تیرک
مطالب کی تھانیت میں کو کلام نہیں ہوسکتا۔

بعد حمرِ خدا و نعتِ رسول ﴿ بشنو ایں نظم را بہ سمع قبول ایں رسالہ جہادیہ رنگیں ﴿ می نویسد قلم نہاد بہر دیں نے برائے طمع بلاد جنگ بااہل کفر و اہل عناد ائل اسلام گفتہ اند جہاد کا غیرایں ہرچہ ہست، ہست فساد آنچہ خوبیش از کلام خدا کا و ز کلام رسول شد پیدا مابیاں ہے کنیم بے تقفیر مابیاں ہے کنیم بے تقفیر اندکے زاں بہ یاد خوایش گبیر

فرض شد بر ہمہ جہاد کنوں 🚭 کہ ز حد شد بروں فساد کنوں کا فرال را ہیں تو در بازار (۱) 🥵 دعوت کفر ہے کنند اظہار بهر سامان او شتاب کنید 😵 عوّ دیں گر درون دل دارید گرد بر یائے کس براہ جہاد 😝 گرفتار است شد زنار آزاد ہر مسلماں کہ او براہ خدا 😝 کرد یک لخلہ جنگ را بریا روضهٔ خلد شد مکان او 🝪 عیش و آرام یافت جان او اے برادر شنو حدیث رسول 🚳 از من خشہ مہاش ملول زیر سامیه سیوف جنت دال 🚳 کددرآن نیست شک دریب و ممال جرکه در راه حق ز مال و زر الله از دل و جال کند نار گهر عوضش هست صد به حشر اندر 😩 ببر او می دمهند زال بهتر او اگر خرچ کرد و زد شمشیر 😝 بمچوں مردال درونِ جنگ دلیر عُوضَ می دہند ہفت ہزار 🚭 بے کم و کاست دال ویے تکرار هر که از مال خوایش و ز اسباب 🐞 بهر غازی تهیه کرد شتاب بیجو غازی ورا وہند ثواب 🙆 درقیامت برائے آل درماب ہر کہ نے مال خرچ کرد و نہ جنگ 🚷 می شود ونت موت حالش تک جر که در راه حق شده مقتول 😝 ست او زنده جم شد او مقبول

⁽۱) بیغالباسیائی مشنریوں کی طرف اشارہ ہے۔

شادماں است درمیانِ جناں کی رزق او می رسد بہ او ہر آل مدت العمر ہرچہ شد ز انسال کی غیر حقّ عبادت از عصیال محکو گردیہ جملہ بہرِ شہید کہ برائے خدا سرش ببرید

فتنهٔ قبر و صور و بم محشر الله الله الله الله بست جنت الماوی الله بست جنت الماوی الله بست دارد خدا مجابد را الله که چو دیواد کرد صف برپا به بهجو دیواد کرد صف برپا بهجو دیواد بخت و مضبوط جمله باید به یک وگر مربوط

چوں شنیدید اے مسلماناں کا از بیانِ جہاد و خوبی آل سوئے میدان راہ را گیرید کا خان و ماں را بہ یاد خود نارید مال و اولاد و خانمان و زن کا حب ایں جملہ را برول آگان در رہ حق بہ شابی برول روید دوال مال و اولاد ہمرہست اے دلدار کا نہ دہند ایں رہائے ہشدار گربمانی تو زندہ جال آئی جا بہ سوئے خانہ شامال آئی ور بمردی تو جنت الماوئ ور بمردی تو جنت الماوئ

دین اسلام ست گشت بین الله علیه کفر شد عیال به زیس پیشوایان دین که بگرشتند الله کافرال را به امر حق کشتند غلبه دین بردور شمشیر است به برکه گیرد بدست آل شیر است ستی ار پیشوا جمی کردند الله سوے سیقت درین نمی بردند

ہند آباد کے شدے نہ اسلام اللہ وین اسلام می شدے گمنام تابہ کے درمیان خانہ چو زن اللہ علی نشینی یہ حب اہل وطن غير افسوس ثمرهُ سُستی 🚳 نيست حاصل ترا بکن چستی غیرتے کن مکن تو نامردی زود خیز و بیا اگر مردی

زود سوئے امام خود بروید 🚭 کافرال را کشید و خوش بزئید بے امام ایں نمی شود حاصل اللہ شرط اول امام وال عافل جمله بیعت بدست او بکنید 🚳 بعد ازال در جهاد خوش بروید ورنه موتیست موسی نادانی 🚳 علم آموز گر نمی دانی واجب آمد به خلق نصب امام الله که بود از قریش آن خود کام گر نداند کے امام زماں

موت او موت جابلیت دال

چول که دو صد گزشت بعد بزار 🚳 کرد بیدا خدا چنیں سردار ہت از آلِ احمد مخار 🤮 نام او بچو نام پاک اے یار بس بریثال بدند ایل ایمال

شکر حق را که شد امام زمان

اکنوں اے مومنال یاک نہاد اللہ وقت آمد کہ می شود ول شاو جان خود در ربش نثار کنید 🔓 برسر الل کفر تیخ زنید حفرت مولوی کتاب مخوال 🚳 میرشمشیر و رو سوئے میدال وقت جانبازی است نے تقریر ہے غیر شمشیر ور خیال مکیر چوں توکی رہنمائے دین متیں 😸 پیش دستی نما چو زن منشیں گر تو رفتی روند ہمراہست

ساكنان درگابت خادمال اے کہ در راہِ فقر استادی 🏟 بہر تسخیر نفس استادی عملِ نفس کش نما اے یار 🏟 کہ بود بہتر از جہاں آل کار موشته خانه را مگیم چو زن 🖨 جله بگزار و خیمه بیرول زن اے جواناں چوشیر حملہ کنال 🍪 یا چو رستم بہ قوت و سامال قوت و زور بېر چست گو؟ 🐟 جرأت حمله بېر کيست گو؟ گر سر کافرے جدا کردی 🚭 یا سر خویش دادی و مردی ہر دو صورت برائے تو بہتر 🚭 شادماں باش اے کو اختر گر بکشتی میسر آمد کار 🐞 ور بمردی شهادت است اے یار می ندانی که لذی ونیا 🚭 عاقبت می شود جدا و بیا لشکر موت ملک جانت را 🖨 می کند غارت و برد از جا چوں مقرر شدہ ترا بردن 🖨 جان من حب جال زول برکن برتو بہتر است اے خوش رائے 🐞 کہ برائے خدا وہی جال را اے کہ صدیا ز جنگ باز آیند 🐞 اے کہ صدیل یہ خانہ ی میرند وقت موت شنو تو اے عافل 🚯 شد معین مترس اے عاقل تا زمانے کہ موت نیست ترا 🐞 مردنت مشکل است اے خوش رائے موت وفتیکہ آیدت اے یار 🚭 زال رہائی بہ خانہ نے معدار تو مترس از سفر و کلفت او 🚳 مرد شو راحت از دل خود شو برچه انسال کند شود عادت می تواند گرشتن از راحت

بہر طمعے ہزارہا ز سیاہ 🍪 سرخود را دہند شاں بے اے عجب آئکہ تو مسلمانی کے حیلہ ہائے دروغ می رانی در روحق چرا چنیں و چناں 😵 حیلہ ہا را تو آوری یہ میاں غره خشتی جرا بدیں دنیا 😝 شد فراموش از دلت عقبی حب الل و عيال كرد برول 🚭 از ولت حب حق بين اكنول تابہ کے درمیان خانہ نہاں 🚭 بہر اولاد و زن شوی ینباں! چوں رہی تو زموت خویش بدال 🐞 گر بمانی درون خانہ نہاں اگر امروز با رضائے ولی 🝪 در روحق دہی تو جال یہ خوشی باز فردا تو درمیان جنال 😩 راحت وئیش می کنی اے جال گر گزاری تو لذت دنیا 🍪 ببر مولا که بست آل اولی باز دائم بہ جنت اے خوش نام 🏚 عیش وآرام بہر تسست مام سرزدہ یازدہ بہ خانہ خویش 🐞 سردنت بہتر است اے دل ریش یا براہِ خدا دہی جال را 🥵 بہتر از بہر تست اےخوش رائے عر ندادی تو جال براه خدا 🚭 بس پشیال شوی بروز جزا باز ایں روے خود چہ بنمائی پیمبر به روزِ رسوائی

لیک شرط است زیر حکم امام ی که بمانی تو دائما خوش کام در به جگیدن و زدن شمشیر ی بیج سودے نمی دید به دلیر میرکه خود یک جنگ کرد و بمرد ی خون او ناحق است حسرت برد آل که دانند خوب مولا را ی بیمبر شفیع روز جزا

از دل و جال قبول قول امام 🚭 می نمایند خوش روند به کام ائل اسلام را بود کانی اے حسن ایں پیام بس وانی بر مناجات كن تو ختم كلام بہر تو بہتر است اے خوش نام اے خداوند خالق مقلین اللہ اے خداوند مالک کونین اے خداوندِ آسان و زمیں 🏶 اے خداوندِ انس وعرش بریں ده تو توفیق الل ایمال را 🐠 تابه راحت وسند خوش جال را قوت خود بده و زور آور 🔷 الل اسلام را بكن ياور وعدة فتح خويش كن اتمام 🐠 آنچه كردى به فضل خود انعام ہند را پڑنما تو از اسلام 🥵 اے شہنشاہِ مالک انعام کہ نیاید ندا بجز اللہ كن قبول اين دعاء تو باالله

ضمیمه (۲)

سيدعبداللدسيرام بوري

سیدعبداللہ ابن سید بہادرعلی کے حالات اختصاراً اوپر درج ہو پیکے ہیں۔ کتاب حوالہ مطبع ہو چکی تھی کے مالات اختصاراً اوپر درج ہو پیکے ہیں۔ کتاب حوالہ مطبع ہو چکی تھی کے مدین جمالی مرح بناب محمد یونس صاحب نے کانپور سے اس قرآن مجید اللہ نے سیرام پور میں چھا یا تھا۔ پھراصل قرآن مجیدارسال فرمادیا۔ اس سے جو نے حالات معلوم ہوئے وہ در بن ذیل ہیں:

ا۔ سیدعبداللہ کے اجداد مدینہ شریف سے نکل کر ترفد میں آباد ہوئے۔ پھر لا ہور میں رہے۔ وہاں سے سوانا میں مقیم ہوگئے۔

۲۔ سیدموصوف نے کلکتہ میں سیدصاحب سے بیعت کی تھی اور ج کے لئے ساتھ م مجھے تھے۔

سیداحم علی شاہ عبدالقا در کے ترجمہ قرآن پاک کا جونسخہ ٹیر ید کرلائے تھے، سید
 عبداللہ نے مکہ معظمہ میں اس کی نقل حاصل کی تھی۔

سم۔ اس میں ترجمہ بہ طور تغییر لکھا ہوا تھا یعنی متن کے تکٹر نے قبل کر کے ان کی تغییر
کی مختم سیدعبد اللہ نے پڑھنے والوں کی سہولت کے لئے اسے بین السطور لکھوا دیا۔
۵۔ جہاں جہاں کسی مقام پرشبہ ہوا تغییر عزیزی وغیرہ سے مدڈ لے کر سمجھا اور ایک اور ترجے سے بھی مدد کی جوسید عبد اللہ کے والدسید بہا درعلی نیز بعض دوسر سے علماء نے مل کر کیا تھا۔

۲۔ ترجے کے چھاپے میں جواہتمام کیا گیا، وہ مختابِ بیان نہیں۔
 ۷ کا تب نے ۱۲۲۸ اول ۱۲۲۸ھ (کیم اگست ۱۸۳۲ء) کو کتابت متن وترجمہ سے فراغت پائی اور قرآن مجید کی طباعت ۲۲رجمادی الاولی ۱۲۵۳ھ (۱۸۳۸ھ ۱۸۳۸ء) کو کمل ہوئی:

ذیل میں وہ عبارت تبرکا نقل کی جاتی ہے جوسید عبداللہ نے قرآن مجید مترجم کے ساتھ چھائی تھی۔ اس کے بعض الفاظ مشتبہ ہیں۔ نیکن میر سے پاس ان کی تھیجے وتو منے کا کوئی ذریعہ نہ تھا۔ مولوی محمد یونس اس عنایت یکا نہ کے لئے یقیناً دلی شکریہ کے مستحق ہیں۔ اس مضمون میں ذیلی عنوان میں نے لگائے ہیں تا کہ یڑھنے میں سہولت رہے:

الـحـمـد لـلّـه رب العالمين والصلوة والسلام على خيرخلقه سيدنا ومولاتا محمد واله واصحابه اجمعين.

بعد حمد حق جل وعلا ونعت خاتم الانبیاء سروراصفیا کے احقر العباد سید عبداللہ ابن سید

ہما در علی بن سید حسن بن سید جعفر مدنی، پیچے اس کے ترندی، پیچے اس کے لا ہوری، پیچے

اس کے سوانی، سب مومنوں کی خدمت میں عرض کرتا ہے۔ جب اس وقت میں خاکسار

نے دیکھا کہ اکثر مسلمان اس سبب سے کہ احتساب اس ملک سے موقوف ہوگیا اور صحبت
اور آمیزش میں غیر قوم کے پھنس گئے اور خطرہ اللہ ورسول اور حاکم کا دل سے جاتا رہا۔
اسلام کی متنقیم سڑک چھوڑ کر بدعت کے طریق میں آگرے اور بے مزاحمت غیر جو چا ہا
مین مانتا کرنے گئے اور جن کو بڑے مسلمان مردے آدمی عرف میں کہتے ہیں اور وہ اپنے
مین پڑھا عالم جانے ہیں، انہوں نے بھی طریق وعظ ونصیحت اور سکھانا پڑھانا و بنداری
کے احکام کا ان کو دنیا کی عزت اور دولت اور جاہ طبی کے سبب موقوف کیا۔ اس باعث
سے نہایت غم اور غصہ اس خاکسار کی خاطر میں گذرتا تھا۔

2012)

زجيے کی فقل

بعد چندروز کے اللہ تعالی کے فضل وکرم ہے ایبا اتفاق ہوا کہ جناب پیرومرشد برق امیرالمونین اہام اسلمین حفرت سیداحمدصا حب دام اقبالہ و برکات کے کے اداد ہے ہیال تشریف لائے۔ بیرفا کسار اور سیزوں مسلمان اس جناب پاک کی بیعت کی نعمت حاصل کر کے ان کے ہمرکاب حرمین شریفین کی زیارت سے کامیاب ہوئے اور بیہ ترجمہ ہندی قر آن شریف کا جومولا نا شاہ عبدالقا درصا حب دہلوی مرحوم نے کیا ہے ، سید احمیع صاحب جو حضرت پیرومرشد کے بھانے ہیں ، ان کے پاس د کھے کہ کہالی شوق سے احمیلی صاحب جو حضرت پیرومرشد کے بھانے ہیں ، ان کے پاس د کھے کہ کہالی شوق سے اس کی نقل اس مکان متبرک (۱) میں لی اور خیال کیا کہ آگر بیقر آن شریف مع ترجمہ ہندی اس وقت کے مسلمانوں کو ہاتھ گھے ، شایدا پنے پروردگار کا کلام بجھ کراس کو دیکھیں اور اس کان م برکت سے جوخود خالق کی زبان سے ہے ، ان کے دل میں پچھ ہدایت آ و ب تو کلام کی برکت سے جوخود خالق کی زبان سے ہے ، ان کے دل میں پچھ ہدایت آ و ب تو آ و ب تو گارے کہا ہو ہوگے ، شایدا ہو و بہیں ہو بھی ہوایت آ و ب تو آ و ب تو گارے کہا ہو ہو تو د خالق کی زبان سے ہے ، ان کے دل میں پچھ ہدایت آ و ب تو آ و ب تو گارے کا کلام بھی تارہ کا کان میں بھی ہوایت آ و ب تو آ و ب تو گارے کا کلام بھی تو تو د خال میں کی بغیراس کے کہ چھایا جاوے نہیں ہو بھی ۔

عزم طباعت

تب اس قلیل المھاعت نے بعد مراجعت اس سنر کے مولا ناعبدائی صاحب اور مولا نامجد اس ال صاحب اور مولا نامجد اس ال صاحب دہلوی اور مولوی حسن علی صاحب کصنوی کے ایماء اور استصلاح سے کر جمت اپنی مظم کم باندھی اور ارادہ مصم کیا کہ جس طرح ہو اِس کو چھپوانا چا ہیے اور قیمت ایسی مقرر سیجئے کہ اپنا خرج نکل آوے، اور کسی سلمان بھائی پرجس کو اللہ تعالیٰ نے قرآن سیجھنے کا بچر بھی ذوق و شوق دیا ہو، لے لینے میں بوجھنہ پڑے۔ اس میں اکثر کے مسلمان جو نافہم اور اس کے فوائد دینی سے آگاہ نہ تھے، باوجود اس کے کہ آپ دنیا کی ولئت اور یہاں کی زندگی کے آرام اور نام کے واسطے کیا کیا فکریں اور تد بیرین خلاف

⁽۱) كمهمعتمد

شرع کرتے ہیں اور دات دن اعانت اور استعانت میں گمراہوں سے تھلے طے دہ جے ہیں، بعض اونی باتوں کا عذر در پیش کر کراس کے انجام ہونے میں خلل انداز ہوئے بلکہ اس بات پر طعن کرنے گئے لیکن اللہ تعالی کی مرضی جواس خاکسار کے اراد سے کے موافق ہوئی تو اس نے اس کو بخو بی انجام کو پہنچا یا اور طعن اور حسد کو انہیں پر پھینکا اور خاکسار کو اس کے ضرر سے بچار کھا، بفضلہ وکر مہ ۔ آخر اس فقیر نے اپنے پروردگار بی پر بھر وساکر کے جان وول سے ہمت باندھی اور نیت اپنی مسلمان بھائیوں کے نفع وینی پہنچانے پر مضبوط اور خالص کی ۔ پھر قریب دو برس کے عرصے میں بہت سے رو پے خرج کر کے بڑی محنت اور جانفشانی سے بے معاونت غیراس کو انجام دیا۔

اهتمام طباعت

اور چھاپے کے وقت خوب اہتمام رکھا گیا کہ کاریگراس کام کے سب طاہراور نمازی ہوں اور کی طرح کی ہے احتیاطی اور ہاد نی واقع ندہو۔اس کریم برحق کے فضل سے حسب خواہش دلی جس طرح ارادہ کیا تھا، اس طرح اتمام کو پنچا اور چھاپے کے وقت جہاں شبہ گذرتا تھا، کی قرآن صحیح اور تفییر عزیزیہ مولا ناعبدالعزیز قدس سرہ اور تفییر حینی اور ایک ترجمہ ہندی اردو کی زبان میں جواس خاکسار کے والد خشی سید بہا درعلی مرحوم اور کی فاضلوں نے مل کر کلکتہ میں کیا تھا، موجود تھے۔ان شخوں کی مدد سے وہ عقدہ حل ہوجاتا تھا، اور اس قرآن شریف کے اشتہارتا ہے کے جاری ہونے کے وقت سے بھی بیالتزام کیا ہے کہ سوائے اہل اسلام اور کسی قوم کے پاس باوجود فائدہ زاید ہدیداس کا نہ ہود سے اور اس کا ایمان

كيفيت وطن واجداد

سوانا ایک بستی کا نام ہے، شہر تھا نیسر کے تیرہ کوں دکھن ، دتی سے پانچ منزل مغرب (۱)
جس کواس خاکسار کے اجداد میں سے حضرت شاہ زید شہید سالار کشکر نے لا ہور سے مع
اپنی برادری آکروہاں کے ہندورا جہ سے جہاد کر کے فتح کیا تھا۔ پھرو ہیں شہید ہوئے اور
برادری اوراولا دان کی اس کے گردوپیش کی بستیوں پڑل کر کے وہاں بسی۔ بوے بوے
سید بزرگ ان کے سلسلہ میں ہوئے ، جیسے حضرت سید شاہ میر اور حضرت سید نظام الدین
اور سید اعز از الدین نو بہادر اور سید شاہ محمد حاجی اور سید شاہ بھیکھ جن کے مزار کہر آم اور
شکے میں ہیں۔ ان بزرگواروں کا سلسلہ حضرت امام علی اصغر سے جو حضرت امام زین
العابدین کے چھوٹے بینے شے، جاملا ہے۔

اگر چہ خاکسار چندمدت ہے بنگا لے میں ہے، پراب تک آمدوشد بھائیوں کی وطن سے یہاں اور قرابت بیاہ شادی کی ان سے جاری ہے۔

فائده

ترجمہ اصلی اگر چہ بطور تقییر کے لکھا ہوا تھا، گرخا کسار نے رعایت سہولت قرات کی کرے اس طور پر چھا پا کیا۔ کیوں کہ تقییر کے طور پر پڑھنا قرآن شریف کا نظر کوا یک جگہ ہوتا ہے اور ہندی عبارت کو یہاں کے مروج قاعدے سے لکھا کہ ہندی زبان کے ناواقف لوگ تانیث و تذکیر میں غلطی نہ کریں۔ چنانچہ کاف اور جیم اور دال وغیرہ بایائے معروف کو اس طرح لکھا: کی، کی، دی، اور کاف اور جیم اور دال وغیرہ بایائے مجبول کو اس طرح: کے 'جے' دے اور جیم اور دال وغیرہ بایائے مجبول کو اس طرح: کے ' ہے' دے اور جیم اور دال وغیرہ بایائے مجبول کو اس طرح: کے ' ہے' دے اور جیم اور دال وغیرہ بایائے مجبول کو اس طرح: کے ' ہے' دے اور کاف اور جیم اور دال وغیرہ بایائے مجبول کو اس طرح: کے ' ہے' دے اور کاف اور جیم اور دال وغیرہ ہندی تقیلہ کو اس طرح: کے، جھہ تھے، بھے واؤ اور یائے مجبول کاف اور جیم اور تا اور یائے مجبول کو سے پہلے چیش ہو، اس کی جس کے پہلے چیش ہو، اس کی جس کے پہلے چیش ہو، اس کی

علامت 10 اور تائے تقیلہ کی علامت اور رائے تقیلہ کی علامت اور یائے ساکن جس کے پہلے زبر ہو، اس کو'' ، "ملٹ سے کھا، جیسا بی ہی ، اور جائز مطلق آیت وغیر ونخہ اوقاف سجاوندی سے کھا اور رکوعوں کونٹے نجوم الفرقان سے مجھے کیا اور قاری کی آسانی کے واسطے ہرصفحہ پر سورہ کا نام اور سیبیار ہے کا ہندسہ کھا اور آیات کے شار کے لئے ہر آیت کے مقالے میں ہندسہ دیا۔ اور فائدوں کو جاشے میں حرف فائے برابرد کھا مگر جہاں جگہ نہ ملی تو ہندسہ حوض اور حاشیہ میں دے دیا کہ اس کے فائدے کا ٹھکا نا ہاتھ لگ جائے اور ہرسورہ کی ہم اللہ کے اور حرفوں کی تعداد بھی لکھ دی۔

کہیں فائدہ اصل کتاب ہے زیادہ بھی لکھا ،خصوصاً شانِ نزول تیسویں سیپارے میں ،سواس کی بچان کو کتاب کا خصوصاً میں ،سواس کی بچان کو کتاب کا نام وہاں ذکر کردیا اور احوال چھاپے کی کتاب کا خصوصاً جس میں اعراب ہوں اور چھاپے کے دفت جونقص اس میں واقع ہوتا ہے،اس چھاپے کے قرآن شریف کی پہلی جلد کے اخیر میں لکھ دیا۔ مررضرور نہیں۔ منصفوں اور دائش مندوں کی سجھ کواس قدر بس ہے۔

شكروسياس

ہزارشکراس پاک پروردگارکاجس نے مخس اپ فضل وکرم سے شہر جمادی الاولی کی ستا ہیسویں تاریخ اور ہجری کا بارہ سو پینتالیس (۲۴ رنوم ۱۸۲۹ء) ہیں اس مطبوعة قرآن شریف کو مطبع احمدی میں اتمام کو پہنچا یا اور اب اس کی جناب باری سے امید وار ہوں کدا گر جبلت انسانی کے سبب ہے ہیں کچھ بھول چوک یا کسی طرح کی باد بی اس خاکسار سے ہوئی ہوتو یا اللہ یا کریم تو اپ وصف کر ہی اور رحیمی پر نظر کر کے اور صفت ستاری اور عفاری کے صدقہ سے اور اپ وصف کر ہی اور رحیمی پر نظر کرکے اور صفت ستاری اور غفاری کے صدقہ سے اور اپ رسول مقبول اور ان کی آل اور اصحاب کی عزت اور حرمت کے طفیل اس قصور سے بچائیو اور بخشیو اور میری اس محنت کے کام کو دنیا میں یادگار اور باتیا ہے۔ باتیا ہے وہوں اور بھائی

بندوں کی اور رشتہ داروں کی اور دینی دوستوں کی چھوٹے بڑے، جیتے مرے، سب کی مغفرت کا وسیلہ سیجئے اور ان میں سے جو اُب زندہ ہیں اُن کو اور اس کے پڑھنے والوں کو اور اس کے مکموں پر چلنے والوں کو اور اس چھاپے کے اہلکاروں کو اپنی رضامندی کی راہ پر لا اور ہدایت نصیب کر۔ آمین ثم آمین یارب العالمین۔

اللی اس قرآن شریف کے کا تب کوادراس کے ترجے اور فائدہ لکھنے والوں کو بھی ان دونوں کے ماں باپ الی علیہم السلام آدم وحواجومسلمان ہوں اوران کی اولا داورا قربااور دوستوں سمیت بلاحساب اور بے عذاب بہشت میں داخل کر، آمین ۔

مترجم كا ترجمه اس كا تب نے اس قر آن شریف پرلکسنا ۱۲۳۸ هشم رقیع الاول كی چوشی تاریخ باره سوار تالیس بجری نبوی صلی الله علی وسلم (كیم اگست ۱۸۳۳ ء) جمعرات كون اتمامه و انصر امه حمد فحمد فهم حمد اولى الحمد رب السموات و الارض رب العرش الكويم. وسلام علی المرسلین و الحمد لله رب العالمین ٥

ضمیمه (۳)

سيدجعفرعلى نقوى

سید جعفرعلی نقوی کے متعلق ان کے خاندان کے ایک فردسیدعبدالسلام (محلّه بشیر عمیٰ کان پور) سے مزید حالات معلوم ہوئے، جو خلاصةً ذیل میں درج کیے جاتے ہیں:

ا۔ آٹھویں صدی ہجری ہیں اس خاندان کا پہلا فردجس کا نام سید جلال الدین تھا، ہند دستان آیا ادراس کے افرادا جودھیا کے محلّہ سیدواڑہ ہیں مقیم رہے۔

۲۔ غالبًا گیار ہویں صدی ہجری میں اس کی ایک شاخ مجھوا میر میں تقیم ہوئی جو پہلے گور کھیور میں شامل تھا۔ آج کل ضلع بستی میں ہے۔

۳- سید جعفرعلی کی دوشادیاں ہوئیں۔ پہلی شادی خاندان میں کی تھی۔ یہ بی بی عمر میں سید جعفرعلی کی دوشادیاں ہوئیں۔ پہلی شادی سید جعفرعلی سے بری تھیں۔ دوسری شادی سید احمدعلی رام پوری کی صاحبزادی سے کی ، جن کا نام غالبًا فاطمہ بی بی تھا۔ سید جعفرعلی نے اپنے ایک گاؤں کی آمدنی میں سے ایک چوتھائی حصداس بی بی کے مہر میں لکھ دیا تھا۔ ان کے بھینچے سید محمدز کریا نے اس کے خلاف دعوی دائر کردیا۔ خاندان کے لوگوں نے مصالحت کرادی اور طے ہوگیا کہ سید جعفر علی کے جھے میں سے ' ۱۸۸' بی بی صاحبہ کے پاس رے اور ' ۱۸۸' سید محمدز کریا کو دے دیا جائے۔

۳ سید جعفرعلی کی صاحبزادی سیده زینب کی شادی محلّه قافله ثو تک کے سید

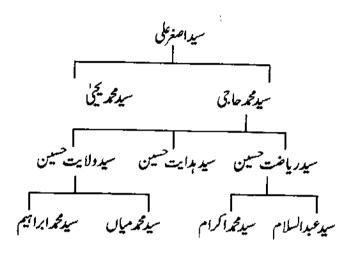
شریف حسن بن سیدمہدی حسن سے ہوئی تھی۔ وہی سید جعفر علی کے خلیفہ مقرر ہوئے۔ لاولد رہے اور انہیں سیدہ زینب کے ذریعے سے جو جائداد ملی تھی، وہ اپنے بھائی سید لطیف حسن کے نام ہیدکردی۔

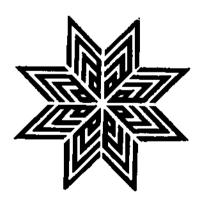
۵۔ سیرجعفرعلی کی دونوں ہیویاں موجودہ عیسوی صدی کے اوائل تک زندہ رہیں۔
سیرعبدالسلام لکھتے ہیں کہ بیں نے بچپن میں انہیں دیکھا تھا۔ ان کا دستوریہ تھا کہ نماز فجر
کے بعد چار پائی پر بیٹھ کرقر آن شریف کی تلاوت کرتیں۔ روٹیوں کے فکڑے مل کر پاس
رکھتیں اور چڑیوں کو ڈالتی جا تیں۔ چڑیاں ان سے اس قدر مانوس ہوگئ تھیں کہ جار پائی
اور بدن پر آ بیٹھتیں۔ ان کے انتقال سے دس بارہ برس بعد سیدہ زینب نے وفات پائی۔
اور بدن پر آ بیٹھتیں۔ ان کے انتقال سے دس بارہ برس بعد سیدہ زینب نے وفات پائی۔
اور بدن کے شائق تھے۔ ان کی کچی قبراب تک محفوظ ہے۔

ے۔ سیدعبدالسلام فرماتے ہیں کہ خاندانی روانیوں میں شاہ عبدالعزیز ہے تعلیم پانے کا بھی ذکر ہے۔ بتایا جاتا ہے کہ اجازت لئے بغیر حیب چاپ گھر سے نکل کر دہلی پہنچ گئے تھے۔ گھر سے جتنے خطان کے پاس گئے، وہ سب بند کے بند پڑے رہے۔ تعلیم کمل کر چکنے کے بعدانہیں کھول کر ہڑھا۔

میری معلومات کے مطابق بیروایت صحیح نہیں۔ سید جعفرعلی نے تعلیم کی تحمیل لکھنو میں کی۔وہ بہ سلسلہ جہادامب پہنچ (رمضان ۱۲۳۵ھ) تو پہلی مرتبہ سیدصاحب کو دیکھا، البتہ ان کے والد سید قطب علی اور بھائی سید حسن علی تکیہ بہنچ کر سید صاحب سے بیعت کر چکے تھے۔

۸۔ سیدجعفرعلی کے والدسید قطب علی کے بھائی سید احمدعلی تھے،ان کے دوفر زند ہوئے:سید اصغرعلی اورسید اکبرعلی ۔موخر الذکر کے فرزند کا نام سید فرزندعلی تھا۔اصغرعلی کے





(جماعت بحار

ضمیمه (۲)

شاه محمداسحاق اورشاه محمد يعقوب

افسوس کہ سیدصاحب کے ارادت مندوں میں سے دوالی شخصیتوں کے حالات اتفاقیہ نظرانداز ہو گئے جو دورانِ جہاد میں روپے کی فراہمی اور ارسال کے سب سے بڑے مرکز کے مہتم تھے، یعنی شاہ محمد اسحاق اور شاہ محمد یعقوب۔ اس فروگز اشت کی تلافی ضمیمہ میں کی جاتی ہے۔

شاه محمداسحاق

شاہ محمد اسحاق کوسرسید احمد خال نے'' زیدۃ المحد ٹین'' لکھا ہے۔ لاریب وہ آخری دور میں علومِ دین کا بہت بڑا سرچشمہ تھے۔شاہ عبد العزیز فرمایا کرتے تھے کہ میری تقریر اساعیل (شاہ شہیدؓ)نے لے لی تحریر شید الدین نے اور تقویٰ اسحاق نے۔

والد بزرگوار کا نام شاہ محمد افضل تھا، جن کا نسب چند پشت اور اوپر جاکر شاہ عبدالعزیز سے ل جا تا تھا۔ شاہ محمد افضل کے علم وفضل کے علاوہ غالبًا ہم نسبی ہی کی بنیاد پر شاہ عبدالعزیز نے اپنی ایک صاحبزادی کا نکاح ان سے کیا۔ جن کے بطن سے شاہ محمد اسحاق اور شاہ محمد یعقوب پیدا ہوئے۔ شاہ اسحاق کی تاریخ ولا دے ۱۹۲اھ (۱۹۷۵ء) ہے اور شاہ پیقوب ان سے دو برس چھوٹے ہتھے۔

شاہ عبدالعزیز نے دونوں نواسوں کی تربیت خود فر مائی اور تعلیم بھی خود ہی دی۔ پھر شاہ اسحاق کامل ہیں برس تک جلیل القدر ناتا کے سامنے حدیث کا درس دیتے رہے۔ شاہ عبد العزیز کا انقال ۱۲۳۹ھ میں ہواتو خاندان میں سے مولانا عبدائمی اور مولانا شاہ اساعیل علم وضل کے علاوہ عمر میں بڑے ہونے کے باعث مند درس پر بیٹھنے کے حقدار سے بہائ فضل کے علاوہ عمر میں بڑے ہونے کے معیت میں جہاد فی سیسل اللہ کے لئے وقف کر بیکے تھے البندا بالا تفاق شاہ اسحاق کا فرق مبارک دستار خلافت سے مزین ہوا۔

روزانهزندگی

مولوی نجف علی نے ''فیض روح قدی' کے نام سے ایک رسالہ عربی میں سید صاحب، شاہ اساعیل، مولا ناعبدالحی اور شاہ اسحاق کے حالات میں لکھا تھا۔ اس میں شاہ اسحاق کی روز اندزندگی کی کیفیت یول بیان کی ہے:

تہجد پڑھ کرتھوڑی دیر کے لئے سوجاتے ، میج کی نماز مسجد میں باجماعت اداکرتے۔
پھر کھر چلے جاتے اور لڑکیوں کو تعلیم دیتے ۔ سورج دونیز ب باند ہوتاتو ورسگاہ میں
تشریف لاتے اور دو پہر تک تفسیر، حدیث اور فقہ کا درس دیتے ۔ دو پہر کا کھانا کھاکر
تھوڑی دیر کے لئے قیلولہ فرماتے ۔ نماز ظہر مسجد میں اداکر چکنے کے بعد پھر درس کا سلسلہ
شروع ہوجاتا، جونماز مغرب تک جاری رہتا ۔ بیج میں صرف نماز عصر کے لئے تھوڑی دیر
ملتوی ہوتا ۔ مغرب کی نماز کے بعد گھر جاتے لیکن جلد واپس آجاتے اور نماز عشاتک طلبہ
کو مختلف کتابیں پڑھاتے ۔ نماز عشاء کے بعد استراحت فرماتے ۔

کتنی پاکیزہ زندگی تھی،جس کا ایک ایک لیے کتاب وسنت کی خدمت کے لئے وقف تھا۔ شاہ عبدالعزیز کے معمول کے مطابق جفتے میں دودن وعظ بھی فرماتے۔ تراجم علائے حدیث میں سرسید احمد خال کا ایک بیان بدروایت نواب مصلح الدین احمد درج ہوا ہے، جس کا مفادیہ ہے کہ میں (سرسید) شاہ اسحاق کے وعظ میں حاضر ہوتا۔ باہر مردول کا جوم ہوتا اور زنانے میں عورتوں کا۔ نہ ڈولیوں کا شار ہوتا، نہ پاکیوں کا۔ شاہی محلات تک کی

بیگات آتیں۔امراء کے ہاں سے کھانے کی دیگیں پک کرآتیں جوطلبہ اورعوام میں نقسیم ہوجاتیں۔خود شاہ صاحب معمولی جپاتی اور شور بہ گاڑھے کے دستر خوان پر رکھ کرتناول فرماتے۔(۱)

جهادميس اعانت

سیدصاحب جہاد کے لئے سرحد تشریف لے گئے تو انہوں نے فراہمی اموال کیلئے جا بجامر کر قائم کردیے سے اور اپنے خاص داع بھی مختلف حصوں میں مقر رفر مادیے ہے،
جن کی کیفیت بیان ہوچی ہے۔ مال کی فراہمی کا سب سے بڑا مرکز شاہ اسحاق اور شاہ یعقوب ہی کی تحویل میں تھا اور دونوں بھائیوں کے نام سیدصاحب کے مکا تیب کا ذکر کتاب کے ابتدائی جھے میں آچکا ہے۔ یہ بھی بتایا جاچکا ہے کہ اس مرکز سے کس طرح بابندی کے ساتھ ہنڈیاں سرحد بھی جاتی تھیں۔ سیدصاحب کی شہادت کے بعد بقیة السیف بابندی کے ساتھ ہنڈیاں سرحد بین تھیں۔ سیدصاحب کی شہادت کے بعد بقیة السیف مجاہدین کی جو جماعت سرحد بین تھیں ،اس کیلئے بھی زیاعانت کا سلسلہ شاہ اسحاق نے جاری رکھا، چنا نچے شاہ صاحب کے داماد مولوی سید نصیر اللہ بین فرماتے ہیں کہ جب شاہ صاحب وعظ فرماتے تیں کہ جب شاہ صاحب وعظ فرماتے تیں کہ جب شاہ صاحب وعظ فرماتے تیں مدر سے کے درواز سے پراوگوں سے چندہ وصول کرتا۔

۔ ۱۲۴۰ھ (۱۸۲۵ء) میں اہل وعیال کے ساتھ جج کیا، واپس آکر پھر درس و تد رئیس میں مشغول ہو گئے۔

*چجر*ت اوروفات

سید صاحب نے اجرت وجہاد کے ذریعے سے ایمانی زندگی کا بہترین طریقہ مسلمانوں کے سامنے چش کیا تھا۔ شاہ اسحاق نے جب دیکھا کہ ہندوستان کو دارالاسلام بنانے کی بظاہر کوئی صورت نظر نہیں آتی تو مسلمانوں کے سامنے ایمانی زندگی کا دوسرا (۱) تراج ملاء مدین ہندی:۱۱۸۱۱۔

طریقہ پیش کردیا یعنی وہ اہل وعیال کے ساتھ بجرت کر کے ۲۵۲اھ (۱۸۴۰ء) میں مکہ معظمہ چلے گئے۔ وہاں بھی درس جاری کردیا۔ رجب ۲۱۱ھ (جولائی ۱۸۴۵ء) میں وفات پائی اور جنت المعلٰی میں فن ہوئے۔ منسل کے وقت مکہ معظمہ کے مشہور عالم شخ عبداللہ سراج نے فرمایا بتم بخدااگر یہ بزرگ بچھ مدت اور زندہ رہے اور میں ان کو حدیث سنا تار ہتا جب بھی ان کے مرتبے کونہ پنچا۔

شاگردوں کا شارنہیں ہوسکتا۔ چوں کہ سارا وقت درس میں گذرتا تھا،اس کے تصنیف وتالیف کی فرصت نظر سکی ہوسکتا۔ چوں کہ سازات کے جواب میں رسالے لکھے ہیں جن میں سے "مسائل اربعین" اور "مائة مسائل" مشہور ہیں۔" تذکرة الصباح" بھی انہیں سے منسوب ہے۔

اولاد

اولاد میں ایک صاحبزادہ تھااور تین صاحبزادیاں۔ صاحبزادے کا نام سلیمان تھا،جس کی وجہ سے شاہ اسحاق کی کنیت ابوسلیمان پڑی ہیکن وہ غالبًا جلدفوت ہوگیا۔ صاحبزادیوں میں سے ایک مولا نا عبدالحی کے فرزندار جندمولا نا عبدالقیوم سے بیابی می دوسری کی شادی شاہ کاتشم بن شاہ معظم بن مقرب الله بن شاہ اہل الله برادر شاہ ولی الله سے ہوئی۔ تیسری مولوی نصیرالدین کے کھر کی زینت بی، جوشاہ رفع الدین کے فواسے تھے۔

بیان کیاجاتا ہے کہ مولوی سیدنصیرالدین کی والدہ ابتداہی ہے اس دھنے کی خواہاں تھیں الیکن چوں کہ مولوی صاحب موصوف کو تصیل علم کا شوق ندتھا اس لئے شاہ صاحب نے رشیتے ہے انکار کردیا۔ مولوی صاحب کیلئے سانکار تازیا تا سمبیہ بنا تھوڑی ہی مدت میں محنت وریاضت ہے وقت کے بہت بڑے عالم بن گئے۔ اس وقت شاہ اسحاق نے رشتہ منظور کرلیا۔مولوی صاحب نے ۱۲۵ ہیں سیدصاحب کی تحریک جہاد میں زندگی کی نئی منظور کرلیا۔مولوی صاحب نے ۱۲۵ ہیں زندگی کی نئی روح چھونگی۔ کئی برس تک سندھ، بلوچتان اور افغانستان میں مصروف تنظیم جہاد رہے، پھر ستھانہ چلے گئے اور وہیں وفات پائی۔ان کے دوفرزند تھے:عبداللہ اور عبداکلیم۔ان کے حالات معلوم نہ ہو سکے۔

شاهممر يعقوب

جیسا که عرض کیا جاچکا ہے، شاہ محمد یعقوب شاہ اسحاق سے دوبرس چھوٹے تھے علم وفضل اور تقویٰ میں بھائی کانمونہ تھے۔ ۲۷رزی قعدہ ۱۲۸۳ھ (۲۸اپریل ۱۸۶۷ء) مکہ معظمہ میں وفات یائی۔

شاە ولى الله كى پېش گو ئى

نواب صدیق حسن خال نے ''اتحاف النبلاء' میں '' قول جلی' کے حوالے سے شاہ ولی اللہ کی ایک پیشگوئی درج کی ہے، جس کا خلاصہ یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے جمھے جوفرزند عطاکیے ہیں (شاہ عبدالعزیز، شاہ رفیع الدین، شاہ عبدالقا در، شاہ عبدالنی) وہ سب سعید ہیں۔ ان میں ملکیت کی ایک متم کا ظہور ہوگا۔ تہ ہیر غیب کا تقاضہ یہ ہے کہ دواور شخص ہیں۔ ان میں ملکیت کی ایک متم کا ظہور ہوگا۔ تہ ہیر غیب کا تقاضہ یہ ہے کہ دواور شخص پیدا ہول کے جو مکہ معظمہ اور مدینہ منورہ میں علومِ دین کے احیاء کا انتظام کریں سے۔ ان کا نسب والدہ کے ذریعے سے ہمارے ساتھ دابستہ ہوگا۔ (1)

یہ پیشگوئی نظر بہ ظاہر شاہ اسحاق اور شاہ بعقوب کے ذریعے سے پوری ہوئی۔

ارواحِ ثلاثه کی روایات

"ارواحِ ثلاثه "میں شاہ اسحاق اور شاہ لیقوب کے متعلق بہت سی روایات درج

⁽١) التحاف النهلا مِن ١٣٣_

ہیں۔(۱)جن میں سے بعض دلچسپ ہیں۔مثلاً:

ا۔ شاہ صاحبان حرم شریف میں جاتے تو جوتے بے تکلف باہر چھوڑ جاتے۔ان کے جوتے مجھی کم نہ ہوئے۔ یہن الہند مولا نامحمود حسن مرحوم نے فرمایا کہ بید دراصل شاہ عبدالقادر کی تعلیم تھی۔ اکبری میں مسجد میں جوتے چوری جانے گلے تو شاہ صاحب نے لوگوں سے فرمایا کدایے جوتے چوروں کیلئے حلال کردیا کرو، پھروہ انہیں نہلیں گے۔ ۲۔ شاہ صاحبان بہت بخی تھے اورا کثر تنگی کی وجہ سے ملول رہتے تھے۔ا یک روز انہیں بہت خوش دیکھا گیا،کسی نے بوجھا تو معلوم ہوا کہ سکندر آباد کی مخصیل میں حسن پور

نام ان کا ایک گاؤں تھا جیے سر کارنے سَبط کرلیا تھا۔خوشی اس بات کی تھی کہ معاش کا ایک ظاهرى ذريع ختم هو گيااورصرف خدا پر بحروسه ره گيا۔

س_ے شیخ فیض علی نے بیان کیا ہے کہ شاہ عبدالعزیز نے شاہ ولی اللہ کے مزار کے یاس جومبجد بنوائی تھی ،شاہ اسحاق اسے اچھا نہ جانتے تھے۔ فرماتے تھے کہ قبرستان میں متحدنه بنوانا جإيي

⁽١) ملاحظه بموارواح علايش: ٨٠-٩٠_

ضمیمه (۵)

متفرق واقعات

بعض احوال دوقائع کتاب کی ترتیب کممل ہوجانے کے بعد معلوم ہوئے انہیں یہاں درج کیاجا تاہے۔

مولا ناعبدالحي

ایک روایت سے معلوم ہوا کہ جرم پاک میں پنچے توسید صاحب نے مولا ناعبدالی اور شاہ اساعیل سے مولا ناعبدالی درس اور شاہ اساعیل سے فرمایا کہ بیم تبرک مقام ہے، وقت فرصت غنیمت ہے۔ کوئی درس شروع کر دینا چاہیے، چنانچیمولا ناعبدالی نے مشکلوۃ کا درس شروع کر دیا اور شاہ اساعیل نے جمۃ اللہ البالغہ کا۔ جج کے بعد بھی بیدورس بدستور جاری رہے۔

سیدصاحب کامعمول تھا کہ اکثر نمازعصر کے بعدرکن بمانی کے قریب بیٹھ کرمرا قبہ ودعاءکرتے۔

شان تلقين

سفر منی وعرفات میں مولا نا عبدالحی نے اپنے اہل خانہ کو اونٹ پر سوار کرایا،خود بھی سوار ہو تھے۔
سوار ہوئے۔ کچھ رفقاء بھی ساتھ تھے۔مغرب کی نماز کا وقت آیا تو مولا نانے اونٹوں کے مالک کو آواز دی کہ ذراتھ ہر وہم نماز اواکر لیس۔اس مخص نے عجلت کے خیال سے تھہرنا پہندنہ کیا اور بے آحتیا طی سے بولاتم بر بے لوگ ہو،خدا بھر تمہارا ساتھ نصیب نہ کرے۔

مولا نانے باطمینان نمازاداکی۔ پھراونوں کے مالک کو مجھایا کہ بھائی ہم لوگ ہندوستان سے جج وعبادت کیلئے آئے ہیں۔ تم ہم سے نفرت کرتے ہواور بددعاء دیتے ہو؟ معلوم ہوتا ہے کہ تہمیں ایمان سے بہرہ نصیب نہیں ہوا۔ دعاء کرو کہ خداتمہیں ایمان نصیب کرے۔اس نے بہت معذرت کی اور مولانا سے عرض کیا کہ آپ میرے لئے دعاء فرمائیں۔

سفرججرت

مولا ناعبدالی کوسفر ججرت بین بردی مشکلات پیش آئی تھیں۔خاصادقت بہاول پور میں گزارا۔ سلح رہے الاول ۱۲۳۲ھ میں بھاگ (بلوچتان) پنچے، تیرہ دن وہاں تھہرے رہے، پچیس روز حاجی میں گزارے۔دومہینے مٹھوری میں قیام کیا۔ ۸رر جب کو قندھار گئے۔ ۱۲رمضان کو وہاں سے چلے تو ۵رشوال کو کائل پنچے پھر جلال آباد کے راستے سوات میں سیدصاحب سے ملاتی ہوئے۔

مولا نامحمه يوسف

مولا نامحمر بوسف چھاتی کی والدہ جج کیلئے ساتھ نہ گئی تھیں، عین جج کے دنوں میں ان کا نقال کی خبر مکہ معظمہ پنجی ۔سیدصاحب نے حرم یاک میں انکی معفرت کیلئے دعاء کی۔

ضمیمه (۲)

قصیاره درفضائل حبرنبیل مولا نامحداساعیل

یقصیده مولوی محرحین صاحب تلاس بنقیر نے لکھا تھا اور میرے علم کے مطابق صرف ایک مرتبہ ایک مختر سے رسالے کے ساتھ چھپا جس کا نام 'نفسائل عالم باعمل' تھا۔ اس رسالے کے حاشیے پرشاہ محمد فاخر اللہ آبادی کا 'تخدز اکر' شائع ہوا اور آخر ہیں یہ تھیدہ ۔ تصیدہ بہت لمباتھا، ہیں نے بہت سے شعر صدف کردیے اور صرف وہ شعر پنے جوشاہ شہید کے نضائل ہے متعلق سے سے شعر مدن کردیے اور صرف وہ شعر پنے جوشاہ شہید کے نضائل ہے متعلق شعے ۔ یہ تصیدہ اب نایاب ہے امید سے کہ اس کے مندر جہ ذیل اشعار محفوظ موجائیں گے۔

پوچھے نام تو ہم نام ذی اللہ تھ ﴿ بوعمر(۱) تھے دہ اگر پوچھے ان کی کنیت دیکھے دالے ابھی ایکے بہت ہیں موجود ﴿ کیجے تقدیق جواس عرض میں شک ہو دھزت عالم ایسے تھے کہ علم کا ان کا نہ ہویاں ﴿ علاء کو بھی رہی علم سے ان کے جرت صرف، نحویمی وہ رتبہ عالی ان کا ﴿ این حاجب کی تھی عہد میں ایک حاجت

⁽۱) کینی شاہ مساحب کا نام اساعیل اور ان کے فرزندار جمند کا نام عرتھا، للبذا ''بوعر'' ان کی کنیت ہوئی ،کیکن شاہ شہید کے سلسلے میں اس کنیت کا ذکر مجھی نہیں سا۔

الل معقول بن انکے بیاں سے معقول ﴿ اہل ہینت پر ربی ان کی ہمیشہ ہیبت ہراشارہ تھا اشارات، شفا تھا ہرلفظ ﴿ پورسینا کو کلام انکا سکھادے حکمت(ا) جو ادب میں انہیں سکاکی دورال کہیے کہ بہ ہے بادبی کی نبیت

علم تغییر کو کیا کہے کہ مویا ان کو گا ابن عباس کی تھی روح سے حاصل قربت کیا بیال معنی قرآل کیے بہجان اللہ گا گان آٹھوں کودکھلا و نے نارو جنت اس قدر علم احادیث رسول حق تھا گا نائب ختم رسل آئی مناسب ہے صفت تھے وہ بے واسطہ تلمیذ بخاری گویا گا ایسے شاگر دسے مسلم کو بھی ہوتی راحت ترذی کے وہ آگر عبد میں ہوتے تو ضرور کا نوچٹم اپنا سیجھتے وہ آئیس بے منت ہوتے یا لک کے زمانے میں آگر مولانا کا ملک تدریس کی دیتے وہ آئیس ملکیت ہوتے ما لک کے زمانے میں آگر مولانا کا مارے شاگردوں سے بجاتے وہ گوئے سبقت باتن ماجہ کا اگر وقت میسر ہوتا کا کرتے وہ ان کیلئے سب سے زیادہ عزت میں سے دیادہ عزت

گویا محفوظ تھیں سینے میں احادیث صحاح تھے خبردار خبر سے وہ بہت باخبرت

بوصنیفه "کا زماند بھی اگر وہ پاتے ، جہتد ان کو بنادیتی انہوں کی صحبت ہوتے شاگردوں میں ماندابو بوسف وہ گرتے جو خدمت نعمان سے ماصل برکت عالم وعاملِ قرآن وصدیث ایسے تھ ، ان کا دستور عمل تھا یہ کتاب وسنت حاجی ایسے کھفیل ایکے بہت ی مخلوق ، حاجی کصبہ ہوئی زائر بیت وحفرت لیعنی وہ شوق ولایا کہ سفر ہائے ججاز ، قطع کرنے میں جھی ہوگئے بلند ہمت

⁽۱) پورسینا سے مراد بوللی بینا ہے، اشارات وشفااس کی مشہور کما بیں ہیں۔ (۴) مراد ہے ملیمان بن اصعرف بن اسحاق الاز دی اُنجیتانی صاحب من

واعظ ایسے تھے کہ کیا ایکے بیاں کا ہوبیاں ﴿ سَنَّے والوں کو تجب ہوتی تھی رغبت بیعت جب حدیث نبوی کا وہ بیاں کرتے تھے 🚷 ہوتا تھا خلق سے معدوم صدوشے بدعت ذكر دوزخ كأبيوآتا لو جلادين تقي 😸 آتش خوف خدا يدبه خواب غفلت اور جنت کا بھی کچھ ذکر جو آتا تھا 🛞 سن کے کفار بھی اسلام کی کرتے رغبت اور جوكرتے تيے بھى بول قيامت كابيان اللہ مجلس وعظ كى بوجاتى تھى اليي صورت ایک کودوسرے کی کچھ نہ خبر رہتی تھی 🚷 اسقدر ہوتی تھی ہرایک کےدل کودہشت سرکے نزدیک جووہ مٹس ہدی ہوتا تھا 🐞 شرم افعال ہے ہوتی تھی عرق کی شدت توبہ توبہ میری یارب یہ ہراک کہتا تھا اس قدر ہوتی تھی واں ہیتِ رب العزت سر کو بجدے میں جمکادیتے ہی بن پرتی تھی 🐞 بنمازوں کی بدل جاتی تھی ایسی حالت فرض جن سے نداوا ہوتا تھا، ووصورت فرض 🛞 کرتے نظیر اہمی اواکرنے میں ابنی نیت اکل وشرب اینا فراموش وه کردیتے تھے 🐞 روزہ خوروں کوتھی اس دعظ کی اتنی ہیت پھر توعیدین سے تشریق سے لاجار تنے وہ 🏶 سال بھرروزے کی تھی انکووگرنہ رغبت جونه دیتے تھے زکو ۃ انکایہ ہوتا تھا حال 🐞 صرف کل مال ٹی کرتے تھے دہ صرف ہمت عیش میں گھر ہے بھی تھا جن کو نکلنا مشکل سفر حج کی پیادہ ہوئی ان کو رغبت ہو گئے سیکڑوں زانی بھی زنا سے تائب ادرمیخواربھی تو یہ ہے ہوئے پاک صفت یا ندهتی تھیں کسود بندار سے عقد حلت زانیه عورتیں بھی ان کی نصیحت من کر ہے بیمشہور کہ دہلی میں وہ ایک روز کہیں اک زنِ فاحشہ کے دریہ گئے باعزت وه بھی تا ئب ہوئی اوراسکی جوتھیں ہم محبت

اس کو بچھ ذکر قیامت جوسنایا تووہیں

اور ان سب کے باندھ دیے ای لحظہ نکاح اللہ اللہ یہ تھی ان کے بیاں کی ہیب

اوردیلی ہی کی مجد میں یہ مشہور ہے بات کے حوض تک رہتا تھا بازار لگا ہے دہشت خیر کی جائے کو کر ڈالا تھا اک موقع شر کے اس قدر شہر میں تھی اہل ہوا کی کثرت بطفیل ان کے وہاں ہے بلا دور ہوئی کے موضع خیر میں افزوں ہوئی بس خیریت مجد یں سیکڑوں آباد ہو کی انکے سبب کے مردوزن لا کھوں نمازی ہوئے صافی طینت کریئے طفل کو سنتی ہی خی تھی مادر طفل کے اس زمانے کی نمازوں میں بیتھی تحویت ہر نمازی کو ہوا شوتی تبجد ایسا کے بستر خار بنا بستر خواب راحت خواب شیرین سحر کا نہ مزہ تھا ان کو طاعت حق میں آئی تھی کیا کیالذت

ہرجگہ دین محمد کا رواج ان ہے ہوا ﷺ ظلمتِ دہر میں روثن ہوا نور سنت دیکھودشوارتھا کیا کچھزن بیوہ کا نکاح ﷺ وہ بھی آسان ہوا ان سے علیہ الرحمت ورنداس ہندیز آفات میں اہلِ اسلام ﷺ عاراس کام سےرکھتے تھے بہمن کی صفت شکر لاکھوں ہے رحمت کے خدایا کہ یہاں ہے طفیل ان کے اداہونے گی سے سنت

اک جگہ سنتے ہیں فرماتے تھے مولانا وعظ بیرزن ایک ہوئی س کے عضب ناک اور کہنے گئی ہے مولوی ایسا آیا اس استدانلاوں کے والے وہ کھود یہ ست دانہ بی کا جو کھاتے تھے وہ محروم ہوئے اس کیونکہ ہررا تلہ ہوئی اب تو دونصمی عورت اس کو نری سے ہے مایا نہ سیجئے عصہ بی مجھوکہ کہنے میں نہیں اپنی طرف سے جرائت بیں یوں بی بی بی بی بی بی جو کہتا ہوں ہی سب بی جھے ہیام حضرت بی بی می جو کہتا ہوں ہی سب بی جھے ہیام حضرت

(١) يهال بي بي ساشاره معرت فاطمة الزهرارض الله عنها كاطرف ب-

MIN

اور سب جھوٹ گئیں آپ کے سمجھانے سے رسم بد شادیوں کی اور عنی کی بدعت اورمها جربھی وہ ایسے تھے کہ سجان اللہ 🐞 مانھی الملہ سے تھی ان کو ہمیشہ نفرت غا ہرا مال سے اولاد ہے، گھر ہے ان کو 🛞 اس قدر عثق البی میں ہوئی تقی نفر ہے سب دیا جھوڑ گر ہاتھ سے چھوڑا نہ تبھی رشة جرت فی الله بل بے ہمت عازی ایسے تھے کہ کیاان کی غزا کا بیاں 😩 آپشمشیر کو پیتے تھے وہشل شربت ان کی شمشیر کا زہراب ملادیتا تھا ، فوج کفار کے دریامی عجب سمیت ید سناہوگا کہ سکھول کو بہت قتل کیا 🏶 شکھ سے چررہ ندسکےسکھ ہوئے ایسے غارت مال سے، ملک سے اور جاہ ہے کچھ کام نہ تھا 🏶 تھا تو پیہ کام تھا، عالی ہو پیر دین وملت راہِ مولامیں بھی قربان ہوئے واہ نصیب اور حیات ابدی یائی علیه الرحت جو برا کہتے ہیں ایسوں کو، براکرتے ہیں 🏽 عیب اپنے بیاں کرتے ہیں وہ بدطینت ظاہر أب ادبى ہے يہ كلام حق كى ، ايے حافظ كو برا كيتے جو بدخسلت ایسے عالم کی ندمت جو کیاکرتے ہیں · مثل جابل ہیں اگر چہ انہیں ہو علیت

